Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113064

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४३
५७
1926

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

101

रजिस्टर्ड नं० ए. ६

सम्मेलन-पत्रिका

सम्मेलन की मुख पत्रिका

भाग १३, अङ्क ८, वैशाख संवत् १९८३ वि०

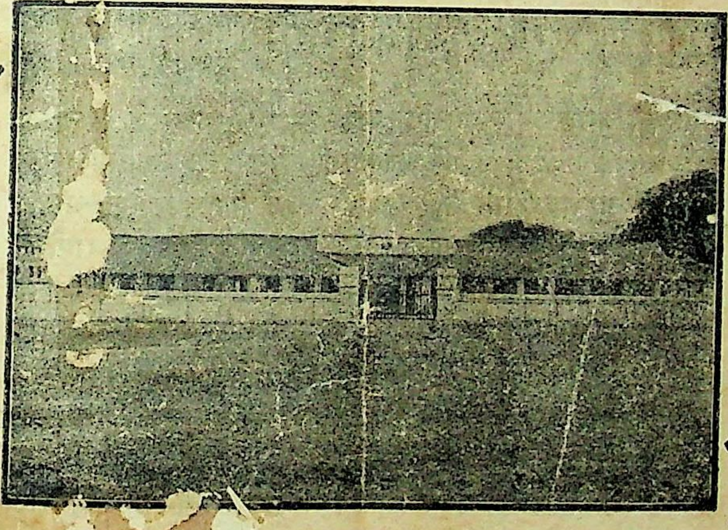

सम्पादक

भगीरथप्रसाद दीक्षित विशारद

प्रकाशक

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

वार्षिक मूल्य २) प्रत्यंक ≈)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१—प्रतिज्ञा—[महात्मा सूरदास] ३५७
२—पूरणमल—[श्रीयुत पं० अयोध्याप्रसादजी शर्मा विशारद] ३५८
३—संत-कवि—[श्रीयुत पं० भगीरथप्रसाद दीक्षित विशारद] ३६२
४—रत्नों की पिटारी या कवितान्वेषण—[श्रीयुत भगीरथप्रसाद दीक्षित विशारद] ३६८
५—मद्रास प्रान्त में हिन्दी—[श्रीयुत 'एक तामिल हिन्दी-भक्त'] ३७३
६—अखिल भारतवर्षीय हिन्दी-अध्यापक-सम्मेलन—[श्रीयुत हरिकृष्णराय विशारद प्रधान मंत्री] ३७५
७—सम्पादकीय—[स्टाम्पों में हिन्दी, ग्वालियर राज्य में शिक्षण-सप्ताह, सब डिप्टी इन्स्पेक्टर का हिन्दी-द्वेष, सम्मेलन के कार्यक्रम में सुधार की आवश्यकता, सिन्ध में देवनागरी आन्दोलन, इलाहाबाद विश्व-विद्यालय में हिन्दी का माध्यम, टर्की में लिपि-परिवर्तन, हिन्दी-साहित्य-विद्यालय काशी, अधिकारियों द्वारा हिन्दी की अवहेलना, प्रेम-महाविद्यालय, कोआपरेटिव सोसाइटी] ३७८
८—हिन्दी-जगत—[डिस्टिक्ट बोर्ड फतेहपुर ध्यान दे, हिन्दी-अध्यापक-मण्डल; मद्रास प्रान्तीय हिन्दी-परिक्षा-फल-सारिणी, हिन्दी-सम्पादक-समिति, इण्टर मीजिएट परीक्षा में देशी-भाषा, दिल्ली में हिन्दी को अर्द्धचन्द्र, हाई स्कूलों में हिन्दी, राष्ट्रीय हिन्दी-मन्दिर, दुगड्डा-कवि-सम्मेलन, हिन्दू-विश्व-विद्यालय काशी, डीडवाणा हिन्दी-पुस्तकालय, नागरी लिपि में सुधार की आवश्यकता, नागरी-प्रचारणी सभा बाढ़ का तृतीय वार्षिकोत्सव, फाजल का विवरण, दाहिमा ब्राह्मण सभा] ... ३८[illegible]
९—पुस्तकावलोकन—[पंडितजी तथा बड़ी दीदी, विद्यापति, अधिकार, चाँद, कादम्बरी, विभूति, कीचकवध नाटक, मराठी साहित्य की पुस्तकें] ... ... ३९[illegible]
१०—सम्मेलन-समाचार—[भरतपुर-सम्मेलन, जाट सभा के सभापति की विज्ञप्ति, पञ्जाब में हिन्दी-प्रचार, पञ्जाब प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, परीक्षा के लिये प्रस्ताव, अदालतों में हिन्दी-प्रचार, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग की सूचनाएँ] ४०[illegible]
११—स्फुट विषय—[गुलाब की—श्रीयुत पं० अम्बिकाप्रसाद भट्ट अंबिकेश राजकवि रीवाँ राज्य, नैनन निहारिये—श्रीयुत श्रीहरिजी मुख्याध्यापक हिन्दी-विद्यापीठ प्रयाग, हिन्दी—श्रीयुत रघुबर दयाल मिश्र विशारद तथा चित्रकूट-यात्रा—सम्पादक ... ४०[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113069
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

भाग १३ } वैसाख संवत् १९८३ वि० { अङ्क ९

प्रतिज्ञा

रघुपति जो न इन्द्रजित मारौं।
तौ न होउँ चरनन कौ चेरौ, जो न प्रतिज्ञा पारौं॥
जो दृढ़ बात जानिये प्रभुजू, धर्म गये कहि बान निवारौं।
सपथ राम परताप तिहारे, खंड-खंड करि डारौं॥
कुंभ करन दस-सीस बीस-भुज, दानव दलहिं विडारौं।
तबै 'सूर' संधान सफल है, रिपु को सीस उपारौं॥

—महात्मा सूरदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरणमल

इस कवि का 'सिषर-वंश-यश-प्रकाश' नाम का ग्रंथ खोज में मिला है। जिसके देखने से ज्ञात होता है कि कवि बारहट जाति का है और शेखावाटी प्रदेशान्तर्गत पालड़ी-नरेश अजमाल भूप के आश्रित रह कर उन्हीं की आज्ञा से इस ग्रंथ की रचना की है। ग्रंथ में आठ प्रभाव हैं; जिनमें से प्रथम से लेकर छटवें तक नृप-वंश-वर्णन है, सातवें में नगर-वर्णन और आठवें में संक्षेप से अलंकार-वर्णन है। पुस्तक माप्ति का समय ग्रंथ के अंत में निम्न प्रकार दिया है—

दोहा

चैत्र शुक्ल अरु पंचमी, सिद्धि कला निधिवार।
बरनन कीन्हों सिषर-वंश, यश प्रकाश विस्तार॥
सुभ संवत गुन्नीस सत, वरस तीन की साल।
ग्रंथ भयो पूरन जबै, हुकुम भूप अजमाल॥

अर्थात् संवत् १९०३ में यह ग्रंथ पूर्ण हुआ है। कवि का विशेष परिचय ज्ञात न हो सका; परन्तु ग्रंथ के देखने से ज्ञात होता है कि कवि प्रतिभावान था। नमूने के तौर पर कुछ छन्द पाठकों को भेंट किये जाते हैं।

ग्रंथारंभ में कवि ने ४ छप्पय गणेश, सरस्वती और श्री रामचन्द्र जी की स्तुति विषयक मंगलाचरण के तौर पर कहे हैं। इसके पश्चात् नृप-वंश-वर्णन निम्न प्रकार प्रारंभ किया है—

छंद भुजंगी

हरी धाम में आदि नाराण सोहै, जही नाभि से कंज परगट भयो है।
भयो कंज के पुत्र जो ब्रह्म भारी, निज दृष्टि हू ते सृजी सृष्टि सारी।
जेहि ब्रह्म के पुत्र मारीच जायो, दिपै सूत कासिव जो वेद गायो।
विवस्वान ताके प्रगट्यो प्रतापी, विवस्वत मनु आइ मुरजाद थापी।
प्रगट्यो बली बीर इक्ष्वाकु ताके, जनमे तपोधीर जो कुक्षि जाके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार पद्धरी छन्द में सूर्यवंशी राजाओं की पीढ़ियां गिनाते हुए द्वितीय प्रभाव, लव-कुश पर आकर समाप्त किया है। आगे तृतीय प्रभाव निम्न प्रकार आरंभ किया है:—

दोहा

इहि प्रभाव तृतीये विषै, रोहितास रजधान।
ह्वै है दूलहराय कूँ, देवी को बरदान॥

छन्द हनुमंतफाल

उत अवध पुर सूँ आय, रुहितास राज जमाय।
करि अमल रस चहुँ कोर, घन घुरत नौबत घोर।
आथाण नलवर आय, गढ़ लयेउ खग्ग बजाय।
जहँ बांधि राज सुथान, सुर-राज केर समान।
लरि खग्ग ढोला लीन, निज राज अपनो कीन।
रघुराम रघुकुल-राज, मनु वंस भय महराज।
वहि अंस पुनि फल पाय, अवतर्यो दूलहराय।
नृप दूलहराय बरात, कहुँ परन बे कूँ जात।
सावंत मीण सेर, महि वसत सो आमेर।
अण संक वह मद अंध; कछु रखत हो बल कंत।
विन के जये ही बाद, नहिं सुनत पर दल नाद।
जहँ आय निकसी जान, नृप बाजिया नीसान।
सो सुनत सांवल सींह, आडोस फिरि अण बीह।
सोजे जनहि किय सूर, जुरियो स जुद्ध जरूर।
लरि परे लुत्थपलुत्थ, बिन सीस नाचत जुत्थ।
करि कोप कूरमराय, बरियास खग्ग बजाय।
मैवास सावँत मारि, जबरैल पुर दिय जारि।
सब दुलह नृप के साथ, रन परे जूझि बरात।
तब भूप चिन्ता कीन, हूं भयो साथ बिहीन।
जिहि वार महि जमवाय, दिये दरस चंडी आय।
कुल पूज थापहु मोहि, ह्वै प्रसन्न वर देहुँ तोहि?
तिहि समय दूलहराय, कुल-पूज्य किय जम वाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर-मुजरा छिरको देन, सब सुनी जाणी लेन।
रन फेरि कर घमसान, नृप लियो बहु रज धन।
किय मीणनैं निरमूल, कर दियो भूपति कूल।
इहि भाँति गढ़ आमेर, लो लेइ बल समसेर॥

इसके आगे दूलहराय की संतति का संक्षिप्त वर्णन करता हुआ कवि तृतीय प्रभाव समाप्त करता है। आगे चतुर्थ प्रभाव में मोकलसी महाराव से एक साधू की मुलाकात का वर्णन करता है। महाराव के कोई पुत्र नहीं था; उसको दुआ से इनके पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसने आशीर्वाद देते समय कहा था कि:—

जनमें इक तात जा तूम घरै, भुव नायक तेजन ये संभरै।
तुम कीजियो मैं कहुँ वैन जती, अब सूँ रखियो मरजाद अती।
नियसान बंधो नियला पटका, भयभूल न खाहु कबहुँ झटका।

साधू के कथनानुसार ही पुत्र का नाम सेखा रक्खा गया। उन्हीं की संतति आज सेखावत कहलाती है। सेखावतों की जहाँ बस्तियाँ हैं; जयपुरान्तर्गत उस प्रदेश को सेखावाटी कहते हैं।

इस प्रभाव में और पांचवें प्रभाव में सेखा जी के युद्धों का वर्णन कवि ने बड़े प्रभावशाली शब्दों में कथन किया है। नमूने के तौर पर कुछ पद्य उद्धृत किये जाते हैं—

छन्द पद्धरी

दहुँ दला बार तिण हुई दीठ, फरकिय झण्डा पै नाग पीठ।
पनघडे कायरां तणा प्राण, जिमि गलै बरफ़ लखि जोति भांण।
हरखिया सूर मन धरि उछाह, रथ रंभ निरखिया गयण राह।
घलोरल नगारां ठोर बाजि, मिलि चहूं वोर पलचर समाज।
अध पली दगाई तोप आनि, मढ़ि घटा धूम ढकि आसमान।
धारिया झठोकी कर धनंक, चहुँटिया बापड़ा मेल चंष।
जां हथनाण छूटत जरूर, दंतियां फूटि तन छुटै दूरि।
पछुरै तीर बडबल पठान, कुँजरां लगै उां तजै प्राण।
इण रीति बंधे सरजाल आय, दल भूप तणो लीधो दबाय।
घर हांक हांकिया जेणवार, पहो गयण ढांकिया रज अपार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हय खुरां हलहला धरिय सेस, सो पड़े कमठ भर सीस सेस।
कीधी न पलक अध जेम काय, जोरावर हुअ मुह मेज आय।
तिण भये समागल प्रबल ताव, घट फूटि परे अणियार घाव।
खग झड़ां लड़े के पटा छूटि, तरबूज जेम सिर पड़े तूटि।
बरछिया घाव के करन वीर, सद्द घाव थनत श्रोणित सरीर।
हुसीन खान मन ह्वै हुस्यार, सूर तहँ बजावत बहोत सार।
भिड़ स्यंघनाद करि बार-बार, अरि गाहीगरा कीधा अपार।
समसेर चाट समसेर खान, वही करत चढ़ावत बंसवान।
दाऊद खान धरि दिल उछाह, विरदैत रीस बढ़ि करत वाह।
छकिया रजपूती धारि छोह, मन कीधो हूगां वरण मोह।
मग गैण अपछरा झुकि विमाण, भालण जुध थँमियो सुरथ-भाण।
भभकंत घाव के पड़े भूमि, घायल मदपी जूं रहें घूमि।
धर सीस बह रहे रुधिरधार, आषाढ़ मेघ जिमि जल अपार।
भीभणी उचाभरि ले गरूर, खप्पर भरि जोगणी छकत पूर।
बैताल भूत मिलि नचत वृन्द, निज वीण बजावत ब्रह्म नन्द।
आसीस देत अपछर-समाज, जुग कोड़ि रहो सेखाण राज।

इस प्रकार सेखाजी ने चंद से युद्ध करके उसकी सारी भूमि पर अधिकार जमा लिया। इसके पश्चात् सेखा की संतति का वर्णन किया है और उनके द्वारा भटनेर और सोनगरा की विजय का वर्णन छठवें प्रभाव में किया है। इन युद्धों के पश्चात् पालड़ी के गद्दी नशीनों का संक्षेप वर्णन अपने आश्रय दाता तक किया है। सातवें प्रभाव में पालड़ी नगर की शोभा-वर्णन की है। कवि ने इस वर्णन में नगर की सीमा वहां के निवासी व उनके कार-बार आदि-आदि बातों पर साधारणतया प्रकाश डाला है। और आठवें प्रभाव में राजा की आज्ञा से अलंकारों का संक्षेप-वर्णन किया है। नमूने के तौर पर कुछ उदाहरण दिये जाते हैं—

भ्रमालंकार—अलंकार यह भ्रम को, 'पूरन' करत प्रसंग।
नयन कंज ही जानि कै, भँवर भ्रमत तेहि संग॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मरणालंकार—अलंकार सुमिरन यहै, नाम सुलच्छन रीत।
देखत ही शशि कूँ जवै, आवत वा मुख चीत॥

पर्यायुक्तालंकार

दोय प्रकार पर्यायोक्ति कहूं, ग्रंथ लभा परकास विचारी।
बात करै रचना करि कै, इक जो मिसतैं कछु कारज सारी॥
वे अति चातुर हैं कवि 'पूरन', तो गल-माल बिना गुन डारी।
कुंज में चालि के बैठो दोऊ, हम आवत हैं लखि कै फुलवारी॥

छन्द हनुमन्त-फाल

यह अलंकारन रीति, कवि करी वरनन कीर्ति।
महाराज नृप अजमाल, सो सदा अरियन-साल।
आचार सार अभंग, अण छेह पौरुष अंग
बिरदैत बुद्धि विसाल, सो सुतन बैरिय साल।
थट सुभट दीपत संत, जबरैल जीतण जंग॥

इसके पश्चात् कवि ने अपने आश्रयदाता के मुसाहिबों आदि का संक्षेप वर्णन करके ग्रंथ को समाप्त किया है; और मैं भी लेखको समाप्त करता हूं।

—अयोध्याप्रसाद शर्मा 'विशारद'

सन्त कवि

पत्रिका के पिछले दो अङ्कों में रीवां राज्य के कुछ कवियों के विषय में लिखा जा चुका है। आज हम एक और प्रसिद्ध कवि का वर्णन तथा उसकी कविताओं का रसास्वादन अपने पाठकों को कराना चाहते हैं।

संत कवि रीवा शहर के निवासी थे। इनके पिता जैलालराम ब्रह्म भट्ट थे। कहा जाता है कि मुनि पूरनदास के आशीर्वाद से इनका जन्म बैसाख शुदि, सातें संवत १८६२ वि० को हुआ था। महात्मा पूरनदास बाबूपुर (हुज़र तहसील) राज्य रीवा में एक आश्रम बना कर रहते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संत कवि हिन्दी साहित्य के उद्भट पंडित और प्रतिभाशाली कवि थे। इसके अतिरिक्त आप बंगला, संस्कृत, ज्योतिष, मंत्र-शास्त्र आदि विद्याओं के भी अच्छे ज्ञाता थे। ये महाशय रींवा नरेश महाराजा रघुराजसिंह के सम कालीन थे। रींवा नरेश आपका बहुत सम्मान करते थे। यहाँ के सिवाय आप दरभंगा नरेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह, बलरामपुर नरेश दिग्विजय सिंह, बूँदी नरेश रामसिंह तथा जैपुर और जोधपुर दरबार में भी पधारे थे।

काशी नरेश के यहाँ भी संत कवि गये थे, और वहाँ पर सरदार कवि से, कवि केशव दास के ग्रंथों पर विचार हुआ; जिसमें आपकी विजय हुई।

रींवा नरेश रघुराजसिंह जी ने संत कवि की प्रशंसा में एक छंद बनाया था; वह इस प्रकार है—

सवैया

साधन साधु के साधि सबै करख्यौ रस-रासि जलै रवि सान है।
त्यों कर आपने सों बरसाय कह्यौ जन हीतल सीतल थान है॥
श्री रघुराज सनाथ कै केतिक सिख्य सयान औ हौंहूं अयान है।
लक्षत लक्ष में दक्ष विचक्षन संत समान नहीं कवि आन है॥

इस प्रकार अपनी प्रशंसा सुनकर फिर आपने कभी रींवा नरेश के सम्मुख दान के लिये हाथ नहीं फैलाया। और अन्य राज्यों में आश्रय के लिये भ्रमण करते रहे।

एक बार आप बूंदी नरेश महाराजा रामसिंह के दरबार में गये थे। महाराजा साहब से मिलने के लिये कई मास टिके रहे; परन्तु वहां के कवियों तथा कारभारी लोगों के द्वेष के कारण भेंट न हो सकी। अन्त में दुःखित होकर एक दोहा बनाया और गढ़ के फाटक पर चिपका कर, वहां से प्रस्थान कर दिया। वह दोहा यह है—

सतयुग त्रेता द्वापरहु, फिरे सन्त के धाम।
अब कलियुग में सन्त सों, नज़र चुरावत राम॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब महाराज को विदित हुआ, तो स्वयं आकर उस दोहे को पढ़ा; तब विदित हुआ कि कोई संत कवि आये थे। वे निराश होकर लौट गये। तब महाराज ने सवार दौड़ाये। उन्होंने कविराज जी से लौट चलने को कहा; परन्तु उन्होंने नहीं माना। तब सवार वहीं ठहरने की प्रतिज्ञा संत कवि से लेकर लौट गये। फिर महाराज ने कुछ उच्च पदाधिकारियों तथा कवियों को उन्हें लौटालने के लिये भेजा। अन्त में बहुत आग्रह करने पर आप लौट कर बूंदी गये। वहां उनका महाराज ने बहुत सम्मान किया। इस यात्रा में कविराज जी के पुत्र दिनेश कवि भी साथ थे। जो अभी वर्तमान हैं। यद्यपि वृद्ध होगये हैं।

महाराजा बलराम पुर की आज्ञा से आपने कालिका-नख-शिख रचा था। जो कि बहुत उत्तम और भाव पूर्ण ग्रंथ है। सुनिये, सन्त कवि दुर्गा जी के किस रूप का ध्यान करते हैं—

घनाक्षरी

चमकैं निरंजित मयूखैं मणिमाल जड़ी,
मुकुटै उपेन्द्र इन्द्र कंजज प्रकासिनी।
लीन्हें उपहारैं सुर किन्नरी खड़ी हैं सौंह,
दर्प भरी दर्पण दिखावैं रमा दासिनी॥
वारुणी सवारैं केस काम वाम सेज स्वच्छ,
रंजिनी हिये की चौंर ढारैं पाक-सासनी।
सन्त मुद रासिनी प्रभासिनी विभूति विस्व,
त्रिगुण उपासिनी बिराजैं विंध्य-वासिनी॥

अब सन्त कवि अपने द्वार-द्वार फिराने की शिकायत भी माता जी से करते हैं; अवलोकन कीजिये—

घनाक्षरी

कुंदन के कलस उरोज-पय प्याय नीके,
मंगल को दानि गण नायक कहायो है।
तैसाई षड़ानन नरायन को अवतार,
विक्रम अपार जो पुराणनि में गायो है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारक-असुर सुरकंटक संहारि मारि,
सकुनि कराल कौञ्च सिखर ढहायो है।
जाय कै कपूत क्यों फिरावे द्वार-द्वार हाय,
तारिणी तिहारो तनै संतऊ कहायो है॥

यह ग्रन्थ महाराजा बलरामपुर ने राज्य की ओर से लैथो में प्रकाशित कराया है। ग्रंथ बड़ी ही उच्चकोटि का है। कहा जाता है कि महाराजा बलरामपुर ने भी संत जी को एक प्रशंसा सूचक पत्र दिया था। जिसका भाव यह है—

खुशखलीका खुश सलीका रहते हैं इनसे महाराज।
इसलिये इनको सब कहते हैं कविराज॥

कवित्त

रीवां राजधानी जन्म भूमि थल मध्य जम्यौ,
रम्यौ देश-देश यश रस लै उताल है।
विद्या की बड़ाई पाई उच्चता विशद शाखा,
काव्य-गुण-अलंकार पल्लव विसाल है।
आयो बलरामपुर छाया करिवे को, पुनि-
रागमके हेतु माग्यौ विदा यहिकाल है।
भूप दिगविजै सिंह सारटी फिकट देत,
संत कवि कविता में सरस रसाल है॥

कविराजजी ने दरभंगा नरेश लक्ष्मीश्वर सिंह जी की आज्ञा से लक्ष्मीश्वर-चन्द्रिका नामक अलङ्कार का बहुत उत्तम ग्रन्थ रचा है। आइये पाठकगण! इसकी भी बानगी देखिये और आनन्दित हूजिये—

कैतवापन्हुति का उदाहरण देते हुए कवि नायका का वर्णन करता है—

उन्नत सैल उरोजन ते कढ़ि गंग की है छवि नीरज हार में।
रोमनिकी अवली कल राजति भ्राजति भानुजा सोभ अपार में॥
दोउन के वर संगम में मन आवत संत के यौंही विचार में।
चन्द कलंक छुड़ाइवे काज नखत्तत के मिसि मज्जत धार में॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितना सरस, भावपूर्ण, गंभीर और अलंकारिक वर्णन है। संत कवि द्वारा नर्मदा-शतक नामक एक छोटा सा ग्रंथ भी नर्मदा की स्तुति में रचा गया है। उसका भी एक उदाहरण लीजिये—

घनाक्षरी

आनन्द के आल-बाल सागर सुधा के कंज,
संत मन मधुकर मोद के करन हैं।
जीवन की मूरि रूरि आंगुरी नखनि जोति,
तारका कुसुम चंद—रवि भा हरन हैं॥
अंकुस कुलिस अध ऊरध विराजै रेख,
लेख जग जाकी असरनि के सरन हैं।
अघ भय खंडन विहण्डन कितेक बाधा,
मण्डन मही के रेवा रावरे चरन हैं॥

अब संतकृत विनय-पचीसी से दो दोहे भी पाठकों की भेंट हैं—

मोर मुकुट धर लकुट धर, गोबर्द्धन धर बेनु।
केस-कंस धर चरण की अधम उधारन रेनु॥१॥
पटुकी खोलि खुशी दई सुनि पंचाली टेर।
सो कारण अब चाहिये नाथ न इतनी देर॥२॥

सन्त जी ने राम-रावण के युद्ध का कैसा ओज पूर्ण तथा विशद वर्णन किया है; कि पढ़ते-पढ़ते हृदय ओजस्व पूरित होजाता है। देखिये—

घनाक्षरी

आसमान छुअत निसान फहरात आवैं;
गरजत आवैं यातुधान जो पहष में।
बीसौ हस्त धारे शस्त्र आयौ दस मस्त देषि,
आसन तें ठाड़े भये राम तब रोस में॥
स्याम जल जात गात कुंदन से रंगन में,
मंगल बिराजै रघुनंदन के मुख में।
आपुहि तें आपु बान त्रोन ते कढ़न लागे,
आपुहि ते आपु रोदा चढ़िगो धनुष में॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त आप का सब से प्रसिद्ध ग्रन्थ विहारी-सतसई पर टीका है। जिन दो एक साहित्यिक सज्जनों ने उसे देखा है, उन्होंने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। उसमें दोहे के आलोचनात्मक सालङ्कार अर्थ किये गये हैं। कहा जाता है कि दिनेश जी (सन्त कवि के पुत्र), उस पुस्तक के दर्शन भी किसी को नहीं होने देते। ज्ञात नहीं इसमें कितना तथ्य है? यदि प्रकाशित हो जाय तो जनता को उससे अधिक लाभ पहुँच सकता है। साथ में सन्त कविकी कीर्ति भी चिरस्थायी हो सकती है। यदि वह अथवा उसका कोई भाग नष्ट हो गया; जैसा कि प्रकृति का नियम है; तो फिर वह सम्पत्ति कदापि हाथ नहीं आ सकती। अशिक्षित व्यक्ति ही इस प्रकार की धारणा कर सकते हैं।

संत कवि का देहावसान फागुन कृष्ण ३ सं० १९५० वि० में काशी जी में हुआ था।

आप की कविता अत्यन्त हृदय-ग्राहिणी, मनोहर और बहुत उच्च कोटि की होती थी। रीवां वाले आज भी उनका नाम बड़े आदर से स्मरण करते हैं।

इनके पुत्र दिनेश कवि और पौत्र चँडिका प्रसाद अभी वर्तमान हैं। आप लोगों को चाहिये कि अपने पूर्वजों की कीर्ति और मान को सुरक्षित रखने के लिये, इन पुस्तकों के प्रकाशन का प्रबंध करें। साथ में धनी-मानी रईसों तथा प्रकाशकों को भी इस ओर ध्यान देना चाहिये। रीवां के कवि मंडल को विशेष ध्यान देना चाहिये। विनोद में संत कवि कृत केवल लक्ष्मीश्वर-चन्द्रिका का उल्लेख किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्नों की पिटारी

या

कवितान्वेषण

(१)

महा कवि भूषण

रतन कवि कृत फतह प्रकाश ग्रंथ श्रीनगर (गढ़वाल) नरेश फतह शाह के लिये रचा गया था। इसमें कवि ने कुछ कवियों के छंद भी उदाहरण-स्वरूप उद्धृत किये हैं। इन्हीं में भूषण कृत दो छन्द भी हैं।

भूषण कवि कमाऊँ नरेश ज्ञानचंद के दरबार में गये थे। और वहीं से श्री नगर नरेश फतहशाहि के दरबार में भी पहुँचे थे। उसी समय कुछ छंद गढ़वाल नरेश की प्रशंसा में रचे गये हैं। वे पाठकों की सेवा में अवलोकनार्थ उपस्थित हैं—

घनाक्षरी

लोक ध्रुव लोकहु तें ऊपर रहैगो भारो,
भानु तें प्रभानि को निधान आनि आनैगो।
सरिता सरिस सुर सरितै करैगो साहि,
हरिते अधिक अधिपति ताहि मानैगो॥
ऊरध परारध तें गनती गनैगो पुनि,
वेद तें प्रमाण सो प्रमान कछू जानैगो।
सुजस तें भल्यों मुख भूषण भनैगो बाढ़ि,
गढ़वार राज पर राज जो बखानैगो॥१॥
देवता को पतिनी को पतिनी शिवा को हर,
श्री पति न तीरथ वे रथ उर आनिये।
परम धरम को है सेइबो न व्रत नेम,
भोग को संजोग त्रिभुवन जोग जानिये॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषन कहा भगतिन कनक मनि ताते,
विपति कहा वियोग सोग न बखानिये।
संपति कहा सनेह न गथ गाहिरो गेह,
सुख कौं निरखिबोई मुकुतिन मानिये ॥२४

फतह शाह ने सं० १७४१ से सं० १७७१ वि० तक और ज्ञान-चन्द्र ने सं० १७५७ वि० से सं० १७६५ वि० तक राज्य किया था। अतः इसी बीच में भूषण ने किसी समय दोनों राज्यों में भ्रमण किया था। वहीं से लौट कर महाकवि भूषण महाराजा साहू की सेवा में गये थे।

(२)

महाराजा भगवन्तसिंह खीची

असोथर नरेश महाराज भगवन्तसिंह खीची के नाम से पाठक भली-भांति परिचित हैं। आप ने अपनी भुजाओं के पराक्रम से एक छोटे से राज्य को बढ़ा कर बहुत विस्तृत कर लिया था। नित-प्रति युद्धों तथा राजकीय कार्यों में निरत रहने पर भी आप सर-स्वती की सेवा करते रहते थे। आप की कुछ फुटकर कविताएं तथा दो-एक ग्रन्थ भी प्राप्त हैं। कविता बड़ी ही ओजस्वनी होती थी। तथा बहुत से प्रसिद्ध-प्रसिद्ध कवियों के आश्रयदाता थे। महाकवि भूषण के खीची की मृत्यु-संबंधी दो छंद पाठक पढ़-चुके हैं। आज कवीन्द्र (उदयनाथ) कृत एक छन्द और भी पाठकों की भेंट है सुनिये—

घनाक्षरी

दान गये दुनी तें गुमान पुरबासिन के,
गुनिन के गांठनि तें मानिक से छूटिगो।
जूझे भगवन्त जू के धरा सों धरम गयो,
सरम के सागर को सेतु ऐसो फूटिगो॥
भनित कविंद वही हिये में परी है हूक,
कविन की कविताई कोबि मनहूटि गो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविन की कामना कौं पूरन करैगो कौन,
ताते कलिहू में कलपद्रुम सो टूटिगो ॥

इस छंद में महाकवि भूषण की तत्संबंधी कविता की छाया का दर्शन हो जाता है। दो एक चरणों में तो भाव तथा पद सादृश्य भी अच्छा है।

एक छंद महाराजा भगवंतसिंह की प्रशंसा में और भी प्राप्त हुआ है। अवलोकन कर आनन्दित हूजिए—

ऐसी मारु मारि तुरकाने को मिटाइ दीन्हों,
चहुंधा सुगंध फैलो जस की चमेली को।
तब चढ़ि आयौ दतिया को राव रामचन्द,
धरै पग आगे भगि परत पछेली कौं ॥
ह्वै गयौ फकीर कमरुद्दी खां उजीर तब,
डारि गल डोरा अपकीरति की सेली कौं।
थाह लै-लै थाकि गो मलाह लौं दिली को कंत,
अंत नहिं पायो भगवन्त की दिलेली को ॥

इस छन्द के रचयिता का पता नहीं; परन्तु कविता बहुत उच्च कोटि की ओज व प्रसाद गुण पूर्ण है। और भूषण के उत्तम छंदों से टक्कर खाती है।

यदि कोई साहित्य-सेवी सज्जन इस पर कुछ प्रकाश डाल सकें तो बहुत अच्छा हो।

(३)

महाकवि घनश्याम शुक्ल

घनश्याम शुक्ल भी एक बड़े उच्च कोटि के कवि थे। आपने भी भूषण की भांति कुछ घटनाओं का ऐसा उत्तम वर्णन किया है कि एक ही छंद से देश की परिस्थिति और राज्य की शासन प्रणाली का अच्छा परिचय मिल जाता है। राजाओं का बहुधा स्वभाव पड़ जाता है, कि अपने आश्रित किसी व्यक्ति पर अत्यधिक विश्वास करने लगते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि राज की बाग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डोर उसी व्यक्ति के हाथ में चली जाती है; और राजा कुछ ही दिनों में काठ पुतली के समान बन जाता है।

महाकवि घनश्याम ने भी इसी संबंध में कई राज्यों में भ्रमण कर, वहां का भली प्रकार अनुभव प्राप्त करके एक छन्द में उनकी शासन प्रणाली का बड़ा अच्छा वर्णन किया है; देखिये, शुक्र जी क्या कहते हैं—

घनाक्षरी

भूप तेजसिंह के निवाजी दरगाही बढ्यौ,
राउत सुवंसा बढ्यौ खीची सिरताज के।
ईश्वरी बहादुर के अनुआं महाउत भी,
तुंडवा कहार अनुरुद्ध सिंह राज के॥
कहैं घनश्याम राज-काज में प्रवीन भये,
जाहिर अनंतिया महीप जुगराज के।
तानी सारखानी के भवानी चोबदार,
बकाउल्ला के गुमानी भगवानी महाराज के॥

इस छंद में ८ राजाओं के आश्रित आठ व्यक्तियों के अधिकारारूढ़ होने का वर्णन किया गया है; जिनसे प्राचीन उक्त राजाओं की परिस्थिति का ज्ञान तो होता ही है। साथ में उनके ऐतिहासिक काल का भी पता लग जाता है। वर्तमान राजाओं को भी इससे अच्छी शिक्षा मिलती है।

(४)
दत्त कवि

इस कवि ने 'हीरा' को लक्ष करके बड़ी अनोखी अन्योक्ति कही है। सुनिये और आनन्द पान कीजिये—

खानि ते कढ्यौ है खरसान पै चढ्यौ है फेरि,
कंचन मढ्यौ है त्यौं अनूप ज्योति जाग्यौ तैं।
कीमति बढ्यौ है चढ्यौ पानि में प्रवीनन के,
आदर अपार पाइ प्रेम रस पाग्यौ तैं।
दत्त कवि कहै जढ्यौ मुकुट महीपन के,
हारबनि कामिनी हिये में अनुराग्यौ तैं।

113069

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एरे सुनु हीरा ! भयो जगत जहीरा वीर,
पते पर नेकु ना कठोर पन त्यागो तैं ॥

पाठक गण ! कितनी सुन्दर अन्योक्ति है कि कवि की बार-बार प्रशंसा करने को जी चाहता है।

(५)

शंभु कवि

किसी व्यक्ति को पतित होता हुआ जानकर उसे चेताने के लिये इस अन्योक्ति द्वारा कितनी मीठी चुटकी ली है श्रवण कीजिये—

जाके मूल थल में अनेक कुश कंकर हैं,
कंटक वलित अङ्ग जा में आइ फूले हो।
कोऊ कवों आवत न याके पास आसकरि,
पथिक निरास जात फूलन में फूले हो॥
सोऊ रज रंजित उतार तरु नीचन की,
शंभुनाथ कहत वृथा ही अनुकूले हो।
जानत न शील जाहि अपत बकील महा,
कैसे या करील में भँवर आजु भूले हो॥

यह करील पर भँवर के लुब्धायमान होने की बड़ी ही मनोहारिणी अन्योक्ति है पढ़िये और दाद दीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रासप्रान्त में हिन्दी

मद्रास प्रान्त में हिन्दी को आशातीत सफलता हुई है। इस प्रान्त ने महात्माजी की आज्ञा को शिरोधार्य्य कर के हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया है। कुछ लोगों का कथन है कि राष्ट्रभाषा का राजनीतिक कार्यों से कुछ संबन्ध नहीं है। परन्तु इसका प्रचार राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ-साथ हुआ है। आजकल भी कांग्रेस के ही आदमी अधिकतर हिन्दी सीखते हैं।

अब इस प्रान्त में हिन्दी के संबंध में किसी को मदभेद नहीं है।

असहयोग के शिथिल पड़ जाने से हिन्दी का कार्य भी शिथिल पड़ गया है।

आन्ध्र प्रान्तों में तो म्युनिस्पल और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के अपनाने से कार्य चल भी रहा है। अन्यत्र दशा शोचनीय है। नेताओं का ध्यान भी इस ओर नहीं है।

अतः सम्मेलन को इस संबंध में क्या करना चाहिये ?

यहां पर श्रीसत्यमूर्ति जी (स्वराजिष्ट नेता) के प्रयत्न से मद्रास विश्वविद्यालय में हिन्दी को स्थान मिल गया है। अतः मेट्रिक और इंटरमिजियट के विद्यार्थियों के लिये यह ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ायी जाती है। परन्तु एस. एल. सी. परीक्षा गवर्नमेंट की है। उसमें हिन्दी को अभी तक स्थान प्राप्त नहीं है।

इस प्रान्त में अधिकांश विद्यार्थी S.S.L.C. परीक्षा में ही सम्मिलित होते हैं। मेट्रिक में बहुत कम, फिर कालेज में सबके सब विद्यार्थी S.S.L.C. पास करके ही जाते हैं। और वहां हिन्दी की पढ़ाई का कोई प्रबंध नहीं है। अतः चाहने पर भी कालेज में हिन्दी नहीं ले सकते। फिर भी इस वर्ष ५-६ विद्यार्थी बैठ रहे हैं। उनके लिये पाठ्य-पुस्तकें भी नियत कर दी गयी हैं। परन्तु यह संख्या दाल में नमक के बराबर भी नहीं है। जहां प्रतिवर्ष १०००० विद्यार्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

S.S.L.C. में बैठते हैं वहां ५-६ विद्यार्थी किस गिनती में हैं। अतः हमें इससे सतुन्ष्ट न होना चाहिये। और S.S.L.C. में हिन्दी को स्थान दिलाने का प्रयत्न करना चाहिये।

अधिकारियों से पूछने पर विदित हुआ कि वे प्रान्त की भाषा न होने से हिन्दी को स्वीकार नहीं करते। परन्तु अंग्रेज़ी इस प्रान्त में किस की मातृ भाषा है। जिस पर लाखों रुपया पानी की तरह बहाया जा रहा है। परन्तु बृटिशराज्य होने से ऐसा नहीं पूछ सकते। गवर्नमेंट की शंकाओं का उत्तर देने से वह अवश्य हिन्दी को स्थान देगी।

इस प्रान्त में बहुत से उत्तर-भारत से मारवाड़ी आदि लोग आकर व्यापार के लिये बस गये हैं: जिनकी मातृभाषा हिन्दी है। प्रत्येक शहर में आपको मारवाड़ी मिलेंगे। जिनके बच्चों की शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं है, यद्यपि वे लोग भी टैक्स देते हैं। अतः उनके लिये हिन्दी का प्रबंध अवश्य होना चाहिये। यहां के मारवाड़ियों में अभी पर्याप्त जाग्रति नहीं है। इनमें जाग्रति की बड़ी आवश्यकता है। तब इनकी ओर से एक डेपुटेशन डाइरेक्टर महोदय की सेवा में भेजा जाय; ताकि कलकत्ता, बम्बई विश्वविद्यालयों की भांति यहां भी हिन्दी को स्थान मिल जाय। कालेजों के प्रिंसिपिल्स और स्कूलों के हैडमास्टरों से भी मिलकर आन्दोलन बढ़ाना चाहिये।

बहुत से मदरासी पुरुष उत्तरी भारत के आगरा, लखनऊ, प्रयाग, काशी, दिल्ली, लाहौर, बम्बई और कलकत्ते आदि नगरों में रोज़गार के लिये जाते-आते रहते हैं; अतः उनके लिये भी हिन्दी की अत्यंत आवश्यकता है।

गवर्नमेंण्ट ने मुसलमानों की क़ौमी ज़बान 'उर्दू' के लिये जब प्रबंध किया हुआ है, तब हिन्दुओं की भाषा अथवा देश की भाषा हिन्दी का भी अवश्य प्रबंध करना चाहिये। यह हिन्दुओं की धार्मिक भाषा है। इस प्रान्त के लोग हिन्दी की आवश्यकताको समझते हैं। उत्तरी भारत के धुरन्धर विद्वान श्रीबाबू भगवानदासजी जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सज्जनों को इस समय मद्रास के दैनिक अंग्रेज़ी पत्रों में लेख लिखने चाहिये।

हिन्दी कवियों और साहित्य के विषय में भी लेख लिखना चाहिये। मद्रास के प्रसिद्ध पत्र 'हिन्दू,' 'स्वराज्य' 'स्वदेश-मित्रम्' 'आन्ध्र-पत्रिका' 'डेली-एक्स-प्रैस', 'न्यु-इंडिया,' और 'मद्रास-मेल' हैं।

इन में लेख लिखने का प्रबंध कीजिये। मद्रास में S.S.L.C. कक्षा में हिन्दी को प्रवेश कराने से ही अच्छा प्रचार हो सकता है। कुछ उत्तरी भारत से अंग्रेज़ी के विद्वान भी यहां दौरा लगावें तो बहुत जाग्रति हो सकती है।

आर्य-समाजों और हिन्दू-सभाओं से भी इस कार्य में पर्याप्त सहायता मिल सकती है। आशा है आप इस ओर विशेष ध्यान देने की कृपा करेंगे; तभी हिन्दी को अपना उचित स्थान दिलाने में समर्थ हो सकेंगे। प्रयत्न से सफलता होती ही है।

एक तामिल-प्रान्तीय हिन्दी-भक्त

अखिल-भारत-वर्षीय हिन्दी-अध्यापक सम्मेलन

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सोलहवें अधिवेशन के अवसर पर वृन्दाबन में सम्मेलन से प्रसिद्ध कार्य्य कर्त्ता देश भक्त अध्यापक रामरत्न जी के सभापतित्व में अध्यापक-सम्मेलन की बैठक हुई। अनेक गण्यमान्य साहित्य-सेवियों के अतिरिक्त युक्त-प्रदेश, बिहार, पंजाब और मध्य प्रदेश के अनेक अध्यापक तथा अध्यापक-कार्य्य में रुचि रखने वाले बहुत से सज्जन सम्मिलित हुए। एक स्थायी संगठन की आयोजना हुई। पदाधिकारी उस समय तथा बाद में एक वर्ष के लिये इस प्रकार चुने गये :—

सभापति—देवी हेमन्त कुमारी चौधरानी, पटियाला।

उपसभापति—पं० रामचन्द्र भार्गव मथुरा।

पं० रघुवर प्रसाद द्विवेदी जबलपुर।

महा महोपाध्याय शिवदत्त शास्त्री, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बा० बद्रीनाथ वर्मा, एम-ए०, पटना।
बा० कन्हैया लाल बी० ए०, अजमेर।

प्रधान मंत्री—अध्यापक हरिकृष्ण राय, "बिशारद" बैरिया, बलिया।
सहायक मंत्री—हर मुख्य प्रान्त से इस प्रकार चुने गये।

युक्त-प्रदेश—पं० रघुबर दयालु मिश्र, विशारद, काशी।
बिहार—मौलाना लतीफ़ हुसेन, मुज़फ्फरपुर।
राजपूताना—पं० अयोध्या प्रसाद, शर्मा, बीकानेर।
मध्यप्रदेश—पं० भगवत प्रसाद गंगेले, हरदा।
मदरास—पं० हृषीकेश शर्मा त्रिपिलीकेन मदरास।
बंगाल—पं० रामशङ्कर त्रिपाठी, स्वतंत्र कार्य्यालय कलकत्ता।

कोषाध्यक्ष—पं० कमलाकर द्विवेदी, एम-ए. डिप्टी कलेक्टर, बलिया,
आय-व्यय-परीक्षक—साहित्य रत्न पं० श्री कृष्ण दत्त पालीवाल एम-ए०

पदाधिकारियों के अतिरिक्त १०१ सदस्यों की स्थायी-समिति रहेगी, जिनका चुनाव इस वर्ष समाचार-पत्रों में विज्ञप्ति निकालकर हर प्रान्त के प्रधान स्थान में एक साधारण सभा करके होगा, प्रान्तवार सदस्यों की संख्या इस प्रकार होगी:—

बंगाल—६	मदरास—४
बिहार—१५	बम्बई—६
संयुक्त प्रान्त—२५	ब्रह्मा—४
राजपूताना—११	आसाम—२
पंजाब—१०	
मध्यप्रदेश—१५	

स्थायी-समिति के सदस्यों और पदाधिकारियों को सम्मेलन का सदस्य बनना आवश्यक होगा, सदस्य शुल्क एक रुपया वार्षिक देने पर सम्मेलन के उद्देश्यों से सहानुभूति रखने वाला हर एक मनुष्य सदस्य बन सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य और नियमों का ढांचा तैयार करने के लिये प्रयागस्थ ५ सज्जनों की एक उपसमिति बना दी गयी है।

अध्यापक सम्मेलन का अगला अधिवेशन हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के साथ भरत पुर में होना निश्चित हुआ है।

१—प्रान्तीय मंत्रियों से प्रार्थना है, कि अपने-अपने प्रान्त के सदस्यों को प्रान्त के किसी मुख्य स्थान में साधारण सभा करके चुन लें; और उनके नाम प्रधान मंत्री के पास शीघ्र भेजने की कृपा करें।

२—समस्त-हिन्दी प्रेमी अध्यापकों से प्रार्थना है कि अभी से सम्मेलन के सदस्य बनाना प्रारम्भ कर दें और उनकी सूचना तथा शुल्क प्रधान मंत्री के पास भेज दें, नियम स्वीकृत हो जाने पर छपा हुआ फार्म पीछे से भरवा लिया जायगा।

३—उपसमिति से प्रार्थना की गई है कि शीघ्र नियमावली का ढाँचा तैयार करके भेजे। पूरी समिति बन जाने पर सदस्यों के पास राय के लिये भेजा जायगा और स्थायी समिति की बैठक में स्वीकृत हो कर अगले वर्ष भरतपुर अधिवेशन तक उसके अनुसार कार्य होगा। भरतपुर सम्मेलन में नियमावली पेश होगी, और उसपर आवश्यक संशोधन होगा। स्वीकृत होने पर उसका अन्तिम रूप समझा जावेगा।

हरिकृष्ण राय "विशारद"

प्रधान-मंत्री-बैरिया, बलिया

नोट—इसमें कुछ संदेह नहीं कि अध्यापकों द्वारा हिन्दी का बहुत उपकार हुआ है; इस संगठन के हो जाने से भविष्य में और भी अधिक सुश्रृंखलित तथा नियमित रूप से होने की आशा है; दो अध्यापक-मण्डल और दोनों अखिल भारतीय होने से क्या स्थिति होगी, विचारणीय है। क्या संचालकगण ध्यान देंगे। सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय

स्टाम्पों में हिन्दी

गत मास में हम इस विषय की सूचना अपने पाठकों को दे चुके हैं। अभी हाल में हमारे पास एक टाइप किया हुआ पत्र इसी संबंध में एक विहारी सज्जन ने भेजा है, तदर्थ धन्यवाद है; उसका सारांश हम नीचे देते हैं—

कुंवर गङ्गानन्द सिंह जी महोदय एम. ए. एम. एल. ए. (श्रीनगर-पुर्नियां) ने १३ मार्च सन् १९२५ ई० को बड़ी व्यवस्थापक सभा में स्टाम्पों में हिन्दी को स्थान न देकर सरकार ने जो भूल की थी; उसका संशोधन कराने के लिये नागरी लिपि और हिन्दी भाषा की श्रेष्ठता दिखलाते हुए एक प्रभावशाली भाषण दिया। कई मुसलमान मेम्बरों ने अपने स्वभावानुसार इसका घोर विरोध किया। परन्तु कुँवर महोदय ने उन सबका मुँह तोड़ उत्तर देकर विरोधियों को चुप करा दिया।

माननीय बासिल ब्लैकेट महोदय ने कुमर सा० के भाषण का उत्तर देते हुए आपकी इस मांग को स्वीकार किया, और २२ अप्रैल सन् १९२६ ई० के गज़ट में आज्ञा पत्र प्रकाशित कर दिया।

हमें हर्ष है कि सर्कार ने अपनी भूल स्वीकार कर उचित संशोधन कर दिया।

इस परिश्रम के लिये कुमर सा० हिन्दी-प्रेमियों के धन्यवाद पात्र हैं। हम उनकी इस सफलता पर सहर्ष बधाई देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा है इसी प्रकार अन्य माननीय मेम्बर भी अपने कर्त्तव्य का पालन कर, हिन्दी प्रेमियों को अनुगृहीत करते रहेंगे।

ग्वालियर राज्य में शिक्षण-सप्ताह

जयाजी प्रताप से हमें यह जानकर हर्ष हुआ कि ग्वालियर राज्य में शिक्षा दिन प्रति दिन उन्नति पर है। अभी शिक्षण-सप्ताह मनाया गया था; जिसमें बड़े-बड़े विद्वानों के भाषण हुए और निबंध पढ़े गये। शिक्षा सम्बन्धी प्रदर्शिनी भी हुई थी। शिक्षा में उन्नति देने के लिये एक मिडिल स्कूल को हाई स्कूल और उज्जैन हाई स्कूल को इन्टर मिडियट कालेज कर दिया है।

शिक्षा-विभाग का यह कार्य प्रशंसनीय और अंगरेज़ी राज्यतक को अनुकरणीय है। पिछड़ी जातियों को उच्च शिक्षा देने के लिये विशेष आयोजन किया जा रहा है। उन्हें देश-विदेश में अध्ययन के लिये छात्रवृत्तियां दी जायेंगी। तथा राजपूत छात्रों के लिये राजपूत हितकारिणी सभा की सफलता में राज्य की ओर से ४० प्राइमरी स्कूल खोले जा रहे हैं।

सब डिप्टी इन्सपैक्टर का हिंदी द्वेष

सहयोगी हिन्दी संसार लिखता है कि सुलतानपुर सब डिप्टी-इन्सपेक्टर हामिदहुसैन ने प्राइमरी स्कूल रिखौली के प्रधान अध्यापक पर हिन्दी में रजिस्टर आदि भरने पर बहुत धमकाया और जुर्माना किया। तथा उर्दू में भरने को कहा।

इस संबन्ध में हम पूर्व ही कुछ अपने विचार प्रकट कर चुके हैं। इन अत्याचारों के बन्द होने के लिये अति शीघ्र कार्य करने की आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के कार्यक्रम में सुधार की आवश्यकता

इसमें कोई सन्देह नहीं; सम्मेलन को साहित्यिक बनाने की बड़ी आवश्यकता है।

कुछ वर्ष पूर्व सं० १९८१ वि० में इसके विचारार्थ एक सब कमेटी भी बनी थी। परन्तु उसका कथन कार्य रूप में परिणत न हो सका।

मेरे विचार से सम्मेलन के कार्य-क्रम में अधिक परिवर्तन की आवश्यकता है।

इसे अन्य भाषा-भाषी प्रान्तों की भाँति कई विभागों में बाँट देना चाहिये।

प्रबंध-विभाग को मुख्य सम्मेलन माना जाय; इसमें सभापति का भाषण, प्रचार, प्रस्ताव, धन संग्रह आदि बातों पर विचार किया जाय।

(१) साहित्य-परिषद्, (२) इतिहास-संशोधन-परिषद् (३) विज्ञान-परिषद (४) दार्शनिक-परिषद (५) अध्यापक-सम्मेलन, (६) कविसम्मेलन, (७) प्रदर्शिनी, (८) सम्पादक-सम्मेलन आदि को भी सम्मेलन के साथ किया जाय, परन्तु इनका प्रबंध तत्संबंधी सभाओं पर ही छोड़ दिया जाय। साहित्य-सम्मेलन से यथा संभव सहायता दे दी जाया करे। नं० १ व २ को भी सम्मेलन का प्रधान अँग माना जाय तो अच्छा है।

प्रस्तावों की सूची अधिक न होने पावे।

कम से कम १० निबंध अवश्य पढ़े जाया करें।

भिन्न-भिन्न परिषदों तथा सम्मेलनों के अलग-अलग सभापति चुने जाया करें।

ये सम्मेलन भी प्रधान सभापति की भांति अपने-अपने सभापति पूर्व से ही चुन लिया करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-दरबार, का भी आयोजन होना चाहिये। जिसमें विवाद-ग्रस्त विषयों पर विचार हो। अभिनय, कवि-दरबार आदि का भी आयोजन होना चाहिये। आशा है विद्वत् समाज अपनी सम्मति प्रदान कर अनुग्रहीत करेगा।

सिन्ध में देवनागरी आन्दोलन।

पं० जयचन्द्र जी विद्यालङ्कार प्रचारक सम्मेलन, प्रयाग ने सरस्वती में उक्त शीर्षक एक लेख प्रकाशित किया है।

आपने प्रान्तिक भाषाओं से देवनागरी का संबंध निर्धारित करते हुए सिन्धी भाषा को अरबी अक्षरों में लिखे जाने की त्रुटियों का दिग्दर्शन कराया है।

वहां पहिले सिन्धी लिपि ही प्रचलित थी; जो कि देवनागरी का ही रूपान्तर है। परन्तु कुछ दिनों से अरबी की आज्ञा प्रचारित हो गयी है; जिससे वहाँ के हिन्दुओं को अत्यन्त कष्ट होने लगा है। अब भी वहां के कुछ ब्राह्मणों ने सिन्धी लिपि को अपना रक्खा है।

स्वामी गोविन्दानन्द जी ने हिन्दू संस्कृति और हिन्दी साहित्य के लिये बहुत आन्दोलन किया है।

पं० लोकराम-विष्णु शर्मा ने वहाँ का हिन्दू पत्र प्रथम सिन्धी भाषा और नागरी लिपि में निकाला था। पर न चल सका। तब अरबी लिपि करदी गयी। अब नागरी लिपि में भी एक संस्करण निकलता है।

इस समय फिर आन्दोलन प्रारंभ हुआ है। नागरी लिपि होने से एक लाभ यह भी होगा कि कच्छी लोग जिनकी भाषा सिन्धी से मिलती है। वे अरबी लिपि के स्थान में गुजराती पढ़ते हैं। यदि नागरी लिपि प्रचलित हो जाय तो वे भी सिन्धी भाषा स्वीकार कर लेंगे। विद्यालङ्कारजी ने अभी सिंध का दौरा लगाया था; वहां लोगों को हिन्दी सीखने के लिये उत्कट अभिलाषा है। कुछ सभाएं भी हुई; तथा हैदराबाद देवनागरी मंडल स्थापित कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करांची में भी, ७ जनवरी को एक बड़ी सभा हुई। सिन्ध में हिन्दी-प्रचार-कार्यालय खोलने का प्रस्ताव पास हुआ। करांची में मारवाड़ी-समाज भी सहायता देने को प्रस्तुत है।

सिन्ध-प्रान्तीय हिन्दू-सम्मेलन के अवसर पर, जो श्रीयुत जयकर के सभापतित्व में हुआ था। एक उपसमिति कुछ प्रोफ़ेसरों की बना दी गयी। जो देवनागरी-सिन्धी में पाठ्य पुस्तकें तय्यार करें। कुछ कन्या पाठशालाओं में शिक्षण कार्य प्रारम्भ भी हो गया है।

बम्बई विश्व विद्यालय द्वारा हिन्दी को स्थान मिल जाने से सिंध में हिन्दी प्रचार को अधिक उत्तेजना मिलेगी।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी का माध्यम

विश्व विद्यालयों में गणित, विज्ञान, दर्शन आदि सब विषय अंग्रेजी द्वारा पढ़ाये जाते हैं। विद्यार्थियों को मातृ-भाषा से भिन्न अंग्रेज़ी द्वारा शिक्षा देना भारत से भिन्न देशों में ढूंढने से भी न मिलेगा। यदि किसी विदेशी सज्जन के सम्मुख यह उल्लेख कर दिया जाय; तो वह क्या धारणा हमारे प्रति बनायेगा, कहने की आवश्यकता नहीं।

स्थानीय विश्वविद्यालय ने एक कदम आगे और भी बढ़ाया है; और वह हमारे भारतीयों की ही कृपा का फल है। वह यह कि—इस प्रान्त की मातृ-भाषा हिन्दी पढ़ाने के लिये अंग्रेजी का माध्यम रक्खा गया है। विशेषता यह है कि हिन्दी के दोनों प्रोफेसर श्रीयुत धीरेन्द्र वर्म्मा जी तथा पं० देवीप्रसाद जी शुक्ल साहित्य-सेवी, हिन्दी प्रेमी और सम्मेलन के सदस्य हैं।

ज्ञात नहीं इन दोनों महानुभावों ने इस अत्याचार को कैसे सहन कर लिया। मुझे एम. ए. के दो एक विद्यार्थी मिले; उन्होंने भी इसे अनुभव किया; तथा वे भी इसे अनुचित समझते हैं। कुछ सज्जन कहते हैं। कि हिन्दी में शब्द नहीं है; अतः कठिनाई पड़ती है। परन्तु यह बहाना मात्र है। हिन्दू विश्वविद्यालय में कई वर्ष से हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एम. ए. की शिक्षा हिन्दी के माध्यम द्वारा दी जारही है। लखनऊ और अलीगढ़ में भी वर्नाक्युलर ही मीडियम है। अतः उनके इस कथन में कुछ भी सार नहीं। यहां जर्मन, फ्रांस, स्वीडन आदि देशों के विद्यार्थी हिन्दी पढ़ने नहीं आते; फिर यह ढकोसला क्यों किया गया है। हम विश्व विद्यालय के अधिकारियों तथा प्रोफेसरों से साग्रह अनुरोध करते हैं कि वे इस अन्याय को अति शीघ्र दूर करने का प्रयत्न करें।

टर्की में लिपि परिवर्तन

मैञ्चेस्टर गार्डियन के अभी हाल के वर्णन से विदित हुआ; कि अंगोरा पार्लियामेंट ने निश्चय कर लिया है; कि फारसी अक्षरों के स्थान में रोमन लिपि प्रयोग में लायी जाय।

इसमें सन्देह नहीं फार्सी लिपि अपूर्ण और दोष युक्त है। परन्तु टर्की एशियाई देश है। उसमें रोमन लिपि को स्थान देना उचित नहीं; वह किसी एशियाई लिपि को ग्रहण कर सकता है। और एशियाई लिपियों में नागरी-लिपि सर्वोत्तम है। यही नहीं दुनियां की तमाम लिपियों से सर्व श्रेष्ठ है। अतः टर्की को नागरी लिपि स्वीकार करना चाहिये आशा है श्री मान् राजा महेन्द्र प्रताप महोदय इधर ध्यान देने को कृपा करेंगे। अभी समय है। वहाँ पर इसका तजुर्बा किया जा रहा है। हिन्दी प्रेमियों को ध्यान देना चाहिये।

हिन्दी साहित्य-विद्यालय, काशी

श्रीयुत लाला भगवानदीनजी के अनवरत परिश्रम से काशी का साहित्य-विद्यालय बहुत उत्तम कार्य कर रहा है। अब तक यह संस्था भिन्न-भिन्न संस्थाओं की छत्र-छाया में स्थान पाकर अपना कार्य चलाती रही। अब वहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्तियों तथा प्रसिद्ध विद्वानों के नाम से एक लाख रुपये की एक अपील विद्यालय का भवन बनवाने के लिये हिन्दी भाषा-भाषी रईसों, जमींदारों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राताओं से की है। इसकी विशेषता यही होगी; कि इसमें साहित्य की उच्चकोटि की शिक्षा निशुल्क दी जाया करेगी। इसके सम्पूर्ण कार्य-कर्ता प्रोफेसर आदि अवैतनिक होंगे। जिसके लिये वहां के साहित्यिक धुरंधर विद्वानों ने अभी से अपने नाम लिखा दिये हैं। कई महानुभाव तो उसमें बहुत दिनों से अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

प्रत्येक हिन्दी-हितैषी और साहित्य-प्रेमी को इसमें योग देना चाहिये। आशा है धनी-मानी, सेठ-साहूकार, जमींदार-रईस, राजा-महाराजा सब उदारता से इसमें सहायता प्रदान करेंगे।

यह संस्था सम्मेलन से सम्बद्ध है; तथा उससे सहायता भी दी जाती है।

दानी महाशयगण, लाला भगवानदीन जी तथा रायकृष्णजी रईस काशी के पते से धन की सहायता भेज सकते हैं।

अधिकारियों द्वारा हिन्दी की अवहेलना

हमारे पास सम्मन के दो हिन्दी पर्त उर्दू लिपि में भरे हुए आये हैं; इनमें एक खां बहादुर शेख नसीरुद्दीन खां साहब मजिस्ट्रेट दर्जा अव्वल और दूसरा मिस्टर आर० हैंडू साहब स्पेशल मजिस्ट्रेट दर्जा दोयम के हस्ताक्षरों से भेजे गये हैं। जब इतने बड़े जिम्मेदार अधिकारी सर्कारी आज्ञा की अवहेलना करते हैं; तो साधारण लोगों को प्रोत्साहन होना स्वाभाविक है।

हम ज्ञात करना चाहते हैं; कि इन्होंने ऐसा किसकी आज्ञा से किया? क्या उच्च अधिकारी इस सम्बन्ध में उचित निराकरण करने का कष्ट उठावेंगे।

साथ ही हम कौंसिल के मेम्बरों से भी निवेदन करते हैं कि वे भी इस विषय पर विशेष प्रभाव डालने का प्रयत्न करें। मुख्यतः बाबू मङ्गलालजी वकील और पं० श्रीकृष्णदत्त जी पालीवाल से अनुरोध है; कि वे इस विषय को कौंसिल में उठावें और हिन्दी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपमान करने वालों को । त मार्ग पर लाने का प्रयत्न करें। ज्यों-ज्यों हिन्दी का विस्तार हो रहा है, त्यों-त्यों ऐसे लोग और भी कड़ाई करते जाते हैं। और प्रान्त की मातृ भाषा को नीचा दिखाना चाहते हैं।

प्रेम महाविद्यालय

पुरातन 'छात्र-समिति' प्रेम-महा-विद्यालय, वृन्दावन की सन् १९२४-२५ की वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। यह विद्यालय देश का बहुत अच्छा कार्य कर रहा है। इस प्रान्त में एक मात्र यही ऐसी संस्था है; जो दस्तकारी आदि की उच्च कोटि की शिक्षा देती है।

इस संस्था के प्रधान बाबू नारायणदासजी और मंत्री नलिनी कान्त मुकर्जी हैं। इस रिपोर्ट में लगभग १५० विद्यार्थियों के पते दिये हैं, जो कि भिन्न-भिन्न स्थानों में सफलता पूर्वक उच्च श्रेणी का कार्य कर रहे हैं।

इस समिति ने सन् २३ से २४ तक ५१ विद्यार्थियों को धन से सहायता की; इसके अतिरिक्त दीन छात्रों का भी कोष है; जिससे १६ छात्रों को सहायता प्राप्त हुई।

इसके प्रिन्सिपल डाक्टर गिड़वानीजी महोदय का रहे हैं। वायस प्रिंसिपल बाबू शिवशरणसिंह फाटक वाले हैं; जो कई वर्ष से कार्य कर रहे हैं।

हम हृदय से इसकी उन्नति के अभिलाषी हैं।

कोपरेटिव सोसाइटी

सहयोग समितियों का कुछ दिनों से भारत में भी प्रचार हो रहा है; अन्य प्रान्तों में तो इस की दशा कुछ सन्तोषजनक भी है। परन्तु संयुक्त-प्रदेश में अभी तक इनको कुछ भी सफलता नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिली। कई स्थानों पर मेरा निजका अनुभव भी इसी प्रकार का है।

अभी हाल में एक पम्फ्लेट इसी संबंध में आदरणीय पं० गुरुसेवकजी उपाध्याय असिस्टेंट रजिस्ट्रार कापरेटिव सोसाइटीज़ प्रयाग द्वारा प्राप्त हुआ है। स्थानाभाव से पूरा लेख पत्रिका में देने में असमर्थ हैं। अतः पाठकों को सारांश पर ही संतोष करना चाहिये; अब तक हिन्दी में इसका साहित्य नाम मात्र को भी नहीं है। उपाध्यायजी इसे 'पंचायती-सभाओं' नाम देना अधिक उपयुक्त समझते हैं और इसके द्वारा देशोद्धार का उपाय मानते हैं। करीब-करीब बात भी ठीक है।

प्रथम आपने कृषकों की दशा का वर्णन करते हुए ज़मींदार—काश्तकार के संबंध का उल्लेख किया है। इसकी उन्नति के लिये दोनों में मेल और प्रेम की बड़ी आवश्यकता बतलायी है।

ग्रामों में मजदूरों की न्यूनता और पैदावार की कमी के कारण बड़ी उत्तमता से दरशाये हैं।

सहयोग न रहने से जो हानियां हो रही हैं उनका चित्रण भी अच्छा किया है।

गवर्नमेंट के ग्राम्य-सुधार के लिये किये गये उपायों की अपूर्णता तथा उसके प्राचीन-पद्धति का अनुसरण करने का भी उल्लेख किया है।

संगठन के लिये यूरोप, अमेरिका और जापान का उदाहरण हमारे सम्मुख रक्खा है।

आगे चलकर महाजन के कड़े ब्याज लेने का कारण, उससे हानि तथा पंचायती सभाओं के लाभ वर्णन किये हैं। तथा उसका विधान भी बतलाया है। इस संबंध में जापान के एक धनी का उल्लेख किया है कि उसने इन सभाओं के द्वारा किस प्रकार अपने देश के किसानों को ऋण-मुक्त कराया।

मुसलमानों को भी सूद से बचने का यही उपाय बतलाया है। क्योंकि इनमें मुनाफ़ा बांटा जाता है। सूद नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके द्वारा किफायत शारी के ढंग भी बतलाये या वर्तें जाकर उन्नति की जा सकती है। जिससे बरबादी से बच सकते हैं।

झगड़े निपटाने की पंचायत अलग बनाकर आपसी बखेड़े भी इसी सहयोग से सुगमता में निपटा सकते हैं।

आपने अन्य देशों की तुलना करते हुए ज़मीन की उत्पादन शक्ति, बढ़ाने के उपाय बतलाये हैं; जिससे बेकारी दूर होना भी सुगम है। पशुपालन और उनकी नस्लें बढ़ाने के उपाय बतलाये हैं। देहातों के सुधार की आवश्यकता पर आपने बहुत ज़ोर दिया है। इसके लिये दो साधन मुख्य माने हैं—शिक्षित नवयुवकों और अध्यापकों द्वारा यह कार्य ग्राम-ग्राम में प्रचलित किया जा सकता है। तथा प्रचार बढ़ाया जा सकता है।

इससे विद्यार्थियों में स्काउट आन्दोलन से भी सहायता ली जा सकती है। इसके द्वारा शिक्षित गण नौकरी की ओर व्याकुल हो कर जाने की अपेक्षा अपने-अपने घरों पर ही कार्य कर सकते हैं। चरित्र-सुधार, सफ़ाई, आपत्ति में सहायता आदि कार्य सुगमता से किये जा सकते हैं।

अन्त में अध्यापकों व नवयुवकों को किस प्रकार कार्य करना चाहिये? बतला कर उपाध्याय जी ने निबंध समाप्त कर दिया है।

उपाध्यायजी ने यूरोप के कई देशों स्काटलैंड, डेन मार्क, इटली आदि में बहुत दिनों तक भ्रमण कर और वहां से ज्ञान प्राप्त कर के प्रान्त की सहयोग-समितियों का कार्य हाथ में लिया है। आशा है आप के द्वारा इस प्रान्त में समितियों को बहुत लाभ पहुँचेगा।

आपने अंग्रेज़ी में इस संबंध की एक उत्तम पुस्तक लिखी है। हमें पूर्ण आशा है कि हिन्दी में भी पंचायती-सभाओं पर एक उत्तम पुस्तक लिखने की कृपा करेंगे।

इस प्रान्त की समितियों की जांच के लिये अभी हाल में कमीशन बैठा था। उसकी रिपोर्ट अभी प्रकाशित नहीं हुई है। उसमें संयुक्त-प्रान्तीय सोसाइटियों के रजिस्ट्रार महोदय श्रद्धेय पं० श्यामबिहारीजी मिश्र भी थे। आशा है आप के द्वारा उसमें कुछ मौलिक सुधार अवश्य किये गये होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दी-जगत्

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड फ़तेहपुर ध्यान दे !

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड फतेहपुर ने एक प्रस्ताव पास किया था कि बोर्ड का कुल काम हिन्दी में हुआ करे। हिन्दी में कुल कार्य होना प्रारम्भ भी हो गया था; किन्तु कुछ समय के पश्चात् फिर अधिकतया वे काम उर्दू में ही निकलने लगे हैं। सालाना-कागज़ात के जो कि कुल उर्दू में ही छपे थे—एक कागज़ में तो खास ताकीद थी कि उर्दू में उसकी खानापुरी होनी चाहिए। बोर्ड को अपने प्रस्ताव को इस प्रकार पददलित होने से बचाना चाहिए। हम श्री० पं० विश्वम्भर-नाथ जी का भी ध्यान—जिनका कि यह प्रस्ताव था—इस ओर आकर्षित करते हैं।

हिन्दी अध्यापक-मण्डल।

पटियाले के हिन्दी-प्रेमियों का उद्योग।

१७ मई को सनातनधर्म संस्कृत इंगलिश हाईस्कूल पटियाला में हिन्दी अध्यापकों की एक समिति की बैठक हुई। हेमन्त कुमारी चौधरानी [मुख्याध्यापिका विक्टोरिया गर्ल्स स्कूल] सभानेत्री नियत हुईं, इन्होंने अपने भाषण में हिंदी 'अध्यापक-मण्डल" स्थापन करने का प्रस्ताव किया, जो सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। इस मण्डल की स्थायी सभानेत्री का पद भी श्री मती जी को ही दिया गया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्पश्चात् श्रीयुत ला० गोरालाल बी० ए० बी० टी० मुख्याध्यापक स० ध० हाईस्कूल, प्रोफेसर माधव शर्मा शास्त्री, देवकी नन्दन शास्त्री, श्री० दुर्गादत्त शर्मा आदि सज्जनों ने हिंदी की प्रशंसा पर भाषण दिये।

इसके पश्चात् स० ध० हाई स्कूल के मुख्याध्यापक ने सूचना दी कि हम ने हिंदी प्रचार के लिये सायंकाल के ५॥ बजे से ६॥ बजे तक दूसरों स्कूलों के लड़कों तथा अन्य लोगों को निःशुल्क हिंदी पढ़ाने का प्रबन्ध किया है।

—देवकीनन्दन शास्त्री
मन्त्री हिंदी अध्यापक मण्डल,
पटियाला।

मद्रास प्रान्तीय हिन्दी परीक्षा फल सारिणी

परीक्षा		प्राथमिक	प्रवेशिका	राष्ट्रभाषा
सशुल्क आवेदनपत्र	"	१८०	६३	३१
उपस्थित	...	१६२	६०	२८
उत्तीर्ण हुए	...	११८	५४	१४

पुरस्कार

१. राष्ट्रभाषा :—आन्ध्र प्रान्त से सर्व प्रथम क्र. सं. १३ अ० वेंकटरमणय्या (गुडिवाड़ा) को एक सुवर्णपदक दिया जायगा।

२. प्रवेशिका :—क्र. सं. ८. के० पद्मनाभ पिल्ला (केरल-कुड्डमा-लूर) ३८. श्री० सौ० विमला देवी पंजीकर बी० ए० (कर्नाटक-धारवाड़) ४७. वेंकटप्पराय (तेनावली-आन्ध्र) ५८. अ० वेंकटरामन बी० ए० (तामिल-त्रिचिनापल्ली) को सर्वप्रथम आने के कारण १५.रु० का पुरस्कार दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. प्राथमिकः—३२. डी० गंगाधर ब्रह्मानंद (वीरवासरम-आन्ध्र) ४१. सी० रुक्मिणिअम्मा बी० ए० (आनर्स) (ट्रिवेण्ड्रम-केरल) ८६. के गोपालन (कुंभकोणम-तामिल) १२० एम० वी० रामस्वामी अय्यंगार (बेंगलोर-कर्नाटक) को सर्वप्रथम आने के कारण १०) रु० का पुरस्कार दिया जायगा।

हृषीकेश शर्मा,

परीक्षा-मंत्री

हिन्दी सम्पादक समिति

(विचारार्थ)

१—इस समिति का नाम हिन्दी सम्पादक समिति होगा।
२—समिति के उद्देश्यः—

अ—हिन्दी समाचार पत्रों के सम्पादकों, लेखकों और सञ्चालकों में परस्पर सहयोग स्थापित करना।

ब—देश के लाभकारी आन्दोलनों में हिन्दी पत्रों की सम्मिलित शक्ति का प्रयोग करना।

स—विपदग्रस्त सम्पादकों की सहायता करना।

द—हिन्दी पत्र सम्पादन कला की उन्नति के लिये प्रयत्न करना—

व्याख्यानों द्वारा, पुस्तक प्रकाशक द्वारा, उपयुक्त सूचनाओं द्वारा

३—हिन्दी पत्रों के लिये एक (News agency) स्थापित करना और भिन्न भिन्न विषयों पर हिन्दी पत्रों की सम्मतियों को अन्य भाषाओं के पत्रों को भेजना। ४—प्रत्येक लेखक, सम्पादक तथा पत्र सञ्चालक ३) वार्षिक देने पर इसके सदस्य बन सकेंगे। ५—समिति के वार्षिक अधिवेशन हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशनों के साथ हुआ करेंगे। ६—स्थायी समिति २० सदस्यों की होगी; जो वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर निर्वाचित हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे। ७—समिति का कार्यालय प्रधान तथा मन्त्री की सुविधा के अनुसार किसी केन्द्र स्थान में रहेगा।

नोट—इस समिति का सङ्गठन ५० सदस्य होने पर साधारण अधिवेशन द्वारा किसी स्थल पर किया जायगा।

नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ
बनारसीदास चतुर्वेदी

इण्टर मीजियेट परीक्षा में देशी भाषा

हैदराबाद के हेड मास्टर असोसियेशन की प्रार्थना

हैदराबाद के हेड मास्टर असोसियेशन ने बम्बई विश्व-विद्यालय के पास अपना एक प्रतिनिधि भेजा है और इस बात पर जोर दिया है कि फर्स्ट आर्ट और इंटरमिजियेट आर्ट परीक्षाओं में दूसरी भाषा का स्थान देशी भाषाओं को भी दिया जाय।

दिल्ली में हिन्दी को अर्द्धचन्द्र।

कुंवर मदनसिंह आज में लिखते हैं, एक दिन मैंने हकीमजी के यहाँ एक पत्र हिन्दी में लिखकर भेजा; किन्तु वह यह कहकर लौटा दिया गया; कि यह हिन्दी है। फतेहपुरी के पास के डाकखाने में 'आज' को एक रजिष्ट्री करने के लिये लिफाफा भेजा, डाकखाने वालों ने यह कहकर लिफाफा लौटा दिया कि इस पर हिन्दी में पता लिखा है। फिर चाँदनी चौक के डाकखाने से लिफाफा भेजा गया। दिल्ली में इस प्रकार हिन्दी को अर्द्धचन्द्र पड़ते देखकर किस राष्ट्र-भाषा प्रेमी को दुःख न होगा।

हाई स्कूलों में हिन्दी

युक्तप्रान्त के हाईस्कूल व इण्टरमीडियट बोर्ड ने अंग्रेजी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़कर शेष विषय हिन्दी या अंग्रेजी द्वारा पढ़ाने की आज्ञा प्रचारित की है। कुछ अदूरदर्शी लोग इसका विरोध कर रहे हैं। सुना गया है इनमें अधिकांश अन्य भाषा-भाषी ही हैं। इसी को कहते हैं कि जिस थाली में खाय, उसी में छेद करें। इस नीचता का यही दंड मिलना चाहिये कि आन्दोलन कर उन्हें सर्विस से हटवा दें।

ऐसे लोगों का अंग्रेज़ी निर्बल होजाने का बहाना व्यर्थ है। बंगाल में यह प्रचलन कई वर्ष से है। और वहां वालों की अंग्रेजी इस प्रान्त वालों से कहीं उत्तम है, हिन्दी में कोर्स के लिये पर्याप्त पुस्तकें मिल सकती हैं। मेरे विचार से केवल हिन्दी मीडियम रखना ही पर्याप्त होगा। अंग्रेजी इस देश की भाषा नहीं है। राज-भाषा को मातृ-भाषा से नीचे स्थान मिलना ही चाहिये।

राष्ट्रीय हिन्दी-मन्दिर

जबलपुर का पंचम वार्षिकोत्सव श्रीयुत बाबू शिवप्रसादजी गुप्त के सभापतित्व में २८-२९ अप्रैल को सानन्द समाप्त हो गया नागपुर विश्वविद्यालय तथा अन्य इण्टर मीडियट कालेजों में हिन्दी को स्थान देने के प्रस्ताव पास हुए।

दुगड्डा में कवि-सम्मेलन

इधर दुगड्डा में पिछले दिनों बड़ी धूम रही। एक कवि-सम्मेलन भी २ मई की रात में पं० रत्नाम्बरदत्त चन्दोला सम्मेलन के स्थायी-समिति के सदस्य के सभापतित्व में हुआ; कई विद्वानों के भाषण भी हुए थे।

हिन्दू विश्व विद्यालय काशी

से हिन्दी लेकर एम. ए. परीक्षा निम्नलिखित सज्जनों ने पास की—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) श्रीयुत ब्रजनाथ दुबे (२) कन्हैयालाल वर्मा (३) रमेशदत्त पाठक (४) श्री धरसिंह (५) रामकृपाल मिश्र।

डीडवाणा हिन्दी पुस्तकालय

सुचारु रूप से चल रहा है इससे लगभग २००० मनुष्यों ने लाभ उठाया। पुस्तकों की ८०० जिल्द हैं। १५ समाचार पत्र व पत्रिकाएं आते हैं।

उत्सव शीघ्र ही मनाया जायगा।

—छगनलाल जोशी

नागरी लिपि में सुधार की आवश्यकता

इङ्गलैंड के १५००० अङ्गरेज़ी भाषा-प्रेमियों ने अपने हस्ताक्षर से एक प्रार्थना पत्र प्रधान मन्त्री मि० बाल्डविन को देकर, अङ्गरेजी भाषा के उच्चारण सुधारने के लिये एक रायल कमीशन की नियुक्ति की बात कही है।

यद्यपि नागरी अंक व अक्षर पूर्ण और निर्दोष है; फिर भी इन अक्षरों में सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है। अदालतों के प्रयोग में आने योग्य शीघ्रता से प्रत्येक व्यक्ति के लिखने योग्य, लिपि होनी चाहिये। आशा है विद्वत्समाज इस पर कुछ प्रकाश डालेगा।

श्री नागरी-प्रचारिणी-सभा, बाढ़ का तृतीय वार्षिकोत्सव

पटना न्यूकालेज के प्रोफेसर पं० रामदीन पाण्डेय एम० ए० बी० टी० साहित्योपाध्याय की अध्यक्षता में ता० २४ जनवरी सन् १९२६ ई० को सानन्द समाप्त हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वाचित सभापति वयोवृद्ध भारतेन्दु के समकालीन पं० विजयानन्दजी त्रिपाठी थे। जिनकी आकस्मिक मृत्यु उसी दिन पटने में हो गयी थी। जिसके संबन्ध में सभा ने अत्यन्त दुखित भावसे खड़े होकर शोक सूचक प्रस्ताव पास किया।

फिर सभापति ने अपना सार गर्भित भाषण पढ़ा। स्थानीय मिडिल स्कूल के विद्यार्थियों ने ललित कविताएँ सुनायी। छपा हुआ कार्य विवरण बांटा गया; जिसमें वहां के पुस्तकालय, वाचनालय, श्री कालीप्रसाद पारितोषिक, तथा रूपस के परमानन्द पुस्तकालय का विस्तृत विवरण दिया हुआ था।

श्रीयुत बाबू परमेश्वरीप्रसादजी वर्मा, कालीप्रसादजी दत्त तथा पं० रामस्वरूपजी चतुर्वेदी काव्यतीर्थ के व्याख्यान हुए।

बाबू परमेश्वरप्रसादजी ने सभा पर जो ऋण था, उसके चुका देने का बचन दिया। और अधिवेशन सानन्द समाप्त हुआ।

अधिवेशन के उपलक्ष में रात्रि को 'भक्त चन्द्रहास' नामक नाटक खेला गया जिसे लोगों ने बहुत पसन्द किया।

× × ×

फाजलका का विवरण

साधू आश्रम पुस्तकालय फाजलका का सं० १९८२ वि० का कार्य विवरण प्रकाशित हुआ है।

यह पुस्तकालय अच्छा कार्य कर रहा है इसमें २४५० पुस्तकें हैं। ३०४० पुस्तकें पुस्तकालय से बाहर पढ़ने को गयीं। मंत्रीजी लिखते हैं लोगों में उपन्यास और नाटक ही अधिक पढ़े गये। अन्य उत्तम पुस्तकों की ओर रुचि कम देखी जाती है। कुल पुस्तकों की जिल्द बँधी हुई हैं।

स्वामी केशवानन्दजी के उद्योग से ८०० पुस्तकें गीता की मंगवा कर बटवायी गयीं। इस वर्ष ६१५-)॥ आय और ७४२=)॥ व्यय हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके मन्त्री गौरीशङ्करजी और प्रधान स्वामी केशवानन्दजी का प्रयत्न सराहनीय है।

× × ×

दाहिमा ब्राह्मण सभा

अखिल भारतवर्षीय श्री दाहिमा ब्राह्मण सभा का, असाढ़ वदि १ सं० ८२ से भाद्र पद सुदि १५ सं० १९८२ तक का, त्रैमासिक आय-व्यय विवरण आय-व्यय परीक्षक द्वारा जंचवा कर प्रकाशित हुआ है।

रोकड़ शेष ३९६२=) ११ पाई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकावलोकन

परिडत जी—मूल लेखक श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय; अनुवादक पं० रूपनारायणजी पांडेय, कविरत्न। प्रकाशक इन्डियन प्रेस, इलाहाबाद। पृष्ठ-संख्या लगभग २००, सजिल्द प्रति का मूल्य १॥)

इलाहाबाद के इन्डियन-प्रेस ने शरद ग्रन्थावली प्रकाशित कर हिन्दी-पाठकों को शरद बाबू के उपन्यासों के रसास्वादन का जो सुअवसर प्रदान किया है। उसके लिए इण्डियन प्रेस के स्वामी सचमुच धन्यवादार्ह हैं। उपर्युक्त उपन्यास इसी ग्रन्थावली का प्रथम प्रसून है। इसमें मातृभक्ति, मातृ-स्नेह तथा स्त्रियोचित मान का अच्छा चित्रण किया गया है। एक ओर कुसुम स्त्रियोचित मान दिखलाती है और दूसरी ओर उसका पति वृन्दावन मातृ-भक्ति के भावों से प्रेरित होकर उसे ठुकरा देता है। पर इन दोनों प्रतिद्वन्दी भावों के भीतर बड़े मज़े की बात यह है कि प्रेम के भाव दोनों ओर मौन भाषा में एक दूसरे पर व्यक्त होते रहते हैं, दोनों उसे अनुभव भी करते हैं, और फिर भी तनातनी में आकर मिलते नहीं। इन प्रतिद्वन्दी भावों में, दो स्थलों पर बड़ी निष्ठुरता प्रदर्शित की गई है। स्त्री-पुरुष के प्रतिद्वन्दी भावों में हम प्रायः ऐसी निष्ठुरता देखा करते हैं; वास्तव में शरद बाबू की लेखनी में कमाल है। उन्होंने कुसुम और वृन्दावन के परस्पर विरोधी भावों को दिखलाते हुए भी एक को दूसरे से अलग नहीं किया और अन्त में दोनों हृदयों का स्पन्दन एक ही स्थान पर केन्द्री भूत कर दिया है। उपन्यास प्रेमियों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी दीदी—लेखक, अनुवादक और प्रकाशक पूर्ववत्। पृष्ठ-संख्या १०१, सजिल्द प्रति का मूल्य १)

यह उपन्यास भी शरद बाबू की ही कृति है। इसमें सुरेन्द्रनाथ नाम के एक एम० ए० पास युवक की सरलता तथा उसके प्रति माधवी के मौन प्रेम चित्रण करने में शरद बाबू ने सचमुच कमाल किया है।

यद्यपि हम धड़ा-धड़ बंगला उपन्यासों के अनुवाद निकालने के समर्थक नहीं हैं। तथापि जो सत्य है, सुन्दर है, उसकी प्रशंसा करनी ही पड़ेगी। उक्त ग्रन्थों का अनुवाद प्रकाशित करने से भाषा के साहित्य की गौरव-वृद्धि भले ही न हो; पर विविध भाषाओं के उच्च साहित्य से परिचय प्राप्त करने के लिए उनके उच्च कोटि के ग्रन्थों के अनुवाद प्रकाशित करना आवश्यक है। इस दृष्टि से शरद-ग्रंथावली का हम सहर्ष स्वागत करते हैं।

भ० प्र० वाजपेयी।

विद्यापति—महाकवि विद्यापति से हिन्दी जगत को परिचय कराने की आवश्यकता नहीं। इस पुस्तक में उन्हीं हिन्दी-कोकिल का जीवन-चरित्र बड़े अन्वेषण के साथ लिखा गया है।

विद्यापति के समय का निरूपण आलोचनात्मक ढंग पर, अत्युत्तम रीति से किया गया है। इसके पढ़ने से कई नवीन बातें महाकवि विद्यापति के सम्बन्ध की ज्ञात हो सकती हैं। यद्यपि यह ४५ पृष्ठ की एक छोटी सी पुस्तिका है, तथापि इसमें उनके जीवन की सभी मुख्य-मुख्य ज्ञातव्य बातें आ गयी हैं। अतः विस्तृत जीवनी लिखने के लिये पर्याप्त सामिग्री प्रदान करती है। इसके रचयिता श्री पं० रामवृक्ष शर्मा जी ने विद्यापति कवि पर तुलनात्मक समालोचना ग्रंथ लिखने की भी सूचना दी है।

पुस्तक बड़े काम की और संग्रह योग्य है। साहित्य-सेवियों के लिये आनन्द की वस्तु है।

छपाई, सफाई, टाइटिल पेज सभी उत्तम है। मूल्य ।) हिन्दी-

६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक भंडार, लहरिया सराय (दरभंगा) की चारु-चरित-माला में प्रकाशित हुई है।

अधिकार—इस नाम का एक ४० पृष्ठ का प्रहसन श्रीयुत पराग एम० ए० द्वारा रचा गया है और हिन्दी ग्रंथ भंडार कार्यालय बनारस से प्रकाशित है। मूल्य ।) है।

इस प्रहसन में, शिवचरण नामक एक व्यक्ति ने धन के लालच से अपने विवाहित शिक्षित पुत्र जगदम्बा प्रसाद का दूसरा विवाह, प्रथम स्त्री की मौजूदगी में एक धनी और लालची सेठ की लड़की से कराने का प्रयत्न करने के दुष्परिणाम दिखलाये हैं।

जिसके परिणाम में जगदम्बाप्रसाद, उसकी प्रथम सुशीला स्त्री विमला, तथा नव बधू अहिल्या को मृत्यु के मुख में जाना पड़ा।

और अन्त में शिव चरण को भी घर बार छोड़ कर निकल जाना पड़ा।

यथा स्थान सरस्वती से उद्धृत प्रसिद्ध कवियों की कविताएँ देने से पुस्तक और रोचक बन गयी है। प्रहसन रोचक, शिक्षाप्रद और उपादेय है।

देश भक्त राजा महेन्द्र प्रताप जी की संक्षिप्त जीवनी—यह एक छोटी सी ८ पृष्ठ की जीवनी वैद्य बालमकुन्द वर्मा वृन्दावन द्वारा प्रकाशित हुई है।

मूल्य अमूल्य प्रेम। राजा साहब प्रेम धर्म के उपासक हैं। उन्हीं का संक्षिप्त चरित्र जो कभी-कभी पत्रों में निकलता रहा है सारांश रूप में दे दिया गया है।

चाँद—स्त्रियोपयोगी सर्वोच्च सचित्र मासिक पत्रिका, चाँद कार्यालय प्रयाग से निकलती है। इस के सम्पादक व प्रकाशक श्री रामरखसिंह सहगल हैं वार्षिक मूल्य ६॥) है। छपाई, सफाई, कागज़ सब बढ़िया है।

लेख और कविताएँ उत्तम हैं पं० शिवसहाय चतुर्वेदीजी का सती प्रथा का रक्त-रंजित इतिहास अच्छा निकल रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा पं० लक्ष्मीप्रसादजी द्विवेदी कृत 'स्त्री उसकी कांति और सत्ता' भी अच्छा लेख है।

हम हृदय से इसकी उन्नति के अभिलाषी हैं। आशा है हिन्दी प्रेमी इसे अपनायेंगे।

कादम्बरी—नामक द्विमासिक पत्रिका इसी मास से सरस्वती के आकार में रसिक-समाज, कानपुर से श्रीयुत पं० रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' के सम्पादकत्व में सचित्र प्रकाशित हुई है। टाइटिल पेज पर स्व० पूर्ण कवि का चित्र दिया है। भीतर रत्नेशजी व भानुजी के भी दो चित्र हैं। पृष्ठ संख्या ४८, वार्षिक मूल्य २) है। पत्रिका का यह प्रथम अंक है कई लेख और कविताएं सुपाठ्य और उत्तम हैं। मुख्यतः ग्राम्य कविता, और बेताल की डाल शीर्षक लेख बहुत अच्छे हैं। खोज संबंधी सामिग्री अच्छी है। कई प्राचीन कवियों के जीवन पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है। पत्रिका होनहार प्रतीत होती है। अच्छा हो समीर जी कानपुर के कलह-प्रिय वायु मंडल से ऊंचे उठे रहें। हम इस की उन्नति के अभिलाषी हैं।

विभूति—नामक मासिक पत्रिका महन्त शिवगुलाम भारती के सम्पादकत्व में रजादेपुर मठ, पो० सगरी, जि० आजमगढ़ से गत मास से प्रकाशित होने लगी है।

सरस्वती के आकार की पृष्ठ संख्या ४० और मूल्य ३) रु० वार्षिक है।

पत्र उदार विचार का होनहार प्रतीत होता है। ऊपर भूतनाथ 'शंकर' का भव्य रंगीन चित्र है।

लेख और कविताएं उत्तम है। अधिकांश कथाएं पौराणिक ढंग पर रोचक रीति से कही गयी हैं। 'युधिष्ठिर—यक्ष संवाद, शीर्षक लेख तथा 'आजमगढ़ जाग' कविता अच्छी है। भाषा में कहीं—कहीं विहारीपन है। हम हृदय से इस की उन्नति के अभिलाषी हैं।

"कीचक वध नाटक" सी० पी० गजट में सूचना प्रकाशित हुई है; कि सरकार ने श्रीयुक्त खाडिलकर के कीचक वध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामक नाटककी प्रतियां जब्त करनेका जो हुक्म जारी किया था उसे उसने रद्द कर दिया। १९१० ई० में सी० पी० सरकारने यह नाटक जब्त किया था। अब महाराष्ट्र नाटक मंडल में उक्त नाटक खेल जा रहा है। गत शनिवार को होम मेम्बर आनरेब्ल मि० ताम्बे भी नाटक देखने गये थे।

मराठी साहित्य में पुस्तकें

अभी हाल में मराठी भाषा की वाङ्मय-सूची प्रकाशित हुई है। सन् १८१० से १९१७ तक १०७ वर्ष में २०००० के लगभग पुस्तकें प्रकाशित हुईं। जिनमें सबसे अधिक नाटक ८५८, काव्य ७८०, जीवन चरित ३९८, उपन्यास ६४६, गल्प ५२३, इतिहास २२८, भूगोल २३५, यात्रा वर्णन १२८, खेल ७२, कला २७, धंधे ५३, वैद्यक २९१, कृषि ७४, संगीत ९५, भाषा-शास्त्र २३०, भौतिक विज्ञान १४१, नीति ३२४, मानवेतिहासिक अथवा शास्त्र ७९, इत्यादि—

क्या कोई संस्था हिन्दी में इस प्रकार का आयोजन करने का कष्ट उठावेगी। एक डाइरेक्टरी की अत्यन्त आवश्यकता है राजपूताना वाले कुछ उद्योग कर रहे हैं। अच्छा हो अन्य प्रान्त वाले भी इसी प्रकार का आयोजन कर डालें, तो यह अभाव सुगमता से दूर हो सकता है। हर्ष की बात है कि मरहठी में अनुवादों की संख्याकम है। ज्ञात नहीं हिन्दी वालों के सिर पर क्यों इसका भूत सवार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-समाचार

सप्तदश हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, भरतपुर के प्रकाशन मन्त्री ने नं० १० की सूचना अभी प्रकाशित की है। उसमें सहायकों की अत्यन्त आवश्यकता बतलायी है जो राजपूताने में भ्रमण कर सकें।

अजमेर के सम्बन्ध में गतांक में लिखा जा चुका है कि श्रीयुत ओझा जी महाराज की अध्यक्षता में अच्छा कार्य हो रहा है। चौधरी रामनारायणजी ने भी अत्यन्त परिश्रम किया था परन्तु वे जैपुर में कष्ट उठा रहे हैं। राहतजी अनवरत परिश्रम कर रहे हैं।

जोधपुर में श्रीयुत रेऊजी, पं० सुन्दरलाल, राय सा० बाबू जयलाल, प्रो० नारायण प्रसाद, आदि डा० ओंकारसिंहजी की प्रधानता में अच्छा कार्य कर रहे हैं। अधिकारीजी से अजमेर के वकीलों ने हिन्दी में कार्य करने की प्रतिज्ञा की है।

श्रद्धेय ओझाजी ने अधिकारी जी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

नसीराबाद में दोनों पुस्तकालयों के कार्य कर्ता संलग्नता से कार्य कर रहे हैं।

परन्तु अधिकारीजी अस्वस्थ होकर वापिस आगये हैं। अतः हिन्दी-प्रेमियों को, मुख्यतः राजपूताना निवासियों को योग देने के लिये उद्यत रहना चाहिये। और आगे बढ़कर हाथ बटाना चाहिये।

जाट सभा के सभापति की विज्ञप्ति

राज स्थान जाट क्षत्रिय सभा के प्रधान कुंवर रतनसिंहजी ने एक विज्ञप्ति पत्रों में प्रकाशित की है। जिसमें कहा है कि राजपूताना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवासी तथा अन्य हिन्दी-प्रेमियों को बिना किसी भेद-भाव के इसमें योग देना चाहिये। प्रत्येक प्रकार से सम्मेलन को सफल बनाना सब का परम कर्तव्य है।

पञ्जाब में हिन्दी प्रचार

श्रीयुत पं० जयचन्द्र विद्यालंकार और श्रीमती पारवती देवीजी ने पंजाब में दौरा लगाया। रावलपिंडी में श्री विद्वद्वर्य पं० दीनदयालजी शर्मा के सभापतित्व में भाषण हुए और देवनागरी प्रचारिणी सभा स्थापित हुई।

फिर दोनों सज्जन बटाला पहुँचे और वहां भी नागरी लिपि व हिन्दी-भाषा की उपयोगिता पर ४००० की उपस्थिति में भाषण हुए। यहां सफलता की अच्छी आशा है।

श्रीमती पार्वती देवीजी ने स्त्रियों में भी एक व्याख्यान दिया।

पंजाब प्रान्तीय सम्मेलन

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की तय्यारियां होरही थी। पं० जयचन्द्र विद्यालङ्कार ने लोगों से सम्मिलित होने के लिये अपील भी पत्रों में निकाली थी।

पं० प्रभूदयाल जी उपदेशक सम्मेलन प्रयाग और पं० लक्ष्मीनारायणजी प्रतिनिधि व स्वागत समिति के सदस्य बनाने के लिए दौरा लगा रहे थे।

परन्तु कई कारणों से सम्मेलन पहले मई से जून के लिये और अब २३। २४ अक्टूबर तक के लिये हटा दिया गया है।

फीरोज़पुर आदि स्थानों से तो प्रतिनिधि भी चुने जा चुके हैं। पत्रों में पदको पुरस्कारों व समस्याओं की सूचना भी दी जा चुकी है। आशा है पंजाब प्रान्तीय हिन्दी-प्रेमी लाहौर सम्मेलन को पूर्णतया सफल बनाने का प्रयत्न करेंगे। अब समय भी पर्याप्त मिल गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा के लिये प्रस्ताव

श्रीयुत पं० दयाशंकरजी द्विवेदी प्रोफेसर अर्थशास्त्र लखनऊ विश्वविद्यालय ने कुछ प्रस्ताव प्रकाशनार्थ भेजे हैं—

(१) प्रथमा के वैकल्पिक विषयों में अर्थ शास्त्र को स्थान दिया जाय।

पाठ्य पुस्तकें

श्रीयुत भगवानदास केला कृत 'भारतीय अर्थशास्त्र';
विषय—उत्पत्ति, उपयोग

(२) मध्यमा—इसमें दो प्रश्न पत्र होने चाहियेः—

(१) प्रथम प्रश्न पत्र में—
वितरण, कर प्रणाली, कृषि, और उद्योग धन्धे

(२) द्वितीय प्रश्न पत्र में—
विनिमय, व्यापार, रुपया-पैसा, काग़ज़ी रुपया और बैंक

उत्तमा में ६ प्रश्न पत्र होने उचित है :—

प्रश्नपत्र प्रथम—प्राचीन अर्थशास्त्र
" द्वितीय—भारतीय अर्थशास्त्र
" तृतीय—(अ) साख
" (ब) भारत का आर्थिक इतिहास
" चतुर्थ—साम्यवाद, बोल्शेविज़्म इत्यादि
" पंचम—राजनीति, शास्त्र व्यवस्था
" षष्टम—निबंध

नोट—द्विवेदीजी ने उत्तमा के अर्थशास्त्र संबंधी पाठ्यक्रम के संबंध में विस्तृत लेख लिखने का विचार किया है। आशा है शीघ्र आपके विचार जनता के समक्ष आवेंगे।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदालतों में हिन्दी प्रचार

तारीख़ १ जनवरी से २३ अप्रैल सन् १९२६ ई० तक की कुल अर्ज़ियों का ब्यौरा जो प्रयाग की अदालत में, सम्मेलन से नियुक्त लेखक पं० सृष्टिनारायण द्वारा दी गयीं—

इस्मनवीसी	सम्मन	रुक्काइन्दुल तलब	ज्वाइंट मजिस्ट्रेट के इजलास में
२२	१६०	४	१२

बेदख़ली वइजाफ़ा लगान के मुक़दमा में जवाब दावा	नोटिस	वापसी दस्तावेज़
८	६	१८
मुआइना मिसिल	दरख्वास्त नक़ल माल व फौजदारी इत्यादि	डि० बोर्ड
१०	६५	९
वकालत नामा	मुख़्तारनामा ख़ास	वाजवः नम्बर साबिक
२४	९	२

कुल जोड़ ३८०

इन दिनों में ३२ दिन अदालत बन्द रही।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग,

"हिन्दी विद्यापीठ के लिए विद्यार्थियों की आवश्यकता"

यह बात तो अब हिन्दी-संसार से छिपी नहीं है कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने अपने हिन्दी-विद्यापीठ में प्रथमा तथा मध्यमा के पाठ्यक्रम के अनुसार साहित्य, इतिहास, गणित, भूगोल, कृषिशास्त्र, वनस्पति शास्त्र, विज्ञान एवं अन्यान्य अनेक प्रकार की औद्योगिक और अर्थकारी कलाओं और विषयों के शिक्षण का कार्य आरम्भ कर दिया है। विद्यापीठ का स्थान प्रयाग नगर के निकट, कालिन्दी कूल पर, महेवा गाँव में है। यह स्थान अत्यन्त रमणीक और स्वास्थ्य कर हैं। विद्यार्थियों के रहने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सुन्दर छात्रावास भी है। सभी प्रकार की शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। होनहार, सदाचारी, प्रतिभाशाली और स्वस्थ विद्यार्थियों को छात्र-वृत्ति भी देने का प्रबन्ध है। विद्यार्थियों के भोजनादि के प्रबन्ध के लिए अभिभावकों को १०) मासिक व्यय देना पड़ता है। अन्य बातों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए निम्नाङ्कित पते से पत्र-व्यवहार करना चाहिए।

चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्म्मा

व्यवस्थापक

हिन्दी-विद्यापीठ, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,

इलाहाबाद

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्रीष्मावकाश के उपलक्ष्य में हिन्दी-विद्यापीठ का वार्षिकावकाश १५ मई से ३० जून तक मनाया जायगा। इन दिनों में विद्यालय सर्वथा बन्द रहेगा। जो विद्यार्थी अवकाश पर जाना चाहेंगे, जा सकेंगे। साथ ही जो विद्यार्थी हिन्दी-विद्यापीठ में ही निवास करके इस अवकाश में अपनी परीक्षाओं की तैयारी करते हुए शारीरिक उन्नति के ऊपर विशेष ध्यान देना चाहेंगे, उनके लिए हिन्दी-विद्यापीठ में आवश्यक सुविधाओं का प्रबन्ध रहेगा। कुछ उपाध्याय महोदय इस अवकाश में भी विद्यापीठ में ही निवास करते हुए विद्यार्थियों को आगामी परीक्षा में पूर्ण सफलता प्राप्त कराने के लिए शिक्षा-सम्बन्धिनी-सहायता देते रहेंगे। १ जुलाई को विद्यापीठ पुनः खुल जायगा और शिक्षा का कार्य पूर्ण उत्साह के साथ आरम्भ हो जायगा। १ जुलाई से ही वर्ष का आरम्भ माना जायगा, अतः उक्त समय पर नवीन विद्यार्थियों का विद्यापीठ में प्रवेश भी हो सकेगा। राष्ट्र-भाषा के माध्यम के द्वारा सभी विषयों की उच्च शिक्षा प्राप्त करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अभिलाषी विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावकों को १ जुलाई के प्रथम ही कार्यालय से पत्र-व्यवहार करके अपने-अपने विद्यार्थियों को विद्यापीठ में भेज देना चाहिए।

चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्म्मा
व्यवस्थापक
हिन्दी-विद्यापीठ, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,
प्रयाग

स्फुट विषय

काव्यानन्द

(१)

"गुलाब की"

लहक लही है लोनी लता लागि लोयन सो,
चहक चली है चंचरीक चित चाव की।
बहक वही है नीति शीतल सुगंध पौन,
जहक जगी है तेज ताब आफताब की।
भहक भगी है भय भूरि प्रजा वृन्दन की,
धहक धँसी है धाक धीरता सिताब की।
गहक गनीमन की ठसक मिटी है सबै,
दहक दिशान दशौं महक गुलाब की।

अम्बिकाप्रसाद भट्ट "अंबिकेश"
राज-कवि (रीवाँ)

(२)

"नैनन निहारिये"

रम्भापत्र आसन सुबैठि कै मनावै ईश,
साधन विलोकि जासु सिद्ध सब वारिये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्रीहरि" प्रभूत घनसार की विभूति माल,
माल एक एकावली कण्ठ मध्य धारिये ॥
मीलित नयन बामपाणि पै कपोल चारु,
चित्रपट चित्रित सुचित्र सी विचारिये ।
बैठी, लाल ! मौन ह्वै तमाल आलबाल बीच,
योगिनी अनोखी नेकु नैनन निहारिये ॥
मञ्जुल मृणाल सों मृदुल भुजमाल त्यागि,
कौन भाँति सेलो हा, नवेली गले धारिये,
गोकुल-गलीन में गोविन्द-प्रेम गीत गाय,
नीरस विराग-राग कैसे-धौं उचारिये
"श्रीहरि" सनेही को संयोग सुख भूलि कैसे,
योगिनी बनैंगी निज चित्त तो विचारिये ।
कोटि काम सुन्दर अनूप-श्याम रूप पेखि,
काहि अब ऊधो इन नैनन निहारिये ॥

—"श्रीहरि"

(३)

चित्रकूट-यात्रा

जबलपुर से लौटते हुए हमें कुछ आत्मीयजनों के साथ चित्रकूट में भ्रमण करने का अवसर मिला। नयागांव राज्य के तहसीलदार साहब मुंशी शारदाप्रसादजी 'रसेन्द्र' से इस यात्रा में बहुत सहायता प्राप्त हुई। आप बड़े साहित्य-सेवी, कवि और सहृदय सज्जन हैं। आपके द्वारा कई विद्वान्, तपस्विय के दर्शनों का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। कामदानाथ, पयस्वनी के किनारे के घाट व मंदिर, हनुमान् धारा, सीता-रसोई, प्रमोद-वन और स्फटिक-शिला आदि प्रसिद्ध तथा दर्शनीय स्थानों में भी आप साथ थे। काव्यानन्द भी कुछ रहा। हनुमान-धारा के ऊपर बन-फल-भोजन के अवसर पर मुंशी जी ने यह छंद-रचना की,—

चित्रकूट पैसुनी के पार हनुमान धारा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्वत है न्यारा सुखसारा होत आये तें।
बजरंग मूरति पै गिरत अटूट धारा,
कटत पहारा पाप वा जल नहाये तें॥
सोभित 'रसेन्दु' सिय-रसोई ता ऊपर है,
विपिन में तेंदू, बेल, आँवला सोहाये तें।
करौंदा मकोय हैं कटाई, समुदाई फल,
मिटत विकार दोई-चार-चार* खाये तें॥

हिन्दी

सूर ने सागर तें तुलसी ने जो मानस तें नगरासि लई है।
भूषन भूषन भाव बिहारी ने सूझ सुकेसव दीनी नई है।
चंद तें आजु लगे बर लालन मातहिं जो बर भेंट दई है।
लेहु न 'मान' सबै बर मातु तें हिन्दी सो हिन्दुव-भाव-मई है॥

रघुवरदयालु मिश्र विशारद 'मान' इटावा

आवश्यक सूचना

परीक्षा-विभाग में प्रायः ऐसे अनेक पत्र नित्य आते हैं, जिनमें न तो इस कार्यालय के भेजे हुए पत्रों के विषयों का हवाला रहता है और न उनकी तिथि तथा संख्या का ही उनमें कुछ उल्लेख होता है। अर्थ-विभाग में भी इसी प्रकार जो विद्यार्थी परीक्षा शुल्क मनीआर्डर द्वारा भेजते हैं, उनमें से अधिकांश मनीआर्डरफ़ार्म के कूपन में अपना पूर्ण पता तक नहीं लिखते। ऐसे महानुभावों को हमें यह सूचित करते हुए खेद है कि उनके पत्रों पर शीघ्र उचित कार्रवाई करने में हम सर्वथा असमर्थ हैं।

परीक्षा-मंत्री
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

---

*चार=चिरौंजी का फल जिसकी गुठली में से चिरौंजी निकलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ उत्तमोत्तम सस्ती पुस्तकें

सरल-शरीर-विज्ञान—यह सचित्र पुस्तक मध्यमा परीक्षा के उन परीक्षार्थियों के लिए बड़े काम की है जो उसके वैकल्पिक विषयों में शरीर-विज्ञान लेकर बैठते हैं। पृष्ठ संख्या १६८, सुन्दर रेशमी जिल्द मूल्य ॥।)

महात्मा टालस्टाय के विचार—रशियन ऋषि महात्मा टालस्टाय संसार के उन महान् व्यक्तियों में से थे जो अपनी अलौकिक प्रतिभा से संसार के विचारों में बड़ा उलट-फेर कर जाते हैं। इन्हीं महात्मा टालस्टाय के युगान्तरकारी विचारों का दिग्दर्शन इस पुस्तक में बड़ी प्राञ्जल भाषा में किया गया है। पृष्ठ-संख्या १२८, मूल्य ।-)

सनयाटसेन—चीन देश के उद्धारक डाक्टर सनयाटसेन का यह जीवन चरित्र निर्बलों में बल, निराशों में आशा, मृतकों में जीवन, देशद्रोहियों में देश-प्रेम और अकर्मण्यों में कर्मण्यता फूकने वाला है। पृष्ठ-संख्या ११२, मूल्य ।)

सञ्जीवनी—इसमें मुर्दा दिल में जान डालने वाली २८ कविताएँ संग्रहीत हैं। ये कविताएँ कैसी हैं, इस विषय में इतना ही लिखना पर्य्याप्त होगा, ये सब कानपुर के काव्य-प्रेमी बाबू बेनीमाधवजी खन्ना द्वारा पुरस्कृत हो चुकी हैं। पृष्ठ-संख्या १४४, मूल्य ।-)

इतना तो जानो—इसमें स्वदेशी, ग्राम-पंचायत, अस्पृश्यता, हिन्दू-मुसलिम-ऐक्य, अदालत और पंच आदि भारतीय जीवन के महत्व-पूर्ण प्रश्नों पर प्रकाश डाला गया है। मूल पुस्तक, जिसका यह हिन्दी-अनुवाद है, श्रीयुत महादेव हरिभाई देसाई की लिखी हुई है। पृष्ठ-संख्या १५० मूल्य ।-)

महात्मा गांधी के निजी पत्र—इस पुस्तक में महात्माजी के उन पत्रों का संग्रह है जो इन्होंने समय-समय पर अपने कुटुम्बियों और मित्रों को लिखे हैं। पत्र क्या हैं—जीवन के पथ-प्रदर्शक हैं। महात्माजी के जीवन का रहस्य समझने के अभिलाषी युवकों को तो इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। पृष्ठ-संख्या १२८, मूल्य ।-)

तेरहवें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्वागत-कारिणी-समिति के सभापति की हैसियत से दिया गया श्रीमान् पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी का भाषण पुस्तकाकार छप कर तैयार है। पृष्ठ-संख्या ८० मूल्य ≡)

साहित्य-मंत्री
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

मुद्रक—दीवान वंशधारीलाल, हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग।
प्रकाशक—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारियों के लिये सुअवसर

साहित्य-सम्मेलन के साहित्य-विभाग ने सम्मेलन विज्ञापन लेने का निश्चय कर लिया है। जो सज्जन इसमें विज्ञापन देना चाहें, सम्मेलन साहित्य-मंत्री से पत्र-व्यवहार करें। यह पत्रिका ब बड़े रईसों, राजाओं, सेठ-साहूकारों, अधिकारियों, मह राजा और विद्वानों के हाथ में जाती है। अतः इस विज्ञापन देने से बहुत लाभ हो सकता है। अश्ली और कुरुचि-पूर्ण विज्ञापन प्रकाशित नहीं किये जायँगे।

व्यापारियों को चाहिये कि इस सुअवसर को हा से न जाने दें और इससे यथोचित लाभ उठावें पुस्तक-विक्रेताओं के लिए तो यह अपूर्व अवसर है यह एक रजिस्टर्ड अखिल भारत-वर्षीय संस्था क मुख-पत्र है। अतः इसमें प्रकाशित बातों का मान भ अधिक है। सर्व-साधारण इसे आदर की दृष्टि से देखत हैं। इसमें विज्ञापन देने से बिक्री की अधिक आशा है।

लक्ष्मीधर वाजपेयी

साहित्य-मन्त्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

सम्मेलन-परीक्षार्थियों को एक सुअवसर

जो परीक्षार्थी संवत् १९८३ वि० की सम्मेलन-परीक्षामें अजम ढ़ केन्द्र सेपरीक्षा में बैठेंगे, उनका परीक्षा-शुल्क अजमतगढ़ रईस श्रीमान् रायबहादुर बाबू मुकुन्दलाल जी देंगे। सम्मेलन परीक्षाओं से प्रेम रखनेवाले परीक्षार्थियों को रायबहादुर साह के हिन्दी-प्रेम से लाभ उठाना चाहिए।

परीक्षा-मंत्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० ए. ६२६.

सम्मेलन-पत्रिका

सम्मेलन की मुख पत्रिका

भाग १३, अङ्क १०, ज्येष्ठ संवत् १९८३ वि०

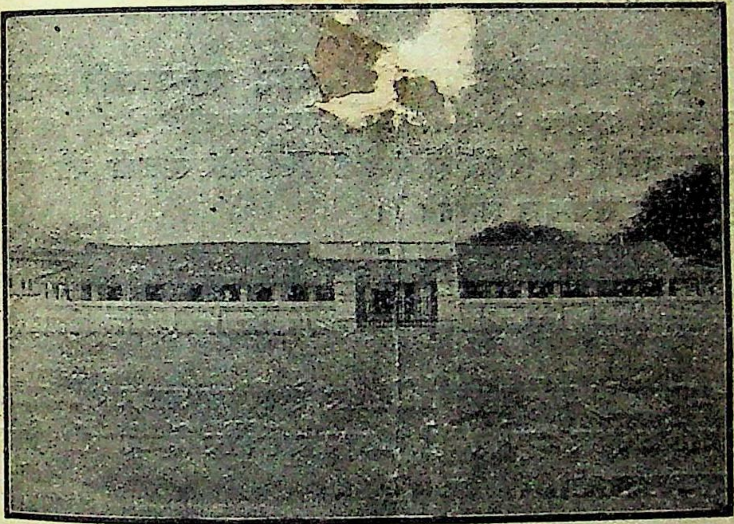

सम्पादक

साहित्य मंत्री

प्रकाशक

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

वार्षिक मूल्य २) प्रत्यंक ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-देशान्तर का ज्ञान प्राप्त करने का

अपूर्व साधन !

विद्यार्थियों को परीक्षा पास करने का

सुगम उपाय

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक-पत्र। पंजाब, संयुक्त प्रान्त बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रान्त और बरार के शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत।

"भूगोल" में ज्योतिष, यात्रा, व्यवसाय, पशु-वनस्पति अनुसंधान आदि भूगोल के सभी अंगों पर उच्च कोटि के मौलिक लेख प्रकाशित होते हैं। (पिछले दो वर्षों के लेखों और लेखकों की सूची मुफ़्त मँगाकर स्वयं देख लीजिये)।

सभी प्रतिष्ठित पत्रों और पूज्य नेताओं ने "भूगोल" की एक स्वर से प्रशंसा की है। पत्र-संचालन का सारा काम अवैतनिक होता है।

आप भी ३) वार्षिक मूल्य भेज कर हिन्दी का प्रचार करें अथवा १०) वार्षिक देकर "भूगोल" के संरक्षक बनें और हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनावें।

विज्ञापन की दर साधारण पूरा पृष्ठ प्रतिबार १०)। विज्ञापन सच्चा और देश-हितकारी होना चाहिये।

मैनेजर "भूगोल"

मेरठ

मुद्रक—दीवान वंशधारीलाल हिन्दी-साहित्य-प्रेस, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलभ-साहित्य-माला की पुस्तकें

हिन्दी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

[लेखक—श्री मिश्रबन्धु]

हिन्दी भाषा और साहित्य का क्रमशः विकास कैसे हुआ, उसने कौन-कौन से रूप पकड़े, किन-किन बाधाओं एवं साधनों का उसे सामना करना पड़ा, वर्त्तमान परिस्थित क्या है, आदि गम्भीर विषयों का पता इस पुस्तक से भली भाँति चलता है। अपने ढङ्ग की यह पहली पुस्तक है। "मिश्रबन्धु-विनोद" रूपी महासागर से मथनकर यह इतिहासामृत निकाला गया है। यह हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा में स्वीकृत है। तृतीय संस्करण पृष्ठ-संख्या १०८, मूल्य ।=)

भारतगीत

[लेखक—पं० श्रीधर पाठक]

पाठकजी की रसमयी रचना से किस सहृदय साहित्य-रसिक का हृदय रसप्लावित न होता होगा ? आपकी गणना वर्त्तमान हिन्दी-साहित्य के महारथियों में है। आपकी राष्ट्रीय कविता नवयुवकों में जातीय जीवन सञ्चार करने वाली है। प्रस्तुत पुस्तक पाठकजी के उन गीतों का संग्रह है, जिन्हें उन्होंने समय-समय पर स्वदेश-भक्ति की उमङ्ग में आकर लिखा है। इसकी प्रस्तावना साहित्य-मर्मज्ञ बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन ने लिखी है। यह पुस्तक राष्ट्रीय विद्यालयों के बड़े काम की है। पृष्ठ-संख्या ६४, मूल्य ≡)

भारतवर्ष का इतिहास [प्रथम खण्ड]

[लेखक—श्री मिश्रबन्धु]

यह इतिहास प्राचीन और अर्वाचीन काल से सम्बन्ध रखता है। इसमें पूर्व वैदिक काल से सूत्र काल तक अथवा ६००० संवत् पूर्व से ५०० संवत् पूर्व तक की घटनाओं का उल्लेख है। अबतक

पता—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पोस्टबाक्स नं० ११, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में भारतवर्ष का सच्चा इतिहास एक भी नहीं था। विदेशियों के लिखे हुए अपूर्ण और पक्षपातयुक्त इतिहासों के पढ़ने से यहाँ के नवयुवकों को अपने देश के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। ऐसे समय में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक मिश्रबन्धुओं ने बड़ा काम किया है। मध्यमा परीक्षा के इतिहास विषय में यह पुस्तक निर्दिष्ट है। जिल्दवाली पुस्तक का, जिसकी पृष्ठ-संख्या ४०६ है, मूल्य केवल १॥) है।

राष्ट्रभाषा

[सम्पादक—श्री 'भारतीय हृदय']

कुछ समय हुआ, महात्मा गांधी ने यह प्रश्न उपस्थित किया था कि, क्या हिन्दी राष्ट्रभाषा हो सकती है? इसके उत्तर में भारत के प्रत्येक प्रान्त के बड़े-बड़े विद्वानों और नेताओं ने पक्षपात-रहित सम्मतियाँ दी थीं कि निःसन्देह हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होने योग्य है। उन्हीं सब अमूल्य सम्मतियों का संग्रह इस पुस्तक में किया गया है। इसके विरोधियों का भी यथेष्ट खण्डन हुआ है। इस विषय के व्याख्यानों का भी इनमें संकलन कर दिया गया है। हिन्दीभाषा के प्रेमियों के लिए यह पुस्तक प्राणस्थानीय नहीं तो क्या है? पृष्ठ-संख्या २८०, मूल्य ॥)

शिवा-बावनी

महाकवि भूषण के वीररस सम्बन्धी ५२ कवित्तों का उत्तम संग्रह। इन कवित्तों के टक्कर के छन्द शायद ही वीररस के साहित्य में अन्यत्र कहीं मिलें। महाराष्ट्रपति शिवाजी की देशभक्ति और सच्ची वीरता का यदि चित्र देखना हो, तो एक बार इस छोटी सी पोथी का पाठ अवश्य कर जाइये। शब्द एवं भाव-काठिन्य दूर करने के लिये कवित्तों की सुबोधिनी टीका, टिप्पणी और अलंकार आदि साहित्य से सम्बन्ध रखने वाली आवश्यक बातों का इसमें उल्लेख कर दिया गया है। साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा में यह पुस्तक रखी गयी है। पृष्ठ-संख्या ५४, मूल्य ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल पिङ्गल

ले० — { श्री पुत्तन लाल विद्यार्थी विशारद
श्री लक्ष्मीधर शुक्ल विशारद }

इस पुस्तक में पिङ्गलशास्त्र के गूढ़ रहस्यों को सरल और सुन्दर भाषा में समझाने का प्रयत्न किया गया है। छन्दों के उत्तम उदाहरण भी दिये गये हैं। अन्त में संस्कृत छन्दों का भी संक्षेप में दिग्दर्शन करा दिया गया है। यह पुस्तक सम्मेलन की प्रथमा-परीक्षा के साहित्य विषय की पाठ्य पुस्तकों में स्वीकृत है। पृष्ठ-संख्या ५८ मूल्य।) नवीन संस्करण छपकर तैयार है

सूरपदावली (सटिप्पण)

श्री सूरदासजी के १०० अत्युत्तम पदों का अपूर्व संग्रह है। मूल्य।) नवीन संस्करण छपकर तैयार है।

भारतवर्ष का इतिहास [द्वितीय खण्ड]

[लेखक—श्री मिश्रबन्धु]

इसमें ५०० संवत् पूर्व से १२५० संवत् तक की घटनाओं का वर्णन किया गया है। भारतवर्ष के उत्थान-पतन के क्रम का पता इस पुस्तक से जैसा कुछ चलता है, यह पढ़ने से ही मालूम होगा। हिन्दू-समाज की उन्नति और अवनति, इस देश में स्वदेशी और विदेशी भावों का आविर्भाव तथा धार्मिक जीवन की महत्ता आदि जानने योग्य आवश्यक विषयों का ज्ञान इससे पूर्णतः प्राप्त हो सकता है। यह पुस्तक सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा की इतिहास-विषयक पाठ्य पुस्तकों में स्वीकृत है। सुन्दर छपाई, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ-संख्या ४४० मूल्य २।)

संक्षिप्त सूरसागर

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

सूरदासजी-रचित सूरसागर से ५०० पद-रत्न चुनकर इसमें एकत्र किये गये हैं। जहां तक हो सका है, कई प्रतियों से पदों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ शुद्ध किया गया है। प्रत्येक पद की पाद-टिप्पणी भी लगा दी गयी है। अब तक सब के अनुशीलन करने योग्य सूरसागर का कोई सुन्दर और सुलभ संस्करण नहीं निकला था। लोग इसके रसास्वादन के लिये लालायित हो रहे थे। सम्मेलन ने इस अभाव को दूर कर हिन्दी-साहित्य रसिकों की पिपासा शान्त करने की यथाशक्ति चेष्टा की है। पुस्तक के अन्त में लगभग १०० पृष्ठ की सूरदासजीकी जीवनी तथा काव्य-परिचय जोड़ा गया है। उनकी जीवनी की मुख्य-मुख्य घटनाओं का पूरा-पूरा उल्लेख आगया है। पदों में आई हुई अन्तर्कथाएँ भी लिखी गयी हैं। यह पुस्तक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा में स्वीकृत है। एण्टिक कागज़ का जिल्ददार संस्करण, पृष्ठ-संख्या ४२५, मूल्य २)

विहारी-संग्रह

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

कविवर विहारीलाल की सतसई से प्रथमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए यह छोटा सा संग्रह तैयार किया गया है। जहाँ तक सम्भव हुआ है, इसमें शृंगार रस के दोहों का समावेश नहीं किया गया है। किन्तु ऐसे दोहों का संग्रह किया गया है, जो बिना किसी सङ्कोच के बालक-बालिकाओं को पढ़ाये जा सकते हैं। पृष्ठ-संख्या ६४, मूल्य ≡)

ब्रज-माधुरी-सार

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

इस पुस्तक का विषय इसके नाम ही से प्रकट होता है। इसमें ब्रजभाषा की कविता का सार सङ्कलन किया गया है। इस संग्रह में चार विशेषताएँ हैं :—

(१) इसमें सूरदासजी से लेकर आधुनिक काल के स्वर्गीय सत्यनारायणजी तक की भावपूर्ण कविताओं का संग्रह किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) इसमें कुछ ऐसे कवियों की रचनाओं का रसास्वादन भी कराया गया है जो अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुई थीं।

(३) इस ग्रन्थ में यथेष्ट पाद-टिप्पणियाँ लगा दी गयी हैं, जिनकी सहायता से साधारण पाठक भी लाभ उठा सकते हैं।

(४) इसके प्रारम्भ में प्रत्येक कवि का संक्षिप्त जीवनचरित्र और उसकी कविता की संक्षिप्त आलोचना भी की गई है।

पृष्ठ संख्या ६३२, मूल्य जिल्दवाले संस्करण का केवल २)

पद्मावत (पूर्वार्द्ध)

[सम्पादक—श्री लाला भगवानदीन]

यह हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्मावत का पूर्वार्द्ध है। इस भाग में पहले खण्ड से लेकर ३४ वें खण्ड तक का समावेश हुआ है। सम्पादक महोदय ने इस ग्रन्थ में इतनी पादटिप्पणियाँ लगा दीं हैं कि अब इस प्राचीन काव्य का रसास्वादन करना प्रत्येक कविता-प्रेमी के लिये सुलभ हो गया है। अन्त में एक संक्षिप्त शब्द-कोष भी जोड़ दिया गया है। पृष्ठ-संख्या लगभग २२०; मूल्य साधारण जिल्द का १) और जिल्दवाली का १।)

सूरदास की विनयपत्रिका

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

यद्यपि 'विनय-पत्रिका' नाम का कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ महात्मा सूरदासजी का नहीं है तथापि सूरसागर में विनय-सम्बन्धी जो पद मिलते हैं, उन्हीं के आधार पर सौ उत्तमोत्तम एवं मनोरम पदों का संकलन करके इसका 'विनय-पत्रिका' नाम दिया गया है। क्रम तुलसीदासजी की विनय-पत्रिका का रक्खा गया है। अन्त में संक्षिप्त शब्दार्थ भी दे दिया है। पृष्ठ-संख्या ७४, मूल्य केवल ≈)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-रत्न-माला

१—अकबर की राज्य-व्यवस्था

[लेखक—साहित्यरत्न पं० शेषमणिजी त्रिपाठी, बी० ए०]

इसमें सम्राट अकबर की राज्य-व्यवस्था का बड़ा ही मनोहर चित्र अंकित किया गया है। अकबर के राज्य-काल में भारतीय समाज, धर्म-नीति तथा जीवन की क्या अवस्था थी, वर्तमान राज्य प्रणाली, तत्कालीन व्यवस्था के मुक़ाबले में कैसी है आदि बातों का पता इस पुस्तक से भली भाँति लगता है। इतिहास, राजनीति तथा अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए यह बहुत लाभदायक है। पृष्ठसंख्या २८०, मूल्य १)

२—हिन्दी-काव्य में नवरस

[लेखक—साहित्यरत्न श्रीयुत बाबूराम बित्थरिया]

पुस्तक का विषय उसके नाम से ही प्रकट है। यह पुस्तक लेखक ने सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा देने के लिए निबन्ध (Thesis) रूप में लिखी थी। पुस्तक कितने महत्त्व की है, यह इसी से प्रकट है कि सम्मेलन की परीक्षा-समिति ने इसे मध्यमा परीक्षा के साहित्य विषय के पाठ्यग्रन्थों में चुना है। मूल्य २) पृष्ठ-संख्या लगभग ५००

सम्मेलन की अन्य पुस्तकें

सूर्य-सिद्धान्त

[सम्पादक—श्री० इन्द्रनारायणजी द्विवेदी]

ज्योतिष-शास्त्र में सूर्य-सिद्धान्त अपने ढँग का एक ही है। इसे देखने से यह पता भली भाँति चल जाता है कि आर्यों ने उन सिद्धान्तों का बहुत पहले साक्षात्कार कर लिया था, जिन्हें जानकर पश्चिमी पंडित आज डींग हाँक रहे हैं। इसमें खगोल विषयक सभी बातें आ गयी हैं। सौर जगत् का पूरा-पूरा विवरण इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्व ग्रन्थ में दरशा दिया गया है। इस पर संसार की प्रायः सभी भाषाओं में टीका-टिप्पणी हो चुकी है। हिन्दी में दो तीन और टीकाएँ मिलती हैं, पर उनसे ठीक-ठीक भाव समझ में नहीं आता। श्री द्विवेदीजी ने इसके गूढ़ से गूढ़ विषय भी सरल और स्पष्ट भाषा में समझाने की पूर्ण चेष्टा की है। मध्यमा के ज्योतिष विषय में यह स्वीकृत है। सजिल्द, पृष्ठ-संख्या २३२, मूल्य १।)

इतिहास

[ले०—स्वर्गीय श्रीविष्णु शास्त्री चिपलूणकर]

यह श्रीचिपलूणकर जी के निबन्ध का अविकल अनुवाद है। इतिहास सम्बन्धी प्रायः सभी ज्ञातव्य बातें इसमें आ गयी हैं। यह पुस्तक सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा के इतिहास विषय की पाठ्य पुस्तकों में स्वीकृत है। मूल्य ≡)

हिन्दी-भाषा-सार

[सम्पादक—श्री लाला भगवानदीन
तथा
अध्यापक बाबू रामदास गौड़, एम्० ए०]

हिन्दी में क्रमशः गद्य का विकास किस-किस प्रकार हुआ, इसका पता इस पुस्तक से चल सकता है। इसमें सुयोग्य सम्पादकों ने हिन्दी के प्राचीन उत्तमोत्तम गद्य लेखकों के चुने हुए लेख दिये हैं। नीचे टिप्पणी भी लगा दी है। गद्यात्मक निबन्धों का यह एक आदर्श संग्रह है। प्रथमा परीक्षा में यह स्वीकृत है। एण्टिक काग़ज़ पर सुन्दर छपाई, पृष्ठ-संख्या २००, मूल्य ॥।)

प्रथमालङ्कार-निरूपण

[ले०—साहित्याचार्य्य श्री चन्द्रशेखरजी शास्त्री]

प्रथमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए अलंकार विषयक ज्ञान करा देने के लिए यह 'निरूपण' बड़े काम का है। अलंकारों के लक्षण और उनके उदाहरण बड़ी ही सरलता से समझाये गये हैं। प्रथमा परीक्षा में यह स्वीकृत है। मूल्य ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मौसिम के लिये
डाक्टर एस० के०
बर्म्मन का

दों — अर्क़ पुदीना (सब्ज़) — रत्न

यह ऐसी चीज़ है कि यों तो खाने में पुदीनेकी हरी पत्तियों की खुशबू और स्वाद है, और गुण ! ऐसा कि लोग देख कर दंग हो जाते हैं। वादीके कारण जितने विकार होते हैं, पेट फूलना, डकार आना, भूख कम होना, आदि शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। बच्चोंके लिये इसके समान दूसरी दवा नहीं है।

मूल्य फी शीशी ॥।=) डा० म० ।≈)

क्लोरो डिन

भारतवर्ष के लाखों रोगियोंने इनसे लाभ उठाए हैं

अंग्रेजोंकी घरेलू दवा यही है। दस्त, आँव, पेचिश, मरोड़, पेट दर्द, और पेठन के लिये यह बहुत ही उपकारी दवा है। वायुके दर्द, और शूल चाहे किसी कारण से हो यह दवा दो खुराक में आराम कर देती है। डा० बर्म्मन ने इंगलैण्ड के एक नामी औषधालय से इसे बनवाया है। दाममें सस्ता, और गुणमें "पेटेन्ट क्लोरोडिनके समान है। मूल्य फी शीशी ॥) डा० म० ।=)

पता—डाक्टर एस० के० बर्म्मन (विभाग नं० १२२)
पोष्ट बक्स नं० ५४४, कलकत्ता।

एजेन्ट—इलाहाबाद (चौक) में हमारी दवाएँ मे० दूबे ब्रादर्स के यहाँ मिलेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

भाग १३]   ज्येष्ठ, संवत् १९८३ वि०   [अङ्क १०

भक्त के प्रेमोद्गार

पर काजहिं देह को धारे फिरौ, पर जन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
निधि नीर सुधा के समान करौ सबही बिधि सज्जनता सरसौ॥
घनआँनँद जीवन दायक हौ कछु मेरियै पीर हिये परसौ।
कबहू वा बिसासी सुजान के आंगन मो अँसुवान कौं लै बरसौ॥

—आनन्दघन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलंकार और कविता

—"अलंकरोतीत्यलङ्कारः।"

जो अलंकृत करता है वह अलङ्कार है। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि किसको ? स्त्रियों—बच्चों को ? नहीं, वे तो सोने-चाँदी के गहने हैं। विशेषकर साहित्य के अन्तर्गत जो अलङ्कार कहा जाता है वह किसको अलंकृत करता है ? इसका अनिवार्य उत्तर है "कविता को"।

तात्पर्य यह है कि अलङ्कार और कविता दोनों भिन्न-भिन्न वस्तुएँ हैं। इस बात को कहने के लिए तो सभी जानते और समझते हैं, परन्तु अधिकांश लोग व्यवहार में अलङ्कार को ही कविता समझते हैं।

मैंने बड़े-बड़े विद्वानों—लेखकों को देखा है कि वे उपमा पर, रूपक पर, उत्प्रेक्षा पर और अतिशयोक्ति पर उछल पड़ते हैं। यदि कोई सीधा-सादा मर्मपर्शी वाक्य उनके कर्णगोचर हुआ तो उसको कह देते हैं कि इसमें क्या धरा है। यह तो ऐसाही हुआ कि "हम आते हैं, तुम जाते हो"। वे ऐसी दूरूह एवं बे-सिर-पैर की उक्तियों पर मोहित हो जाते हैं जो वास्तव में कविता नहीं होतीं। अगर चुस्त फबतियाँ ही कविता होतीं—अगर चतुरता की उक्तियां ही कविता होतीं तो बीरबल तुलसीदास से बड़े कवि कहलाते। नायिका भेद को कण्ठ करके, या उसकी एक पुस्तक सम्मुख रख कर हर एक भेद पर दोहों की गढ़न्त को जो कविता का पद दे देते हैं उनको हम क्या कहें ?

यहां यह बात फिर से दुहराने की आवश्यकता नहीं है कि कविता क्या है। यह हम पहले के लेखों में बता आये हैं। संक्षेप में यह कह देने से काम चल जायगा कि कोई भाव चाहे उसमें चमत्कार हो चाहे न हो—चाहे उसमें अलंकार हो चाहे न हो, उपयुक्त स्थान पर उपयुक्त पात्र के मुख से निकल कर कविता हो सकता है। परन्तु कविता होसकता है भावही, भाव का वस्त्र या आभूषण कविता-पद को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे शब्दालंकार, मालोपमा, रशनोपमा, ये सब भाव-संहारी—कविता बिगाड़नेवाले अलंकार हैं, यदि इनका जान-बूझ कर प्रयोग किया जाय। कविता पहले हुई है—विविध रूप से भावों की अभिव्यक्ति पहले हुई है, उसके पश्चात् उन विविध रूपों का नामकरण अलङ्कार के भेदों में हो गया। उदाहरणार्थ—

मुख चन्द्रमा के समान है—उपमा।

मुख है, या चन्द्रमा है—सन्देहालंकार।

चन्द्रमा देखने से मुख याद आता है—स्मरणालंकार।

मुख को चन्द्रमा समझकर चकोरसाथ फिरता है—भ्रान्ति अलङ्कार।

मुख नहीं, यह चन्द्रमा है—अपन्हुति अलंकार।

मुख के मिस चन्द्रमा उतर आया है—कैतवापन्हुति अलंकार।

चकोरी के लिए यह चन्द्र उतरा है—हेत्वापन्हुति अलंकार।

आदि एक ही बात कहने के अनेक ढंग हैं। परन्तु जैसा हम "कविता में मिथ्याभाषण" लेख में बता आये हैं, साधारणतया कहीं भी मुख को चन्द्रमा की उपमा देना ही निम्न श्रेणी का कवित्व है। एक विशेष अवस्था को छोड़ कर और अवस्थाओं में उक्त वाक्यों में से एक भी कविता के पद को नहीं प्राप्त हो सकता। उनमें अलंकार हैं तो रहा करें। नायक जब नायिका के रंग में इतना डूब गया हो कि उसे सचमुच में चन्द्रमा नायिका के मुख के सामने तुच्छ जँचने लगे, तभी उनके मुख से निकल कर उक्त वाक्य कविता हो सकते हैं। परन्तु ऐसी दशा में नायक की मानसिक दशा का ठीक चित्रण पहले ही हो जाना चाहिए।

ऊपरी दृष्टि से देखने पर ही स्पष्ट है कि इन अलङ्कारों के भेदों को पहचानने में तो कुछ कठिनता अवश्य है, परन्तु इनकी सृष्टि में न कहीं कठिनता है—न विशेषता। मनुष्य किसी-न-किसी तरह से अपने भावों को व्यक्त करेगा ही। वही अभिव्यक्ति एक-न-एक अलङ्कार के अन्तर्गत हो जावेगी।

बहुत से अलङ्कार तो ऐसे हैं कि उनको अलङ्कार कहना ही हास्यास्पद ज्ञात होता है। उदाहरणार्थ दीपकालंकार को ले लीजिये। जहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर बहुत सी क्रियायें हों पर कारक या कर्ता का नाम एक ही बार लिया जाय, वहाँ दीपकालङ्कार समझिये। अब सोचने की बात यह है कि यह भी कोई अलङ्कार है! यह तो व्याकरण के अन्तर्गत एक प्रकार की वाक्य-रचना मात्र है। इसको अलङ्कार का पद प्रदान करना हमारी समझ में लड़कों का खेल है। इसका उदाहरण भी देख लीजिये—

"जाति चितै, आवति, हँसति, पूछति बात विवेक।"

इसमें चमत्कार क्या है सो पुराने आचार्य ही जानें। हमें तो जान पड़ता है कि इसमें व्याकरण की रीति से कर्ता को बार-बार न कहने की सुविधा मात्र है। यह बात को ठीक तरह से संक्षिप्त वाक्य में कह सकना मात्र है। यहां अलङ्कार कहाँ से आ गया?

इसी प्रकार यथासंख्यालङ्कार भी व्याकरण से ही सिद्ध है। उदाहरण:—

"करि अरि मित्त विपत्ति को, गजन, रंजन भङ्ग!"

यहाँ यथासंख्य (Respectively) "अरिका गंजन," "मित्त का रंजन" और "विपत्ति को भङ्ग" करने की बात है; और वाक्य संबन्धी एक सुविधा मात्र है। विभक्ति का बारम्बार प्रयोग व्याकरण के नियम के अनुसार बच गया है। यह भली प्रकार वाक्य-रचना मात्र है इसमें अलङ्कार क्या है? हमारी समझ में नहीं आता कि ऐसे ही अलङ्कार बनाना था तो वाक्य-पृथक्करणालङ्कार" और "पैराग्राफ़ालङ्कार" क्यों नहीं बनादिये गये? "विरामालङ्कार" भी अनुपयुक्त न होता!

और लीजिये। असम्भवालङ्कार।

यदि कोई असम्भव बात कही जाय तो असम्भवालङ्कार होगया। जैसे:—

"को जाने यो गोप सुत गिरि धारैगो आज!"

कोई वृज का आदमी, जो वर्षा से गोवर्धन की छाया में बच गया था, कहता है कि किसी के बचने की उम्मीद नहीं थी। क्योंकि कौन जानता था कि श्रीकृष्णजी पहाड़ हाथ पर धर लेंगे। यह उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारण बात हुई। इसमें अद्भुत रस तो हो सकता है; परन्तु यहाँ असम्भवालङ्कार की कल्पना में क्या सार है? यहाँ तो कहने का अर्थ ही यही है कि अमुक बात असम्भव है। अर्थ ही अलङ्कार कैसे हो गया। अर्थ अलंकृत रूप से कहा जा सकता है; परन्तु वह स्वयं अलङ्कार कैसे हो गया, यह असम्भवालङ्कार के प्रसव-कर्ता ही जाने। हमारे अलङ्कार-शास्त्र में ऐसी ऊट-पटाँग बातें भी भरी हुई हैं, यह न जाने क्यों आजकल के साहित्य-दिग्गजों के समझ में नहीं आता।

अलङ्कारिक कविलोग वस्तुतः करते क्या हैं? वे एक भद्दी सी मूर्ति बनाते हैं जिसे मैं तो मृत्तिका-मूर्ति कहूँगा। उसे चिथड़ा-भाषा रूपी पुराने, फटे, मैले-कुचैले कपड़े पहना देते हैं। जान डाल नहीं सकते, मगर अंगों को बेडौल करने में कोई कसर नहीं करते। उसी को गहनों से लाद देते हैं—यहाँ तक कि एक सोने की सिल भी उसके पीठ पर रख कर रस्सी से बाँध देते हैं। यह कैसी सुन्दर और हँसाने वाली मूर्ति होती है, यह सभी विद्वान् और सुरुचि-सम्पन्न वाचक जान जाते हैं, पर लेखक स्वयं उसकी वाहवाही करके उसी में मस्त रहते हैं।

इस मूर्ति की गंदगी के बारे में हम क्या कहें? इसमें निर्लज्ज शृंगार की नग्नता, दुर्भावों की गंध आदि सभी प्रकार के फूहड़पन रहते हैं। ऐसी ही मूर्तियों पर विदेशी लोग तालियाँ पीटते है। यह बात स्वाभाविक ही है। इसी मूर्ति को जो कविता कहते हैं उनकी समझ की बलिहारी है। ऐसी कविता का एक उदाहरण ले लीजिये।

तो पर वारों उरबसी, सुन राधिके सुजान।
तू मोहन के उर-बसी, ह्वै उरबसी समान॥

इसमें यमकालङ्कार है। उपमालंकार की सोने की सिल भी अन्त में है, जहाँ राधा को वेश्या उर्वशी के समान बता दिया है। कोई जीता-जागता चित्र सामने खिंचता नहीं, नग्न शृंगार और वासना की गंध है। और क्या चाहिये? पूरी कविता होगई!

सच पूछिये तो अलङ्कार अलङ्कार ही है; और कविता, कविता ही। कोई समय था जब स्त्रियों में अधिक गहना पहनने का रिवाज था, पर अब वह समय नहीं रहा। कविता के विषय में भी इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार रुचि-परिवर्तन हो गया है। पद-विन्यास ही सुन्दर चाहिए। पदविन्यास के साथ अगर झांझ बज उठी तो अनर्थ हो जाता है। अब तो सीधी हृदय की बात चाहिए। एक शब्द के स्थान में दो शब्द कहने की आवश्यकता नहीं। लुप्तोपमा आदि इङ्गित मात्र के अलङ्कारिक पुष्पों के गहने चाहिए। पूर्णोपमा और लम्बे चौड़े रूपकों का ज़माना गया। आजकल तो बन कन्या का जीता-जागता चित्र चाहिये। केवल सौभाग्य-चिह्न चूड़ियाँ हाथों में रह सकती हैं।

शब्दालङ्कारों को अत्यन्तगर्हित जानकर हमने छोड़ दिया है; परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि किसी भी तरह से वे उपयोगी एवं सौन्दर्य्य-वर्धक हो ही नहीं सकते। ये अलंकार और अर्थालङ्कार दोनों अनायास आकर चुस्त बैठ जाने से अच्छे मालूम होते हैं। ढूँढ़ ढ़ कर अलंकार ठूँसना या अलङ्कार-विशेष लेकर कविता करना तुच्छ बात है, जो केवल रीति-ग्रन्थों के उदाहरण-निर्माण में ही क्षम्य हो सकती है।

अब ज़रा सुन्दर शब्दालङ्कार और सुन्दर कविता का एक उदाहरण भी लेलेना चाहिए।

"परमप्रेममय मृदु मसि कीन्हीं,
चारु चित्र भीतर लिख लीन्हीं।"
× × × ×
"बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू,
भूपकिशोर देख किन लेहू"
× × × ×
"पुनि आउब इहि बिरियां काली,
अस कहि मन बिहँसी इक आली!"

प्रथम दो चरणों में अनुप्रास है; और कितना मधुर एवं रोचक है! मालूम होता है कि यह बनाया नहीं गया। यह शब्दों का स्वाभाविक प्रवाह हृदय से निकला है। यह लिखते समय न कवि को मालूम हुआ है और न पढ़ते समय वाचक को। यह तो बाद में ध्यान देने पर ज्ञात होता है कि यहां पर छेकानुप्रास है। इस स्वाभाविक प्रवाह से ठूँस-ठाँस अनुप्रास भी मिला के देखिये—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जाति-जगत के जीवन में
जीवट की ज्योति जगाते हैं,
भगवान-भरोसे भय भ्रम की
भीषण भावना भगाते हैं।

स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि सम्पूर्ण पंक्तियों में बनाया हुआ छेकानुप्रास है। यह कर्णों को अरुचिकर प्रतीत होता है और पढ़ने के समय ज्ञात हो जाता है।

अब तुलसीदासजी के उन दोनों चरणों में अर्थालङ्कार देखिये। प्रेम को स्याही किया और चित्र भीतर लिख लिया। उन्होंने इशारा दे दिया। यह नहीं कहा कि अमुक लेखनी से "हृत्पत्रपर" चित्र लिख लिया। यदि ऐसा करते तो अलङ्कार ठूँसना हो जाता।

आगे चलकर देखिये कितना, सुन्दर व्यंग है—अलङ्कार है ही नहीं। "गौरी का ध्यान फिर करना, अभी राजकुमार देख लो।" अलङ्कार-हीन यह वाक्य कितना सुन्दर है, इसका सभी साहित्य-प्रेमी अनुभव कर सकते हैं।

इसके बाद देर होती देख कर दूसरी सखी व्यंग करती है "कल फिर इस समय आजावेंगे।" इस वाक्य में अलङ्कार का नाम नहीं है, परन्तु ऊँचे-से-ऊँचे दरजे की कविता है। सखी का मन में हँसना वाक्य को व्यंग करके यह व्यंग्य-ध्वनि निकालता है—"रामचन्द्र कल फिर देखने को मिल जावेंगे। इतनी विकलता की क्या आवश्यकता है?" जहाँ थोड़े से शब्दों से उनके अर्थ से कोई भिन्न गुप्त अर्थ झलक उठाता है वहीं सबसे ऊँची कविता होती है और ऐसे प्रसंगों पर अलङ्कार भाग जाते हैं।

अब तो साहित्यिक रुचि ऐसी हो गई है कि जिस कविता में शब्द भाव से अधिक चित्ताकर्षक होते हैं वह उच्च श्रेणी की कविता नहीं कही जा सकती। अच्छी कविता की पहचान यह है कि आप पढ़ते चले जाइये, भाषा का आप को भान तक न हो और भाव मन पर बैठते जावें। यह तभी सम्भव है जब कविता में जहाँ तक हो सके अलंकार न हों; और हों भी तो बहुत हल्के, अर्थात् फूलों के गहने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके विपरीत जो कविता शब्दालंकार और अर्थालङ्कार के भार से इठलाती, लचकती, मटकती चलेगी उसको कथा वाचक की कथा का पद चाहे मिलजाय; पर वह कविता नहीं कही जा सकती।

—आनन्दिप्रसाद श्रीवास्तव्य

कविता तथा कवित्व

सर्व गुण-आगर, नटनागर परब्रह्म परमात्मा ने इस असार संसार के सौन्दर्य-वृद्धि और सुप्रबन्ध के लिए मनुष्यों के भिन्न-भिन्न समूहों में भिन्न-भिन्न प्रकार की योग्यताएँ उत्पन्न की हैं, जिनसे वे सभी समूह अपनी-अपनी रुचि और बुद्धि के अनुसार पृथक-पृथक कार्यों में संलग्न हों, पारस्परिक सहयोग द्वारा सब की आवश्यकताएँ पूरी हों और किसी का काम अटका न रहे। यद्यपि इनमें से कुछ श्रेणियाँ ऐसी भी हैं, जिनके कार्य समाज के लिए प्रायः लाभकारी प्रतीत नहीं होते। परन्तु एकही पिता (परमात्मा) की संतान होने के नाते समाज में उनका भी कोई न कोई स्थान अवश्य है यही कारण है कि उन्हें अपने भाग्य पर संतोष और अपने उद्योग के सफल होने में पूर्ण विश्वास है। जो कार्य्य उनके प्रयत्न से सिद्ध होता है, चाहे संसार की दृष्टि में उसका मूल्य कुछ भी न हो; परन्तु उनके लिए वह उतनाही आवश्यक और उचित है, जितना संसार के समस्त अन्य कार्यकर्ताओं के लाभदायक और प्रभावशाली कार्य। कृषक अपने उद्योग से संसार का परिपोषण करता है। शिल्पकार की कृपा से लोग ऋतु संबन्धी कष्टों से सुरक्षित रहते हैं। इसीलिये इन दोनों के कार्य सब के सम्मुख परम आदरणीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और प्रशंसनीय समझे जाते हैं। परन्तु एक वंशी बजानेवाला, जो किसी निर्जनवन में एक टीले पर विराजा हुआ वंशी की सुमधुर ध्वनि से अपना मनोविनोद कर रहा है और कभी-कभी श्रोताओं को भी मनोमुग्ध बना अपनी ओर आकर्षित करता है, यद्यपि उससे मनुष्य मात्र को यद्दकिंचित लाभ की संभावना नहीं है; तथापि वह अपने इस मनोमुग्धकारी, रुचिकर कार्य्य को कृषक और शिल्पी (राज) के कार्य्य से किसी भी अवस्था में कुछ कम आवश्यक नहीं समझता। वह तो इसी विचार में निमग्न है कि यदि इस कार्य्य का सृष्टि-क्रम में कुछ स्थान न होता तो वह सर्वशक्तिमान मानवीय हृदय में इसका उन्मेष ही न करता।

कविता के गुण-दोष वर्णन को बहुत विस्तार दिया गया है, और जितने उसके दोष बताये गये हैं वे गुणों की अपेक्षा अधिक विचारणीय हैं। स्वयं एक कवि का ही कथन है कि "संसार में कवि को छोड़कर कोई घृणित-से-घृणित-कार्य करनेवाला भी ऐसा नहीं है जिसकी समाज को आवश्यकता न हो।" यूनान के सुप्रसिद्ध विद्वान् अफ़लातून ने अपने देश में प्रजा-सत्तात्मक राज्य का एक काल्पनिक चित्र चित्रित किया था। उसमें कवि को छोड़कर प्रत्येक उद्योग-धन्धेवाले की आवश्यकता स्वीकार की थी। वर्तमान काल में कुछ लोगों ने कविता को मेजिक लैन्टर्न की समता दी है। उनका कथन है कि मैजिक लैन्टर्न जितने ही प्रगाढ़ान्धकार में प्रकाशित की जाती है उतना ही अधिक चमत्कार दिखाती है। इसी प्रकार जितने ही अधिक अविद्यान्धकार में कविता का प्रकाश होता है, उतना ही वह अधिक समादृत होती है।

यह और इसी प्रकार की और भी बहुत सी बातें, जो काव्य के विरुद्ध वर्णन की गई हैं, ऐसी हैं जो निस्सन्देह स्वीकार करनी पड़ती हैं। परन्तु इस कथन को भी कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि संसार में सहस्रों—बल्कि कोटियों—मनुष्य ऐसे उत्पन्न हुए हैं, जिनको प्रकृति ने केवल इसी कार्य्य के लिए उत्पन्न किया था और यह योग्यता उनके हृदय में धरोहर की भाँति सुरक्षित रक्खी थी; यद्यपि अनेक ने इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुमूल्य योग्यता से प्रकृति के विरुद्ध कार्य लिया। एक ऐसे अमूल्य पदार्थ को जो प्रकृति ने बड़े अनुग्रह से प्रसाद-स्वरूप हमें प्रदान किया, केवल इस कारण से, कि बहुधा लोग उसको प्रकृति के विरुद्ध प्रयोग में लाते हैं, किसी भी भाँति निरर्थक और व्यर्थ नहीं कह सकते। बुद्धि ईश्वर-प्रदत्त एक अनुपम रत्न है; परन्तु बहुत से अदूरदर्शी इसको दंभ, पाखंड तथा पारस्परिक ईर्ष्या और द्वेष में अपव्यय करते हैं। इसी प्रकार साहस भी एक अद्वितीय सद्गुण है; परन्तु कभी-कभी वह घात-प्रतिघात तथा लूट-खसोट में व्यवहृत होता है। इससे बुद्धि के महत्व और साहस की बहुमूल्यतामें किंचित मात्र अंतर नहीं आ सकता। इसी प्रकार कवित्व-शक्ति किसी के अनुचित प्रयोग से हानिकर सिद्ध नहीं हो सकती। यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि काव्य कोई अभ्यास-सुलभ पदार्थ नहीं है, किन्तु जिस के अन्तस्तल में प्रकृति की ओर से उसकी शक्ति विद्यमान कर दी गई है वही कवि हो सकता है। कविता का सर्व-प्रथम चिन्ह सहृदयता है। बहुधा देखा गया है कि जो पद्य किन्हीं-किन्हीं अच्छे विद्वानों से भी ध्वनि के साथ नहीं पढ़े जाते उनको कोई-कोई अल्पवयस्क बालक, बिना किसी प्रकार की रोक-टोक के उचित रीति से पढ़ते चले जाते हैं। इससे प्रकट होता है कि कविता कोई अभ्यास-सिद्ध पदार्थ नहीं है; बल्कि किसी-किसी के हृदय में उसकी शक्ति ईश्वर-प्रदत्त होती है। बस स्मरण रखिये कि यदि कवि इस ईश्वरीय दातव्य को प्रकृति की इच्छानुसार कार्य्य में लावेगा, तो अवश्यही जनता को उससे कुछ-न-कुछ लाभ होगा।

काव्य के अमोघ प्रभाव को प्रायः सभी स्वीकार करेंगे। श्रोताओं के हृदय में बहुधा इससे करुणा, प्रसन्नता, उत्साह अथवा खेद का थोड़ा या बहुत संचार अवश्य ही होता है; और इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि यदि इससे कार्य लिया जाय तो वह कहाँ तक लाभदायक सिद्ध हो सकता है। वाष्प से जो अब अगणित आश्चर्यजनक आविष्कार प्रकट हुए हैं, उनका अन्वेषण प्रथम हो उस सूक्ष्म शक्ति के द्वारा किया गया था जो बहुधा अग्नि पर रक्खे हुए पात्र के ढक्कन को वाष्प के बल से बारम्बार खटखटाया करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन जानता था कि इस क्षुद्र शक्ति में अलौकिक बलशालिनी, अनेक विजयिनी सेनाओं की अनुपम शक्ति विद्यमान है।

हमारे देश में भाँड़-भड़ौत्रों का कार्य अत्यंत घृणित समझा जाता है; और होली में जो स्वाँग भरे जाते हैं वह समाज के लिए हानिकर समझे जाते हैं। परन्तु यूरोप में इन्हीं भड़ौओं और स्वाँगों ने सुसंस्कृत और सुपरिष्कृत होकर समाज को अगणित लाभ पहुँचाये हैं। उनके द्वारा सामाज के आचार-विचार और रहन-सहन पर बहुत कुछ प्रभाव पड़ा है।

बाजों के सम्पूर्ण अवयव, जो हमारे यहाँ सदैव खेल-कूद और केवल मनोविनोद का कार्य्य देते रहे हैं, और जिनको यहाँ के बुद्धिमान नितान्त ही अनुपयोगी समझते रहे हैं, सभ्य जातियों ने इनके समुचित प्रयोग से अनेक लाभ उठाये हैं। यह बात स्वीकार करली गई है कि जब प्रचलित नियम के अनुसार युद्ध-क्षेत्र में बाजा बजाया जाता है तो योद्धाओं के मन एक अपूर्व उत्साह-पूर्ण कर्तव्य के पालन में सहसा झूलने लग जाते हैं; और नायक की आज्ञा पर प्रत्येक सैनिक अपनी जान न्यौछावर करने के लिए तुरंत उद्यत हो जाता है। जब कभी युद्ध के समय में बाजा बजने से रुक जाता है तो उनके मन उदास हो जाते हैं और नायक की आज्ञा का पालन बहुत ही साधारण रीति से किया जाता है।

इतिहास के पत्र लौटने पर ऐसे अगणित उदाहरण उपलब्ध हो सकेंगे कि कवियों ने अपने विचित्र वर्णनों के द्वारा लोगों के मनों पर विजय प्राप्त की है। बहुधा कवि के वर्णन मानव-हृदय पर ऐसा अधिकार करलेते हैं कि कवि की प्रत्येक वस्तु, यहाँ तक कि उसके दुर्गुण भी संसार की दृष्टि में सद्गुण ज्ञात होने लगते हैं, और लोग इस बात का प्रयत्नकरते हैं कि हम भी उन दुर्गुणों से विभूषित हो कर प्रकट हों। कविवर 'बायरन' के विषय में एक ऐसी ही किम्वदन्ती प्रचलित है कि लोग उसका चित्र बड़े उत्साह के साथ मोल लेते थे और उसकी मुखाकृति तथा अन्य स्मरणीय हाव-भावादि को बड़े गौरव के साथ सैंत-सैंतकर रखते थे। उसके पद्य मुखाग्र करते थे; साथ ही चाहते थे कि स्वयं भी वैसे ही दिखाई देने लगें। कभी-कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग अपने सामने दर्पण रखकर इस बात का अभ्यास करते थे कि होठ और मस्तक पर वैसी की सिकुड़न डालें जैसी कि लार्ड बायरन के कुछ चित्रों में पायी जाती है। उनमें से बहुतों ने तो उसकी होड़ करके गुलूबन्द बाँधना छोड़ दिया था।

योरप में राजनैतिक स्थिति की भयंकरता के समय, प्राचीनकाल से ही काव्य को जात्योत्थान के लिए एक अमोघ अस्त्र समझते रहे हैं। एक समय एथेन्स के अधिवासी और मगारा-निवासियों में सैलमस द्वीप के सम्बन्ध में चिरकाल तक घोर संघर्षण होता रहा। इसमें एथेन्सवाले बराबर पराजित होते रहे, और शनैः-शनैः उनका साहस इतना भंग होगया कि वह सदैव के लिए युद्ध से मुख मोड़ बैठे उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि भविष्य में जो कोई इस युद्ध के सम्बन्ध में कुछ वार्तालाप करे, अथवा पुनः युद्ध कराने की चेष्टा करे उसको मृत्यु-दंड दिया जाय। उस समय एथेन्स का सुप्रसिद्ध राजनैतिक नेता सोलन जीवित था। उसको अपने देश-भ्राताओं के इस प्रकार हतोत्साहित होने पर बड़ी लज्जा आई और उसने फिर उनको युद्ध के लिए उत्तेजित करना चाहा। वह जान-बूझकर विक्षिप्त बन गया। जब एथेन्स में यह समस्त समाचार विद्युत् की भाँति फैल गया कि सोलन पागल हो गया है, तो उसने कुछ कविता अत्यंत करुणोत्पादक शब्दों में लिखी, और पुराने चिथड़े लपेटकर, गले में एक रस्सी और सिर पर पुरानी चद्दर डालकर वह घर से बाहर निकला। लोग यह दशा देखकर उसके चारों ओर एकत्रित होगये। वह एक ऊँचे स्थान पर, जहाँ बहुधा मृदुभाषी वक्तागण खड़े होकर अपने वक्तव्य द्वारा किसी उद्देश्य विशेष का प्रचार किया करते थे, जा खड़ा हुआ। उसने अपने स्वभाव के विरुद्ध पद्य पढ़ना आरम्भ किया, जिसका विषय यह था—"यह उत्तम होता कि मैं एथेन्स में पैदा न होकर अज़म, बरबर अथवा ऐसे ही किसी दूसरे देश में उत्पन्न होता, जहाँ के निवासी मेरे देश-बन्धुओं से अधिक क्रूर, पाषाण-हृदय और यूनान की विद्या और विज्ञान से अपरिचित होते। यह दशा मेरे लिए उससे कहीं अच्छी थी कि लोग मुझसे कहें—"यह व्यक्ति उसी ऐथेन्स का रहने वाला है, जो सैलमस की लड़ाई से भाग गये। मित्रो! यथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्भव शीघ्र ही शत्रुओं से बदला लो और यह लज्जा और अकर्मण्यता हम से दूर भगाओ; और आनन्द-पूर्वक विश्राम तभी करो जब अपने हाथ से छिने हुए देश को शत्रुओं से पुनः हस्तगत करलो।"

इस लज्जा-जनक पद्य को सुनकर एथेन्सवालों के हृदय पर ऐसा गहरा आघात पहुँचा कि सब ने शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होकर सोलन को सेना का अधिनायक नियुक्त कर दिया। सबके सब मछुओं की नावों पर चढ़ कर सैलूमसद्वीप पर जा धमके। अन्त में, जैसा कि इतिहास में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है, उन्होंने सैलमस द्वीप को अधिकृत कर लिया। शत्रुओं में से बहुतेरों को बंदी किया और बचे-खुचे अपना सम्पूर्ण द्रव्य तथा सामिग्री छोड़कर भाग गये। फिर भी एक बार शत्रु ने बड़ी सजधज से सैलूमस पर चढ़ाई की; किन्तु कुछ लाभ न हुआ।

इंगलैंड के इतिहास से प्रकट होता है कि एडवर्ड ने जिस समय वेल्स पर चढ़ाई की, वहाँ के कवियों ने जाति-प्रेम के प्रभाव से प्रभावित होकर अत्यंत उत्साहवर्द्धक पद्य पढ़ना प्रारंभ किया। इससे उनकी मृतप्राय जाति में पुनः जाग्रति के चिन्ह प्रस्फुरित हो उठे। यद्यपि आँगल प्रदेशीय सेना के सम्मुख उनका कुछ भी मूल्य न था, किन्तु कवियों के अनुपम कथन ने उनमें मातृभूमि के प्रेम का उत्साह इतना विस्तीर्ण कर दिया था कि जब वे लोग सम्राट की सेना के समक्ष विजय प्राप्त करने के नितान्त अयोग्य सिद्ध हुए, तब भी उन्होंने स्वेच्छापूर्वक आत्म-समर्पण नहीं किया। कवियों के तत्सामयिक वर्णनों से एडवर्ड को घोर असम्मान, अप्रतिष्ठा और कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ीं। वह ऐसा झेंपा कि उसने उन कवियों को सकुटुम्ब मरवा डाला। यद्यपि कवित्व-शक्ति का फल वेल्स के कवियों के लिए अच्छा नहीं हुआ और न देश को ही उससे कुछ लाभ पहुँचा; किन्तु इस घटना से कविता के महत्व और प्रभाव की सिद्धि भली भाँति प्रकट होती है।

सन् १८३० ई० में, जब चार्ल्स दशम, फ्रान्स के सम्राट ने, स्वतंत्रता के नियमों के विरुद्ध, राज्य की कार्यवाही करना आरम्भ किया और फ्रान्स की प्रजा में बड़ी सनसनी फैल गई, उसमें आकुलता और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्विग्नता के भावों ने स्थान पाया, उस समय फ्रान्स में दो स्मरणीय पद्य, जिनमें से एक का नाम पैरिस और दूसरे का मार सलज़ था, लिखे गये, जो चौराहे और गलियों के नुक्कड़ों पर युद्ध के बाजों के साथ गाये जाते थे और जिनमें लोगों को, सम्राट के विरुद्ध, स्वतंत्रता की रक्षा करने पर उत्तेजित किया गया था।

सारांश यह कि योरप में लोगों ने कविता से बड़े-बड़े काम लिये हैं विशेषतया नाटकीय पद्य ने यूरोप को जितना लाभ पहुँचाया है उसका अनुमान लगाना अत्यंत दुर्लभ है। इसीलिए शेक्सपियर के नाटक, जिनसे राजनैतिक, सामाजिक और आत्मिक हर प्रकार के अगणित लाभ हुए हैं, बाइबिल के समान ही पूजनीय समझे जाते हैं। यहाँ तक कि जो धार्मिक बन्धनों से सर्वथैव मुक्त हैं, वह उनको बाइबिल से भी अधिक लाभदायक और उपयोगी समझते हैं।

एशिया की कविता में यद्यपि ऐसे उदाहरण, जैसे ऊपर वर्णन किये जा चुके हैं, कठिनता से मिलेंगे; तथापि ऐसी घटनाएँ अनेक हैं जिनसे काव्य का असाधारण प्रभाव और प्रत्यक्ष फल पूर्णतया सिद्ध होता है।

अरब देश का सुप्रसिद्ध कैसात्मज मैमूं नामक कवि, जो प्रज्ञाचक्षु होने के कारण अपनी देशी भाषा में आशा कहलाता था, के वर्णन में यह प्रभाव होने की जन-श्रुति बड़े ज़ोरों के साथ प्रसिद्ध थी कि वह जिसके गुण गाता है वह सर्वमान्य और सद्‌गुणी, और वह जिसके अवगुण वर्णन करता है वह त्याज्य और दुर्गुणी हो जाता है। एक बार एक स्त्री उसके पास आई। उसने कहा कि मेरी कई ऐसी लड़कियाँ हैं जिनको कहीं वर नहीं मिलता। यदि आप चाहें तो लोगों को अपनी अनुपम कवित्व-शक्ति द्वारा हमारे कुटुम्ब की महत्ता की ओर आकृष्ट कर सकते हैं। आशा ने उसकी लड़कियों के रूप-लावण्य और सद्‌स्वभाव की प्रशंसा में एक पद्य लिखा, जिसके द्वारा उन लड़कियों के उत्तम गुणों और अनुपम सौंदर्य की प्रशंसा देश में सर्वत्र फैल गई और चारों ओर से उनके लिए शुभ संवाद आने लगे। यहाँ तक कि बड़े-बड़े धन-कुबेरों ने भारी-भारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर (ठहरौनी) निश्चित करके उनसे विवाह कर लिया। लड़कियों की माता, जब कोई लड़की ब्याही जाती थी, एक ऊँट कृतज्ञता-प्रकाश करने के लिए पारितोषिक की भाँति आशा के पास भेज देती थी।

इसके अतिरिक्त अविद्यान्धकार-काल की कविता में ऐसे उदाहरण प्रचुर प्रमाण में पाये जाते हैं। उदाहरण के लिए कवि अपने कुटुम्ब को, जब उसके सम्पूर्ण कुटुम्ब के लोग, अपने किसी कुटुम्बी की हत्या के बदले द्रव्य लेने पर उतारू हो जाते हैं, उन्हें उपालंभ देता और उसके घातक से बदला लेने के लिए उत्तेजित करता है। कभी मनोमालिन्य के कारण अपने कुटुम्ब को दूसरे कुटुम्ब के विरुद्ध युद्ध करने अथवा बदला लेने को उद्यत करता है और अपने पानी के सोते अथवा चारण-भूमि के छिन जाने पर जाति से सहायता लेने का उनमें उत्साह प्रसारित करके बहुधा अपने प्रयत्न में सफलीभूत होता है। यथा अबदुल्ला जो बनीज़वेद नामक कुटुम्ब का मुखिया था, एक दिन बनी माज़न की सभा में बैठा था। इतने में मख़ज़म माज़नी के एक हबशी गुलाम ने कुछ पद्य एक युवती के, जो बनीज़वेद में से थी नख-शिख-वर्णन पर गाये। अबदुल्ला ने उठकर, ज़ोर से, उसके मुँह पर, तमाँचा मारा। दास चिल्लाया। बनी माज़न ने क्रोध में आकर अबदुल्ला को मार डाला। फिर मादेय करब के पुत्र ने उम्रू के पास जाकर क्षमा-याचना की कि तुम्हारे भाई को हम में से एक अशिक्षित ने, जो मद्य पीकर प्रमत्त होगया था, मार डाला है। सो हम तुम को, उसके बदले में, तुम जो हक़ लेना चाहो, सहर्ष देने को उद्यत हैं। उम्रू ने यह बात स्वीकार करली। जब यह समाचार उसकी भगिनी कविशा को ज्ञात हुआ, तो उसने अत्यन्त घृणोत्पादक पद्य पढ़े—जिनमें उसने उम्रू को बदला लेने के विषय में, बड़ी लज्जा दिलाई। अन्त में उम्रू अपनी बहिन के पद्यात्मक उपालम्भ द्वारा इतना उत्तेजित हुआ कि उसने माज़नों से अपने बन्धु की मृत्यु का बदला लेकर ही छोड़ा। [अपूर्ण]

—बाबूराम बित्थरिया

(साहित्य-रत्न)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्नों की पिटारी

(१)

महाकवि भूषण

भूषण सम्बन्धी विवाद ने अन्वेषण-कार्य में मुझे एक नवीन जीवन प्रदान किया है। 'भूषण' तथा अन्य बहुत से कवियों के चरित्रों पर प्रकाश डालने के लिए पर्याप्त सामिग्री प्राप्त हो रही है। यही नहीं, इतिहास के लिए तो एक बहुत अच्छा साधन प्राप्त हो गया है। और बहुत सज्जनों ने योग देना प्रारम्भ कर दिया है। अब तक भूषण के बहुत से छंद मिल चुके हैं। मुझे और भी दो छंद प्राप्त हुए हैं जो यहाँ पाठकों की भेंट किये जाते हैं। प्रथम छंद में शिवाजी (सिरजा) तथा सिरजेख़ां (बीजापुरी सर्दार) के बीच परनाले के मैदान में जो युद्ध हुआ था उसी का वर्णन भूषण ने किया है। सुनिये—

"इत सिरजेख़ाँ उत सिरजा सिवाजी सूर,
दोऊ उत्साहन करैया खुरकन के।
भूषन भनत गढ़ नाले पर खाले भिरे,
देखैं दोऊ दीन पै न एकौ कुरकन के।
साहदी भवानी उन्हें माहदी सँघारै सबै,
बीजापुरी बीर अबलेन मुरकन के।
लोद्ध चले नाले पै न हाले दल साले चले,
भाले मरहट्टन के ताले तुरकन के॥"

कितना अच्छा प्रभावशाली कथन है? शिवराज-भूषण तथा फुटकर छन्दों में कहीं पर इस सिरजेख़ाँ के युद्ध का वर्णन नहीं पाया जाता। परनाले पर तीन बार शिवाजी और आदिलशाही से युद्ध हुआ था। इसमें सिरजेख़ाँ बुरी तरह से हारा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

दूसरे छन्दमें शिवाजी की धाक का वर्णन है जिसमें सुकमार मुग़लानियों के पहाड़ों में भागने की दशा का चित्रण किया गया है। देखिए—

सहत न सुभट शिवाजी गाजी तेरी धाक,
भभरि भुलानी रानी राज चुगलन की।
भूषन भनत महताब की निकाई सुल-
फाई गुलफन की गुलाब के गुलन की।
कटि कुच भारन ते लफि लचिकाई लफि-
आई गरुआई पीन जंग जुगलन की।
श्रम अकलानी बिललानी फिरैं बन-बन
महिगल गमन मुगलानी मुगलन की॥

भयानक रस का कैसा विचित्र और सच्चा वर्णन है! मरहठों के मारे यवनों की उस समय ठीक यही दशा थी। तत्कालीन हिन्दुओं की दशा और राजनैतिक परिस्थिति कितनी उच्च थी, इसका भी प्रर्याप्त परिचय मिल जाता है। यदि कुछ दिन और हिन्दू अपने भावों को सम्हाले रहते तथा शृंगार के विलास-पूर्ण गहरे गर्त में फिर न फँस जाते तो निस्सन्देह आज भारत का इतिहास कुछ दूसरा ही रुप धारण करता।

[२]

हरिकेश कवि

महाराजा अवधूतसिंह के आश्रित हरिकेश कवि का भी रहना पाया जाता है। इन्होंने वीर रस के बहुत से छन्द महाराज छत्रशाल बुंदेला के लिए भी बनाये थे। यहाँ पर महाराजा अवधूतसिंह की प्रशंसा का एक छन्द दिया जाता है। देखिये किन शब्दों में हरिकेश अपना भाव व्यक्त करते हैं—

रैयत को रंजन सुकवि अलिकंज भो,
प्रभंजन दुअन दल घन घहराने को।

३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहै हरिकेश रामवंस अभरन अस-
रन कौ सरन साँचौ करन बिहाने को।
एक अवधूत पुहुमी में पुरहूत जग-
जाहिर सपूत अनिरुद्ध मरदाने को।
पुन्य को रखत द्विज देव दरखत अरु,
हिम्मत बखत बख़तर हिन्दुआने को॥

[३]

महाकवि मतिराम

महाकवि मतिराम ने कमाऊँ-नरेश उद्योतचन्द के दरबार में का वर्ष तक निवास किया था और बहुत से छन्द उनकी प्रशंसा में रचे थे। उनमें से एक छन्द, जो अभी हाल के अन्वेषण द्वारा प्राप्त हुआ है, पाठकों की भेंट है। कवि उद्योतचन्द की प्रशंसा करते हुए उनके दान का वर्णन कैसे अच्छे ढंग से करता है! देखिए—

(१)

कबिन के द्वारें करी डारैं मद धारैं तबै,
बाँधि कै कतारैं भौंर भीर घेरियतु है।
कबि मतिराम भोरी भामनिन कर तापै
निगड़ भरम भूलि हाथ फेरियतु है।
अंबुज के धोखे अलि लागैं उड़ि तीय कर,
त्यों-त्यों वह पीय-पीय कहि टेरियतु है।
हरखि-हरखि हँसि-हँसि श्री उद्योतचन्द
रावरे ज्यौं दान के तमासे देखियतु है॥

यह भ्रमालङ्कार का कैसा सुन्दर उदाहरण है! साहित्य-प्रेमी मतिराम की कविता से भली भाँति परिचित हैं, अतः उनकी अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ प्रतीत होता है।

अब आपका एक छन्द और लीजिये, जो एक विशेष घटना को लेकर कहा गया है।

(२)

करन के बिक्रम के भोज के प्रबन्ध सुनौ,
जैसी भाँति गुणिन को आगे लीजियतु है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहैं मतिराम ये सिँगार सब राजन के,
तिनके ही बचन पिपूष पीजियतु है।
कौन सी गुनाह नरनाह श्रीउदोतचन्द,
कबिन पै एतौ कहुँ रोष कीजियतु है।
एक मतवारे काहू आँकुस न मानी तो,
दुरद दरवाजन ते दूरि कीजियतु है॥

कहा जाता है कि मतिराम का यह छन्द भूषण के कुमाऊँ-नरेश-प्रदानित एक लाख रुपया पुरस्कार लेने से इन्कार करने पर महराज उदोतचंद के लिये कहा गया है; परन्तु श्रीयुत पं० गोविन्दबल्लभ पंतजी के एक पत्र से, जो श्रीयुत पं० कृष्णबिहारीजी मिश्र के ज्ञात करने पर लिखा था। विदित होता है कि वह छन्द किसी अन्य कवि के सम्बन्ध में, जिसका नाम मुझे विस्मृत होगया है, कहा गया है; भूषण के लिए नहीं। इस प्रकार बहुत सी किम्बदन्तियों में कहीं सत्य और कहीं मिथ्या भाव मिश्रित उल्लेख प्रचलित हो गये हैं, जो ऐतिहासिक कसौटी पर कसे जाने से शुद्ध रूप में प्रकट हो जाते हैं।

—भागीरथप्रसाद दीक्षित, विशारद

ख़ानख़ाना की भाषा

अकबर के मंत्रियों में अब्दुलरहीम ख़ाँ ख़ानख़ाना सब से अधिक प्रतिभाशाली हिन्दी के कवि थे। अकबर के पालक बैरामखां ख़ानख़ाना के यह पुत्र थे। यह अरबी, फ़ारसी, संस्कृत और हिन्दी के अच्छे ज्ञाता थे। इन के नीति एवं स्फुट विषय सम्बन्धी यथार्थ तथा चटकीले भावों से पूर्ण दोहे हिन्दी-संसार में प्रसिद्ध हैं; और बिहारीलाल आदि दो-चार लोगों को छोड़ और किसी के दोहे इनकी समता नहीं कर सकते।

फ़ारसी, संस्कृत और हिन्दी तीनों भाषाओं में इन्होंने सफलता-पूर्वक कविता की है। निम्नलिखित ग्रंथ आप के बनाये हुए प्रसिद्ध हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—वाक़आत बावरी, २—दीवान फ़ारसी, ३—खेट कौतुक-जातकम्, ४ रहीम सतसई, ५—बरवै नायिका-भेद, ६—मदनाष्टक और ७—शृंगार सोरठ। इनके सिवाय हिन्दी-संस्कृत की स्फुट कविता भी पाई जाती है।

रहीम कृत हिन्दी-ग्रंथों में सतसई और बरवै-नायिका-भेद यही दो मुख्य हैं। दोहों की भाषा के सम्बन्ध में बा० ब्रजरत्नदास ने लिखा है कि "दोहों की भाषा मुख्यतः ब्रजभाषा है"। मिश्र-बंधुओं ने लिखा है कि "इन्होंने शुद्ध ब्रजभाषा में कविता की है और फ़ारसी एवं संस्कृत के पूर्ण विद्वान होने पर भी ग्राम्य भाषा तक का उत्तम प्रयोग करने में ये कृतकार्य हुए हैं।" पं० रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि "रहीम ने अवधी भाषा की ओर विशेष रुचि दिखाई।" "बरवै-नायिका-भेद" तो उन्होंने अवधी भाषा में लिखा ही। आपने नीति के चुटीले दोहों में भी अवधी के भोलेपन का पूरा सहारा लिया।"

यह सब स्वीकार करते हैं कि "बरवै-नायिका-भेद" की भाषा अवधी है; परन्तु दोहों की भाषा भी न तो शुद्ध ब्रजभाषा है; और न मुख्यतः ब्रजभाषा है। रहीम की रुचि पूर्वी हिन्दी की ओर विशेष पाई जाती है।

यहाँ पर यह कह देना आवश्यक प्रतीत होता है कि रहीम के दोहों की भाषा के सम्बन्ध में उस वक्त तक यह निश्चयात्मक कुछ नहीं कहा जा सकता जब तक उनकी सतसई।की कोई प्रामाणिक हस्तलिखित पुस्तक प्राप्त न हो; क्योंकि अभी तो जनश्रुति ही इनका आधार है। अतः भाषा का निर्णय करना असम्भव नहीं तो दुस्साध्य अवश्य है। फिर भी सर्वनाम, कारक, विशेषण और शब्दों को देखकर कहा जा सकता है कि इनकी विशेष रुचि अवधी ही की ओर थी। देखिये:—

खड़ी बोली के 'कौन', जो और 'वह' यह तीन सर्वनाम ऐसे हैं, जिनका प्रयोग अवधी भाषा में दो प्रकार का पाया जाता है। के, जे, से या ते और को, जो, सो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वी अवधी में के, जे, से या ते और पश्चिमी अवधी में को, जो, सो मिलते हैं।

रहीम के यहाँ दोनों प्रकार के प्रयोग पाये जाते हैं; पर विशेष झुकाव पश्चिमी अवधी की ओर ही पाया जाता है। यह भाषा व्रज-भाषा से अधिक लगाव भी रखती है।

उदाहरण

को कासों अचरजु कहै। जो जानत सो कहत नहिं।
जो रक्षक जननी-जठर। प्रभु कै सो आपनि कहै।
ते रहीम रघुनाथ। तुम बिन को भगवान्।
जानि अनीती जे करें। घिउ सक्कर जे खात हैं।
जे सुलगे ते बुझि गये। इत्यादि।

को, जो और सो का रूप कारक चिह्न ग्रहण करने पर व्रजभाषा के समान का, जा और ता होता है। जैसे—काके २ नवत हम। तासों कहा बसाय। जाके सिर पर। जासों लागे नैन। जा पर विपदा परत है। तासों दुख सुख कहन की······आदि। परन्तु के, जे, से या ते का रूप सामान्य विभक्ति 'हि' के साथ कारक चिह्न लगने पर भी नहीं बदलता। जैसे:—

रहिमन जेहि कै बाप कर। तेहि कै गइल अकास लौं।
घटै बढ़ै तिहिं कर कहा। भावी केहि काँ मा दही।

केहि कै प्रभुता ना घटी······आदि।

व्यक्तिवाचक सर्वनाम भी अवधी भाषा के ही रहीम ने प्रयोग किये हैं।

हिन्दी के सम्बन्ध कारक चिन्ह में लिंग-भेद होता है। व्रजभाषा में पुलिङ्ग सम्बन्ध कारक चिन्ह 'का' है और स्त्री० सम्बन्ध कारक चिन्ह 'की' है। तुलसी और जायसी दोनों में पु० सम्बन्ध कारक चिन्ह 'कर' पाया जाता है और स्त्री० सं० कारक चिन्ह 'कै'। उदाहरण :—

(१) राम ते अधिक राम <u>कर</u> दासा।
जेहि पै कृपा राम कै होई।—तुलसी

(२) सुनि तेहि सन राजा <u>कर</u> नाऊ।
पलुही नागवती <u>कै</u> बारी।—जायसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहीम में भी सम्बन्ध कारक के चिन्हों में ऐसा ही लिंग-भेद है। रहीम ने पु० में 'के' का प्रयोग किया है और स्त्री० में 'कै', 'कइ', या 'केरि' का। यथा :—

यह बरवै के बान। आजु नयन के कोरवा।
लै हीरन के हरवा। बड़ माया कर दोष यह।
जम के किंकर कानि। बाढ़े दिन के मीत सब।
रहिमन जेहि के बाप कर। तन कै पीर।
रैन जगे कइ निदिया। चेरिया केरि छोहरिया।
पायल केरि कँकरिया। प्रभु कै सो आपनि कहै।
पुरुष पुरातन कै बधू……इत्यादि

पं० रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि 'बोल-चाल की अवधी में यह लिंग-भेद नहीं है,। पूर्वी अवधी में शायद न हो ; परन्तु पश्चिमी अवधी में आजकल भी यह लिंग-भेद पाया जाता है। बोल-चाल की पश्चिमी अवधी में पु० सम्बन्ध कारक चिन्ह के, केर या क्यार हैं और स्त्री० सम्बन्ध कारक चिन्ह कै, कइ या केरि। यथा :—श्रीकृष्ण बप्पा आजु आये हैं। यह केहि केर या केहि क्यार खेतु आय। श्रीकृष्ण कै महँतारी कहाँ। यह बाग केहि केरि आय।

बोल-चाल में उच्चारण संक्षिप्त करने को प्रवृत्ति के अनुसार 'केर' के स्थान में 'के' और 'कर' के स्थान में 'क' का प्रयोग पाया जाता है।

(क) धनपति उहै जेहि क संसारू।—जायसी
(ख) पितु आयसु सब धरम क टीका।—तुलसी
(ग) जाति क ऊंच।—रहीम
(घ) रहित नयन के कोरवा।—रहीम

अवधी भाषा की प्रवृत्ति लघ्वंत पदों की ओर अधिक है। रहीम ने अपने दोहों में विशेषण अधिकतर लघ्वन्त ही रक्खे हैं। यथा : —

बड़ माया कर दोष यह। बड़े छोट ह्वै जात। मिले होत रंगदून। किती करौ बड़ काम। जो रहीम बिधि बड़ किये। चिंतत ह्वी बड़ लाभ के। सींचत आपन खेत। जाति क ऊंच। आदि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही नहीं पूर्वी शब्दों का प्रयोग भी रहीम ने अपने दोहों में अधिकता से किया है। देखिये :—

रहिमन रहिला कै भली। सहिंकै सोच बेसाहियो।
बीच उखारी रमसरा। जाड़ गये से काज। अररानी उहि ठाम। मत तोरो चटकाय। रहिमन भउँरिन के भये। गरुये राखि बटोर, जूती खात कपाल। आदि।

यद्यपि दोहों की भाषा में अधिकतर झुकाव अवधी ही की ओर है, परन्तु यत्र-तत्र ब्रजभाषा की भी पुट पाई जाती है। भले ही वह जन-श्रुति ही से आगई हो।

—अयोध्याप्रसाद शर्मा, विशारद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-समाचार

सोलहवीं स्थायीसमिति का दूसरा अधिवेशन

सोलहवीं स्थायीसमिति का दूसरा अधिवेशन रविवार मिति ज्येष्ठ कृष्ण ३ संवत् १९८३ वि० तदनुसार ता० ३० मई सन् १९२६ ई० को, मध्याह्नोत्तर ४ बजे से, सम्मेलन-कार्यालय में, निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति में हुआ—

१—श्रीयुत अध्यापक व्रजराजजी, प्रयाग

२—श्रीयुत चतुर्वेदी पं० द्वारकाप्रसादजी शर्मा, प्रयाग

३—श्रीयुत बाबू केदारनाथजी गुप्त, प्रयाग

४—श्रीयुत चतुर्वेदी पं० रामनारायणजी मिश्र, प्रयाग

५—श्रीयुत पं० गिरिजादत्तजी शुक्ल 'गिरीश', प्रयाग

६—श्रीयुत पं० भागीरथप्रसादजी दीक्षित, प्रयाग

७—श्रीयुत बाबू गंगाप्रसाद जी जायसवाल, मिर्ज़ापुर

८—श्रीयुत पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी, (सहायक मंत्री)

१—सर्व-सम्मति से अध्यापक श्रीव्रजराजजी ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

२—स्थायीसमिति के पिछले अधिवेशन का कार्य-विवरण पढ़ा गया और सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुआ।

३—मिति आश्विन कृष्ण १ संवत् १९८२ वि० से मिति माघ शुक्ल १५ संवत् १९८२ वि० तक का आय-व्यय का चिट्ठा, जिसे सम्मेलन के आय-व्यय-परीक्षक स्वर्गीय रायबहादुर लालबिहारीलाल जी जाँच चुके थे, उपस्थित किया गया; साथ ही उसपर उनकी रिपोर्ट भी पढ़ी गयी। निश्चित हुआ कि हिसाब स्वीकृत किया जाय और आय-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यय परीक्षक की रिपोर्ट के अनुसार (१) आगे से जिस समय रुपया दिया जाय उसी समय रक़म नाम डाली जाय (२) प्रत्येक विभाग के ख़र्च का बिल अलग-अलग होना चाहिए और तदनुसार जब प्रत्येक बिल का रुपया चुकाया जाय तब प्रत्येक बिल की चुकती रसीद अलग-अलग ली जाय (३) विभागीय लेखकों द्वारा जो ख़र्च किया जाय उस पर विभागीय मंत्री की स्वीकृति होनी चाहिये।

४—स्वर्गीय पं० राधाचरणजी गोस्वामी के स्थान पर स्थायी-समिति के लिए एक उपसभापति के निर्वाचन का विषय उपस्थित किया गया; साथ ही स्थायीसमिति के निम्नलिखित बाहिरी सदस्यों की आयी हुई सम्मतियाँ पढ़ी गयीं—

(१) श्रीयुत पं० राजमणिजी त्रिपाठी, महाराजगंज, गोरखपुर

(२) श्रीयुत पं० नन्दकुमारदेवजी शर्मा, कलकत्ता

(३) श्रीयुत पं० गोविन्दनारायणजी शर्मा आसोपा बी० ए०, जोधपुर

(४) श्रीयुत बाबू साँवलिया-बिहारीलालजी वर्मा एम० ए०, बी० एल० छपरा

तदनन्तर सर्व-सम्मति से वृन्दाबन के श्रीयुत बाबू नारायणदास जी बी० ए०, एम० एल० ए० उपसभापति निर्वाचित किये गये।

५—स्थानापन्न प्रधानमंत्री ने आय-व्यय परीक्षक के निर्वाचन का विषय उपस्थित करते हुए सूचित किया कि सतना-निवासी स्वर्गीय रायबहादुर लालबिहारीलालजी बी० ए० के सुपुत्र श्रीयुत गुरुप्रसाद जी बी० ए०, एल्०-एल्० बी० भी सम्मेलन के आय-व्यय परीक्षण में अपने स्वर्गीय पिताजी को पर्याप्त सहायता देते रहे हैं; और वे इस कार्य में उन्हीं के समान दक्ष भी हैं। अतएव मेरा प्रस्ताव है कि श्रीयुत गुरुप्रसादजी बी० ए०, एल्०-एल्० बी० हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के आय-व्यय-परीक्षक निर्वाचित किये जाँय। तदनन्तर नियमावली के २१ में नियम के अनुसार सर्व-सम्मति से श्रीयुत गुरुप्रसादजी बी० ए०, एल्०-एल्० बी० आय-व्यय-परीक्षक निर्वाचित हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६—श्रीयुत बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन के स्थान पर, हिन्दी-विद्यापीठ-समिति के लिए, स्थायीसमिति से एक सदस्य के निर्वाचित करने का विषय स्थानापन्न प्रधानमन्त्री ने उपस्थित किया। श्रीयुत बाबू केदारनाथजी गुप्त के प्रस्ताव और पं० भगीरथप्रसाद जी दीक्षित के अनुमोदन से प्रो० दयाशंकरजी दुबे एम० ए०, एल्-एल्० बी० हिन्दी-विद्यापीठ-समिति के लिए नियम ३ (ख) के अनुसार सर्व-सम्मति से सदस्य निर्वाचित किये गये।

७—स्थानापन्न प्रधानमंत्री द्वारा काशी तथा आगरा के साहित्य-विद्यालयों के लिए सम्मेलन द्वारा मासिक आर्थिक सहायता दिये जाने का विषय उपस्थित किया गया। साथ ही स्थानापन्न प्रधानमंत्री ने सूचित किया कि दोनों विद्यालयों को पंचदश-स्थायीसमिति के मिति मार्गशीर्ष शु० १२ संवत् १९८१ वि० के प्रथम अधिवेशन के ८ वें मन्तव्यानुसार १ वर्ष तक प्रत्येक को १०) मासिक के हिसाब से सहायता दी जाती रही है। अब इन दोनों विद्यालयों को सहायता देना आवश्यक है। बजट में सम्मेलन से इस व्यय के लिए स्वीकृति भी ली जा चुकी है। तदनन्तर सर्व-सम्मति से निश्चित हुआ कि सम्मेलन की आर्थिक परिस्थिति पर ध्यान रखते हुए काशी के हिन्दी-साहित्य विद्यालय को १५) तथा आगरा के साहित्य-विद्यालय को १०) मासिक सहायता विगत कार्तिक मास से एक वर्ष तक देना स्वीकृत किया जाता है।

८—स्थानापन्न प्रधानमन्त्रीजी ने कलकत्ते के एकादश सम्मेलन की छपी हुई लेखमाला उपस्थित करते हुए सूचित किया कि पन्द्रहवीं स्थायीसमिति के तृतीय अधिवेशन के तृतीय मन्तव्यानुसार एकादश साहित्य-सम्मेलन कलकत्ता की लेखमाला श्रीयुत पं० लक्ष्मीधर जी वाजपेयी को सम्पादनार्थ दी गयी थी। उपर्युक्त मन्तव्य में निश्चित हुआ था कि जब यह लेखमाला छपकर तैयार हो जाय, तब पुरस्कार देने का विषय स्थायीसमिति के समक्ष उपस्थित किया जाय। यह लेखमाला छप चुकी है, अतएव अब वाजपेयीजी को इसका पुरस्कार देना स्थायीसमिति निश्चित कर दे। यह लेखमाला डबल-क्राउन अठपेजी आकार के लगभग २३ फ़ार्म की है। तदनन्तर सर्व-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मति से निश्चित हुआ कि इस कार्य के लिए पं० लक्ष्मीधरजी वाजपेयी को १०१) पुरस्कार दिया जाय।

९—श्री स्थापन्न प्रधानमंत्री जी ने सूचित किया कि बन्दर रोड, कराँची के श्रीहिन्दी-साहित्य-भवन का धारा ३० के अनुसार सम्मेलन से सम्बद्ध होने के लिए आवेदन-पत्र आया है, नियम २९ (ख) के अनुसार ५) सम्बद्ध-शुल्क तथा २) वार्षिक शुल्क के कुल ७) प्राप्त भी हो चुके हैं और धारा ३१ के अनुसार उसका विवरण भी आ चुका है। अतएव मैं प्रस्ताव करता हूँ कि स्थायीसमिति कराँची हिन्दी-साहित्य-भवन की प्रार्थना स्वीकार करे। तदनन्तर सर्व-सम्मति से इस संस्था को सम्मेलन से सम्बद्ध करना स्वीकृत हुआ।

१०—पं० भागीरथप्रसादजी दीक्षित के प्रस्ताव करने तथा चतुर्वेदी पं० रामनारायण जी मिश्र बी० ए० और पं० गिरिजा दत्त जी शुक्ल 'गिरीश' बी० ए० के समर्थन करने पर निश्चित हुआ कि निम्न महानुभावों को साधारण सदस्य बनाना स्वीकार किया जाय। इन महानुभावों का नियमित शुल्क प्राप्त हो चुका है।

१. श्रीयुत मोतीलालजी मुरा रईस, चैापमल चाँदमल, जबलपुर।

२. श्रीयुत पं० लक्ष्मीनारायणजी शर्मा 'कृपाण' कवि 'कृपाण' कार्यालय, भिवानी।

३. श्रीयुत कालीप्रसाद जी, बाढ़, पटना।

४. ,, बालगोबिन्दराम जी, रेलवे स्टेशन, गया।

५. ,, बाबू पुरूषोत्तमदासजी ताल्लुकेदार, हजारीपुर गोरखपुर।

६. श्रीयुत बाबू बालमुकुन्दजी रईस ताल्लुकेदार, अलीनगर गोरखपुर।

७ श्रीयुत पंडित हरिशंकरजी तिवारी रईस, अलीनगर, गोरखपुर।

८. श्रीयुत बाबू महादेवप्रसाद जी शाह गवर्नमेंट ट्रेज़रर तथा आनरेरी असिस्टेंट कलक्टर, बलिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९. श्रीयुत बाबू वल्लभदासजी कोठारी, जबलपुर।

१०. ,, सेठ दयालभाई इन्दरजी रईस गोलबाज़ार, जबलपुर।

११. ,, बाबू कृष्णप्रसादजी वर्मा एम्० ए० असिस्टेंट कमिश्नर इनकमटैक्स, जबलपुर।

१२. श्रीयुत ओंकारप्रसाद जी मिश्र जज खफ़ीफ़ा, जबलपुर।

१३. ,, बाबू गजाधरप्रसाद जी पटैरहाँ रईस, गोलबाज़ार, जबलपुर।

१४. श्रीयुत पं० हरप्रसादजी पांडेय बी० ए०, एल्०-एल्० बी० वकील जबलपुर।

१५. श्रीयुत व्योहार राजेन्द्रसिंहजी ताल्लुक़ेदार साठिया कुआं, जबलपुर।

१६. श्रीयुत प्रभातचंद्रजी बोस एम० ए०, एल्-एल्० बी० वकील जबलपुर।

१७. श्रीयुत द्वारकाप्रसादजी भार्गव रईस लार्डगंज, जबलपुर।

१८. श्रीमान् सेठ जमनादासजी रईस ताल्लुक़ेदार हनुमान ताल, जबलपुर।

१९. श्रीयुत पं० मनोहरकृष्ण जी गोलवोलकर एम० ए०, एल्० एल्० बी०, एम्० एल्० सी० वकील लार्डगंज, जबलपुर।

२०. श्रीयुत कनछेदीलाल जी बी० ए० वकील, जबलपुर।

२१. ,, शिवप्रसादजी खन्ना विशारद, वर्मन कम्पनी मुजफ्फरपुर।

२२. श्रीयुत पं० प्रजापति जी मिश्र, बेतिया, चम्पारन।

११—स्थानापन्न प्रधानमंत्री ने सूचित किया कि निम्नलिखित महानुभाव सम्मेलन के हितैषी होना चाहते हैं। उन्होंने हितैषी-शुल्क के ३) भेज दिये हैं। सर्व-सम्मति से निश्चित हुआ कि ये महानुभाव सम्मेलन के हितैषी बना लिये जायँ—

श्रीयुत तुलसीराम जी शर्मा, वैश्य-विद्यालय, भिवानी (पंजाब)

,, रामेश्वरदासजी गुप्त वकील सिरसा, ज़िला हिसार (पंजाब)

,, लाधूरामजी वर्मा, पतरामगेट, भिवानी।

,, अध्यापक बलदेवजी मिश्र, बैरिया, बलिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत अध्यापक श्रीकेदार तिवारी, बैरिया (बलिया)
,, अध्यापक श्री रामवृक्ष जी दुबे, बैरिया (बलिया)
,, अध्यापक श्री शंभूदयालजी तिवारी, भुसौला, बैरिया (बलिया)।
श्रीयुत अध्यापक श्री सहदेवजी मिश्र, बैरिया (बलिया)
,, अध्यापक श्री दूधनाथजी उपाध्याय, बैरिया (बलिया)।
,, ठाकुर प्रसादजी वैश्य, पुरानी बस्ती, जिला बस्ती।

१२—स्थानापन्न प्रधानमंत्री जी ने सूचना दी कि सतना-निवासी स्वर्गीय श्रीलालबिहारीलालजी बी० ए० रायबहादुर तथा जबलपुर के रायसाहब सेठ गोविन्दलाल जी पुरोहित का स्वर्गवास हो गया है। अतः मैं शोक के साथ यह प्रस्ताव करता हूँ कि अब इनके नाम साधारण सदस्यों की सूची से पृथक् कर दिये जायँ। प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुआ।

१३—स्थानापन्न प्रधान मंत्रीजी ने भरतपुर में होनेवाले सप्त-दश हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्वागत-कारिणी-समिति की ओर से आयी हुई निबन्ध-सूची तथा निबन्ध-सम्बन्धी आये हुए अन्य प्रस्ताव उपस्थित किये। प्रस्ताव निम्न महानुभावों ने भेजे थे—

१. श्रीयुत पं० राजमणिजी त्रिपाठी, महाराजगंज, गोरखपुर
२. ,, पं० नन्दकुमारदेवजी शर्मा, कलकत्ता
३. ,, हरमुकन्दजी शर्मा शास्त्री, जम्मू
४. ,, अध्यापक ब्रजराजजी, प्रयाग
५. ,, चतुर्वेदी पं० रामनारायणजी मिश्र, प्रयाग
६. ,, पं० भागीरथप्रसाद जी दीक्षित, प्रयाग
७. ,, पं० गंगा प्रसाद जी अग्निहोत्री, जबलपुर
८. ,, रिछपालसिंहजी चौधरी, जाटहाउस, आगरा

तदनन्तर देर तक विचार करने के अनन्तर सर्व-सम्मति से भरतपुर-सम्मेलन के लिए जो निबन्ध-सूची स्वीकृत हुई, वह इस प्रकार है—

(१) राजपूताने में हिन्दी-पुस्तकों की खोज के उपाय
(२) राजपूताने में हिन्दी की दशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) देशी राज्य और हिन्दी
(४) भरतपुर के हिन्दी कवि तथा लेखक
(५) ब्रजभाषा
(६) हिन्दी और मुसलमान
(७) ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली
(८) राजपूताने में हिन्दी की उन्नति के उपाय
(९) हिन्दी-साहित्य की वर्तमान दशा
(१०) सूरदासजी का हिन्दी-साहित्य पर प्रभाव
(११) राजपूताना और महिला समाज
(१२) हिन्दी में वीर काव्य
(१३) डिंगल काव्य
(१४) अलवर राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(१५) बाँसबाड़ा राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(१६) बीकानेर राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(१७) बूँदी राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(१८) धौलपुर राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(१९) डूँगरपुर राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(२०) जयपुर राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(२१) झालावाड़ राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(२२) करौली राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(२३) किसनगढ़ राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(२४) कोटा राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(२५) जोधपुर राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(२६) उदयपुर राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(२७) प्रतापगढ़ राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(२८) सिरोही राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(२९) टोंक राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(३०) कुशलगढ़ राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(३१) लावा राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(३२) नीमराना राज्य के राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३३) जैसलमेर राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(३४) शेखावाटी राज्य के हिन्दी कवि तथा लेखक
(३५) अजमेर प्रांत के हिन्दी कवि तथा लेखक
(३६) बंगाल में हिन्दी प्रचार के उपाय
(३७) विदेशों में हिन्दी-प्रचार के उपाय
(३८) अपभ्रंश शब्दों का वर्तमान देशी भाषाओं से सम्बन्ध
(३९) वैष्णव-धर्म और ब्रजभाषा
(४०) हिन्दी और उर्दू-साहित्य का पारस्परिक प्रभाव
(४१) भरतपुर-राज्य वंश के वीर—१. महाराज सूरजमलजी
२. महाराज जवाहरसिंहजी
(विशेषतः)

(४२) हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य
(४३) हिन्दी-साहित्य-निर्माण में यूरोपीय भाषा का स्थान
(४४) आधुनिक हिन्दी-साहित्य के विकास की दिशा और गति
(४५) श्रीमंगलाप्रसाद-पारितोषिक
(४६) वर्तमान हिन्दी-गद्य की भाषा और शैली
(४७) साहित्य में उपन्यास और नाटक का स्थान तथा हिन्दी-साहित्य में उपन्यास और नाटक
(४८) हिन्दी-साहित्य पर वर्तमान राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव
(५०) कृषि और गोपालन
(५१) मध्यमोत्तर काल (१७००-१८५०) में वीर काव्य
(५२) मध्यमोत्तर काल (१७००—१८५०) में हिन्दुत्व की दशा
(५३) हिन्दी में ऐतिहासिक साहित्य
(५४) हिन्दी का गणित सम्बन्धी साहित्य

१४—श्रीयुत पं० हरमुकुन्दजी शास्त्री (जम्मू) का मिति ९ वैशाख संवत् १९८३ वि० का वह पत्र पढ़ा गया, जिसमें उन्होंने यह प्रस्ताव किया था कि भरतपुर-सम्मेलन की निबन्ध-सूची में एक विषय "व्यावहारिक हिन्दी" भी रक्खा जाय। इस पर सर्व-सम्मति से यह निश्चय हुआ कि यह विषय विशेष महत्व का है, अतः यह प्रस्ताव के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप में भरतपुर-सम्मेलन में उपस्थित किया जाय और जब भरतपुर-से प्रस्ताव-सूची आवे तब यह उसमें सम्मिलित कर दिया जाय।

(१५) श्रीयुत पं० बाबूरामजी शर्मा बुलन्दशहर का ता० १०-३-२६ ई० का वह पत्र पढ़ा गया जिसमें उन्होंने कार्यालय की कार्य-पद्धति-सम्बन्धी कतिपय प्रस्ताव किये थे। स्थानापन्न प्रधान मंत्री के इस सूचना देने पर कि पत्र के अनुसार कार्य पूर्व ही से हो रहा है, निश्चित हुआ कि इसकी सूचना प्रस्तावक को दे दी जाय।

तदन्तर सभापति महोदय को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्म्मा
स्थानापन्न प्रधान मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-जगत्

पञ्जाब-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन
तीसरे वर्ष की रिपोर्ट

पंजाब-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थापना संवत् १९८० के अन्तिम दिन हुई थी। उसी समय उसका सामयिक (Provisional) संगठन बना जो संवत् १९८० भर में वैसा ही रहा। ८१ के आरम्भ में मुलतान में सम्मेलन का पहला अधिवेशन प्रसिद्ध साहित्य-सेवी स्वामी सत्यदेवजी के सभापतित्व में बड़ी धूम-धाम के साथ हुआ। तब से सम्मेलन का विधि-पूर्वक स्थायी संगठन हुआ। आज वैसा हुए लगभग दो वर्ष बीत चुके। संवत् १९८२ के आरम्भ में फ़ीरोज़पुर में सम्मेलन का दूसरा अधिवेशन व्याख्यान-वाचस्पति पं० दीनदयालुजी शर्मा के सभापतित्व में हुआ। उस समय तक के कार्य्य की रिपोर्ट उसी अधिवेशन में सुना दी गयी थी। २० वैशाख को उक्त अधिवेशन समाप्त हुआ। तब से सम्मेलन के जीवन का क़रीब एक बरस और बीत चुका है, जिसका वृत्तान्त जनता के सामने रक्खा जाता है।

अधिकारी और कार्य्य-कर्त्ता

नियमानुसार श्रीमान् पं० दीनदयालुजी इस बरस सम्मेलन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभापति, महात्मा हंसराज जी, अध्यापक रघुवरदयालु जी तथा डा० सत्यपालजी उपसभापति चुने गये। मंत्री का कार्य्य पिछले दो बरस की तरह इस वृत्तान्त के लेखक को सौंपा गया तथा चार सहकारी मंत्री नियुक्त हुए। इसके अतिरिक्त नियमानुसार स्थायी समिति के २१ सदस्य निर्वाचित हुए, जिनमें ३ देवियाँ और १८ सज्जन थे।

स्थायीसमिति की वर्ष भर में ७ बैठकें हुईं, जिनमें औसत उपस्थिति ८.३ रही। पं० भगवतीचरणजी ने कार्यालय के प्रबन्ध में ६ महीने तक जिस तत्परता से सहायता दी, उसके लिए वे हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

सभासद

सम्मेलन का आधार उसके सभासद हैं। पिछले बरस के अन्त में सम्मेलन के केवल ४ स्थायी सभासद थे, इस बरस १२ हैं। साधारण सभासद जिन सज्जनों को एक बार बनाया जाता है, उनमें से बहुत कम का चन्दा, दूसरे वर्ष, आप-से-आप प्राप्त होता है। संवत् १९८० और ८१ में, सम्मेलन के क्रमशः ९३ और ९९ सभासद बने थे; किन्तु इन १९५ देवियों और सज्जनों में से दो इस बरस स्थायी सभासद बन गये तथा १६ का चन्दा और प्राप्त हुआ। नये सभासद इस बरस ६५ बने। वसूली का नियमित प्रबन्ध होने से कुछ अधिक का मिल सकता।

आर्थिक स्थिति

पिछले बरस के अन्त में हमारे पास केवल २४६॥-)॥। की पूंजी थी, जिसमें से १६०।≡) रु० स्थायी सभासदों का चन्दा था। दूसरी तरफ़ हमें ३२८)॥ क़र्ज़ा चुकाना था। अर्थात् हमें २४१॥।)॥ का घाटा था। इस वर्ष भी धन-संग्रह के लिए कोई विशेष यत्न नहीं किया गया। गर्मी के दिनों में बाबू पुरुषोत्तमदासजी टन्डन, लाला खुशालचन्द जी, डा० सत्यपाल जी तथा प्रो० सन्तरामजी ग्रोवर ने लाहौर में भिक्षा करने के लिए हमें कुछ समय दिया, किन्तु यह मण्डली केवल तीन-चार जगह जा सकी। गर्मी की छुट्टियों के बाद लाहौर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागत-समिति का कार्य आरम्भ होने से, सम्मेलन के स्थायी कार्य के लिए भिक्षा करना उचित नहीं समझा गया। इस समय हम पर कोई ऋण नहीं है; और स्थायी सभासदों के चन्दे के अतिरिक्त हमारे पास बरस के अन्त में केवल १४२॥)॥ बाक़ी था।* आय-व्यय-परीक्षक (Auditor) द्वारा जांचा हुआ वर्ष भर का हिसाब अन्त में दिया गया है। हिन्दी-प्रचार के कार्य्य में हमारी सबसे बड़ी असुविधा इस समय रुपये का अभाव ही है।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-प्रचार-कार्यालय

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-प्रयाग के अधिकारियों ने सौभाग्य से गत वर्ष यह अनुभव किया कि पंजाब में हिन्दी-प्रचार के कार्य को अग्रसर करने के लिए मद्रास की तरह एक स्थायी कार्यालय की आवश्यकता है। फ़ीरोज़पुर-सम्मेलन के बाद उन्होंने अपना कार्यालय लाहौर में खोल दिया। यह कार्यालय प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-कार्यालय के साथ ही सम्मिलित था और प्रान्तीय सम्मेलन के मन्त्री के ही अधीन था। प्रान्तीय सम्मेलन को इससे अच्छी सहायता मिली। किन्तु मद्रास की तरह पंजाब में हिन्दी-प्रचार का कार्य तभी बढ़ सकेगा जब वहाँ की तरह यहाँ भी उसे आर्थिक सहायता मिलेगी।

प्रचार का कार्य्य

अपने परिमित साधनों से हम जो कुछ प्रचार का कार्य कर सकते थे, उसका संक्षिप्त वृत्तान्त नीचे दिया जाता है।

(१) लाहौर में—

कवि-सम्मेलन आदि] प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का पिछले तीन बरस में, सबसे मुख्य-कार्य्य रहा है हिन्दी के लिए अनुकूल वायुमण्डल बनाना। हिन्दी-साहित्य का परिचय पंजाब में बहुत ही

---

* वर्ष की समाप्ति (३०-१२-८२) से रिपोर्ट लिखने के समय तक स्थायी-कोष में भी कुछ वृद्धि हुई है, और दूसरे रुपये में भी। उक्त अङ्क ठीक वर्ष की समाप्ति के समय के हैं।—मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम है और उसका महत्व समझनेवाले भी बहुत कम हैं। हम सौभाग्य से यह कह सकते हैं कि बहुत ही थोड़े साधनों और कार्य-कर्त्ताओं के होते हुए भी, प्रान्तीय सम्मेलन ने पंजाबी जनता का हिन्दी-साहित्य के सम्बन्ध में जो तुच्छता का विचार था, उसे बहुत कुछ पलट दिया है, और इसका मुख्य साधन हमारे कवि-सम्मेलन, कवि-दरबार तथा व्याख्यान आदि हुए हैं। इस बरस भी यह सिलसिला लाहौर में जारी रहा। यद्यपि हमें यह मानना पड़ता है कि पंजाब के शिक्षणालयों में ऊँचे दरजे की हिन्दी-साहित्य की शिक्षा का प्रबन्ध न होने से हिन्दी-कवियों और लेखकों की संख्या बहुत कम है, और पिछले दो बरसों में लाहौर में जो कुछ अच्छे हिन्दी-कवि इकट्ठे हो गये थे उनके इधर-उधर चले जाने से अब हमें कवि-सम्मेलन जुटाने में बड़ी कठिनाई होती है। आर्थिक बाधा भी हमारे रास्ते में पड़ती थी। तो भी इस वर्ष कवि-सम्मेलन किये गये। श्रावण शुक्ला सप्तमी को सनातनधर्म-सभा-मन्दिर में गोस्वामी तुलसीदासजी का पुण्य-दिवस रा० सा० रोशनलाल के सभापतित्व में मनाया गया, जिसमें हमें आशातीत सफलता हुई। इसी प्रकार कार्तिक पूनों के दिन गुरु नानकदेवजी की जयन्ती मनायी गयी, जिसमें इस वृत्तान्त के लेखक ने इस बात पर बल दिया कि गुरु नानकदेव को जहाँ धर्मा-चार्य के रूप में पंजाबियों ने बड़ा माना है वहाँ उनके कवि-जीवन की ओर न स्वयं बिल्कुल ध्यान दिया है, न उन्होंने बाहर के लोगों को इसका परिचय देने का यत्न किया है। यह टिप्पणी करते हुए उस उत्सव के सभापति सर्दार शार्दूलसिंहजी कवीश्वर ने जो कुछ कहा वह विशेष रूप से उल्लेख-योग्य है।

आपने कहा—गुरु नानक-देव को हमने कवि-रूप में नहीं पहचाना, इसमें हम सब दोषी हैं। सिक्खों का यह दोष है कि उन्होंने गुरु की वाणी को गुरमुखी लिपि में बन्द कर रक्खा है और देवनागरी में नहीं प्रकाशित किया, जिससे दूसरे प्रान्तों के लोग भी उसे पढ़ सकते। हिन्दी-प्रेमियों का भी यह दोष है कि उन्होंने दूसरे हिन्दी-कवियों पर इतना ध्यान दिया है; पर गुरु नानक-देव पर अब तक नहीं दिया। हम आशा करते हैं कि पंजाबी जनता सरदार साहेब की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टि से इस प्रश्न पर विचार करके, अपने कर्तव्य को पहचानेगी। उक्त दो उत्सवों की तरह आगामी १५ मई को हम कविवर सूरदास की जयन्ती मनाने जा रहे हैं।

हिन्दी-साहित्य की शिक्षा] हमने यह अनुभव किया है कि जब तक पंजाब के विद्यार्थियों के लिए ऊँचे हिन्दी-साहित्य की शिक्षा का प्रबन्ध न होगा, हिन्दी के सहज लेखक और कवि पंजाब में विरले ही रहेंगे। यह देखते हुए हमने पंजाब-युनिवर्सिटी और सम्मेलन की हिन्दी-परीक्षाओं के लिए मुफ़्त शिक्षा देने को सन्ध्या-कक्षायें खोलने का निश्चय करके सूचना दे दी। लाहौर की कुछ देवियाँ, जिनमें से कई स्कूलों की अध्यापिकायें हैं, इस प्रबन्ध से लाभ उठा रही हैं, और हमारी कक्षायें नियमित रूप से चल रहीं हैं। इस कार्य्य में श्रीयुत मणिरामजो गुप्त ने जो सहायता दी है, उसके लिए हम उनके विशेष कृतज्ञ हैं। यदि लाहौर के स्कूलों और कालिजों के सञ्चालक अपने विद्यार्थियों को उच्च हिन्दी-साहित्य की शिक्षा पाने के लिए उत्साहित करें और उन्हें हमारे प्रबन्ध से लाभ उठाने को प्रेरित करें, तो हमें आशा है, हम बहुत जल्दी पंजाब के हिन्दी-विषयक वातावरण को बदल सकेंगे; और यहाँ के स्कूलों-कालिजों के विद्यार्थियों में हिन्दी के लेखक बनने की महत्वाकांक्षा उसी प्रकार जाग उठेगी, जिस प्रकार वह पड़ोसी प्रान्तों में जग उठी है।

लाहौर-सम्मेलन-स्वागत-समिति] सम्मेलन का तीसरा अधिवेशन लाहौर में होने को है। उसका सब कार्य-भार भी एक तरह से प्रान्तीय सम्मेलन के मन्त्री पर ही डाल दिया गया है, जिससे हमें दूसरा प्रचार कार्य बन्द करना पड़ा है। स्वागत-समिति की ओर से देवनागरी-प्रचार का आन्दोलन आरम्भ किया गया है।

(२) मुफ़स्सिल में—

फीरोज़पुर] सम्मेलन के दूसरे अधिवेशन के बाद फीरोज़पुर में बड़ी अनुकूल परिस्थिति थी। उसी समय वहाँ पर एक देवनागरी-प्रचारिणी सभा स्थापित हुई। यों तो दो साल पहले से फीरोज़पुर में वैसी सभा स्थापित करने का प्रयत्न धीरे-धीरे हो रहा था। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई सभा में शहर के सब प्रतिष्ठित सज्जन सम्मिलित हुए; और आरम्भ में कुछ जीवन देखा गया। उन्होंने सन्ध्या-कक्षायें खोलीं, पर वे सफल न हुईं। देवनागरी-प्रचार के आन्दोलन को वे सफलता-पूर्वक जारी रख सकते थे, पर किसी अनथक और लगनवाले कार्य-कर्त्ता के अभाव से कार्य आगे नहीं बढ़ा।

अबोहर] अबोहर-मण्डी में ठीक इससे उलटी बात हुई। मुलतान-सम्मेलन के बाद से स्वामी केशवानन्दजी वहाँ एक पुस्तकालय स्थापित करना चाहते थे; पर जनता ने आरम्भ में उनके साथ बड़ा निराशा-जनक व्यवहार किया। स्वामीजी दृढ़ता से अपने कार्य में लगे रहे। प्रान्तीय-सम्मेलन के मन्त्री और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उपदेशक पं० प्रभुदयालजी शर्म्मा ने, कई बार जाकर अबोहर में प्रचार किया, जिससे स्वामीजी को यथेष्ट सहायता मिली। अन्त में स्वामीजी की दृढ़ता फल लाई। इस समय अबोहर में हिन्दी-साहित्य-सदन की स्थापना हो चुकी है, जिसकी १६०×१३० वर्गफुट की अपनी ज़मीन है। गत १२ माघ को उसका स्थापनोत्सव हुआ, जब कि स्वामी सत्यदेवजी ने इमारत की आधार-शिला रक्खी। इमारत और पुस्तकालय के लिए उस समय तक क़रीब ८ हज़ार रुपया इकट्ठा हो चुका था। उस दिन अपील करने पर सात सौ रुपये के वचन वहीं पर मिल गये, और आगे लगातार रुपया मिल रहा है। यह सारी सम्पत्ति हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के नाम रजिष्ट्री कराई गई है।* अबोहर का साहित्य-सदन एक चलता-फिरता हिन्दी-पुस्तकालय होगा, जो पड़ोस के गाँवों में हिन्दू विचार और शिक्षा फैलाने के लिए एक प्रबल केन्द्र का काम करेगा।

फाज़िलका] फ़ाज़िलका का साधु-आश्रम पुस्तकालय पहले की

* हिन्दी-साहित्य-सदन का भवन लगभग २०००) की लागत का बनकर तैयार हो गया है। कुछ पुस्तकें भी आ चुकी हैं। प्रचार-कार्य्य आरम्भ हो गया है। श्री स्वामी केशवानन्दजी अपने सदुद्योग में दत्त-चित्त से लगे हुए हैं। आशा है, स्वामीजी का यह उद्योग पंजाब-प्रान्तीय हिन्दी-प्रचार के कार्य में फलदायक सिद्ध होगा।—सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह चलता रहा। स्वामी कृष्णानन्दजी और म० गौरीशंकरजी के प्रयत्न से प्रचार का कार्य भी कुछ चला, पर शहर में कुछ झगड़े खड़े हो जाने से उसमें बड़ी रुकावट हुई।

रोहतक] रोहतक, गुड़गावां, हिसार और करनाल ज़िले हरियाना-प्रान्त कहलाते हैं। यह ठेठ पंजाब का हिस्सा नहीं है। वहाँ के गाँवों में भी हिन्दुओं की आबादी होने से एक ऐसी संस्था की वहाँ आवश्यकता थी जो किसी विशेष शहर को नहीं, प्रत्युत सारे इलाके को अपने हिन्दी-प्रचार का कार्य-क्षेत्र बनाती। संवत् १९८० के दौरे में हमने इस बात का अनुभव किया और अपना विचार वहाँ के हिन्दी-प्रेमियों पर प्रकट किया था। दो बरस के प्रयत्न के बाद श्री मुंशीरामजी विचित्र की दृढ़ लगन ने उस विचार को फलित किया। गत १२-१३ मार्च को हरियाना-हिन्दी-प्रचारिणी सभा की नींव डाली गई। अगले बरस सभा का अधिवेशन भिवानी में होगा। हमें आशा है, हरियाना-प्रान्त के हिन्दी-प्रेमी, कार्यकर्त्ता और स्थान देकर, सभा की पूरी सहायता करेंगे।

अम्बाला] संवत् १९८० में अम्बाला में एक छोटी सी सभा हिन्दी-प्रचार के लिए बनी थी, जिसने अपने कार्य के लिए एक सौ आठ रुपया भी जमा किया था। पं०उमाप्रसाद स्वामी बी० ए०, एल्०-एल्० बी० तथा श्रीयुत बाबूरामजी गुप्त बी० ए०, एल्-एल्० बी० इसके विशेष कार्यकर्त्ता हैं। स्कूलों में देवनागरी-प्रचार के लिए इसने चुपचाप ही बड़ा काम किया था। इस वर्ष बीमारी आदि के कारण समिति कोई नया कार्य नहीं कर सकी; यद्यपि स्कूलों का प्रचार-कार्य पहले की तरह जारी रहा।

लुधियाना] लुधियाना में एक तरह से पहली बार हिन्दी-प्रचार का सन्देश हम गत श्रावण मास में ले जा सके। सम्मेलन के बहुत से सभासद बने। एक स्थायी सभा बनाने का भी विचार किया गया, जो साधकों के अभाव से अभी तक चरितार्थ नहीं हो सका।

अमृतसर] गत नवम्बर मास के अन्त में अमृतसरमें स्वामी सत्यदेवजी का हिन्दी-प्रचार के विषय में भाषण हुआ और एक देवनागरी-सभा का आरंभ बड़े उत्साह के साथ किया गया। एक समिति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा के संगठन के लिए बनी, जिसके संयोजक डा० गुरबख़्शराय थे। निश्चय किया गया था कि २०० सभासद बन जाने पर विधिवत् चुनाव होगा। नियमावली भी बन चुकी है, किन्तु किसी-न-किसी कारण से सभासद बनाने का कार्य अभी तक स्थगित हो रहा है। आशा है, अमृतसर के हिन्दी-प्रेमी अब इस ओर शीघ्र ध्यान देंगे।

गुजरानवाला] गुजरानवाला का हिन्दी-व्यापार-विद्यालय १६ बरस की पुरानी संस्था है और हिन्दी-प्रचार का एक बड़ा केन्द्र है। गत तीन वर्षों से उसके सञ्चालक प्रचार-कार्य में तथा पुस्तक आदि के चुनाव में सम्मेलन की सहायता लेते हैं। इस वर्ष भी होली के दिनों में अपने वार्षिक-उत्सव में उन्होंने हमें निमंत्रित किया। विद्यालय का वार्षिक ख़र्च ३०००) है। अपनी इमारत बनाने के लिए दो बरस पीछे उसपर १५००) का क़र्ज़ हो गया था; पर पिछले उत्सव पर अपील करने से क़रीब १०००) के बचन वहीं पर मिल गये।

मुलतान] मुलतान का हितकारी-पुस्तकालय, जिसमें क़रीब २०००) रु० की हिन्दी-पुस्तकें हैं, अढ़ाई बरस से सम्मेलन के साथ सम्बद्ध है। कार्य-कर्त्ताओं के अपने कार्य में व्यग्र रहने और प्रचार के लिए समय न दे सकने से इस वर्ष पुस्तकालय अच्छी दशा में नहीं रहा। सिन्ध जाते हुए हमने दो दिन के लिए मुलतान में कुछ प्रचार-कार्य करना चाहा, किन्तु वहाँ अधिक समय लगाने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

बटाला] बटाला में हाल में ही एक हिन्दी-प्रचारिणी-युवक सभा स्थापित हुई है, जिसने नवयुवकों में देवनागरी-प्रचार के आन्दोलन को विशेष रूप से हाथ में लिया है।

सिन्ध में देवनागरी-प्रचार

सिन्ध प्रान्त से हमें पिछले बरस भी निमंत्रण प्राप्त हुआ था, किन्तु समय न मिलने से उधर जाना न हो सका था। इस बरस अगस्त-सितम्बर में एक महीने के लिए सारे सिन्ध की यात्रा की। सिन्ध की भाषा सिन्धी है, जो पिछले साठ बरस से अरबी अक्षरों में लिखी जाने लगी है। बहुत ही कम लोग देवनागरी अक्षरों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्धी-भाषा सीखते हैं। यहाँ तक कि कन्या-पाठशालाओं में भी अरबी-सिन्धी ही पढ़ायी जाती है। सिन्धी भाषा को देवनागरी अक्षरों में लिखने की चर्चा दस बरस पहले सिन्ध में महाराज लोकराम तथा स्वामी गोविन्दानन्द जी ने की थी, किन्तु वह बात मर सी चुकी थी।

इस बरस सिन्ध के दिमाग़ी केन्द्र हैदराबाद में गत अगस्त को सिन्ध के मुख्य-मुख्य विद्वानों, साहित्य-सेवियों, शिक्षणालयों के संचालकों और नेताओं की एक बैठक में हमने फिर वह चर्चा उठायी, और सौभाग्य से उपस्थित सज्जनों और देवियों ने देवनागरी-सिन्धी के प्रस्ताव को बहुत पसन्द किया। निश्चय किया गया कि कन्या-पाठशालाओं की शिक्षा का माध्यम बहुत जल्द देवनागरी-सिन्धी को बना दिया जाय। उपस्थित सज्जनों ने अपना पारस्परिक पत्र-व्यवहार देवनागरी-सिन्धी में करने का प्रण किया।

हमारी अगली यात्रा में टांडो आदम, कोटरी, करांची, लारकाना, शिकारपुर, सक्खर और रोहरी में भी इस तरह का कार्य्य हुआ। कराँची के मारवाड़ियों के हिन्दी-साहित्य-भवन ने वहाँ पर श्रीमती पार्वतीदेवीजी की अध्यक्षता में एक सभा बुलाई, जिसमें क़रीब तीन हज़ार जनता की उपस्थित में इन्हीं विचारों का प्रचार किया गया। यद्यपि उस समय तक बम्बई-युनिवर्सिटी ने मैट्रीकुलेशन परीक्षा में हिन्दी को स्वीकार कर लिया है।

अक्तूबर में हैदराबाद में प्रथम सिन्ध-प्रान्तीय हिन्दू-सम्मेलन श्रीयुत जयकर के सभापतित्व में हुआ, जिसमें हिन्दी और देवनागरी विषयक प्रस्ताव उपस्थित करने के लिए हमें फिर निमंत्रित किया गया। इस समय तक हैदराबाद के दो बड़े गर्ल्स हाई स्कूलों की, जिनमें एक हज़ार से अधिक कन्यायें पढ़ती हैं, प्रबन्ध-समितियां यह निश्चय कर चुकी थीं कि ज्यों-ज्यों देवनागरी-सिन्धी की पाठ्य-पुस्तकें तैयार होती जायँ उन्हें उन स्कूलों में अपना लिया जाय। हैदराबाद हिन्दू-सम्मेलन के समय पर तीन विद्वानों की एक समिति देवनागरी-सिन्धी में पाठ्य पुस्तकें तैयार करने के लिए नियुक्त की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी। करांची के सब से बड़े गर्ल्स हाई स्कूल में भी इसके बाद हिन्दी-शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया गया।

नवम्बर में कराची से महाराज लोकराम ने हिन्दी का एक साप्ताहिक पत्र चलाना आरम्भ किया। कराची में हिन्दी-साहित्य-भवन नामक मारवाड़ियों का एक विशाल पुस्तकालय है जो हाल में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से सम्बद्ध हो गया है। सिन्ध में देवनागरी के इस आन्दोलन को जारी रखने के लिए एक प्रान्तीय-प्रचार-कार्यालय स्थापित करने का प्रयत्न अभी जारी है, जिसमें हमें जल्दी सफलता होने की आशा है।

पंजाब में हिन्दी की सामान्य प्रगति

सामान्य रूप से पंजाब में हिन्दी की धीरे-धीरे उन्नति हो रही है। गत वर्ष श्रीयुत भीमसेन विद्यालङ्कार ने "सत्यवादी" नाम का एक साप्ताहिक पत्र जारी किया जो एक बरस के लगभग चलकर बन्द हो गया। भिवानी से पं० नेकीरामजी ने "सन्देश" नाम का पत्र चलाया था। उसकी भी वही कहानी है। आर्य्य-प्रतिनिधि सभा का मासिक "आर्य" तथा आर्य-प्रादेशिक-प्रतिनिधि सभा का "आर्य्य-जगत्" चल रहे हैं। आर्य्य-स्वराज्य-सभा की ओर से "वीर-सन्देश" नाम का एक मासिक-पत्र भी कुछ देर चला था, और सनातन-धर्म-सभा रावलपिंडी की तरफ़ से "धर्म्म-सखा" प्रकाशित होता है। कन्या-महाविद्यालय जालन्धर से "जलविद-सखा" नाम का एक सूचना-पत्र निकलता है। ये सब पत्र विशेष संस्थाओं के हैं और मुख्यतः उनकी सूचनायें देने का कार्य्य करते हैं। एक भी स्वतंत्र सार्वजनिक, साहित्यिक या राजनैतिक हिन्दी पत्र या पत्रिका इस समय ठेठ पंजाब में नहीं है। दिल्ली का दैनिक "हिन्दू-संसार" पंजाब के एक छोर पर होते हुए भी इस अभाव को कुछ-कुछ पूरा कर रहा है और उसके द्वारा पंजाब में हिन्दी का अच्छा प्रचार हो रहा है। साप्ताहिक "अर्जुन" भी पंजाब में काफ़ी आता है।

हिन्दी-पुस्तकों का प्रचार भी बढ़ रहा है। इस वर्ष डी० ए० बी० हाई स्कूल लाहौर के अधिकारियों ने चार हज़ार रुपये की लागत से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना यहाँ एक हिन्दी-पुस्तकालय खड़ा करके एक ऐसा आदर्श स्थापित किया है जिसका अनुकरण पंजाब के प्रत्येक हिन्दू-शिक्षणालय को करना चाहिए।

प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने हिन्दी के कवि-सम्मेलन और कवि-दरबार करने की जो प्रथा स्थापित की थी, अब और संस्थाएं भी उसे अपनाने लगी हैं; और लाहौर में हमें कई बार हिन्दी-कवि-सम्मेलन देखने का अवसर मिलता है, यद्यपि अभी तक ऊंचे दर्जे की कवितायें कम सुनाई देती हैं और उनके रसिक भी थोड़े हैं।

सबसे अधिक संतोष और महत्व की बात यह है कि पंजाब से भी हिन्दी का कुछ साहित्य उत्पन्न होने लगा है। इस वर्ष में डा० लक्ष्मणस्वरूप जी एम्० ए०, डी० फ़िल ने प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक मोलियर के एक प्रहसन का हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित किया है। श्रीयुत दुनीचन्द एम्० ए० ने "पंजाबी और हिन्दी का भाषा-विज्ञान" नामक एक अच्छी गवेषणा-पूर्ण पुस्तक लिखी है।

प्रो० सुधाकर के "मनोविज्ञान" के विशेष उल्लेख की आवश्यकता है इस पुस्तक पर वृन्दावन हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में १२००) रु० का मङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक मिलने से यह सिद्ध हो गया है कि पिछले तीन वर्ष में समूचे हिन्दी-संसार में दर्शन विषय पर इससे अधिक मौलिक पुस्तक नहीं निकली। पंजाबी लेखक को यह आदर मिलना पंजाब के लिए बड़े गौरव की बात है।

श्रीयुत सन्तराम बी० ए० पंजाब के सबसे पुराने सिद्धहस्त जीवित हिन्दी-लेखकों में से हैं। इस वर्ष आपने डा० मेरी स्टोक की प्रसिद्ध पुस्तक Married love का हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित किया है तथा 'सन्तान-संख्या का सीमा-बन्धन' नाम की एक दूसरी महत्व-पूर्ण पुस्तक लिखी है। इन विषयों पर हिन्दी-साहित्य में अभी तक बहुत कम पुस्तकें निकली हैं।

इन पंक्तियों के लेखक ने भी "भारतीय इतिहास का भौगोलिक आधार" नाम की एक पुस्तक इस वर्ष के आरम्भ में प्रकाशित करायी थी, जो हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षा में पाठ्यरूप से स्वीकृत हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब की यह साहित्यिक उपज यद्यपि दूसरे प्रान्तों के मुक़ाबले में बहुत थोड़ी है, तो भी वह सूचित करती है कि पंजाब में हिन्दी का बीज जम चुका है और उसका पौधा अकुंरित होने लगा है।

स्कूलों में भी हिन्दी का प्रचार बढ़ रहा है। इस वर्ष नवम्बर में सनातन-धर्म सम्मेलन के साथ सनातन-धर्म-शिक्षा परिषद भी लाहौर में हुई। उस अवसर पर सनातन-धर्म शिक्षणालयों के मुख्य-मुख्य कार्य-कर्त्ताओं से मिलने का यह फल हुआ है कि परिषद ने प्रत्येक सनातन-धर्म स्कूल के प्रत्येक विद्यार्थी के लिए देवनागरी अक्षर जानना आवश्यक कर देने का निश्चय किया है। यह बात यथेष्ट नहीं है। अभीष्ट यह है कि—

(१) बालकों की शिक्षा का आरम्भ देवनागरी से हो।"

(२) हिन्दी; विद्यार्थियों की मुख्य भाषा और शिक्षा का माध्यम रहे। तथा—

(३) ऊँचे दर्जे के हिन्दी-साहित्य की शिक्षा का प्रबन्ध हो, जिसके लिए जगह-जगह पुस्तकालयों की स्थापना होना तथा योग्य अध्यापकों की नियुक्ति आवश्यक है।

हमारी आवश्यकतायें

ऊपर के वृत्तान्त से यह स्पष्ट हो चुका होगा कि हमारे कार्य की उन्नति में मुख्य रुकावट इस समय धन का अभाव है। हमारी उपस्थित आवश्यकताएँ निम्नलिखित हैं—

(१) सम्मेलन के कार्य्य को चलता रखने के लिए लगभग एक हज़ार रुपयें की प्रतिवर्ष आवश्यकता होगी।

(२) उच्च हिन्दी-साहित्य के प्रचार के लिए लाहौर में एक अच्छे केन्द्रिक पुस्तकालय की आवश्यकता है। आरम्भ में इसके लिए पाँच हज़ार रुपये की अपेक्षा होगी। एक बार पुस्तकालय स्थापित हो जाने पर उसको चलता रखने का ख़र्च बहुत कुछ सभासदों के चन्दे से भी निकल सकता है।

(३) हिन्दी की शिक्षा को उत्साहित करने के लिए कम-से-कम पाँच सौ रुपया वार्षिक के भिन्न-भिन्न पदक और इनाम भी स्थापित होने चाहिएँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) किन्तु, सबसे अधिक आवश्यक कार्य प्रचार का है, जिसके लिए भिन्न-भिन्न स्थानों में कई स्थायी प्रचारकों की नियुक्त करना आवश्यक है। इस कार्य्य को अच्छी तरह निभाने के लिए प्रति वर्ष पाँच हज़ार रुपये का ख़र्च करना अपेक्षित है। हमारे कार्य्य के महत्व को देखते हुए यह सब ख़र्च पंजाब की जनता को बहुत अधिक नहीं प्रतीत होना चाहिए।

जयचन्द विद्यालङ्कार
प्रधानमन्त्री

संवत् १९८२ के आय-व्यय का ब्यौरा

आय

१५१-)॥ पिछले वर्ष का शेष
४६॥-)। रोकड़ में
१०४॥)॥ बैंक में

६५॥) मुलतान स्वा-स०-से पिछला उधार प्राप्त

२६६) स्थायी सभासद-चन्दा

२३५) साधारण सभासद-चन्दा

३४६॥) दान

३१४।=) फीरोज़पुर-सम्मेलन की बचत

४१३।-)॥ पंजाब-सिन्ध-हिन्दी प्र०-कार्यालय से सहायता

८॥=) सूद की आय

६॥) अमानत

१८४३॥)।

व्यय

३२८)। पिछला ऋण चुकाया
२३४)। हि० स० सम्मेलन का नक़द ऋण
६४) हि० सा० स० की सम्मेलन-पत्रिका
५३॥)॥ छपाई स्टेशनरी
४१॥=) डाकतार
२५१॥-) मकान-भाड़ा
१७१॥≡) मार्ग-व्यय
२६७≡)॥ वेतन
७२॥≡)। प्रचार
१६॥≡)॥ विविध व्यय
३७-)॥ सामान
५७२।-)॥ शेष रोकड़
३८८=) पंजाब-नेशनल बैंक
५०) सेन्ट्रल बैंक आफ़ इंडिया
४४-)॥ म० गोपाल जी के पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८८॥=) रोकड़-बही में
१॥) हि० सा० स०
प्रयाग की ओर

१८४३॥)।

नोट—हिसाब बन चुकने पर म० गोपाल जी के पास जो रुपया था, वह कार्यालय में प्राप्त हो गया है।

हिसाब जांचा और ठीक पाया।

ह० आय-व्यय-परीक्षक ह० मन्त्री जयचन्द्र विद्यालङ्कार
लालचन्द २५।५।२६

खुली चिट्ठी

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, आन्ध्र-प्रान्तीय हिन्दी-प्रचार कार्यालय, बेजवाडा

पत्र-संख्या ६० मिति ज्ये० शु १, १९८३

श्रीयुत प्रचार-मंत्रीजी की सेवा में
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,
प्रयाग

महाशय,

आप का कृपा-पत्र सं० २७८ मिति ज्ये० कृ० ११ का यथा समय प्राप्त हुआ। आपने जिस विषय पर हम से ब्यौरेवार उत्तर माँगा। उसके बारे में हम आपकी सेवा में पूर्णतया उत्तर लिख भेजते हैं।

नेल्लूर म्युनिसिपालिटी से हिन्दी के निकाले जाने के बाद हमारे प्रथम प्रयत्न का फल था कि हम फाल्गुण १८८१ में बेजवाडा की म्युनिसिपालिटी के सभी सदस्यों से मिलकर हिन्दी रखवा सके। आन्ध्र देश के नेता श्री अय्यदेवर कालेश्वररावजी जब म्युनिसिपालिटी के अध्यक्ष हुए तभी दो प्रचारकों को २०) १८) पर स्थान दिया गया। एक-दो महीने के बाद से ही ज़िला-विद्याशाखा के अधिकारी उसमें हस्तक्षेप करने लगे। लेकिन चैरमेन साहेब ने उसकी कुछ परवाह नहीं की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी प्राथमिक पाठशालायें ज़िला-विद्यासभा के अधीन रहती है। अतः सरकार ने उस सभा की भी सम्मति लेने की सलाह दी। ज़िला सभा में यह प्रस्ताव जब पेश हुआ तो मैं भी गया था सभी सदस्यों के कहकर यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत करवा सका। उसके बाद ज़िला-विद्यासभा के अध्यक्ष वी० सी० के० रेड्डीजी ने बड़ी अच्छी तरह समर्थन करते हुए लिखा। लेकिन कुछ फ़ायदा न हुआ। इस महीने की ता० ४ को फ़ोर्ट सेन्टजार्ज गज़ेट द्वारा सरकार ने सूचित कर दिया कि हिन्दी इस राष्ट्र की भाषा नहीं है। इसलिए वह प्राथमिक पाठशालाओं में नहीं सिखाई जा सकती। म्युनिसिपलिटी तथा ज़िला-विद्यासभा को लिख दिया कि तुम्हारी अनधिकार चेष्टा है। इसलिए आज ही से दोनों हिन्दी-टीचर निकाल दिये जायँ।

ता० ७ को दोनों प्रचारक निकाल दिये गये हैं। प्रचारक पूरे एक वर्ष तक रह सके हैं। म्युनिसिपलिटी ने अपनी असम्मति बताते हुए एक प्रस्ताव करके सरकार को भेजा है।

यह बात बेजवाड़ा के विषय में नहीं और कई म्युनिसिपलिटियों के विषय में भी है। लेकिन दो-एक म्युनिसिपालिटियों में प्रचारक को दूसरा नाम देकर हिन्दी सिखलवाते हैं। लेकिन वह भी स्वराजिष्ट चैरमन के रहते तक ही हो सकता है। उसके बाद नहीं होगा, जैसे तिरूपति म्युनिसिपलिटी में हुआ।

जैसा कि आपको मैं इसके पहले ही लिख चुका हूं, यहाँ का हिन्दी-वातावरण राजनैतिक वातावरण से सम्बन्ध रखा हुआ माना जाता है। इसका मुख्य कारण स्वराजपार्टीवालों का इस आन्दोलन के साथ सहानुभूति रहना ही है। एक बार हम मद्रास-सरकार के विद्याशाखा के मन्त्री श्री० पात्तोजी से हिन्दी के विषय में बातें करने गये थे। तो उन्होंने साफ़ कह दिया कि हम हिन्दी को नहीं चाहते हैं। हम जब तक रहेंगे, हिन्दी को सरकारी पाठशालाओं में प्रवेश नहीं मिल सकता। इसलिए हमारा यह उदेश्य है कि वर्तमान मन्त्रि-मन्डल के रहते सरकारी पाठशालाओं में प्रवेश या सरकारी मदद नहीं मिल सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ के हिन्दी-प्रेमियों में भी कुछ ऐसे हैं जो प्राथमिक पाठशालाओं में हिन्दी रखने के पक्ष में नहीं है। वे छोटे लड़कों पर अभी से इसका भार डालना अनावश्यक समझते हैं। पहले पहल ज़िला-विद्याशाखा के अधिकारी का बाद भी इसी के आधार पर था।

इसके विषय में आप क्या करने की आज्ञा देते हैं ?

भवदीय—

(हस्ताक्षर) मो० सत्यनारायण

सञ्चालक

बम्बई में हिन्दी-शिक्षा का आयोजन

हमें हर्ष है कि श्री बम्बई गुजराती-राष्ट्रीय-देववाणी मंडल की ओर से श्री राष्ट्रीयशाला बम्बई में हिन्दुस्तानी देश भाषा के नाम से याने (१ ले वर्ग से ७ वें तक) आवश्यकीय (Compelsory) मुख्य राष्ट्रीय भाषा तो सिखाते ही हैं; परन्तु इस समय इससे भी अधिक हिन्दी-भाषा-प्रचारार्थ (साहित्यिक अथवा बोलचाल के) अर्थ सिखाने की विशेष सुविधा की गई है।

श्रीगुजराती-राष्ट्रीय शाला के मकान में नित्य रात्रि में ८॥ बजे से १० तक बजे तक एक ख़ास वर्ग खोला गया है, जिसमें देशी नामा (बहीखाता) अंग्रेज़ी, गुजराती तथा (हिन्दी-भाषा-भाषियों और प्रेमियों के अधिक लाभार्थ) हिन्दी-भाषा की निश्शुल्क शिक्षा की योग्य व्यवस्था की गई है।

हमें आशा है, हिन्दी भाषा-प्रेमी हमारे इस अमूल्य परिश्रम को अवश्य अनुमोदन देंगे और शीघ्रता से अपना नाम लिखाने को निम्न पते पर प्रार्थना-पत्र भेजेंगे।

प्रार्थना-पत्र भेजने का पता—

आचार्य श्रीराष्ट्रीयशाला बम्बई,

अशोक बिल्डिंग, प्रिन्सिसस्ट्रीट बम्बई नं २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसानों के क़ानून के मसौदे का हिन्दी-अनुवाद

[श्रीयुत लाला गिरिधारीलालजी अग्रवाल वकील हाईकोर्ट इलाहाबाद तथा श्रीयुत लाला सत्यनारायण वकील नैनीताल ने हमारे पास निम्नलिखित पत्र प्रकाशनार्थ भेजा है। प्रस्ताव अच्छा है। समस्त हिन्दी-हितैषिणी संस्थाओं को इसके अनुसार कार्य करना चाहिए।—सम्पादक]

मान्यवर महाशय,

आप को कदाचित मालूम होगा कि संयुक्त प्रान्तीय सरकार ने २८ नवंबर सन् १९२५ ई० के गज़ट में आगरा प्रान्त के किसानों के क़ानून के मसौदे का हिन्दी-अनुवाद छपाया था। इससे पहले जो हिन्दी-तर्जुमे होते थे, उनकी केवल लिपि ही नागरी होती थी, किन्तु भाषा अरबी फ़ार्सी मिश्रित उर्दू होती थी, जिससे हिन्दीभाषाभाषी कुछ भी लाभ नहीं उठा सकते थे। इस बार अनुवाद में वह दोष नहीं है। इसकी भाषा हिन्दी है, जिससे हिन्दी पढ़ी-लिखी जनता लाभ उठा सकती है। अतः 'आज,' 'सरस्वती,' 'अभ्युदय,' 'आर्य्यमित्र,' 'विश्वमित्र,' 'विद्यार्थी,' आदि हिन्दी के बहुत से प्रतिष्ठित पत्रों ने इस अनुवाद की प्रशंसा की है, और सरकार से प्रार्थना की है कि वह भविष्य में इसी प्रकार के हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित कराया करे। परन्तु दो-एक उर्दू-पत्रों ने इस पर व्यर्थ में टीका-टिप्पणी कीहै और सरकार को सलाह दी है कि इस अनुवाद को रद्द करके एक दूसरा हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित कराया जाय, जिसकी लिपि तो नागरी हो किन्तु भाषा वही अरबी-फ़ार्सी मिश्रित उर्दू हो।

अतः इस बात की परमावश्यकता है कि स्थान स्थान पर सार्वजनिक सभायें करके निम्नलिखित आशय का प्रस्ताव पास किया जाय, और उसकी एक प्रति प्रान्तीय सरकार (लोकल गवर्नमेन्ट यू. पी.) को और एक प्रेस को भेज दी जाय, ताकि सरकार लोकमत से परिचित हो जाय, और इस कानून के पास होने पर इसका तथा इसी प्रकार के और क़ानूनों का अनुवाद इसी हिन्दी-अनुवाद की शैली पर (अर्थात् शुद्ध हिन्दी में) कराया करे। ऐसा न होने पर सम्भव है कि सरकार उक्त उर्दू अख़बारों की प्रार्थना पर ध्यान देकर पुरानी शैली पर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका दूसरा हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित करादे, और केवल नाम मात्र के ही हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित होते रहें। चूंकि किसानों का क़ानून इस समय कौंसिल में पेश है और शीघ्र ही पास होने वाला है इस लिये समस्त हिन्दी-प्रेमियों का कर्त्तव्य है कि इस सुअवसर को हाथ से न जाने दें। आशा है कि आप इस बात का भरसक प्रयत्न करेंगे कि यथा संभव शीघ्र अपने स्थान में एक सभा, नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दू सभा, भारतधर्म महामंडल, आर्य्यसमाज, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, के संरक्षण में (और यदि आप के यहाँ एक से अधिक संस्थाओं की शाखाएं हों, और संभव हो, तो सब मिलकर) एक सार्वजनिक सभा करके निम्नलिखित आशय का प्रस्ताव पास करके सरकार के पास तथा प्रेस में भेज देंगे।

प्रस्ताव

सर्व-सम्मति से निश्चित हुआ कि ········की हिन्दी-पढ़ी- लिखी जनता की यह सार्वजनिक सभा जो नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, हिन्दूसभा, आर्य्यसमाज, भारत धर्म महामण्डल, के संरक्षण में हुई, आगरा प्रान्त के किसानों के क़ानून के मसौदे के हिन्दी-अनुवाद-की शैली पर हर्ष प्रकट करती हुई सरकार को धन्यबाद देती है, और प्रार्थना करती है कि जब यह क़ानून पास हो जाय तो उसका हिन्दी-अनुवाद उसी प्रकार की भाषा में कराया जाय न कि नाम मात्र की हिन्दी, किन्तु फ़ार्सीमयी उर्दू भाषा में, जिस को हिन्दी भाषा भाषी बिल्कुल नहीं समझ सकते और न उससे कुछ लाभ उठा सकते हैं।

यह सभा सरकार से यह भी प्रार्थना करती है कि भविष्य में अदालतों के समस्त क़ानूनी फ़ार्म जो आजकल देवनागरी लिपि में छपते हैं, और जो क़ानून पास हों, उन सबका हिन्दी-अनुवाद किसानों के इस क़ानून के अनुवाद की शैली पर कराया जाय, और इस बात का प्रबन्ध किया जाय कि किसी दशा में भी उक्त फ़ार्मों के शून्य स्थानों में उर्दू न लिखी जाया करे; क्योंकि ऐसी दशा में फ़ार्मों का हिन्दी में छपना और न छपना बराबर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा की सरकार से यह भी प्रार्थना है कि अदालतों में गवाहों के बयान और पुलिस में पहिली (इब्तदाई) रिपोर्ट हिन्दी में लिखे जाने के सम्बन्ध में वर्त्तमान निषेध हटा दिया जाय, और यह आदेश निकाला जाय कि यदि पुलिस में रिपोर्ट करने वाले ऐसा चाहे, तो उनकी रिपोर्ट हिन्दी में लिखी जाय।

सम्मेलन-सम्बन्धी विविध सूचनाएँ

हिन्दी-विद्यापीठ

सूचना

[१]

हिन्दी-विद्यापीठ के हितैषियों तथा शिक्षा-प्रेमी विद्यार्थियों को यह आनन्द-सन्देश पढ़कर बड़ी ही प्रसन्नता होगी कि हिन्दी-विद्यापीठ को एक आदर्श शिक्षणालय बनाने के लिये योग्य से योग्य विद्वानों का गुरुमंडल बनाया जा रहा है। गणित की शिक्षा देने के लिये लखनऊ-यूनिवर्सिटी के भूतपूर्व रिसर्च-स्कालर श्रीयुत प्रोफेसर अवधजी उपाध्याय १ अप्रैल से हिन्दी-विद्यापीठ में आगये हैं। आप अब स्थिर-रूप से हिन्दी-विद्यापीठ में निवास करते हुए बड़े प्रेम से विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं। आप गणित-शास्त्र के एक सुप्रसिद्ध प्रकाण्ड पण्डित हैं। आपने गणित-सम्बन्धी कितने ही नियमों के नये-नये आविष्कार किये हैं, जो समय-समय पर अमरीका, जर्मनी और इङ्गलैण्ड आदि देशों के प्रसिद्ध प्रसिद्ध पत्रों में प्रकाशित होते रहे हैं। साथ ही गणित सम्बन्धी बहुत से ऐसे प्रश्न भी आपने हल किये हैं जो अभी तक प्रायः हल नहीं हो सके थे।

हिन्दी तथा संस्कृत-साहित्य की शिक्षा श्रीयुत पं० गयाप्रसादजी शास्त्री, साहित्याचार्य्य "श्रीहरि" कवि दे रहे हैं। "श्रीहरि" जी हिन्दी-साहित्य, संस्कृत-साहित्य, व्याकरण एवं दर्शन विषय के योग्य विद्वान होते हुए-बँगला, पाली और प्राकृत आदि भाषाओं के भी अच्छे ज्ञाता हैं। इन विद्वानों के सवाय भिन्न २ विषयों के अन्य विद्वान भी विद्यापीठ में बड़े प्रेम से शिक्षा दे रहे हैं। विद्यार्थियों को हिन्दी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यापीठ के इन विद्वानों की योग्यता से लाभ उठाने का शीघ्र प्रयत्न करना चाहिए।

चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्म्मा
व्यवस्थापक हिन्दी-विद्यापीठ, प्रयाग

[२]

सर्व साधारण और विशेषतः साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं में बैठनेवाले परीक्षार्थियों को सूचित किया जाता है कि वे मनीआर्डर फ़ार्म के कूपन में अपना नाम व पूरा-पता साफ़-साफ़ लिख दिया करें, ताकि जमा-ख़र्च करने में सुविधा हो। ऐसा न करने से मेरा समय व्यर्थ नष्ट होता है और कभी-कभी कुछ भूलों के होने की भी सम्भावना हो सकती है।

अर्थ-मंत्री
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

[३]

सम्मेलन की प्रथमा तथा मध्यमा परीक्षाओं में बैठनेवाले समस्त परीक्षार्थियों को इस विज्ञप्ति द्वारा सूचित किया जाता है कि उनके प्रवेश-पत्र परीक्षा-केन्द्रोंके व्यवस्थापकों के पास भेजे जा रहे हैं। अतः वे अपने अपने प्रवेश-पत्र व्यवस्थापकों से ले लें। परीक्षायें १ली सितंबर से प्रारंभ होंगी। अतएव इस परीक्षा तिथि से पूर्व ही व्यावस्थापकों से प्रवेश-पत्र ले लेना आवश्यक है।

[४]

कलकत्ते में हिन्दी-साहित्य-विद्यालय

श्रीबड़ाबाजारकुमार सभाने १९३।२ हरीसन रोड में सम्मेलन की परीक्षाओं का कोर्स पढ़ाने के लिये हिन्दी-साहित्य-विद्यालय खोला है, जिसमें कई विद्यार्थी प्रथमा और मध्यमा का कोर्स पढ़ते हैं। प्रधानाध्यापक रामशङ्कर त्रिपाठी और द्वितीयाध्यापक पं० शिव-शेखर द्विवेदी विशारद हैं।

[५]

स्वर्ण-पदक

सम्मेलन की इस वर्ष की मध्यमा परीक्षा में कलकत्ता केन्द्र से जो परीक्षार्थी सर्व-प्रथम आयेगा, उसे सम्मेलन श्रीयुत राधाकृष्ण नेवटिया ५, नारायण प्रसाद बाबूलेन, कलकत्ता की ओर से एक स्वर्ण-पदक देगा।

परीक्षा-मन्त्री,
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१—भक्त के प्रेमोद्गार (कविता)—[आनन्दघन] ...

२—अलंकार और कविता—[श्रीयुत आनन्दिप्रसाद श्रीवास्तव] ... ४०६

३—कविता और कवित्व—[साहित्य-रत्न श्रीबाबूराम बित्थरिया] ४१०

४—रत्नों की पिटारी—[महाकविभूषण, हरिकेश कवि तथा महाकवि मतिराम—लेखक श्रीयुत पं० भागीरथप्रसाद दीक्षित, विशारद] ४१६

५—ख़ानख़ाना की भाषा—[श्रीयुत पं० अयोध्याप्रसाद शर्म्मा, विशारद] ४२४

६—सम्मेलन-समाचार—[सोलहवीं स्थायी-समिति का दूसरा अधिवेशन] ४२७

७—हिन्दी-जगत—[पंजाब-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के...तृतीय वर्ष का वार्षिक कार्य-विवरण, आन्ध्र प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-हिन्दी-प्रचार कार्यालय बेजवाडा के संचालक की एक खुली चिट्ठी, बम्बई में हिन्दी शिक्षा का आयोजन, किसानों के क़ानून के मसौदे का हिन्दी अनुवाद,] ४३२

८—सम्मेलन-सम्बन्धी विविध सूचनाएँ ४४०

हिन्दी-काव्य में नवरस

[लेखक—साहित्य-रत्न श्रीयुत बाबूराम बित्थरिया]

यह पुस्तक लेखक ने उत्तमा परीक्षा देने के लिए निबन्ध रूप में लिखी थी। पुस्तक कितने महत्व की है, यह इसीसे प्रकट है कि यह मध्यमा-परीक्षा में पाठ्य विषय में स्वीकृत है। छपकर तैयार हो रही है। पृष्ठ-संख्या ५००, सजिल्द प्रति का मूल्य २)।

निम्न लिखितपुस्तक, जो कुछ दिनों से अप्राप्य थीं, अब नवीन संस्करण-स्वरूप छपकर तैयार हैं :—

१. सूरपदावली
२. शिवाबावनी
३. सरलपिंगल
४. कलकत्ता-सम्मेलन की लेखमाला (नवीन)
५. संवत् १९८२ वि० की प्रथमा तथा मध्यमा परीक्षाओं के प्रश्न-पत्रों के संग्रह

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रधानमंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ उत्तमोत्तम सस्ती पुस्तकें

सरल-शरीर-विज्ञान—यह सचित्र पुस्तक मध्यमापरीक्षा के उन परीक्षार्थियों के लिए बड़े काम की है जो उसके वैज्ञानिक विषयों में शरीर विज्ञान लेकर बैठते हैं। पृष्ठ-संख्या १६८, सुन्दर रेशमी जिल्द मूल्य ॥।)

महात्मा टालस्टाय के विचार—रशियन ऋषि महात्मा टालस्टाय संसार के उन महान् व्यक्तियों में से थे जो अपनी अलौकिक प्रतिभा से संसार के [illegible] फेर कर जाते हैं। इन्हीं महात्मा टालस्टाय के युगान्तरकारी विचारों का दिग्दर्शन इस पुस्तक में बड़ी प्राञ्जल भाषा में किया गया है। पृष्ठ-संख्या १२८, मूल्य ।-)

सनयाटसेन—चीन देश के उद्धारक डाक्टर सनयाटसेन का यह जीवन-चरित निर्बलों में बल, निराशों में आशा, मृतकों में जीवन, देशद्रोहियों में देश-प्रेम और अकर्मण्यों में कर्मण्यता फूकनेवाला है। पृष्ठ-संख्या ११२, मूल्य ।)

संजीवनी—इसमें मुर्दा दिलों में जान डालनेवाली २८ कविताएँ संग्रहीत हैं। ये कविताएँ कैसी हैं, इस विषय में इतना ही लिखना पर्याप्त होगा, ये सब कानपुर के काव्य प्रेमी बाबू वेनीमाधवजी खन्ना द्वारा पुरस्कृत हो चुकी हैं। पृष्ठ-संख्या १४४, मूल्य ।-)

लखनऊ के चिकन के पल्ले

हमारे कारखाने से मुर्री, तेपची, फंदा कटाव और बखिया काम के सादे, रेशम-भरे, जाली खुदे और कामदानी पड़े सब मेल के टोपी के पल्ले घर बैठे मँगा लीजिये। मूल्य =) =)॥ ≡) ≡)॥ ।) ।-) ।=) ।≡) ॥) ॥=) ॥।) ॥।=) १) १।) १॥) १॥।) २) २॥) ३) ४) ५) ६) ८) १०) फ़ी पल्ला। कुर्ते के कंठे सब मेल के मूल्य ≡) ।) ।=) ॥) ॥।) १)। खद्दर प्रेमियों के लिये सब मेल के पल्ले शुद्ध खादी पर बनवाए गये हैं। पल्लों के सिवाय सब मेलकी चिकन की साड़ियाँ डुपटे, कुर्ते, चादरें और थान भी तैयार है। व्यापारियों के वास्ते ख़ास रिआयत है। १५) से अधिक माल के लिये १०) सैकड़ा एडवांस भेजना चाहिए। १) से कम माल नहीं भेजा जाता। एक बार अवश्य परीक्षा कीजिये। हमेशा के [illegible] का [illegible] से एक [illegible]

परीक्षा-मन्त्री,
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० ए. ६२६

सम्मेलन-पत्रिका

सम्मेलन की मुख पत्रिका

भाग १३, अङ्क ११, आषाढ़ संवत् १९८३ वि०

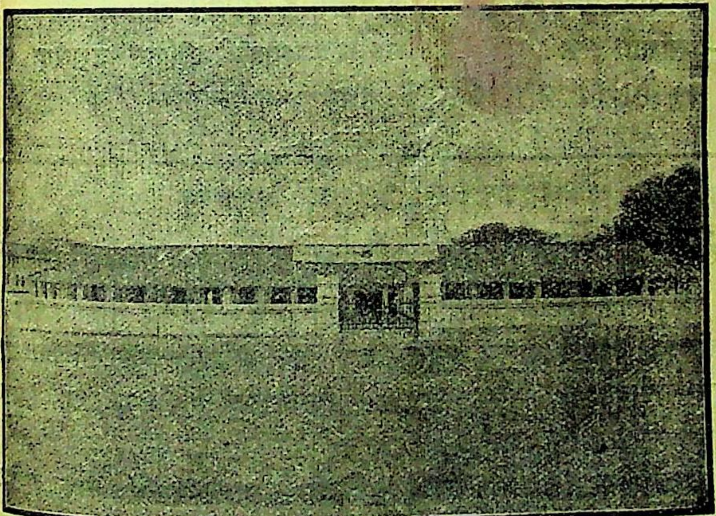

सम्पादक

साहित्य-मंत्री

प्रकाशक

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

वार्षिक मूल्य २) प्रत्यंक ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१—मानस कौं (कविता)—[श्रीयुत पं० मदनलालजी चतुर्वेदी] ४६
२—कविता और कवित्व—[साहित्यरत्न पं० बाबूराम बित्थरिया] ४
३—काव्य-कुञ्ज—[श्रीआनन्दिप्रसाद श्रीवास्तव्य, श्री मदनलालजी चतुर्वेदी तथा चतुर्वेदी लक्ष्मीनिधि विशारद, हिन्दी-प्रभाकर] ४
४—श्रीमङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक — [श्रीयुत पं०रामजीलालजी शर्म्मा] ४
५—सम्मेलन-समाचार—[सम्मेलन के उपदेशकजी का भ्रमण वृत्तान्त तथा हिन्दी–साहित्य-सम्मेलन के संवत् १९८२ वि० के परीक्षा फल का शेषांश] ...
६—सम्पादकीय—[जयपुर-शिक्षा-विभाग की उदारता, सम्मेलन-परीक्षाएँ तथा हिन्दी में सरल वैज्ञानिक पुस्तकें]
७—पुस्तकावलोकन[श्रीयुत पं० भागीरथप्रसादजी दीक्षित विशारद, पं० वैद्यनाथ मिश्र "विह्वल" तथा " साहित्यानन्द "]

हिन्दी-काव्य में नवरस

[लेखक—साहित्य-रत्न श्रीयुत बाबूराम बित्थरिया]

यह पुस्तक लेखक ने उत्तमा परीक्षा देने के लिये निबन्ध रूप में लिखी थी। पुस्तक कितने महत्व की है, यह इसीसे प्रकट है कि यह मध्यमा-परीक्षा में पाठ्य विषय में स्वीकृत है । छपकर तैयार है। पृष्ठ-संख्या ५००, सजिल्द प्रति का मूल्य २)।

निम्नलिखित पुस्तकें, जो कुछ दिनों से अप्राप्य थीं, अब नवीन संस्करण-स्वरूप छपकर तैयार हैं :—

१. सूरपदावली
२. शिवाबावनी
३. सरलपिंगल
४. कलकत्ता-सम्मेलन की लेखमाला (नवीन)
५. संवत् १९८२ वि० की प्रथमा तथा मध्यमा परीक्षाओं प्रश्न-पत्रों के संग्रह

साहित्य-मंत्री
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलभ-साहित्य-माला की पुस्तकें

हिन्दी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

[लेखक—श्री मिश्रबन्धु]

हिन्दी भाषा और साहित्य का क्रमशः विकास कैसे हुआ, उसने कौन-कौन से रूप पकड़े, किन-किन बाधाओं एवं साधनों का उसे सामना करना पड़ा, वर्त्तमान परिस्थित क्या है, आदि गम्भीर विषयों का पता इस पुस्तक से भली भाँति चलता है। अपने ढङ्ग की यह पहली पुस्तक है। "मिश्रबन्धु-विनोद" रूपी महासागर से मथनकर यह इतिहासामृत निकाला गया है। यह हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा में स्वीकृत है। तृतीय संस्करण पृष्ठ-संख्या १०८, मूल्य ।=)

भारतगीत

[लेखक—पं० श्रीधर पाठक]

पाठकजी की रसमयी रचना से किस सहृदय साहित्य-रसिक का हृदय रसप्लावित न होता होगा? आपकी गणना वर्त्तमान हिन्दी-साहित्य के महारथियों में है। आपकी राष्ट्रीय कविता नव-युवकों में जातीय जीवन सञ्चार करने वाली है। प्रस्तुत पुस्तक पाठकजी के उन गीतों का संग्रह है, जिन्हें उन्होंने समय-समय पर स्वदेश-भक्ति की उमङ्ग में आकर लिखा है। इसकी प्रस्तावना साहित्य-मर्मज्ञ बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन ने लिखी है। यह पुस्तक राष्ट्रीय विद्यालयों के बड़े काम की है। पृष्ठ-संख्या ६४, मूल्य ≡)

भारतवर्ष का इतिहास [प्रथम खण्ड]

[लेखक—श्री मिश्रबन्धु]

यह इतिहास प्राचीन और अर्वाचीन काल से सम्बन्ध रखता है। इसमें पूर्व वैदिक काल से सूत्र काल तक अथवा ६००० संवत् पूर्व से ५०० संवत् पूर्व तक की घटनाओं का उल्लेख है। अबतक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में भारतवर्ष का सच्चा इतिहास एक भी नहीं था। विदेशियों के लिखे हुए अपूर्ण और पक्षपातयुक्त इतिहासों के पढ़ने से यहाँ के नवयुवकों को अपने देश के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। ऐसे समय में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक मिश्रबन्धुओं ने बड़ा काम किया है। मध्यमा परीक्षा के इतिहास विषय में यह पुस्तक निर्दिष्ट है। जिल्दवाली पुस्तक का, जिसकी पृष्ठ-संख्या ४०६ है, मूल्य केवल १।।) है।

राष्ट्रभाषा

[सम्पादक—श्री 'भारतीय हृदय']

कुछ समय हुआ, महात्मा गांधी ने यह प्रश्न उपस्थित किया था कि, क्या हिन्दी राष्ट्रभाषा हो सकती है? इसके उत्तर में भारत के प्रत्येक प्रान्त के बड़े-बड़े विद्वानों और नेताओं ने पक्षपात-रहित सम्मतियाँ दी थीं कि निःसन्देह हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होने योग्य है। उन्हीं सब अमूल्य सम्मतियों का संग्रह इस पुस्तक में किया गया है। इसके विरोधियों का भी यथेष्ट खण्डन हुआ है। इस विषय के व्याख्यानों का भी इनमें संकलन कर दिया गया है। हिन्दीभाषा के प्रेमियों के लिए यह पुस्तक प्राणस्थानीय नहीं तो क्या है? पृष्ठ-संख्या २००, मूल्य ॥)

शिवा-बावनी

महाकवि भूषण के वीररस सम्बन्धी ५२ कवित्तों का उत्तम संग्रह। इन कवित्तों के टक्कर के छन्द शायद ही वीररस के साहित्य में अन्यत्र कहीं मिलें। महाराष्ट्रपति शिवाजी की देशभक्ति और सच्ची वीरता का यदि चित्र देखना हो, तो एक बार इस छोटी सी पोथी का पाठ अवश्य कर जाइये। शब्द एवं भाव-काठिन्य दूर करने के लिये कवित्तों की सुबोधिनी टीका, टिप्पणी और अलंकार आदि साहित्य से सम्बन्ध रखने वाली आवश्यक बातों का इसमें उल्लेख कर दिया गया है। साहित्य सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा में यह पुस्तक रक्खी गयी है। पृष्ठ-संख्या ५५, मूल्य ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल पिङ्गल

ले० — { श्री पुत्तन लाल विद्यार्थी विशारद
श्री लक्ष्मीधर शुक्ल विशारद }

इस पुस्तक में पिङ्गलशास्त्र के गूढ़ रहस्यों को सरल और सुन्दर भाषा में समझाने का प्रयत्न किया गया है। छन्दों के उत्तम उदाहरण भी दिये गये हैं। अन्त में संस्कृत छन्दों का भी संक्षेप में दिग्दर्शन करा दिया गया है। यह पुस्तक सम्मेलन की प्रथमा-परीक्षा के साहित्य विषय की पाठ्य पुस्तकों में स्वीकृत है। पृष्ठ-संख्या ५८ मूल्य ।) नवीन संस्करण छपकर तैयार है

सूरपदावली (सटिप्पण)

श्री सूरदासजी के १०० अत्युत्तम पदों का अपूर्व संग्रह है। मूल्य ।) नवीन संस्करण छपकर तैयार है।

भारतवर्ष का इतिहास [द्वितीय खण्ड]

[लेखक—श्री मिश्रबन्धु]

इसमें ५०० संवत् पूर्व से १२१० संवत् तक की घटनाओं का वर्णन किया गया है। भारतवर्ष के उत्थान-पतन के क्रम का पता इस पुस्तक से जैसा कुछ चलता है, यह पढ़ने से ही मालूम होगा। हिन्दू-समाज की उन्नति और अवनति, इस देश में स्वदेशी और विदेशी भावों का आविर्भाव तथा धार्मिक जीवन की महत्ता आदि जानने योग्य आवश्यक विषयों का ज्ञान इससे पूर्णतः प्राप्त हो सकता है। यह पुस्तक सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा की इतिहास-विषयक पाठ्य पुस्तकों में स्वीकृत है। सुन्दर छपाई, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ-संख्या ४४० मूल्य २।)

संक्षिप्त सूरसागर

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

सूरदासजी-रचित सूरसागर से ५०० पद-रत्न चुनकर इसमें एकत्र किये गये हैं। जहां तक हो सका है, कई प्रतियों से पदों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ शुद्ध किया गया है। प्रत्येक पद की पाद-टिप्पणी भी लगा दी गयी है। अब तक सब के अनुशीलन करने योग्य सूरसागर का कोई सुन्दर और सुलभ संस्करण नहीं निकला था। लोग इसके रसास्वादन के लिये लालायित हो रहे थे। सम्मेलन ने इस अभाव को दूर कर हिन्दी-साहित्य-रसिकों की पिपासा शान्त करने की यथाशक्ति चेष्टा की है। पुस्तक के अन्त में लगभग १०० पृष्ठ की सूरदासजीकी जीवनी तथा काव्य-परिचय जोड़ा गया है। उनकी जीवनी की मुख्य-मुख्य घटनाओं का पूरा-पूरा उल्लेख आगया है। पदों में आई हुई अन्तर्कथाएँ भी लिखी गयी हैं। यह पुस्तक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा में स्वीकृत है। एण्टिक काग़ज़ का जिल्ददार संस्करण, पृष्ठ-संख्या ४२५, मूल्य २)

विहारी-संग्रह

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

कविवर विहारीलाल की सतसई से प्रथमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए यह छोटा सा संग्रह तैयार किया गया है। जहाँ तक सम्भव हुआ है, इसमें शृंगार रस के दोहों का समावेश नहीं किया गया है। किन्तु ऐसे दोहों का संग्रह किया गया है, जो बिना किसी सङ्कोच के बालक-बालिकाओं को पढ़ाये जा सकते हैं। पृष्ठ-संख्या ६४, मूल्य ≡)

ब्रज-माधुरी-सार

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

इस पुस्तक का विषय इसके नाम ही से प्रकट होता है। इसमें ब्रजभाषा की कविता का सार सङ्कलन किया गया है। इस संग्रह में चार विशेषताएँ हैं :—

(१) इसमें सूरदासजी से लेकर आधुनिक काल के स्वर्गीय सत्यनारायणजी तक की भावपूर्ण कविताओं का संग्रह किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) इसमें कुछ ऐसे कवियों की रचनाओं का रसास्वादन भी कराया गया है जो अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुई थीं।

(३) इस ग्रन्थ में यथेष्ट पाद-टिप्पणियाँ लगा दी गयी हैं, जिनकी सहायता से साधारण पाठक भी लाभ उठा सकते हैं।

(४) इसके प्रारम्भ में प्रत्येक कवि का संक्षिप्त जीवनचरित्र और उसकी कविता की संक्षिप्त आलोचना भी की गई है।

पृष्ठ संख्या ६३२, मूल्य जिल्दवाले संस्करण का केवल २)

पद्मावत (पूर्वार्द्ध)

[सम्पादक—श्री लाला भगवानदीन]

यह हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्मावत का पूर्वार्द्ध है। इस भाग में पहले खण्ड से लेकर ३४ वें खण्ड तक का समावेश हुआ है। सम्पादक महोदय ने इस ग्रन्थ में इतनी पादटिप्पणियाँ लगा दी हैं कि अब इस प्राचीन काव्य का रसास्वादन करना प्रत्येक कविता-प्रेमी के लिये सुलभ हो गया है। अन्त में एक संक्षिप्त शब्द-कोष भी जोड़ दिया गया है। पृष्ठ-संख्या लगभग २२०; मूल्य साधारण जिल्द का १) और जिल्दवाली का १।)

सूरदास की विनयपत्रिका

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

यद्यपि 'विनय-पत्रिका' नाम का कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ महात्मा सूरदासजी का नहीं है तथापि सूरसागर में विनय-सम्बन्धी जो पद मिलते हैं, उन्हीं के आधार पर सौ उत्तमोत्तम एवं मनोरम पदों का संकलन करके इसका 'विनय-पत्रिका' नाम दिया गया है। क्रम तुलसीदासजी की विनय-पत्रिका का रक्खा गया है। अन्त में संक्षिप्त शब्दार्थ भी दे दिया है। पृष्ठ-संख्या ७४, मूल्य केवल ॥)

पता—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पोस्टबाक्स नं० ११, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-रत्न-माला

१—अकबर की राज्य-व्यवस्था

[लेखक—साहित्यरत्न पं० शेषमणिजी त्रिपाठी, बी० ए०]

इसमें सम्राट अकबर की राज्य-व्यवस्था का बड़ा ही मनोहर चित्र अंकित किया गया है। अकबर के राज्य-काल में भारतीय समाज, धर्म-नीति तथा जीवन की क्या अवस्था थी, वर्तमान राज्य प्रणाली, तत्कालीन व्यवस्था के मुक़ाबले में कैसी है आदि बातों का पता इस पुस्तक से भली भाँति लगता है। इतिहास, राजनीति तथा अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए यह बहुत लाभदायक है। पृष्ठसंख्या २८०, मूल्य १)

२—हिन्दी-काव्य में नवरस

[लेखक—साहित्यरत्न श्रीयुत बाबूराम बित्थरिया]

पुस्तक का विषय उसके नाम से ही प्रकट है। यह पुस्तक लेखक ने सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा देने के लिए निबन्ध (Thesis) रूप में लिखी थी। पुस्तक कितने महत्व की है, यह इसी से प्रकट है कि सम्मेलन की परीक्षा-समिति ने इसे मध्यमा परीक्षा के साहित्य विषय के पाठ्यग्रन्थों में चुना है। मूल्य २) पृष्ठ-संख्या लगभग ५००

सम्मेलन की अन्य पुस्तकें

सूर्य-सिद्धान्त

[सम्पादक—श्री० इन्द्रनारायणजी द्विवेदी]

ज्योतिष-शास्त्र में सूर्य-सिद्धान्त अपने ढँग का एक ही है। इसे देखने से यह पता भली भाँति चल जाता है कि आर्यों ने उन सिद्धान्तोंका बहुत पहले साक्षात्कार कर लिया था, जिन्हें जानकर पश्चिमी पंडित आज डींग हाँक रहे हैं। इसमें खगोल विषयक सभी बातें आ गयी हैं। सौर जगत् का पूरा-पूरा विवरण इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्व ग्रन्थ में दरशा दिया गया है। इस पर संसार की प्रायः सभी भाषाओं में टीका-टिप्पणी हो चुकी है। हिन्दी में दो तीन और टीकाएँ मिलती हैं, पर उनसे ठीक-ठीक भाव समझ में नहीं आता। श्री द्विवेदीजी ने इसके गूढ़ से गूढ़ विषय भी सरल और स्पष्ट भाषा में समझाने की पूर्ण चेष्टा की है। मध्यमा के ज्योतिष विषय में यह स्वीकृत है। सजिल्द, पृष्ठ-संख्या २३२, मूल्य १।)

इतिहास

[ले०—स्वर्गीय श्रीविष्णु शास्त्री चिपलूणकर]

यह श्रीचिपलूणकर जी के निबन्ध का अविकल अनुवाद है। इतिहास सम्बन्धी प्रायः सभी ज्ञातव्य बातें इसमें आ गयी हैं। यह पुस्तक सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा के इतिहास विषय की पाठ्य पुस्तकों में स्वीकृत है। मूल्य ≡)

हिन्दी-भाषा-सार

[सम्पादक—श्री लाला भगवानदीन
तथा
अध्यापक बाबू रामदास गौड़, एम० ए०]

हिन्दी में क्रमशः गद्य का विकास किस-किस प्रकार हुआ, इसका पता इस पुस्तक से चल सकता है। इसमें सुयोग्य सम्पादकों ने हिन्दी के प्राचीन उत्तमोत्तम गद्य लेखकों के चुने हुए लेख दिये हैं। नीचे टिप्पणी भी लगा दी है। गद्यात्मक निबन्धों का यह एक आदर्श संग्रह है। प्रथमा परीक्षा में यह स्वीकृत है। एण्टिक काग़ज़ पर सुन्दर छपाई, पृष्ठ-संख्या २००, मूल्य ॥।)

प्रथमालङ्कार-निरूपण

[ले०—साहित्याचार्य श्री चन्द्रशेखरजी शास्त्री]

प्रथमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए अलंकार विषयक ज्ञान करा देने के लिए यह 'निरूपण' बड़े काम का है। अलंकारों के लक्षण और उनके उदाहरण बड़ी ही सरलता से समझाये गये हैं। प्रथमा परीक्षा में यह स्वीकृत है। मूल्य ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मौसिम के लिये
डाक्टर एस० के०
बर्म्मन का

दाँ **अर्क़ पुदीना (सब्ज़)** रत्न

यह ऐसी चीज़ है कि यों तो खाने में पुदीनेकी हरी पत्तियों की खुशबू और स्वाद है, और गुण ? ऐसा कि लोग देख कर दंग हो जाते हैं। वादीके कारण जितने विकार होते हैं, पेट फूलना, डकार आना, भूख कम होना, आदि शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। बच्चोंके लिये इसके समान दूसरी दवा नहीं है।

मूल्य फी शीशी ॥।=) डा० म० ।=)

क्लोरो डिन

भारतवर्ष के लाखों रोगियोंने इनसे लाभ उठाए हैं

अंग्रेजोंकी घरेलू दवा यही है। दस्त, आँव, पेचिश, मरोड़, पेट दर्द, और ऐंठन के लिये यह बहुत ही उपकारी दवा है। वायुके दर्द, और शूल चाहे किसी कारण से हो यह दवा दो खुराक में आराम कर देती है। डा० बर्म्मन ने इंगलैन्ड के एक नामी औषधालय से इसे बनवाया है। दाममें सस्ता, और गुणमें "पेटेन्ट क्लोरोडिनके समान है। मूल्य फी शीशी ॥) डा० म० ।=)

पता—डाक्तर एस० के० बर्म्मन (विभाग नं० १२२)
पोष्ट बक्स नं० ५४४, कलकत्ता।

एजेन्ट—इलाहाबाद (चौक) में हमारी दवाएँ मे० दूबे ब्रादर्स के यहाँ मिलेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

भाग १३] आषाढ़, संवत् १९८३ वि० [अङ्क ११

मानस कौं

हंसारे ! मानस कौं उरि चलु ।
पावनि-पारि परसि निहचै पाइय अति पुलकित वहै परम-फलु ॥
करु किलोल निरमल जलमधि मुकुताहल चुगि तेहि ठैयाँ ।
विरमु असीम अमोद लहलही द्रुम बेलरि की छैयाँ ॥
पारिजात-परिमल लै डोलति पवन प्रेम-रस भीनी ।
प्रतिपल प्रात-ओप विगसति जित साँझ-संधि अति छीनी ॥
सुख-सनेह सरसतु बरसतु जहँ साध फुरन कौ वारी ।
मत्त-मधुप गुंजरत हरिअरी मानस-तट की क्यारी ॥
तँह ए अलख लड़ैते उड़ि चलु सो सुबरनमय बाटहिं ।
प्रभु-पद कंज मुदित ह्वै गहि लै तजि या औघट घाटहिं ॥

मदनलाल चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता और कवित्व

[गताङ्क से आगे]

ईरान के सुप्रसिद्ध कवि रुदकी की यह कथा जगद्विख्यात है कि अहमद के पुत्र अमीरनसर सामानी ने जब खुरासान को विजय किया तब उसे हिरात का मनोमुग्धकारी, आरोग्य-वर्द्धक जलवायु ऐसा रुचा कि उसने वहीं विश्राम करने के लिये डेरे डाल दिये; और बुख़ारा को, जो सामानियों की मुख्य राजधानी थी, मन से विस्मृत कर दिया। सेना के वे नायक और प्रमुख धनिक जो बुख़ारा में गगनचुम्बी प्रासाद और उत्तमोत्तम वाटिकाओं के स्वामी थे, हिरात में रहते-रहते थकित हो गये। इधर हिरात के अधिवासी भी सेना के अधिक प्रवास के कारण दुखित हो उठे तो सबने आचार्य अबुल-हसन रुदकी से यह प्रार्थना की कि "भगवन्! किसी प्रकार 'अमीर' को बुख़ारा को लौट चलने के लिये वाध्य कीजिये"। रुदकी ने एक पद्य लिखा, और जिस समय सम्राट सुरापान और रसरंग में उन्मत्त हो रहा था उस समय उसे उसके सामने पढ़सुनाया। इस पद्य ने उसके मन पर ऐसा प्रभाव डाला कि उसने लगे-लगाये समाज को छोड़कर, बिना मोज़ा पहने ही अश्वारूढ़ हो, सेना-सहित बुख़ारा को प्रस्थान कर दिया और दस कोस पहुँचकर प्रथम विश्राम लिया।

संभव है, इस प्रकार की घटनायें पूर्वीय काव्य-क्रम में स्वल्पप्रमाण में ही उपलब्ध हों; परन्तु ऐसी गाथायें प्रचुर प्रमाण में विद्यमान हैं जिनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि कोई पद्य किसी समुचित शुभावसर पर पढ़ा गया और उसको श्रवण कर श्रोताओं के मन आनन्द-सागर की उत्ताल तरंगों के साथ तरंगीन होने लगे। उन्हें आत्म-विस्मरण हो गया और उनकी तत्कालीन वास्तविक दशा किसी अन्य रूप में परिणत हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य यदि वास्तविकता से सर्वथा विपरीत और नितान्त ही असम्भव बातों पर निर्भर न हो तो वह अवश्य ही प्रभावशाली और हृदयग्राही होगा। परन्तु आधुनिक काल में कुछ विद्वानों ने कविता के विषय में जो सम्मतियाँ प्रस्तुत की हैं उनका तारतम्य यह है कि "कविता का प्रभाव सभ्यता पर अच्छा नहीं पड़ता। हम विज्ञान अथवा किसी वस्तु के वास्तविक रहस्योद्घाटन की ओर ज्यों-ज्यों बढ़ते जाते हैं त्यों-त्यों कल्पना—जिस पर काव्य की नींव स्थिर है—की शक्ति क्षीण होती जाती है; और अन्वेषण-प्रियता, जो विज्ञान की अभिवृद्धि के साथ ही साथ चला करती है, काव्य के लिये घातक विष है। वह कहते हैं कि जब तक समाज अर्द्ध-शिक्षित और वैज्ञानिक योग्यता में परिमित रहता है और उसे वस्तु-स्थिति का वास्तविक ज्ञान नहीं होता, उस समय तक उसे स्वयं अपना जीवन ही एक कहानी मात्र समझ पड़ता है। जीवन-सम्बन्धी गाथा—जो वास्तव में कुछ क्रम-वद्ध घटनाओं का संग्रह मात्र है—यदि किसी अर्द्ध-शिक्षित समाज के सम्मुख साधारण रीति से वर्णन की जाय तो उससे कहीं भय, कहीं आश्चर्य और कहीं उत्साह उत्पन्न हो जाता है। और इन्हीं वस्तुओं पर कविता की वास्तविक स्थिति है। किन्तु जब सभ्यता का प्रसार अत्यधिक हो जाता है तो ये श्रोत या तो अवरुद्ध होजाते हैं या फिर उनको अत्यन्त सतर्कता के साथ रोकने का प्रयत्न किया जाता है, जिससे उनकी दिल्लगी न उड़ाई जाय।"

इस सम्मति के एक प्रसिद्ध अनुमोदक का कहना है कि काव्यका मन पर वैसाही परदा पड़ता है जैसा मैजिकलैन्टर्न का आँख पर। जिस प्रकार इस लालटेन का तमाशा अधिक अन्धकारमय स्थान में ही पूर्णता को प्राप्त होता है, उसी प्रकार काव्य भी अधिक अविद्यान्धकार के काल ही में अपना पूर्ण चमत्कार दिखलाता है। और जिस प्रकार प्रकाश के होते ही मैजिकलैन्टर्न की समस्त प्रदर्शनी नष्टप्राय हो जाती है, उसी प्रकार ज्यों-ज्यों वास्तविक वस्तु-परिज्ञान का मार्ग निर्मल, स्वच्छ और निष्कंटक होता जाता है, उसकी सीमा निर्द्धारित हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है, त्यों-त्यों काव्य की क़लई खुलती जाती है, उसका रासायनिक चमत्कार धोखे की टट्टी सिद्ध हो जाता है; क्योंकि दो विरुद्ध वस्तुएँ, अर्थात् वास्तविकता और पाखंड, एकत्रित नहीं हो सकतीं।

इस भाव को भली भाँति चित्तांकित कराने के लिये निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार करना चाहियेः—

फिरदौसी ने अपने चरित्र-नायक रुस्तम के बल-वीर्य तथा शौर्य सम्बन्धी वर्णन के सम्बन्ध में लिखा है कि एक समय वह था कि उसको श्रवण कर रुस्तम के असाधारण पौरुष और उसकी अनुपम कीर्त्ति का मन में विश्वास उत्पन्न होता था—परन्तु अब उसके बल-वीर्य का संवाद पाकर आश्चर्य्यान्वित होना पड़ता है! श्रोताओं के हृदय पर स्वयं ही उसके साथ सहानुभूति और उस के शत्रुओं के प्रति विरुद्ध भाव उत्पन्न होता था, किन्तु अब जितनी ही ज्ञान वृद्धि होती जाती है, नित्यप्रति वह जादू विफल होता जाता है। और अब वह समय अत्यन्त निकट है जब रुस्तम एक साधारण आदमी से अधिक न समझा जायगा!

यद्यपि उपर्युक्त सम्मति, जो काव्य के विषय में दी गई है, किन्हीं अंशों में ठीक है; तथापि उसे भी बिना सोचे-समझे मान लेना उचित नहीं है। जो लोग इस सम्मति के विपक्ष में हैं उनका कथन है कि यद्यपि ज्ञान की वृद्धि से शब्दार्थ परमित और अनेक वस्तुओं की यथार्थता के भाव विस्मृत हो गये हैं; तथापि भाषाएँ पहले की अपेक्षा अधिक परिमार्जित, स्पष्ट और हृदयग्राहिणी होती जाती हैं; और उनमें भाव व्यंजकता की भी प्रधानता होती जाती है। इसमें सन्देह नहीं कि प्राचीन काल के बँधे हुए अनेक रूपक इस समय प्रायः व्यर्थ से होगये हैं; किन्तु मस्तिष्क-क्षेत्र से नूतन रूपकों की सृष्टि होना पूर्ववत् प्रचलित है। यह ठीक है कि विज्ञान और शिल्प जीवित भावों को मृत करने वाले हैं, किन्तु उन्हीं की कृपा से कवि के लिये नवीन-नवीन रुपक और दृष्टान्तों का अभूतपूर्व अविनाशी भंडार एकत्रित हो गया है और होता जाता है। वह इस बात को स्वीकार नहीं करते कि समाज की उन्नतावस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में विचारशक्ति निर्बल हो जाती है। उनका निश्चय है कि जब तक मनुष्य का यह विश्वास है कि अतीत के साथ हमारा घनिष्ट सम्बन्ध है, जब तक अगणित सफलताएँ और असफलताएँ अपने प्रभावों से हमें प्रभावित कर सकती हैं, मानव हृदय पर जब तक प्रेम का साम्राज्य है और प्रत्येक मनुष्य के जीवन की घटनाएँ एक रोचक कहानी का रूप धारण कर सकती हैं; जब तक जातियों में देश-प्रेम विद्यमान है, जब तक मनुष्य में पारस्परिक सहानुभूति के द्वारा एकता के भाव जाग्रत कर दिये गये हैं, जब तक मनुष्य के हृदय-स्थल के रंग-मञ्च पर नाना प्रकार के मनोविकार नृत्य कर रहे हैं तबतक इस बात की आशंका कदापि नहीं की जा सकती कि विचारशक्ति क्षीण हो जायगी। जब तक प्रकृति की खान खुली है, तब तक इस बात का बहुत कम भय है कि काव्य की सामग्री चुक जायगी। परन्तु यह निश्चयात्मक रीति से कहा जा सकता है कि प्रकृति की प्रत्यक्ष वस्तुएँ तो प्राचीन कालीन श्रमजीवी अपने लिये चुन चुके। वे उनके लिये पहली थीं, अतः अद्भुत भी थीं। अब उनके आश्चर्योत्पादक वर्णनों पर कोई विजय प्राप्त नहीं कर सकता।

जिस प्रकार काव्य से हार्दिक विकार उत्तेजित होते हैं, उसी प्रकार वह अलौकिक आनन्द का भी दाता है। मनुष्य के अलौकिक और विशुद्ध आनन्द का उसके आचार-विचार के साथ जो सम्बन्ध है उसके वर्णन करने की कुछ आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। काव्य यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से, आचार सम्बन्धी विद्या की भाँति शिक्षा और सुधार से सम्बन्ध नहीं रखता, लेकिन न्याय की दृष्टि से उसे उक्त आचारिक ज्ञान का स्थानापन्न सहायक अवश्य कहेंगे। इसी आधार पर संतों के एक प्रभावशाली संप्रदाय में संगीत को, जिसका आधार स्तम्भ-काव्य है, ईश्वर के सामीप्य का द्वार, आत्म-शुद्धि का मार्ग और आत्मिक पवित्रताओं का मुख्य हेतु माना गया है।

एक पूर्वीय वैज्ञानिक का कथन है कि सांसारिक कार्यों में तल्लीन रहने के कारण जो मानवी शक्तियाँ सो जाती हैं, काव्य उनको जाग्रतावस्था में लाता है और हमारे बाल्यकाल के उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशुद्ध और पवित्र विकारों को, जो 'अहम्' के भाव से सर्वथैवविमुक्त थे, जिनमें स्वार्थ की गंध नाम मात्र को भी नहीं थी, पुनः नव्यरूप देकर संचारित कर देता है। संसारिक कार्य्यों के अभ्यास और प्रेम से मस्तिष्क में कुछ प्रबलता का संचार तो हो जाता है किन्तु मन बिलकुल मर जाता है। जब आर्थिक संकट के समय में आवश्यक द्रव्य के एकत्रित करने के लिये अथवा द्रव्य-पात्र होने की अवस्था में सम्मान और पदों की प्राप्ति के लिये प्रयत्न किया जाता है और संसार में चतुर्दिक स्वार्थ का ही साम्राज्य हो जाता है, उस समय मनुष्य को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे समय में यदि मनुष्य के पास कोई ऐसा उपाय न होता जो मन को परितोष देने और उसमें नवजीवन का संचार करने में बड़ी शान्ति किन्तु अत्यंत उत्साह के साथ, रिक्त-हस्त होने की दशा में मरहम-पट्टी और आर्थिक अवकाश के समय में च्यवनप्राश का काम दे सकता, तो उसे बड़े संकट में पड़ना पड़ता। प्रकृति ने यह गुण आद्योपान्त काव्य में सुरक्षित रक्खा है। वह हमको अनुभव का सीमोल्लंघन करा हमारे अतीत और भविष्य की अवस्थाओं को वर्तमान अवस्था पर विजय प्राप्त करा देता है। काव्य का प्रभाव केवल बुद्धि ही के द्वारा नहीं, किन्तु अधिकतर मस्तिष्क और विचार-शक्ति के द्वारा भी आचार पर हुआ करता है। अतः प्रत्येक जाति अपने मस्तिष्क की सबलता और ज्ञान की उच्चता तथा प्रौढ़ता के अनुसार काव्य से लाभ उठा सकती है। जात्यभिमान तथा जाति-गौरव, प्रण-पालन सम्बन्धी दृढ़ता, निश्चितता के साथ अपने सम्पूर्ण विचारों को पूर्ण करना, गंभीरता के साथ कठिनाइयों को सहन करना और ऐसे लाभों की ओर ध्यान न देना जो पवित्र उपायों से प्राप्त न हो सकें, और इसी प्रकार के वे सम्पूर्ण उच्च विचार, जिनके द्वारा सम्पूर्ण जाति समस्त संसार की दृष्टि में गौरवान्वित हो जाती है और जिनके न होने के कारण बड़े-बड़े राष्ट्र सर्वसाधारण की दृष्टि में अत्यन्त घृणा के साथ देखे जाते हैं, यदि किसी जाति में केवल काव्य के ही द्वारा उत्पन्न नहीं हो जाते तो निस्सन्देह उनकी नींव तो उसमें काव्य ही के द्वारा रक्खी जाती है। यदि अफ़लातून अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छानुसार कवियों को निर्वासित करा के कविता का वहिष्कार कराने में सफल हो जाता तो वह निस्सन्देह समाज के साथ अन्याय करता। यही नहीं, वह एक ऐसे समाज की सृष्टि कर देता जो प्रेम से विमुख, स्वार्थ में रत और अनैक्य का पक्षपाती होता और उसका कोई भी कार्य्य तथा प्रयत्न विना स्वार्थ-सिद्धि के केवल मनोभावों के स्वच्छन्दता-पूर्वक प्रकट करने के लिये कदापि न होता। यही कारण है कि संसार में कवियों का सम्मान तथा सत्कार होता है। जिन्होंने उस सुलेमानी मुद्रा के द्वारा, जो विचार शक्ति ने उन्हें प्रदान की है, मानव-हृदय में ऐसे भावों का उद्रेक किया है, जो या तो स्वयं सदाचार हैं अथवा सदाचार की ओर ले जाने वाले हैं, किन्तु इन बातों के अतिरिक्त जो काव्य के समर्थन स्वरूप प्रस्तुत की गई हैं, संभव है, समाज के दबाव अथवा समय के प्रभाव से काव्य पर ऐसी दशा विजय प्राप्त करले कि वे जाति में नैतिक तथा आचारिक सुधार के बदले उसको नष्ट करने के लिये एक बलशाली अस्त्र बन जायँ। बात यह है कि समाज के विचार, उसकी सम्मतियाँ, उसके स्वभाव, उसकी इच्छाएं, उसके भाव और भावुकता ज्योंही परिवर्तित होते हैं त्योंही काव्य की दशा में भी परिवर्तन होता है। और यह परिवर्तन नितान्त गुप्त रीति से होता है; क्योंकि समाज की दशा देखकर कवि स्वेच्छा से अपना रंग नहीं वदलता; प्रत्युत समाज के साथ ही साथ वह स्वयं ही परवर्तित होता जाता है। सफहान निवासी 'शफ़ाई' के सम्बन्ध में जो लिखा गया है कि उसके ज्ञान को कविता ने और कविता को 'निन्दात्मक पद्य-कथन' ने नष्ट किया। इसका कारण उसी सामाजिक दबाव का बन्धन था। अबीद ज़ाकानी ने विद्या और सम्मान से विमुख होकर भटई को ग्रहण किया, यह भी समय का ही प्रभाव था। जिस प्रकार चापलूसी तथा पारितोषिक का प्रलोभन शनैः-शनैः एक न्यायप्रिय और सत्यभक्त न्यायाधीश की मति भ्रष्ट कर देता है, इसी प्रकार राज-सभा द्वारा प्राप्त प्रशंसात्मक शब्द और प्रमाण-पत्र तथा पदकों के प्राप्त करने की अभिलाषा एक स्वतंत्रताप्रिय, प्रकृत कवि को क्रमशः भटई, मिथ्याभाषण, अति प्रशंसा तथा निन्दात्मक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्णनों के कथन और भड़ई की ओर इस प्रकार खींच ले जाते हैं कि वह उन्हीं को कवि-कौशल समझने लग जाता है। स्वेच्छाचारी राजा, जिनका कोई हाथ पकड़ने वाला नहीं होता, और राज्य का सम्पूर्ण कोष जिनका जेब-ख़र्च होता है, उनका अविचार-पूर्ण दान कवियों के लिए विनाशकारी विष है। कवि, जो जाति का शिरोमणि तथा जाति का गौरव होना चाहिये था, तृष्णा का दास बनकर विषय-वासनाओं के वशीभूत हुए द्रव्य-पात्र व्यक्तियों के द्वार पर जाकर अलख जगाने पहुँचता है। प्रारम्भ में ही प्रशंसात्मक वर्णन कवियों को सत्य-भ्रष्ट नहीं कर देते; क्योंकि जात्योन्नति के प्रारम्भिक काल में बहुधा चरित्र-नायक प्रशंसाके पात्रहोते ही हैं। अतः कवि के हृदय-क्षेत्र से स्वतंत्रता का गुण साधारणतया विलीन नहीं होने पाता; किन्तु जब घटनाओंका अन्त हो जाता है और गुण-गान की अनुचित बेगार अनन्त काल के लिये कवि के पाले पड़ जाती है, तो उसकी कविता का आधार केवल जल्पना मात्र रह जाता है। फिर जब उनके भाग्य के सूर्योदय का अधिकार, जिसका विस्तार, व्यक्तित्व भाव से सौ वर्ष से अधिक नहीं होता, समाप्त होने को होता है और नृपतिगण तथा धनिकों में वह सद्गुण, जिनके कारण वह सर्वसाधारण से कृतज्ञता-प्रकाशन, प्रशंसा तथा सम्मान पाने और कवियों की प्रशंसात्मक रचनारत्नों द्वारा पूजित होने के अधिकारी हों, शेष नहीं रह जाते तो उन्हें कवियों की भटई को छोड़कर और कोई वस्तु ऐसी नहीं मिलती जिसको श्रवण कर उनकी आत्म-तृप्ति हो सके। अतएव उन्हें कवियों का अधिक सम्मान करना पड़ता है; इससे अनौचित्य-प्रधान कविता का बल और भी अधिक हो जाता है। फिर बहुत से स्वयंभू कवि जब प्रकृत कवियों को समादृत होते हुए देखते हैं, लालच के वशीभूत हो बलात् कविता करने की चेष्टा करते हैं; किन्तु उनके हृदय में न तो कवियों के से भाव ही विद्यमान होते हैं, न निरीक्षण सम्बन्धी योग्यता ही होती है और न कुछ अपनी निजी पहुँच ही। फलतः वह वास्तविक कवियों का अत्यंत भोंड़ा और भद्दा अनुकरण करते हैं—यहाँ तक कि जिस तरह वृद्धावस्था का चित्र बाल्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्था के चित्र के साथ कुछ भी मेल नहीं खाता, उसी प्रकार कविता का स्वरूप शनैः-शनैः बिलकुल परिवर्तित हो जाता है, और कविता का उद्देश्य इसके अतिरिक्त कि राज-सामीप्य प्राप्त हो और कुछ नहीं रहता।

मिर्ज़ा मुहम्मद ताहर नसरावादी अपने किसी निबन्ध में लिखते हैं—एक दिन रात्रि के समय साहब अब्बाद तालकानी के पुत्र की सभा में नियमानुसार कई विद्वच्चक्र-चूड़ामणि कवि उपस्थित थे। साधारण वार्तालाप में काव्य-सम्बन्धी कुछ बात छिड़ गई। स्वभावतः कोई उसकी प्रशंसा करते थे और कोई निन्दा। जो लोग निन्दा करते थे उन्होंने कहा कि काव्य का सम्बन्ध प्रायः किसी की प्रशंसा और निन्दा से है, और इन दोनों प्रकार के वर्णनों की नींव मिथ्यावाद पर निर्भर है। इसके पश्चात् अबूमुहम्मद ख़ाज़न ने, जो बहुत ही सुयोग्य विद्वान थे, काव्य के समर्थन में कहा कि काव्य में एक सर्वोपरि गुण यह है कि हम असाधारण विद्या और कला से विभूषित होते हुए भी उनमें से किसी से भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। केवल काव्य ही एक ऐसी वस्तु है, जिसके द्वारा राजा तथा मंत्री के सामीप्य का पद प्राप्त हो सकता है। रही यह बात कि काव्य में प्रायः असत्य और अत्युक्ति का समावेश अधिक होता है। हाँ, होता तो है; किन्तु जब यह ताँबा (असत्य) काव्य के सुवर्ण से क़लई किया जाता है तो स्वच्छ कंचन के ही रंग का हो जाता है, और काव्य-सैान्दर्य मिथ्यावाद पर विजय प्राप्त कर लेता है। अंत में इस बात को सबने स्वीकार कर लिया और शास्त्रार्थ यहीं समाप्त हो गया।

इस कहानी से इस बात के अतिरिक्त और क्या सिद्ध होता है कि साहब इब्न अब्बाद के समय में, अर्थात् हिन्दी की चैाथी शताब्दी में, हमारी कविता केवल राजाओं-महाराजाओं के सामीप्य का मार्ग समझी जाती थी, और असत्य तथा अत्युक्ति काव्य के मुख्य अंग समझे जाते थे।

योरप का एक इतिहासकार अर्बी-साहित्य के विषय में लिखता है कि केवल अरब की जाति में इतने कवि हुए हैं कि समस्त संसार की जातियों के कवियों की गणना उनकी समानता नहीं कर सकती। यह स्पष्ट है कि उसने अरब की जाति के कवियों से केवल अर्बी भाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के ही कवियों का अर्थ लिया है । इससे समझा जा सकता है कि यदि अर्बी के साथ, फ़ारसी, तुर्की, पश्तो और उर्दू को भी, जो मुख्यतया मुसलमानों की भाषाएँ हैं, सम्मिलित कर लिया जाय, तो मुसलमान कवियों की गणना कितनी अधिक बढ़ जायगी ! और यदि अरब की क़ौम से साधारणतया मुसलमान कवियों का ही अभिप्राय हो तो भी समस्त संसार की जातियों से उनकी गणना का अधिक होना कुछ कम आश्चर्यजनक नहीं।

इस बाहुल्य के प्रायः दो कारण ज्ञात होते हैं । प्रथम किसी की प्रशंसा करने पर पारितोषिक पाने का प्रचलन, जिसके कारण प्रत्येक मनचले को, चाहे वह कविता का पात्र हो चाहे न हो, कवि बनने की चेष्टा करना; दूसरे प्रत्येक श्रेणी की कविता पर श्रोताओं की ओर से उचितानुचित प्रशंसात्मक वाक्यों और धन्यवाद की बौछारें होने का नियम । और यह पिछला कारण पहले से भी अधिक काव्य के प्रसार करने और कवियों का प्रोत्साहन देने में सहायक था; क्योंकि पारितोषिक पाने का लाभ केवल उन्हीं लोगों को होता था जिन्हें उनकी आवश्यकता थी। किन्तु वाह वा सुनने की इच्छा में तो राजा से लेकर प्रजा तक सभी मस्त थे ! इन दोनों कारणों से मुसलमानी कविता को दो ओर से हानि पहुँची। जब पारितोषिक और पदक पात्र-अपात्र दोनों को समान भाव से प्राप्त होने लगे और प्रशंसात्मक वाक्यों और धन्यवादात्मक शब्दों का बाहुल्य, समय-कुसमय प्रत्येक श्रेणी की कविता पर होने लगा तो जो लोग वास्तविक पारितोषिक अथवा प्रशंसा के अधिकारी थे उनके मन-माणिकों की ज्योति मलिन पड़ गई और 'कविता-सम्बन्धी उच्चतम योग्यताएँ, जो उनके मनों में सुरक्षित थीं, ग्राहकों की अयोग्यता और गुणग्राहकता के अभाव के कारण यथावत् प्रकट न होने पाईं। जो अनधिकारी थे उनके मन बढ़ गये और उन्हें जाति में अपनी दुर्गन्ध फैलाने और काव्य पर कुठाराघात करने का अवसर प्राप्त होगया।

(अपूर्ण)

बाबूराम बित्थरिया
"साहित्यरत्न"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य-कुञ्ज

बिखरा फूल

कल तक जो अनुकूल था, आज न वह प्रतिकूल।
वायु बही, बदला समय, सूखा बिखरा फूल॥
भृङ्ग क्यों न लिपटे रहो, जड़ में खाते धूल।
उस पौधे का मूल है, जिसका बिखरा फूल॥
हलकेपन पर तूल के, हँसा हवा में फूल।
उड़ने को मिलि धूल में, गिर कर बिखरा फूल॥
यौवन-मद में फूल कर, जिसे चुभाये शूल।
उसी भ्रमर की आह से, जल कर बिखरा फूल॥
छोड़ चरण शिर पर चढ़ा, हुआ देव प्रतिकूल।
अन्त उसी के रोष से, झुलसा बिखरा फूल॥
बना गले का हार था, आभूषण सुख भूल।
प्रेम और हित में पगा, छिद कर बिखरा फूल॥
पड़ रमणी के हाथ में, गया गर्व सब भूल।
वास-श्वास को छोड़ता, लज्जित बिखरा फूल॥
लहरों पर चढ़ के चला, तज निज डंठल मूल।
पर न सिंधु से मिल सका, पथ में बिखरा फूल॥
बालक के पाले पड़ा, खेला मल मल धूल।
ग्रास बना मुख का जभी, हँस कर बिखरा फूल॥
पड़ा रमा के हाथ में, हुआ भाग्य अनुकूल।
कमलरूप में नित रमा, कभी न बिखरा फूल॥
भीतर ही भीतर था जिसको, मन का धन उपहार दिया।
अतिशय मान ठान कर उसमें, संशय का संचार किया॥
बनी न बिगड़ी, हृदय फट गया, अब मुँह पर उड़ती है धूल।
देखो अपने ही शूलों से, छिद कर कैसे बिखरा फूल॥

आनन्दिप्रसाद श्रीवास्तव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैतालिक

(राग भैरव)

जागो हो, रैनि बितीत भई ।
खिले कमल अथए उरगन प्राची अनुराग रई ॥ जागौ हो० ॥

(२)

चरनायुध कीकत अँधियारी-सारी समिटि गई ।
ल्याये हरुएं हाँकि अरुन रथ किरन-माल उनई ॥ जागौ हो० ॥

(३)

पुहपनि परसि पराग बिथोरति मारुत मोद मई ।
चहति चितौन चकृत चित ह्वै चहुँ चाव भरी चकई ॥ जागौ हो० ॥

(४)

तरनि तचैन होहिं तौलौं जँह सीतल छाँह छुई ।
बीनन फूल चलहु गोरी किन अब कत बेर ठई ॥ जागौ हो० ॥

मदनलाल चतुर्वेदी

मन के प्रति

रे मन !

करि अति कृपा बतावहु मो कहँ, जो कछु पूछहुँ तुम सन ॥
का यह सहज सुभाव तुम्हारो, और कहा यह बानि ।
जेहि पथ सो हटिबे को चहियतु, जात उतै ही ठानि ॥
राम भजन नीको सब जानत, वा पथ पै जो जैहो ।
तौ सुर दुर्लभ हूँ ऊँचो पद, सहज सुनो मन पैहो ॥
पै ऐसे पथ को तुम तो मन, सपनेहूँ नहिं चाहत ।
उलटे नाचरङ्ग व्यसनन में, जैबे को उमगाहत ॥
भटकैबो प्रानिन को तुमने, निज कारज निरधारो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थिर न रहत एको छन यासो, चंचल नाम तुम्हारो ॥
जो कहुँ भजन करे नर तो तुम, भटकावत अति भारी।
लावत ध्यान बुरे करमन को, आदति कुटिल तुम्हारी॥
यह संसार असार न यामें, कछु सार मन पैहो ।
झूठे यह जंजाल जगत के, इनमें लाभ न लैहो ॥
हाथ जोड़ विनती बस यासों, निश दिन आठो याम ।
सबरे छोड़ि तमासे जगके, भजहु राधिकाश्याम ॥

चतुर्वेदी लक्ष्मीनिधि
[विशारद, हिन्दी-प्रभाकर]

श्रीमंगलाप्रसाद-पारितोषिक

इस पारितोषिक का जन्म कलकत्ते के एकादश हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर बाबू गोकुलचन्द द्वारा प्राप्त ४००००) रुपये के ब्याज से हुआ है। बाबू साहब ने यह पारितोषिक अपने भाई श्रीबाबू मंगलाप्रसादजी की स्मृति में दिया है। इस पारितोषिक की नियमावली त्रयोदशवर्षीय स्थायीसमिति के द्वितीय अधिवेशन के मन्तव्य संख्या ६ के अनुसार निश्चित हुई।

प्रथम पारितोषिक

साहित्य

प्रथम पारितोषिक, जो साहित्य विषय पर था, कानपुर-सम्मेलन में साहित्याचार्य्य पं० पद्मसिंहजी शर्म्मा को दिया गया था। इस पारितोषिक का विशेष विवरण तो सम्मेलन-पत्रिका भाग १० संख्या ८, ९ में प्रकाशित किया जा चुका है। जिन पुस्तकों पर विचार करके इस पारितोषिक का निर्णय किया गया था उनकी एक सारिणी यहाँ पर दी जाती है :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमंगलाप्रसाद-पारितोषिक के लिए विचारार्थ आयी हुई

साहित्य-विषय की पुस्तकें

संख्या	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
१	संसार-संकट	श्री पं. कृष्णकान्त मालवीय	१॥)
२	प्रेमाश्रम	श्री प्रेमचंदजी	३॥)
३	हिन्दी-बहीखाता	श्री कस्तूरमलजी बाँठिया	३)
४	सिद्धार्थ कुमार	श्री चन्द्रराज भण्डारी विशारद	१)
५	भारतदर्शन	श्री सुखसम्पतिराय भंडारी	२॥)
६	विचार-कुसुमाञ्जलि	श्री बदरीदत्तजी जोशी	॥=)
७	अनुप्रास का अन्वेषण	श्री पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी	।)
८	दैशिक शास्त्र	श्री बद्रीसाह टुलघरिया	३)
९	सेवासदन	श्री प्रेमचंदजी	२॥)
१०	महात्मा ईसा (नाटक)	श्री पाण्डेय बेचन शर्मा "उग्र"	॥|=)
११	गल्पाञ्जलि	श्री मोहनलाल नेहरू	२|=)
१२	श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव	श्री मु० देवीप्रसादजी प्रीतम	।-)
१३	वक्तृत्व-कला	श्री कृष्णगोपाल माथुर	१।)
१४	हिन्दी-व्याकरण (संख्या १)	श्री पं० कामताप्रसाद गुरु	॥।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
१५	हिन्दी-व्याकरण (संख्या २)	श्री पं. कामताप्रसाद गुरु	।।।)
१६	पथिक	श्री पं० रामनरेशजी त्रिपाठी	।।)
१७	तुलसीदास (नाटक)	श्रीपं.बदरीनाथजी भट्ट बी० ए०	१।)
१८	वेन-चरित्र	श्री बदरीनाथजी भट्ट बी०ए०	१।)
१९	श्रीधर्म-पुण्य-माला	श्री स्वामी बुद्धचंद्रजी पुरी	≡)
२०	भक्ति-उपदेश-रत्न	श्री स्वा० बुद्धचंद्रजी पुरी	-)
२१	भारत-प्रबोधिनी	श्रीरूपरामजी शर्म्मा विशारद	।।)
२२	भव्य भारत	श्री रूपरामजी शर्मा विशारद	।-)
२३	बैर का बदला (नाटक)	श्री पं० गोपालदामोदरजी तामस्कर	१)
२४	जुझार तेजा	श्री पं० लज्जारामजी मेहता	।)
२५	आदर्श हिन्दू	श्री पं० लज्जारामजी मेहता	३)
२६	आदर्श दम्पति	श्री पं० लज्जारामजी मेहता	।।=)
२७	बिगड़े का सुधार	श्री पं० लज्जारामजी मेहता	।।)
२८	धूर्त रसिकलाल	श्री पं० लज्जारामजी मेहता	।=)
२९	सुशीला विधवा	श्री पं० लज्जारामजी मेहता	।।=)
३०	हिन्दू गृहस्थ	श्री पं० लज्जारामजी मेहता	।।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सं०	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल
३१	अजातशत्रु	श्रीबाबू जयशंकर 'प्रसाद'	१=)
३२	स्वतंत्ररमा और परतंत्र लक्ष्मी	श्री पं० लज्जारामजी मेहता	॥)
३३	प्रेम-योगिनी	श्रीबा.रामेश्वरीप्रसादजी'राम'	॥।)
३४	पीयूष-सागर	श्रीबा०रामेश्वरीप्रसादजी'राम'	=)
३५	आनन्द-भण्डार	श्री बा० रामेश्वरीप्रसादजी 'राम'	।)॥
३६	गुरुगोबिन्दसिंह (नाटक)	श्री अमरनाथ कपूर	॥)
३७	प्रिय-प्रवास	श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय	२)
३८	कबीर-बचनावली	श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय	१)
३९	ठेठ हिन्दी का ठाठ	श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय	॥)
४०	अधखिला फूल	श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय	॥=)
४१	पद्यप्रमोद	श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय	॥।)
४२	कर्तव्य-शिरोमणि-सतसई	श्री टेकचंदजी	हस्तलिखित
४३	महिला-महत्त्व	श्रीबाबू शिवपूजनसहाय	२)
४४	साहित्यालोचन	श्रीबाबू श्यामसुन्दर दासजी बी० ए०	३)
४५	भारत-भारती	श्रीबाबू मैथिलीशरणजी गुप्त	२)
४६	जयद्रथ-बध	श्री बाबू मैथिलीशरणजी गुप्त	॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सं.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
४७	मौर्य-विजय	श्री सियाराम शरणजी गुप्त	।)
४८	भारत-सौभाग्य रूपक	श्री बद्रीनारायणजी चौधरी	॥)
४९	नवरस	श्री गुलाबराय जी एम्० ए०	॥)
५०	छद्म-योगिनी	श्री वियोगीहरि	।)
५१	अनुराग-रत्न	श्री पं० नाथूरामशंकर शर्म्मा	१)
५२	गर्भरण्डा-रहस्य	श्री पं. नाथूरामशंकर शर्म्मा	।।।)
५३	वायस-विजय	श्री पं. नाथूरामशंकर शर्म्मा	=)॥
५४	मनोविनोद	श्री पं. श्रीधरजी पाठक	१)
५५	भारत-गीत	श्री पं. श्रीधरजी पाठक	≡)
५६	काश्मीर-सुखमा	श्री पं. श्रीधरजी पाठक	=)
५७	देव और बिहारी	श्री पं. कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०एल० एल० बी	१॥=)
५८	देवदूत	श्री पं. रामचरितजी उपाध्याय	।=)
५९	देव-सभा	श्री पं. रामचरितजी उपाध्याय	।-)
६०	विहारी-सतसई (प्रथम भाग)	श्री पं. पद्मसिंहजी शर्म्मा	२)
६१	विहारी-सतसई (संजीवन भाष्य)	श्री पं. पद्मसिंहजी शर्म्मा	२॥)
६२	रामचरित-चिन्तामणि	श्री रामचरित उपाध्याय	२)
६३	साहित्य-विहार	श्री वियोगीहरि	।।।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय पारितोषिक

समाजशास्त्र

यह पारितोषिक समाजशास्त्र विषय पर दिया गया था।

नियम २ के अनुसार सं० १९८० वि० में मंगलाप्रसाद-पारितोषिक समिति के सदस्य निम्नलिखित थे—

श्रीयुत बाबू गोकुलचन्दजी, कलकत्ता
,, ,, पुरुषोत्तमदासजी टंडन, प्रयाग
,, प्रो० ब्रजराज ,,
,, पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री ,,
,, पं० रामजीलालजी शर्म्मा, प्रयाग (संयोजक)

नियम ७ के अनुसार इस समिति ने समाज-शास्त्र विषय के पारितोषिक का निर्णय करने के लिए एक निर्णायक-समिति का संगठन किया। इस समिति में सर्व-सम्मति से निम्नलिखित सदस्य निर्वाचित हुए थे—

१—{ श्री लाला लाजपतराय, लाहौर
(इनकी अस्वीकृति पर)
श्री भाई परमानन्द, लाहौर }

२—श्री चिन्तामणिजी-विनायक वैद्य, बम्बई

३—{ श्री काशीप्रसाद जायसवाल, पटना
(इनकी अस्वीकृति पर)
श्रीयुत श्रीप्रकाश, काशी }

४—श्रीयुत नरेन्द्रदेवजी, काशी

५—बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन, प्रयाग

इनमें से श्रीमान् लाला लाजपतरायजी ने जब अस्वस्थता के कारण निर्णायक होना स्वीकार नहीं किया तब उनके स्थानपर भाई परमानन्द जी सर्व-सम्मति से निर्णायक निर्वाचित्त हुए। श्रीयुत काशीप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी जायसवाल ने इस कार्यालय से भेजे हुए कई पत्रों का जब कुछ उत्तर नहीं दिया तब पूर्व निश्चय के अनुसार इनके स्थानपर श्री-प्रकाशजी को निर्णायक चुना गया। परन्तु उन्होंने भी इस कार्य के लिए समयाभाव के कारण असमर्थता प्रकट की। निदान उनके स्थान पर सर्व्व-सम्मति से प्रयाग-निवासी प्रिंसिपल ताराचन्दजी निर्णायक निर्वाचित हुए। निर्णायक-समिति का सम्पूर्ण संगठन हो जाने के अनन्तर उनके पास पारितोषिक निर्णय के लिये पुरातत्त्व, इतिहास, राजनीति तथा अर्थशास्त्र विषय के निम्नलिखित ३२ ग्रन्थ भेजे गये—

श्रीमङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक के लिए विचारार्थ आई हुई समाज-शास्त्र विषय की पुस्तकें

संख्या	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
१	भारत के राजवंश भाग १	श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ	३)
	भारत के राज भाग २	श्री विश्वेश्वर नाथ रेऊ	३)
२	दैशिक शास्त्र	श्री बद्रीसाह टुलघरिया	३)
३	अकबर की राज्य-व्यवस्था	श्री पं० शेषमणिजी त्रिपाठी	१)
४	पंजाब-हरण और दलीपसिंह	श्री पं० नन्दकुमारदेव शर्म्मा	२)
५	सागर-सरोज	श्री हीरालालजी बी० ए०	१।)
६	देशदर्शन	श्री शिवनन्दनसिंह	३)
७	जबलपुर-ज्योति	श्री हीरालालजी बी० ए०	१)
८	दमोह-दीपक	श्री हीरालालजी बी० ए०	॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
९	वीर-केशरी शिवाजी	श्री पं० नन्दकुमारदेव शर्म्मा	४)
१०	राजनीति-विज्ञान	श्री सुखसम्पतिराय भण्डारी	१।=)
११	युरोप का आधुनिक इतिहास	श्री पशुपाल वर्म्मा	३)
१२	भारतवर्ष का इतिहास भाग १	श्री मिश्रबन्धु	१॥)
	भारतवर्ष का इतिहास भाग २	श्री मिश्रबन्धु	२)
१३	अंग्रेज़ जाति का इतिहास	श्री बाबू गङ्गाप्रसादजी	२)
१४	अद्भुत विचार	श्री रामबख़्श दभाड़ी	॥)
१५	राष्ट्रीय आय-व्ययशास्त्र	श्री प्राणनाथ विद्यालङ्कार	३।
१६	राजनीतिशास्त्र	,, ,,	२।=)
१७	संस्कृत-साहित्य का इतिहास	श्री महेशचन्द्रप्रसाद बी० ए०	२)
१८	ऐतिहासिक निबन्ध	श्री कृष्ण मिश्र	
१९	भारतीय सम्पत्तिशास्त्र	श्री प्राणनाथ विद्यालङ्कार	५)
२०	भारतीय प्राचीनलिपिमाला	श्री गौरीशङ्कर-हीराचंद ओझा	२५)
२१	शासन-पद्धति	प्रो० प्राणनाथ विद्यालङ्कार	१)
२२	भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	२)
२३	भारतवर्ष का इतिहास	एक इतिहास-प्रेमी	२॥)
२४	नीति-विज्ञान	श्री गोवर्द्धनलालजी	२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
२६	कौटिल्य अर्थशास्त्र	श्री प्रो० प्राणनाथविद्यालङ्कार	४)
२७	इङ्गलैण्ड का इतिहास	श्री प्राणनाथ विद्यालङ्कार	२)
२८	संस्कृत-विद्या का इतिहास	श्री कपिलदेवजी द्विवेदीएम्.ए.	
२९	भारतीय राजस्व	श्री भगवानदास केला	≡।)
३०	सीकर का इतिहास	श्री पं० झाबरमल्लजी शर्म्मा	१।)
३१	मिश्र-बन्धु-विनोद भाग ३	मिश्रबन्धु	५)
३२	सम्पत्तिशास्त्र	श्री महावीरप्रसादजी द्विवेदी	२)

इन पुस्तकों का अध्ययन और उनपर विचार करने के अनन्तर निर्णायक-समिति के समस्त सदस्यों ने एकमत होकर यह स्वीकार किया कि इस वर्ष (यह १२००) का पुरस्कार प्राचीनलिपिमाला के लेखक रायबहादुर श्री गौरीशंकर हीराचन्दजी ओझा को दिया जाय। निर्णायकों की सम्मतियाँ अविकल रूप में इस प्रकार हैं—

[१] लाहोर रोड, लाहोर
१४ जनवरी, २४

प्रियवर महाशयजी,

मेरी सम्मति में मौलिकता और परिश्रम आदि गुणों की दृष्टि से श्रीगौरीशंकर-हीराचन्द ओझा की पुस्तक सब से अच्छी और पुरस्कार के योग्य है।

परन्तु इस सम्मति के साथ मैं इतना और बढ़ा देना आवश्यक समझता हूँ कि यदि पुरस्कार-दाता का उद्देश्य सर्व्वसाधारण में साहित्य-सेवा की रुचि को बढ़ाना है तो उक्त पंडितजी को वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कार देने से वह उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा ; क्योंकि सरकार की ओर से पुरातत्त्व-विभाग में नौकर होने के कारण जो सुभीते उनको प्राप्त हैं वे किसी और को यत्न करने पर भी प्राप्त नहीं हो सकते; और दूसरे, सरकार की ओर से उनको इसी काम के लिये यथेष्ट पुरस्कार मिलता रहता है। इसकारण उनको पुरस्कार मिलने से जनता में साहित्य-सेवा के लिए कोई उत्साह उत्पन्न नहीं हो सकता।

आपका—

भाई परमानन्द

[२]

कल्याण

ता० २८ नवम्बर, २३

श्रीयुत मंत्री हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय,

अलाहाबाद

मैं इतना ही कह सकता हूँ कि पुस्तकों के विषय देखने से राय-बहादुर गौरीशंकर ओझा की प्राचीनलिपिमाला पुस्तक बहुत परिश्रम के साथ और विद्वत्ता से लिखी गयी है और ख़र्च भी उसको बहुत हुआ है। वह पारितोषिक के लायक है।

आपका—

चिन्तामणि-विनायक वैद्य

[३]

कायस्थ-पाठशाला-इन्टरमीजिएट कालेज आफ़िस

इलाहाबाद

१२ फ़रवरी, सन् १९२४ ई०

मेरी सम्मति में पं० गौरीशंकर-हीराचन्द ओझा की भारतीय प्राचीन लिपिमाला सब पुस्तकों से अधिक पुरस्कार के योग्य है।

ताराचंद

[प्रिंसिपल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[४]

सम्मति

मंगलाप्रसाद-पारितोषिक के लिए जितने ग्रंथ या निबन्ध इस वर्ष विचारार्थ आये हैं उनमें से एक (यूरप का आधुनिक इतिहास) स्वतंत्र ग्रंथ नहीं है। पुस्तक की भूमिका से ही स्पष्ट है कि इस पुस्तक का अनुवाद एक मराठी पुस्तक से हुआ है। यह अवश्य ठीक है कि पुस्तक में एक परिशिष्ट अनुवादक ने अपनी ओर से जोड़ दिया है। पाँच पुस्तकें ऐसी हैं जो समाज-शास्त्र के अन्तर्गत नहीं हैं और इस लिए उनका भी विचार न होना चाहिए था। इनके नाम ये हैं:—मिश्र-बन्धुविनोद, नीति-विज्ञान, संस्कृत-साहित्यका इतिहास, संस्कृत-विद्या का इतिहास और अद्भुत विचार। इनमें से दूसरी और पाँचवी दर्शन से सम्बन्ध रखती है; और बाक़ी ३ साहित्य विषयक हैं। हिन्दी भाषा का इतिहास समाज-शास्त्र का विषय नहीं है। पर मुझे इस बात के निर्णय का कोई अधिकार नहीं है कि किस पुस्तक पर विचार करना चाहिए और किस पर नहीं। विचारार्थ भेजी हुई पुस्तकों पर ही मुझको अपनी सम्मति प्रदान करना है—चाहे उनमें कोई अन्य विषय की ही क्यों न हो। अतः मैंने सब पुस्तकों पर विचार किया है।

ये ग्रन्थ तीन विभागों में विभक्त हो सकते हैं। एक वे हैं जिनकी भाषा और जिनका विषय इतना सामान्य है कि हम बेखटके उनके बारे में कह सकते हैं कि वे पारितोषिक पाने की योग्यता कदापि नहीं रखते। यथा—अद्भुत विचार, ऐतिहासिक निबन्ध। ऐसे ग्रन्थ सब से नीची श्रेणी के हैं। दूसरे प्रकार के ग्रन्थ वे हैं जो कई ग्रन्थों के सहारे लिखे गये हैं; पर उनकी रचना मौलिक नहीं कही जा सकती। इनमें से कुछ ऐसे भी हैं जिनके लेखकों ने कुछ स्वतंत्र विचार करने की भी चेष्टा की है; पर ग्रन्थ का विषय महत्त्व का न होने के कारण उनकी रचना उत्कृष्ट नहीं ठहराई जा सकती। मिश्र-बन्धु-विनोद बड़े परिश्रम के साथ लिखा गया है। भाषा का इतिहास एक विशेष महत्त्व का विषय है। पर ग्रन्थ-कर्ता अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य में बहुत कम सफल हुए हैं। प्राचीन कवियों का संकीर्तन चाहे अच्छा ही हो, पर भाषा का वास्तव में जैसा इतिहास होना चाहिए, यह वैसा नहीं है। ग्रन्थकारों ने इस बात को, भूमिका में, एक प्रकार से, स्वीकार भी किया है।

मेरी सम्मति में सब बातों पर ध्यान रखते हुए पं० गौरीशंकर हीराचन्दजी ओझा का "प्राचीनलिपिमाला" ही सर्वोत्तम प्रतीत होता है। पंडितजी हिन्दी के एक अच्छे लेखक हैं और ऐतिहासिक शोध का कार्य आप बरसों से कर रहे हैं। पुस्तक की भाषा अत्युत्तम है। अपने विषय की हिन्दी में एक ही पुस्तक है। विषय साधारण नहीं है और पुरातत्त्व का एक उपयोगी अंग है। उपलब्ध सामग्री का पूरा-पूरा उपयोग किया गया है। कई वर्ष के निरन्तर परिश्रमका यह फल है। पुस्तक का पहला संस्करण ३० वर्ष से अधिक हुए निकला था। दूसरे संस्करण का कलेवर बहुत बढ़ गया है। इससे यह स्पष्ट है कि पंडितजी के अनेक वर्षों के मनन का यह फल है। सब विद्वानों का मत दिया गया है और पंडितजी ने उनका खंडन करने तथा अपना मत प्रतिपादन करने की चेष्टा की है। पुराने संवतों के सम्बन्ध में एक परिशिष्ट भी ग्रन्थ के अन्त में दिया गया है। यह एक मौलिक रचना है। मेरी सम्मति में इस वर्ष का पारितोषिक ओझा जी को दिया जावे।

काशी-विद्यापीठ
३० माघ, १९८० } नरेन्द्रदेव

[५]

प्रयाग
माघ शु० १०, १९८०

मङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक-समिति के संयोजक महाशय की सेवा में—

मुझे दो पुस्तकें विशेष रीति से मौलिक जान पड़ीं—(१) भारतीय प्राचीनलिपिमाला और (२) भारत के प्राचीन राज्यवंश। इन दोनों में भी आपेक्षिक दृष्टि से मैं भारतीयलिपिमाला को पारितोषिक के योग्य समझता हूँ।

पुरुषोत्तमदास टण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हीं सम्मतियों के आधार पर मङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक समिति ने अपनी माघ शुक्ल १३। ८० की बैठक में सर्व्व-सम्मति से निश्चित किया था कि उक्त पुरस्कार श्रीओझाजी को दिल्ली-सम्मेलन में प्रदान किया जाय।

तीसरा-पारितोषिक

दर्शन

यह पारितोषिक दर्शन विषय पर दिया गया था। नियम २ के अनुसार सं० १९८१ वि० में मङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक-समिति के सदस्य निम्नलिखित थे—

श्रीयुत बाबू गोकुलचन्दजी, कलकत्ता
" " पुरुषोत्तमदास जी टंडन, प्रयाग
" " गंगाप्रसाद उपाध्याय, प्रयाग ❀
" " श्यामसुन्दरदासजी, काशी
" " रामजीलाल शर्मा, प्रयाग

नियम ७ के अनुसार इस विषय के पारितोषिक का निर्णय करने के लिये एक निर्णायक-समिति का सङ्गठन किया गया। इस निर्णायक समिति में निम्नलिखित महानुभाव निर्वाचित हुए थेः—

(१) महामहोपाध्याय चतुर्वेदी पं गिरिधर शर्मा, जयपुर
(२) महामहोपाध्याय डॉ० गंगानाथ झा एम्० ए०, डी० लिट०, प्रयाग
(३) बाबू भगवानदास एम्० ए०, काशी
(४) साहित्याचार्य्य पांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, पटना
(५) साहित्याचार्य्य पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री, पटना

इस पारितोषिक का अन्तिम निर्णय द्वितीय वर्ष संवत् १९८२ वि० में हुआ है।

❀ संवत् १९८२ वि० में बाहर चले जाने के कारण इनके स्थान पर १५ वीं स्था० स० छठ अधिवेशन के मन्तव्य-संख्या ११ के अनुसार चतुर्वेदी पं० द्वारकाप्रसाद जी शर्म्मा सदस्य निर्वाचित हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक की दर्शन विषयक पुस्तकें

संवत् १९८१

संख्या	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
१	विधवोद्वाह मीमांसा	श्री पं० बद्रीदत्तजी जोशी	१।)
२	दर्शन-परिचय	श्री पं० रामगोविन्द त्रिवेदी	२)
३	कैवल्य शास्त्र	श्री ज्वालाप्रसाद सिंहल एम० ए०	
४	वैज्ञानिक अद्वैतवाद	श्री बाबू रामदास गौड़ एम० ए०	।।।=
५	शरीर से अमर होनेका उपाय	श्री पं० शिवकुमार शास्त्री	
६	शान्तिदायी विचार	श्री पं० शिवकुमार शास्त्री	।।=)
७	यथार्थ दर्शन	श्री पं० विद्याधरजी शास्त्री	।।)
८	गीता-विमर्श	श्री पं० नरदेव शास्त्री	१।।)
९	दर्शन-सार-संग्रह	श्री सदानन्द अवस्थी	।।)
१०	कर्तव्य-शास्त्र	श्री गुलाबराय एम० ए०	१)
११	समय-दर्शन	श्री ठा०कल्यानसिंह बी० ए०	१=)
१२	वृक्ष में जीव है	श्री मङ्गलानन्दपुरी	१।।।)
१३	नीति-विज्ञान	श्री गोबर्द्धनलालजी एम० ए० बी० एल०	२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवत् १९८२ वि०

संख्या	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
१	पुनर्जन्म	श्री नन्द किशोर विद्यालङ्कार	१।)
२	मनोविज्ञान	श्री प्रो० सुधाकर एम्० ए०	२)
३	धनसत्ता का नाश और विश्व-शान्ति	श्री मोहनसिंह	विश्व-प्रेम
४	सच्चा स्वराज्य	श्री मोहनसिंह	विश्व-प्रेम
५	आत्मदर्शन	श्री नारायण स्वामी	१॥)

इन पुस्तकों को निर्णायकों की सेवा में भेजकर उनसे प्रार्थना की गई कि गतवर्ष दर्शन विषय के पारितोषिक का निर्णय नहीं हो सका था। इसवर्ष आपकी सेवा में बिचारार्थ पुस्तकें और भेजी जाती हैं। कृपया इन पुस्तकों को भी गत-वर्ष की पुस्तकों में सम्मिलित कर लें और पुनः निर्णय करें कि इनमें सर्वोत्तम कौन है। इसपर निर्णायकों ने इस विषय में जो सम्मतियाँ स्थिर की वे ज्यों की त्यों यहाँ पर दी जाती हैं:—

[१—२]

पटना

आ० कृ० ५—१९८२

संपादक, मङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक-समिति

हम लोगों ने इस वर्ष तथा गत वर्ष पुस्तकें देखीं। उनमें से मनोविज्ञान प्रो० सुधाकर कृत इस पारितोषिक के योग्य जान पड़ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इसका संग्रह अच्छा हुआ है और प्रकाशन का रूप भी श्लाघ्य है।

रामावतार शर्म्मा
चन्द्रशेखर

[३]

सेवाश्रम-सिगरा
बनारसछावनी सौर २०।६।८२
ता० ६।१०।१९८६

श्री संयोजक महाशय,
श्री मंगलाप्रसाद-पारितोषिक-समिति
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

नमस्कार,

श्रीमंगलाप्रसाद-पारितोषिक के हेतु से जो पुस्तकें परीक्षार्थ मेरे पास आपने भेजीं; उनमें, जहाँतक मैं देख और विचार सका, कोई पुस्तक ऐसी उत्तम कोटि की नहीं देख पड़ी जिसके लिए मुक्त कंठ से कह दिया जाय कि यही पारितोषिक के योग्य है। पर द्वितीय कोटि की पुस्तकें अच्छी हैं। इनमें कौन सर्वोत्तम है, यह निर्णय करना सहज नहीं है। किसी में कोई गुण है, किसी में दूसरा। तथापि निर्णय हो सकता है।

मैंने कई निकषों से परीक्षा की—(१) विविध नवीन ज्ञान का संग्रह, विविध पाश्चात्य पौरस्त्य पुस्तकावलोकन का परिश्रम, बहुश्रुतता (२) मौलिकता, (३) सरसता और सुपाठ्यता, (४) वर्तमान समाज की दशा को देखते हुए इसकी दार्शनिक और धर्म-सम्बन्धिनी बुद्धि के विकास के, गम्भीर विचार के प्रोत्साहन के तथा सद्भाव के उद्बोधन के लिये उपयोगिता (५) दार्शनिक विचारों के द्वारा समाज के जीवन पर प्रभाव डालने की और उसमें सदाचार का प्रचार और उत्कर्ष करने की उत्कट इच्छा, अर्थात् लेखक की "दिल-सोज़ी" (earnestness) हृत्पीड़ा, श्रद्धा, ग्रन्थ के विषय में और तद्द्वारा समाजोन्नति में निष्ठा, (६) लेख और ग्रन्थ की जानकारी (Livingness, 'vital' interest, emotional depth, as disting

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

usihed from the "dry bones" of old doctrines and arguments, intellectual skill the display without application to tne life around us) **सचेतनता, सजीवता, सप्राणता, हार्दिकता (केवल राजस बुद्धि की स्पूर्ति ही नहीं किन्तु सात्विक बुद्धि का भावोद्गार भी।)**

इन सब बातों की दृष्टि से मेरी समझ में श्री गोवर्द्धनलाल का "नीति विज्ञान" अथवा आचार-शास्त्र नामक ग्रन्थ सब में अधिक पारितोषिक योग्य है। उक्त गुण इस ग्रन्थ में औरों से अधिक पाये जाते हैं। जैसे और ग्रन्थों में भिन्न-भिन्न प्रकार के दोष हैं, वैसे इसमें दोष भी कई प्रकार के अवश्य ही हैं। कहीं-कहीं आक्षेप और निन्दा की अतिमात्रा विवेक से अधिक करदी है। पर इसका कारण यही जान पड़ता है कि प्राचीन उत्तम भावों का भी हमारे समाज में जो अत्यन्त अर्थ-भ्रंश और दुरुपयोग किया गया है उससे ग्रन्थकर्ता के हृदय को बहुत ग्लानि हो गई है। धर्म का, नीति का, तात्विक, विशेषक, व्यावर्त्तक लक्षण भी स्वमत-परमत समीक्षा-पूर्वक, दृढ़ तर्क और यथोचित प्रतिपादन और विवरण के साथ नहीं किया गया है। अन्तिम अध्यायों में सदाचार-धर्म, प्रेम-धर्म, मनुष्य-सेवा-धर्म का प्रतिपादन किया है और कुछ चर्चा अनेक में व्यापक एक वस्तु आत्मा की भी की है; पर "अज्ञेय" के शब्द से की है। और सदाचारादि धर्म में और इस व्यापक अज्ञेय वस्तु में क्या सम्बन्ध है, यह कहते नहीं बना। इससे भारी त्रुटि रह गयी है। मानव-प्रेम और लोक-सेवा और सदाचार की इमारत तो किसी-किसी प्रकार से खड़ी कर दी, पर बिना नीव की। पर यह दोष थोड़े ही से और पृष्ठों में सुविचार पूर्वक यदि लिये जायँ और अत्युक्तियों का संशोधन कर दिया जाय तो दूर हो सकते हैं और आशा है कि ग्रन्थके द्वितीय संस्करण में ग्रंथकर्ता इस कमी को पूरा कर सकेंगे। इससे ग्रंथ के उपर्युक्त गुणों पर चमक आजायगी और ग्रन्थ उत्तम कोटि में चला जायगा।

इस ग्रन्थ के बाद और ग्रन्थ जो अच्छे जान पड़े उनके भी नाम योग्यता के रूप से नीचे लिख देता हूँ:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मदर्शन—श्री नारायणस्वामी कृत। इसमें विविध मतों का संग्रह अच्छा है, पर प्रत्येक का विवरण अत्यल्प है।

कर्त्तव्यशास्त्र—श्री गुलाबराय रचित। पाश्चात्य "एथिक्स" Ethics के विषय पर उसी शैली से लिखा गया है। प्राचीन भारतीय विचारों का भी उल्लेख स्थान-स्थान पर किया है।

दर्शन-परिचय—श्री रामगोविन्द त्रिवेदी कृत। भूमिका अच्छी है। छोटी है। दिग्दर्शन मात्र है। सांख्य और योग का ही कुछ विवरण किया है।

वैज्ञानिक अद्वैतवाद—श्रीरामदास कृत। स्वतंत्र निबन्ध है। कई नये-पुराने विचारों का संग्रह नये रूप में है।

यदि नियमों में इसका अवसर हो तो मेरा प्रस्ताव है कि नीति-विज्ञान के रचयिता श्री गोवर्द्धनलालजी को ८००) दिया जाय और उक्त अन्य ग्रन्थकर्ताओं को आदर-सूचनार्थ १००-१००)। पर यदि इसका सम्भव न हो और एक ही को देना नियमादिष्ट हो तो पुरस्कार १२००) नीति-विज्ञान के रचयिता श्री गोवर्द्धनलाल को दिया जाय। जैसा मैंने ऊपर सूचित किया, इस दृष्टि से देखने से कि किस पुस्तक के प्रचार से वर्तमान हिन्दी-पाठक समाज को विविध मानव जातियों के नैतिक, धार्मिक, मज़हबी आचार-विचारों का अधिकतर ज्ञान होगा और हिन्दू-समाज की बुद्धि अधिकतर आध्यात्मिक विचार और धार्मिक सुधार और सदाचार की ओर झुकेगी और स्वतंत्र स्वाधीन बनने के लिए प्रोत्साहित व श्रद्धालु होगी, इस दृष्टि से देखने से यह "नीति-विज्ञान" की पुस्तक अधिक उपयोगी जान पड़ती है।

शुभचिन्तक
भगवानदास

[४]

मिथिला, जार्ज टाउन
इलाहाबाद
२५। १०। २५

मैं "कैवल्यशास्त्र" ही को उत्कृष्ट समझता हूँ। "मनो-विज्ञान" में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल अर्वाचीन Psychology का सङ्कलन है। प्राचीन ग्रन्थों में "मनोविज्ञान" के विषय में बहुत कुछ है। उसका उल्लेख नहीं है। यह बड़ी त्रुटि है। "कैवल्यशास्त्र" में यह त्रुटि नहीं है। प्राचीन तथा अर्वाचीन दोनों विचारों के आधार पर यह ग्रंथ लिखा गया है। इन कारणों से मेरी दृष्टि में "कैवल्यशास्त्र" (ज्वालाप्रसाद सिंहल कृत) का स्थान प्रथम है और "वैज्ञानिक अद्वैतवाद" (रामदास गौड़) का द्वितीय।

गंगानाथ झा

[५]

(१) धनसत्ता का नाश और विश्व-शान्ति—इसका आकार ढङ्ग दोनों देखकर कहा जा सकता है कि यह पुस्तक कहलाने की हैसियत ही नहीं रखती। यह एक ट्रैक्ट है, जो सम्प्रदाय-विशेष के विचारों के प्रचार के लिए लिखा गया है। न इसके विचार उपयोग में आने सम्भव हैं और न दार्शनिक हैं। इसलिये किसी भी दृष्टि से यह पुस्तक यहाँ विचार-कोटि में नहीं आ सकती।

(२) पुनर्जन्म—इसमें विचारों का सङ्कलन अच्छा है। प्रमाण और युक्तियों का संग्रह भी किसी क़दर ठीक है। किन्तु न इसमें कोई नवीनता है और न वैसी विचार-प्रौढ़ि। यह एक संग्रह जैसा है। इससे विचार-मौलिकता व विषय महत्त्व के कारण इसे विचारणीय कोटि में नहीं ले सकते। साम्प्रदायिक पक्षपात भी इसमें प्रतीत हुआ है।

(३) आत्मदर्शन—यह पुस्तक महत्त्व की है। पाश्चात्य मतों का इसमें उपादेय संग्रह है। उनकी विवेचना भी ख़ूब है। प्रतिपादन शैली भी परिष्कृत है; किन्तु आत्म-सम्बन्ध में भारतीय दर्शनों के मत जो दिखाये हैं; वे न के बराबर हैं। बहुत ही संक्षिप्त हैं और जो हैं वे भी विशुद्ध नहीं हैं। आत्म-दर्शन पर पुस्तक लिखी जाय और उसमें भारतीय दर्शन, जो आत्म-निरूपण के समुद्र हैं, उनकी इतनी उपेक्षा की जाय, इस त्रुटि ने पुस्तक के महत्त्व को बहुत कुछ घटा दिया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका ठीक प्रतिपादन न होना तो इसे बहुत गिरा देता है। इस कारण यह भी पारितोषिक सम्बन्ध में विचारणीय न रही।

(४) मनोविज्ञान—यह पुस्तक और भी महत्त्व की है। एक नवीन सिद्धान्त का ऐसी सुन्दर रीति से प्रतिपादन हुआ है कि उस विषय का बहुत अच्छा अनुभव इससे हो जाता है। विषय-विभाग की शैली श्लाघनीय है। प्रतिपादन-शैली भी बहुत योग्य है। यह पुस्तक पठन-पाठन के काम में आसकती है और हिन्दी-संसार में एक नये विज्ञान के प्रचार करने का श्रेय प्राप्त कर सकती है। इसका प्रतिपाद्य विज्ञान भी आजकल एक ख़ासी दिलचस्पी की चीज़ है। इसलिये उपयोगिता की दृष्टि से यह पुस्तक सब से महत्त्व की है। यह अवश्य विचारणीय है। किन्तु गत वर्ष में जिसके सम्बन्धमें मैंने सम्मति दी थी उस "वैज्ञानिक अद्वैतवाद" के साथ यदि इसकी तुलना की जाय तो निम्नलिखित परिणाम सिद्ध होता है:—

(१) उपयोगिता में "वैज्ञानिक अद्वैतवाद" से मनोविज्ञान बढ़ा हुआ है; क्योंकि इससे अधिक लोग लाभ उठा सकते हैं और यह पठन पाठन में भी चल सकता है।

(२) आकार भी मनोविज्ञान का कुछ बड़ा है।

इसके विरुद्ध "वैज्ञानिक अद्वैतवाद" में इतनी विशेषताएँ प्रतीत होती हैं—

(१) विषय उसका बहुत महत्त्व का है।

(२) विचार-मौलिकता इसी में अधिक है। "मनोविज्ञान" संग्रह-मात्र ही है। किन्तु "वैज्ञानिक अद्वैतवाद" ने विचार का यह नया रास्ता दिखाया।

(३) भाषा शैली से भी यह उत्कृष्ट है। मनोविज्ञान की भाषा बहुत त्रुटि-पूर्ण है और जटिल भी है। इन सब बातों के देखते मैं अपनी पूर्वसम्मति पर ही फिर भी स्थिर रहता हूँ। अर्थात् "वैज्ञानिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्वैतवाद" को ही पारितोषिक के योग्य समझता हूँ। किन्तु यदि मेरे मित्र—अन्य निर्णायक—उपयोगिता पर ही विशेष रूप में अवलम्बित होकर "मनोविज्ञान" को पारितोषिक के लिये चुनें तो मैं उनसे सहमत हो सकूँगा।

गिरिधर शर्म्मा चतुर्वेदी

इन्हीं सम्मतियों के आधार पर, श्रीमंगलाप्रसाद-पारितोषिक-निर्णायकों की बहुसम्मति से, दर्शनविषय का श्रीमंगलाप्रसाद-पारितोषिक "मनोविज्ञान" नामक ग्रंथ के लेखक को देना स्वीकृत हुआ।

रामजीलाल शर्म्मा
संयोजक श्रीमङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक-समिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-समाचार

सम्मेलन के उपदेशकजी का भ्रमण वृत्तान्त

द्वितीय चैत्र सं० १९८३

बनारस—पाठशाला तथा स्कूलों में जाकर विद्यार्थियों को परीक्षा के लिये उत्साहित किया।

बलिया—हिन्दी-प्रचार किया। यहाँ के प्रतिष्ठित रईस बाबू महादेवप्रसाद रईस, आनेररी असिस्टेन्ट कलेक्टर सम्मेलन के सदस्य बने। डि० बोर्ड से हिन्दी-विद्यापीठ के कृषिविभाग के लिये छात्रवृत्ति देने का उद्योग किया, और फल-स्वरूप बोर्ड ने एक छात्र को १५) मासिक छात्रवृत्ति देना स्वीकार कर लिया।

बैरिया—यहाँ के मास्टर-लोगों का उत्साह प्रसंशनीय है। ८ हितैषी बने और ४ विद्यार्थी हिन्दी-विद्यापीठके लिये शिक्षार्थ उद्यत हुये। पं० दूधनाथजी तथा श्रीहरिकृष्णरायजी का उद्योग सराहनीय है।

छपरा—श्री बाबू भगवतीप्रसादजी रईस एक बड़े होनहार नवयुवक हैं। आपको हिन्दी से बड़ा प्रेम है। आपने हिन्दी-विद्यापीठके एक छात्र के लिये ५) मासिक छात्रवृत्ति देनी स्वीकार की। यहाँ भी परीक्षार्थियों को उत्साहित किया।

गोरखपुर—यहाँ नागरी-प्रचारिणी सभामें ठहरा। यह सभा बड़ा सुन्दर कार्य कर रही है। इसका श्रेय यहाँ के रईसों को है; क्योंकि उन्हीं के उद्योग से यह संस्था चल रही है। पुस्तकें २२४४ हैं। सब समाचार पत्र आते हैं। पं० रामलखन पांडेय पुस्तकाध्यक्ष बड़े उत्साह से काम करते हैं। यहाँ के अध्यक्ष भी बड़े उद्योगशील हैं। यहाँ हिन्दीप्रचार किया और प्रायः सभी प्रतिष्ठित लोगों से मिला। यहाँ के रईसों ने हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का कार्य देखकर बड़ा सन्तोष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकट किया और श्रीबाबू बालमुकुन्दजी रईस, आनरेरी मजिष्ट्रेट, श्रीबाबू पुरुषोत्तमदासजी रईस, पण्डित हरिशंकरजी तिवारी सम्मेलन के सदस्य बने। डिस्ट्रिक्टबोर्ड से छात्र-वृति दिलाने का भी प्रबन्ध किया। उद्योग हो रहा है।

वस्ती—प्लेग होनेके कारण यहाँ कार्य्य न हो सका। यहाँ कुछ सज्जन सम्मेलन के सदस्य बने थे। कुछ धन दिया भी था। शेष देना चाहिये।

बारावंकी—यहाँ श्री ठाकुर सूर्य्यबख़्शसिंहजी, ठाकुर रघुनाथ-सिंहजी वकील रईस तथा पण्डित श्रीरामजी तिवारी बड़े हिन्दी-प्रेमी हैं। यहां भी डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड से विद्यार्थी छात्र-वृत्ति युक्त मिलें, इसका विशेष उद्योग किया। आशा है, आप लोगों के उद्योग से यह कार्य सफल होगा।

सीतापुर—यहाँ हिन्दी-प्रचार किया। श्रीगोपालनरायणजी बी० ए० सेक्रेटरी म्यूनिसपिल-बोर्ड सम्मेलनके सदस्य बने। हिन्दी-विद्यापीठके लिए डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड से छात्र-वृत्ति दिलाने का उद्योग किया। आशा है, उद्योग सफल होगा। पं० ठाकुरप्रसादजी तथा श्रीयुत् पण्डित द्वारकाप्रसादजी त्रिवेदी बी० ए० वकील रईस का हिन्दी-प्रेम अनन्य है। सम्मेलन-परीक्षार्थियों की वृद्धि के लिये विशेष यत्न किया।

लखीमपुर—यहाँ प्लेग था, तथापि कुछ डि० बोर्ड के सदस्यों से मिला। और यत्न करने पर फल होगा।

वैशाख सं० १९८३

बैशाख कृष्ण १ को कार्य्यालय का तार पाकर प्रधानमंत्रीजी से मिलने लखनऊ गया और उनसे परामर्श कर बैशाख मास भर पंजाब में प्रचार करने की बात निश्चित कर तदनुसार लाहौर गया और श्रीयुत् जयचन्द्रजी से मिला। उनके प्रोग्राम के अनुसार एक मास भ्रमण किया।

लाहौर, कसूर, फीरोज़पुर, फ़ाज़लका, अबोहर, गीदड़वा, जैतू, कोट कपूरा, अमृतसर तथा भटिंडा आदि स्थानों में भ्रमण किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रायःसर्वत्र ही वकील, मास्टर, रईस, विद्यार्थी, वैद्य, पण्डित तथा व्यापारी आदि श्रेणी के मनुष्यों से मिला और हिन्दी की ओर उनको उत्साहित होने की प्रेरणा की और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का कार्य बताया। बड़े-बड़े स्थानों में व्याख्यान भी दे दिये।

फ़ीरोज़पुर में नागरी-प्रचारिणी सभा का नया निर्वाचन कराया। निम्न सज्जन हिन्दी के पक्ष में विशेष हितू बने। रायबहादुर लाला कोटूराम, २. रायबहादुर लाला बरकतराम जी बी० ए०, ३. लाला हाजीराम बी. ए० रईस, ४. लाला मुकुन्दलाल बी०ए० वकील आदि ३४ सज्जन।

और भी जहाँ-जहाँ गया, हिन्दी की जाग्रति हुई। पंजाब प्रान्तीय सम्मेलन के लिये ६८ प्रतिनिधि बनाये, जो सब प्रतिष्ठित विद्वान् और रईस हैं।

फाज़लका—यहाँ एक व्याख्यान हुआ। साधुआश्रम का पुस्तकालय और वाचनालय हिन्दी-प्रचार का बड़ा अच्छा कार्य कर रहा है।

अबोहर—यहाँ ४ व्याख्यान दिये। जिस समय स्वामी सत्यदेवजी ने यहाँ के साहित्य-सदन की आधार-शिला रक्खी थी, उस समय उन्होंने अपने व्याख्यानों में हिन्दू-संगठन का वर्णन करते हुए, अछूतों के साथ खान-पान सम्बन्ध का विधान बताया, जिससे यहाँ के लोगों को साहित्य-सदन के प्रति कुछ सन्देह होगया और कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति इसके विरोधी होगये। उनके विशेष नाम ये हैः—श्री लाला हीरालालजी रईस, लाला बंशीधरजी रईस, लाला किशनलालजी बी० ए० वकील। इन सबके पास गया और इन्हें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का स्वरूप, नियम, संगठन सब ख़ूब समझाया और इनकी शंकाओं का समाधान किया, जिससे यहाँ विरोध-भाव शान्त हुआ। इसी सम्बन्ध में ४ व्याख्यान ५००-६०० की उपस्थिति में दिये। अब यह भाव सर्वथा नष्ट होगया है। सबको ठीक स्थिति ज्ञात होगई कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन क्या है। यहाँ से २८ प्रतिनिधि बने। उनमें विरोधी-पक्ष के लोग सब से प्रथम थे।

यहाँ का भवन बनकर करीब-क़रीब तैयार है। इसकी लागत इस भाँति है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८००) ज़मीन
९६२≡) गार्डर ७ हाथ के फु० २६ × ६ × १२
छोटे ३४ – कुल ४१
५००) लकड़ी — हाल १ है। आकार २४ × ४०
२००) फुटकर लोहा — कमरे ४ हैं। आकार २४ × १२
३३००) ईंट २,००,००० — बरामदा ७२ × ८½
द० पू० प० उ०
६००) पत्थर — चार दीवारी १४२ × १६२ × १६२ × १२२
३५) सीमेन्ट — हाल के आगे गोल मैदान व्याख्यान के लिये है
१००) अलमारी ८
४००) पुस्तकें
२१००) मज़दूरी

९५००) — इतना काम बन चुका है।

अधिकारी इस वर्ष इस प्रकार हैं— उत्साही सदस्य
प्रधान लालाजवाहरलालजी रईस, — लाला हनुमानप्रसादजी रईस
मंत्री लाला शिवपतरायजी ,, — लाला हंसराज कसेरा
कोषाध्यक्ष लाला सूर्य्यमलजी बजाज — लाला रामचन्द शारड़ा
उपमन्त्री लाला चान्दीलाल जी

यह सब उद्योग स्वामी केशवानन्दजी का है। आप बड़े हिन्दी-प्रेमी हैं। आप अपना सब समय हिन्दी-प्रचार में ही लगाते हैं। आपकी इच्छा सम्मेलन के स्थायीसदस्य बनने की है। आपका फ़ार्म साथ है। मेरी सम्मति में उन्हें स्थायीसदस्य बना लिया जाय।

इस भाँति अबोहर में कार्य्य करके गीदड़वा आया। वहाँ प्लेग है, अतः विशेष कार्य न हो सका। मलोर की भी यही दशा रही। पुनः फ़ीरोज़पुर आया और वहाँ के लोगोंने समाज-मन्दिर में विशेष व्याख्यान कराया। २५।५।२६ को व्याख्यान देकर २६ को लाहौर आया तो ज्ञात हुआ कि अब सम्मेलन अक्टूबरमें होगा। अतः अमृतसर होकर देहरादून आया। ज्येष्ठकृ० १ को प्रधानमंत्रीजी से मिला और वहाँ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वालापुर, हरिद्वार, पीलीभीत, लखीमपुर में प्रचार करता हुआ ज्येष्ठ कृ० १० को कार्यालय में आया।

प्रभुदयाल शर्म्मा
उपदेशक

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग
के
संवत् १९८२ वि० के परीक्षा-फल का शेषांश

प्रथमा

क्रम-संख्या	उत्तीर्ण श्रेणी	परीक्षार्थी का नाम	पिता का नाम	केन्द्र
७३१	प्रथम	श्रीविष्णुस्वरूप	लालाभोलानाथजी गुप्त	हाथरस
		मध्यमा		
१५९	द्वितीय	श्री अयोध्याप्रसाद त्रिपाठी	पं० रामदीन त्रिपाठी	जबलपुर
११७	अन्य उत्तीर्ण	श्री जयदेव सिंहजी शर्मा	श्रीअयोध्यासिंह	काशी
२७७	अन्य उत्तीर्ण	श्री पं० रामचन्द्रजी शास्त्री	श्री श्रीनिवास शास्त्री	मद्रास
		आरायज़नवीसी		
७	द्वितीय	श्री किशनलाल	श्रीटेकचंद	करौली

—परीक्षा-मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय

जयपुर शिक्षा-विभाग की उदारता] जयपुर में "कवि-मण्डल" नाम की एक संस्था है। इसी मण्डली की देख-रेख में वहाँ "साहित्यपाठशाला" नाम की एक रात्रि-पाठशाला भी बहुत दिनों से जारी है। इस पाठशाला में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के लिए, इसके पाठ्यक्रम के अनुसार, पढ़ाई का काम होता है। यहाँ से प्रति वर्ष कितने ही परीक्षार्थी सम्मेलन की परीक्षाओं में बैठते और उत्तीर्ण होते हैं। परन्तु अभी तक इस पाठशाला की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। जयपुर के हिन्दी-विद्वान् इस बात के उद्योग में लग रहे थे कि किसी प्रकार जयपुर राज्य से इस पाठशाला को आर्थिक साहाय्य प्राप्त होने लगे, जिससे इसका काम और भी अधिक उन्नत हो। हिन्दी-संसार को यह सुनकर आनन्द होगा कि जयपुर-निवासी हिन्दी-प्रेमियों का यह उद्योग सफल होगया। जयपुर-राज्य की कौंसिल ने उक्त पाठशाला को ४०) मासिक की सहायता प्रदान करने की स्वीकृति दे दी। उक्त कौंसिलने यह भी वचन दिया है कि यदि इस पाठशाला का परीक्षा-फल उत्तम रहा तो प्रति वर्ष इस पाठशाला की सहायता में वृद्धि होती रहेगी। हम इस सहायता प्रदान करने के लिए जयपुर-राज्य को धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि उक्त पाठशाला के संचालक महोदय ऐसा प्रयत्न करेंगे, जिससे पाठशाला के कार्य की उत्तरोत्तर वृद्धि हो और राज्य से और भी अधिक सहायता मिलने लगे।

यदि इसी प्रकार यहाँ के अन्य राज्यों में भी सम्मेलन की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम के अनुसार पाठशालाएँ खुल जायँ और राज्य की ओर से उनको भी अधिक सहायता मिलने लगे तो बड़ी आसानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से हिन्दी-साहित्य का प्रचार बढ़ जाय। देशी राज्यों में निवास करने वाले हिन्दी-प्रेमियों को इस प्रकार का उद्योग आरम्भ कर देना चाहिए।

सम्मेलन-परीक्षाएँ] "आदर्श-हिन्द" ने फ़र्वरी और मार्च के अङ्कों में सम्मेलन-परीक्षाओं पर विचार करते हुए कुछ नवीन बातें जनता के सम्मुख रक्खी हैं। फ़र्वरी के अङ्क में तो उसने परीक्षा-मंत्रीजी के उत्तमा परीक्षा में निबन्ध का प्रतिबन्ध उठा देने के प्रस्ताव का समर्थन किया है; परन्तु मार्च के अङ्क में उसने अपने विचार स्वतंत्र रूप से प्रकट करते हुए निम्नलिखित सम्मतियाँ दी हैं।

१—सम्मेलन-परीक्षाएँ केवल साहित्य में ली जाँय।

२—यदि सब विषयों में ही परीक्षाएँ ली जाया करें तो केवल साहित्य की परीक्षाएँ और खोल दी जायँ।

सहयोगी ने सम्मेलन-परीक्षाओं पर अपना ध्यान आकर्षित करके उसके विषय में अपनी सम्मति प्रकट करने की जो कृपा की है, उसके लिए वह धन्यवाद का पात्र है। हम उसके इस भाव का आदर करते हैं। साथ ही इस विषय में कुछ निवेदन भी कर देना चाहते हैं। बात यह है कि सम्मेलन-परीक्षाओं से न केवल हिन्दी-साहित्य-प्रचार ही वाञ्छनीय है, वरन् उनसे हिन्दी-साहित्य-भण्डार की सांगोपांग पूर्ति की भी हम आशा रखते हैं। स्कूलों व कालेजों में अंग्रेजी भाषा द्वारा शिक्षा दी जाती है। अतः विज्ञान, गणित, भूगोल आदि के हिन्दी के पारिभाषिक शब्दों के ज्ञान और व्यवहार का संस्कार हमारे स्कूल तथा कालेज के विद्यार्थियों में नहीं होता। आजकल कुछ प्रारम्भिक कक्षाओं में भी जो हिन्दी माध्यम की गयी है, वह नाम-मात्र रूप में। वहाँ पारिभाषिक शब्दों की शिक्षा-पद्धति अंग्रेज़ी का ही आश्रय रखती है। मैट्रिक से आगे एफ़० ए०, बी० ए० और एम० ए० आदि कक्षाओं में माध्यमरूप में हिन्दी का प्रवेश भी नहीं है। वहाँ तो अंग्रेज़ी के ही माध्यम का साम्राज्य स्थापित है। फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहयोगी जिन विद्वानों के लिये साहित्य-सेवा का साधन कर लेना चाहता है उनके लिये पहिले ही बहुत कुछ गुंजायश करदी गयी है। हिन्दी-साहित्य की साधारण योग्यता रखनेवाले प्रथमा उत्तीर्ण किये बिना मध्यमा परीक्षा दे सकते हैं और संस्कृत-साहित्य तथा व्याकरण के शास्त्री, तीर्थ तथा आचार्य एवं अंग्रेज़ी के ग्रेजएटों के लिये मध्यमा परीक्षा की केवल साहित्य विषयक परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर उत्तमा में बैठ सकने की सुविधा कर दी गयी है।

राष्ट्रभाषा-प्रचार की दृष्टि से भी यह आवश्यकीय है कि सब प्रान्तों के व्यक्ति पारिभाषिक हिन्दी शब्दोंको भली प्रकार समझ और बोल सकें। अन्य भाषाओं के सम्मुख अपने साहित्य को उच्च बनाने और परराष्ट्रों में हिन्दी भाषा को उचित स्थान दिलाने के लिये भी वैकल्पिक विषयों का हिन्दी भाषा और नागरीलिपि द्वारा प्रचार करना आवश्यक है। परीक्षार्थियों के लिये जहाँ तक हो सकता है, सुगमताएँ की जाती हैं और भविष्य में भी युक्तियुक्त रीति से इस पर विचार किया जायगा। हमें आशा है कि हमारे इस वक्तव्य से सहयोगी सहमत होगा।

❧ ❧ ❧

हिन्दी में सरल वैज्ञानिक पुस्तकें] कलकत्ते के प्रसिद्ध व्यापारी और बैंकर सेठ नारायणदासजी बाजोरिया बी० ए० ने पिछले दिनों सम्मेलन को ५०००) की आर्थिक सहायता इसलिए दी थी कि उससे हिन्दी में सरल विज्ञान की एक पुस्तकमाला प्रकाशित की जाय। तदनुसार सम्मेलन ने सरल वैज्ञानिक पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य आरम्भ कर दिया। विशेषज्ञ विद्वानों के द्वारा विज्ञान की सरल पुस्तकों के प्रणयन का कार्य आरम्भ हो गया है। यथासम्भव शीघ्र ही उक्त माला की पुस्तकें हिन्दी-संसार के सामने प्रस्तुत की जायँगी। पुस्तकें यथासम्भव सुन्दर, सचित्र और सजिल्द होंगी। कागज़ उत्तम लगाया जायगा और मूल्य कम रक्खा जायगा।

श्रीबाजोरियाजी स्वभाव के बड़े सरल, मिलनसार, विद्वान्, साहित्य-रसिक, उदार और धनी-मानी हिन्दी-प्रेमी हैं। हिन्दी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य में विज्ञान विषयक ग्रन्थों के अभाव का अनुभव कर तद्विषयक साहित्य की वृद्धि के लिये आपका यह अनुराग, आपकी यह प्रवृत्ति देश के अन्य धनी-मानी महानुभावों के लिये वास्तव में अनुकरणीय है। यदि हमारे देश के हिन्दी-प्रेमी राजा, रईस, ताल्लुक़ेदार और सेठ महानुभावों में से एक-एक उदार महानुभाव एक-एक विषय के भी साहित्य के प्रकाशन का भार अपने ऊपर ले लें तो बहुत शीघ्र और बड़ी सुगमता से हिन्दी-साहित्य का सारस्वत-मन्दिर भिन्न-भिन्न विषयों के ग्रन्थ-रत्नों से परिपूर्ण होजाय। क्या भारत के धनी-मानी राष्ट्रभाषा-प्रेमियों का ध्यान इस आवश्यक विषय की ओर आकर्षित होगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकावलोकन

बौद्धकालीन भारत—लेखक—पं० जर्नादन भट्ट एम० ए०, प्रकाशक—श्रीरामचन्द्र वर्म्मा, साहित्य-रत्नमाला कार्यालय, काशी; पृष्ठ-संख्या ४१०, मूल्य ३) रु०

यह ऐतिहासिक ग्रन्थ बड़े महत्व का है। इस ग्रन्थ में बुद्ध के समय में भारत की क्या दशा थी, इसका दिग्दर्शन कराया गया है। प्रारम्भ में बुद्ध से पूर्व देश की जो राजनीतिक दशा थी, वह विवेचना के साथ वर्णन की गयी है। उसमें बुद्ध भगवान का चरित्र, उनके रचे बौद्ध संघ की स्थिति, उसका इतिहास तथा उस समय का राजनीतिक वर्णन विस्तार से किया गया है। बौद्धकालीन सामाजिक और शिल्पकला तथा व्यापारिक अवस्था का भी अच्छा वर्णन है। प्रसंगवशात् मौर्य शुङ्ग, कन्व, पार्थियन, यवन आदि देशी-विदेशी राज्यों का भी वर्णन आया है। प्राचीन गण-तंत्र-राज्यों तथा उस काल की साम्पत्तिक अवस्था का अच्छा वर्णन किया गया है। अन्त में बौद्ध धर्म के ह्रास के कारण भी दिखाये गये हैं। उपसंहार में बौद्ध-धर्म की विशेषताएँ और परिशिष्ट में बौद्ध-धर्म की ४ महासभाओं तथा तत्कालीन विश्वविद्यालयों का विशद वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ में ईसा के २०० वर्ष पूर्व से उसके २०० वर्ष पीछे तक का विशेषता से वर्णन किया गया है। बौद्ध घटनाओं की तालिका मयसनों के तथा सहायक ग्रन्थों की सूची दे देने से ग्रन्थ की उपयोगिता और भी बढ़ गयी है। यदि अकारादि क्रम से नामों की सूची दी जाती तो बहुत अच्छा होता। ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। इसने एक बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभाव की पूर्ति की है। इसके लिये लेखक और प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र हैं।

पूर्ण-संग्रह—यह राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' की कविताओं का संग्रह है। संग्रह-कर्ता पं० लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी एम्० ए० और सम्पादक पं० कृष्ण बिहारी मिश्र बी० ए०, एल -एल० बी० हैं। प्रकाशक गंगा-पुस्तक माला लखनऊ; पृष्ठ-संख्या ३१२, मूल्य १॥) और सफ़ाई-छपाई उत्तम है।

यह संग्रह बहुत अच्छा निकला है। प्रारम्भ में एक ६० पृष्ठ की भूमिका है जिसमें रायसाहब की जीवनी, उनके कार्य और उनकी कविताओं पर विद्वता-पूर्ण विचार प्रकट किये गये हैं। रायसाहब कानपुर के एक माने हुए वकील और साहित्य-सेवी थे। आपके द्वारा हिन्दी-साहित्य का बहुत उपकार हुआ है। आपकी कविता बड़ी मनोहारिणी होती थी।

संग्रह बहुत उत्तम निकला है। पठनीय और संग्रह करने योग्य है।

गृहलक्ष्मी—इसका सती-दर्शन अंक वर्षारंभ में बड़ी सजधज से डबलक्राउन ८ पेजी के १०० पृष्ठों में सचित्र निकला है। चित्र-संख्या भी पर्याप्त है।

लेख और कविताएँ सभी सुपाठ्य हैं। स्त्री-जगत-सम्बन्धी प्राचीन और नवीन सभी प्रकार की बहुत सी ज्ञातव्य बातें इसमें आ गयी हैं। स्त्री-समाज में इस पत्र से एक नवीन जीवन का सञ्चार होगा। बाबू लक्ष्मीकान्त वर्मा का सती-दाह, पण्डित अयोध्याप्रसाद वैष्णव का बिजली लेख तथा अन्य कविताएँ उत्तम हैं। यह अङ्क बहुत उत्तम निकला है। अतः इसके सम्पादक पण्डित सुदर्शनाचार्य और गोपाल देवी को हम सहर्ष बधाई देते हैं। इस अङ्क का मूल्य ॥=) है।

भागीरथप्रसाद दीक्षित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरमाला (सचित्र पौराणिक नाटक)—लेखक—पं० गोविन्दबल्लभ-पंत, प्रकाशक—गङ्गा-पुस्तक-माला-कार्यालय, लखनऊ; आकार २०×३० पेजी, पृष्ठ-संख्या ८४, मूल्य सजिल्द १।) सादी ।।।), छपाई-सफ़ाई सुन्दर।

इस नाटक में वस्तुतः सृष्टि-सौन्दर्य्य की प्राकृतिक छटा का दिग्दर्शन कराया गया है। नाटक गद्य-काव्य का सुन्दर शृङ्गार है। ग्रन्थ के आरम्भ में अवीक्षित का वैशालिनी के प्रति विशुद्ध प्रेम और वैशालिनी द्वारा उसके तिरस्कार का विचित्र वर्णन है। अवीक्षित के तिरस्कार के प्रतीकार-रूप वैशालिनी को समुचित दण्ड देना, वैशालिनी के निराश-प्रेम का ज्वलन्त उदाहरण है।

लेखक की लेखनी के चमत्कार-रूप यह अनुपम रचना हिन्दी-साहित्य में एक रत्न तथा गद्य-काव्य दृष्टि से अमूल्य है। इसमें सन्देह नहीं कि इसकी भाषा कुछ क्लिष्ट है, परन्तु लेखन-शैली इतनी उत्तम है कि आद्योपान्त एक बार पढ़ जाने से पाठक की यथेष्ट तृप्ति हो जाती है। ग्रन्थ उपादेय और संग्रह-योग्य है।

वैद्यनाथ मिश्र 'विह्वल'

देहाती दुनिया—लेखक—हिन्दी-भूषण श्रीयुत शिवपूजनसहाय, प्रकाशक—हिन्दी-पुस्तक-भंडार लहेरियासराय (बिहार), आकार १७×२७ सोलह पेजी, काग़ज़ छपाई-सफ़ाई तथा जिल्द बहुत सुन्दर, मूल्य १।।), पृष्ठ-संख्या २२४।

सुन्दर, हृदयग्राही और उत्कृष्ट हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि में सुन्दर लेखन (हैंड-राइटिंग) के लिये जो श्रीशिव-पूजनसहाय हिन्दी-संसार में प्रसिद्ध हैं, उन्हीं का लिखा हुआ यह ठेठ देहाती घटनाओं से पूर्ण एक सामाजिक मौलिक उपन्यास है। इसकी वर्णनशैली रोचक और सजीव एवं कथानक स्वाभाविक और चित्ताकर्षक है। भाषा को देहाती बन्धुओं के समझने योग्य लिखने का लेखक ने जो प्रयत्न किया है उसमें वे बहुत कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफल हुए हैं। सुन्दर और उत्कृष्ट भाषा लिखने में सिद्धहस्त बाबू शिवपूजनसहाय ने देहातियों के लिये उपयुक्त ठेठ हिन्दी में इस उपन्यास को लिखकर अपनी लेखन-कला कुशलता का अच्छा परिचय दिया है।

परन्तु हम इस विषय में लेखक से थोड़ा मतभेद रखते हैं। लेखक ने इस पुस्तक की भाषा को देहातियों के लिये उपयोगी बनाने के हेतु शब्दों के रूपों में भी उसी प्रकार का परिवर्तन किया है, जैसा वे देहातियों की भाषा में, उनके मुखसे, सुनते हैं। इससे भाषा में कुछ प्रान्तिकता की झलक आगई है। साथ ही शब्दों को उसी रूप में लिखना, जिस रूप में देहात के अशिक्षित बन्धु उन्हें बोलते हैं, कहाँ तक उपयोगी होगा, यह विचारणीय है। हमें देहाती बन्धुओं में हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति सुरुचि उत्पन्न करना है। उनमें जो त्रुटियाँ हैं हम उनमें सुधार चाहते हैं। पर इस तरह से तो हम गौण रूप से उनकी उस भाषा का समर्थन करते हैं जो अशुद्ध है और जिसको शुद्ध बनाना आवश्यक है। यह ठीक है कि यह उपन्यास उन देहाती बन्धुओं के लिए लिखा गया है जो अशिक्षित और अर्ध-शिक्षित हैं, जिनके झोपड़ों में अभी शिक्षा की रश्मियाँ नहीं पहुँची है; परन्तु इसके लिए आवश्यकता इस बात की है कि भाषा अत्यन्त सरल रक्खी जाय। भाषा की सरलता का अर्थ यह तो न होना चाहिए कि उसके शब्द अशुद्ध रूप में लिखे जायँ। इसका परिणाम तो यह होगा कि जो देहाती बन्धु ऐसी पुस्तकों को पढ़ने की क्षमता रखते हैं, अशुद्ध बोलने का जो संस्कार उनके हृदयों व्याप्त है, इसे पढ़कर वे भी उसमें कोई सुधार न कर पायेंगे। आशा है, लेखक महोदय इस विषय पर एक बार पुनः गम्भीरता से विचार करने के अनन्तर हमसे सहमत होंगे।

दुलहिन—लेखिका—श्री चन्द्रमणि देवी; प्रकाशक—हिन्दी-पुस्तक भंडार लहेरिया सराय (दरभंगा)। आकार १७×२७ सोलह पेजी, काग़ज़, छपाई-सफ़ाई सुन्दर, पृष्ठ-संख्या ५६, मूल्य ।)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह होजाने के अनन्तर श्वसुरालय में प्रवेश करनेवाली नव-युवतियों के लिए इस पुस्तककी रचना हुई है। इसकी कहानी शिक्षाप्रद और रोचक है। अंत में स्व० श्रीबुँदेलाबाला-रचित 'माता के उपदेश' नाम्नी कविता से इस पुस्तक की उपयोगिता और बढ़ गई है। पुस्तक कन्या-पाठशालाओं के पाठ्यक्रम में स्वीकृत होने योग्य है।

❀ ❀ ❀

लक्ष्मी—लेखक—स्व० श्रीगिरिजाकुमार घोष, प्रकाशक—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३० अमीनाबाद पार्क, लखनऊ आकार "२० × "३० सोलहपेजी; कागज़, छपाई-सफ़ाई सुन्दर, पृष्ठ-संख्या ७६, मूल्य ॥=)

नारी-जीवन में प्रवेश करनेवाली नवयुवतियों के लिए ही इस पुस्तक की भी रचना हुई है। स्वर्गीय बाबू गिरिजाकुमारजी इस प्रकार की शिक्षाप्रद पुस्तकों के लेखन में बड़े कुशल थे। यह पुस्तक भी उनकी पूर्व पुस्तकों की भाँति रोचक और शिक्षाप्रद है।

❀ ❀ ❀

क्रान्तिकारी राजकुमार—लेखक चरितनायक प्रिंसक्रापटकिन, अनुवादक—श्री प्यारेमोहन चतुर्वेदी, प्रकाशक—प्रताप कार्यालय, कानपुर। आकार २० × ३० सोलहपेजी, पृष्ठ-संख्या २७४, कागज़, छपाई-सफ़ाई साधारण, और मूल्य १)।

यह पुस्तक प्रिंस क्रापटकिन की आत्म-कहानी है। इसमें रूस के उस काल की अवस्था का जीता-जागता चित्र है जब उसके शासक ज़ार निकोलस और उनके वंशज, पादरी और धर्माध्यक्ष, रईस और ज़मीदार अन्याय और अत्याचार के बल निरीह प्रजाके जन्मजात स्वत्वों को कुचलने के लिए अपने को जन्मसिद्ध स्वत्वाधिकारी मानते थे। अपनी इस जीवन-गाथा में क्रान्ति के उस युग का चित्रण लेखक ने बड़ी रोचक भाषा में और बड़े सुन्दर ढँग से किया है। देशके राष्ट्रीय जीवन-संग्राम में भाग लेनेवाले नवयुवकों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

❀ ❀ ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सटीक सप्तश्लोकी गीता—श्रीमद्भगवद्गीता के चतुर्थ अध्याय के पांच श्लोक तथा बारहवें और अट्ठारहवें अध्याय का एक-एक श्लोक उद्धृत कर यह सप्तश्लोकी गीता प्रस्तुत की गयी है। इसके टीकाकार श्रीयुत पण्डित गङ्गाप्रसादजी अग्निहोत्री हैं और प्रकाशक बल्देवबाग़, जबलपुर के श्रीयुत पण्डित बालमुकुन्दजी त्रिपाठी हैं। मूल्य -) है। प्रकाशकजी को पत्र लिखने से पुस्तक मिलती है।

गीता के पूर्वोक्त सात श्लोकों के आधार पर इस पुस्तक के टीकाकार ने "ज्ञान-यज्ञ" का वर्णनकर गोरक्षाकी पुष्टि, आवश्यकता और महिमा सामयिक ढङ्ग पर बतलाकर समयके अकर्मण्य, मोहपाश में जकड़े हुए धनी धर्मात्माओं के चित्त को आकर्षित किया है। गोरक्षा के निमित्त यह छोटीसी पुस्तक इतनी उपयोगी है कि, इसके अव्यावहारिक और क्लिष्ट शब्दों की आलोचना करने को जी नहीं चाहता। प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य होगा कि इस सप्तश्लोकी गीता को मँगाकर पढ़े और इसमें बतलाई हुई विधि से गोरक्षा-कार्य करने को कटिबद्ध होजाय।

"साहित्यानन्द"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-देशान्तर का ज्ञान प्राप्त करने का अपूर्व साधन।

विद्यार्थियों को परीक्षा पास करने का सुगम उपाय

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक-पत्र। पंजाब, संयुक्त प्रान्त बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रान्त और बरार के शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत।

"भूगोल" में ज्योतिष, यात्रा, व्यवसाय, पशु-वनस्पति अनुसंधान आदि भूगोल के सभी अंगों पर उच्च कोटि के मौलिकलेख प्रकाशित होते हैं। (पिछले दो वर्षों के लेखों और लेखकों की सूची मुफ़्त मँगाकर स्वयं देख लीजिये)।

सभी प्रतिष्ठित पत्रों और पूज्य नेताओं ने "भूगोल" की एक स्वर से प्रशंसा क है। पत्र-संचालन का सारा काम अवैतनिक होता है।

आप भी ३) वार्षिक मूल्य भेजकर हिन्दी का प्रचार करें अथवा १०) वार्षिक देकर "भूगोल" के संरक्षक बनें और हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनावें।

विज्ञापन की दर साधारण पूरा पृष्ठ प्रतिबार १०)। विज्ञापन सच्चा और देश-हितकारी होना चाहिये।

मैनेजर "भूगोल"
मेरठ

मुद्रक—दीवान वंशधारीलाल हिन्दी-साहित्य-प्रेस, प्रयाग।
प्रकाशक—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ उत्तमोत्तम सस्ती पुस्तकें

सरल-शरीर-विज्ञान—यह सचित्र पुस्तक मध्यमापरीक्षा के उन परीक्षार्थियों के लिये बड़े काम की है जो उसके वैकल्पिक विषयों में शरीर-विज्ञान लेकर बैठते हैं। पृष्ठ-संख्या १६८, सुन्दर रेशमी जिल्द मूल्य ॥।)

महात्मा टालस्टाय के विचार—रशियन ऋषि महात्मा टालस्टाय संसार के उन महान् व्यक्तियों में से थे जो अपनी अलौकिक प्रतिभा से संसार के विचारों में बड़ा उलट-फेर कर जाते हैं। इन्हीं महात्मा टाल्स्टाय के युगान्तरकारी विचारों का दिग्दर्शन इस पुस्तक में बड़ी प्राञ्जल भाषा में किया गया है। (पृष्ठ-संख्या १२८, मूल्य।-)

सनयाटसेन—चीन देश के उद्धारक डाक्टर सनयाटसेन का यह जीवन-चरित निर्बलों में बल, निराशों में आशा, मृतकों में जीवन, देश-द्रोहियों में देश प्रेम और अकर्मण्यों में कर्मण्यता फूकनेवाला है। पृष्ठ-संख्या ११२, मूल्य।)

संजीवनी—इसमें मुर्दा दिलों में जान डालनेवाली २८ कविताएँ संग्रहीत हैं। ये कविताएँ कैसी हैं, इस विषय में इतना ही लिखना पर्य्याप्त होगा कि ये सब कानपुर के काव्य-प्रेमी बाबू बेनीमाधवजी खन्ना द्वारा पुरस्कृत हो चुकी हैं। पृष्ठ-संख्या १४४, मूल्य।-)

इतना तो जानो—इसमें स्वदेशी, ग्राम-पंचायत, अस्पृश्यता, हिन्दू-मुसलिम-ऐक्य, अदालत और पंच आदि भारतीय जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्नों पर प्रकाश डाला गया है। मूल पुस्तक जिसका यह हिन्दी-अनुवाद है, श्रीयुत् महादेव हरिभाई देसाई की लिखी हुई है। पृष्ठ-संख्या १५० मूल्य।-)

महात्मा गांधी के निजी पत्र—इस पुस्तक में महात्माजी के उन पत्रों का संग्रह है जो उन्होंने समय-समय पर अपने कुटुम्बियों और मित्रों को लिखे हैं। पत्र क्या हैं—जीवन के पथ-प्रदर्शक हैं। महात्माजी के जीवन का रहस्य समझने के अभिलाषी युवकों तो इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। पृष्ठ-संख्या १२८, मूल्य।-)

तेरहवें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्वागतकारिणीसमिति के सभापति की हैसियत से दिया गया श्रीमान पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी का भाषण पुस्तकाकार छपकर तैयार है। पृष्ठ-संख्या ८० मूल्य ≡)

साहित्य-मंत्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० ए. ६२६

सम्मेलन-पत्रिका

सम्मेलन की मुख पत्रिका

भाग १३, अङ्क १२, श्रावण संवत १९८३ वि०

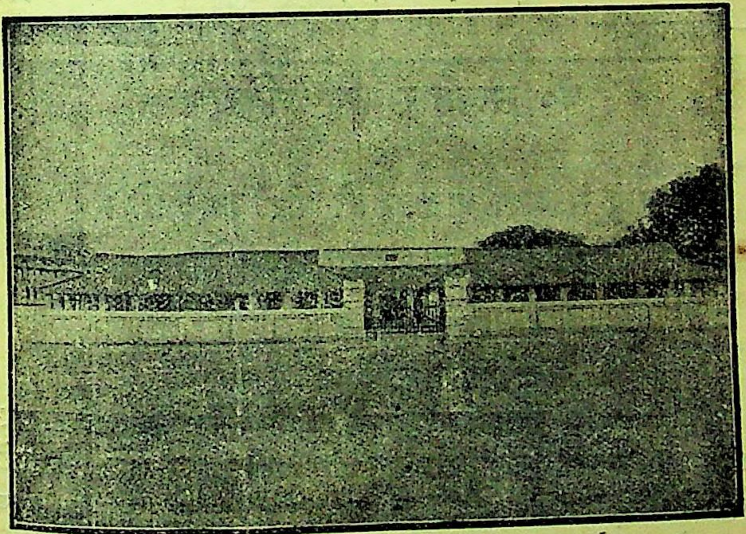

सम्पादक

साहित्य-मंत्री

प्रकाशक

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

वार्षिक मूल्य २)		प्रत्यंक ≈)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१—रवीन्द्र-गीताञ्जलि—[श्रीमदनलालजी चतुर्वेदी] ... ५०६
२—अलंकार और कविता—[श्री सतीशचन्द्रराय एम्०ए०] ... ५१०
३—कविता और कवित्व—[श्री बाबूराम बित्थरिया साहित्य-रत्न] ५१३
४—हिन्दी भाषा में अराजकता—[श्री मृत्युञ्जयप्रसाद विद्यालंकार विशारद] ५१६
५—सम्मेलन-समाचार—[संवत् १९८३ विक्रमी की सम्मेलन-परीक्षाओं के कार्याधिकारियों (परीक्षकों तथा व्यवस्थापकों) की सूची, सम्मेलन के उपदेशकजी का भ्रमण-वृन्तान्त तथा प्रयाग कचहरी में हिन्दी-प्रचार] ५२४
६—हिन्दी-जगत्—[सोलन में तुलसी-महोत्सव तथा मद्रास में तुलसी-महोत्सव] ५४०
७—पुस्तकावलोकन—["साहित्यानन्द"] ५४४
८—सम्पादकीय ५५२

पं० सत्यनारायण कविरत्न

के

नाम से आप अवश्य ही परिचित होंगे।

उनका विस्तृत जीवन-चरित्र

छप रहा है।

मँगाने के लिये आर्डर दीजिए।

उसमें उनकी बाल्यकाल से लेकर अन्तिम समय तक की घटनाओं, उनकी सहृदयता, सरलता और प्रतिभापूर्ण जीवन-कथाओं और करुणापूर्ण रचनाओं को पढ़कर ऐसा कौन सहृदय हृदय होगा जो एकबार रो न उठे! पुस्तक में साहित्य-रसिकों के पठन-पाठन और मनोविनोद की विशेष सामग्री है। लेखक हैं कविरत्न जी के अन्तरंग मित्र और हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक पं० बनारसीदासजी चतुर्वेदी। पृष्ठ-संख्या लगभग २६४, मूल्य ॥।) सजिल्द का १)

साहित्य-मंत्री
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,
प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलभ-साहित्य-माला की पुस्तकें

हिन्दी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

[लेखक—श्री मिश्रबन्धु]

हिन्दी भाषा और साहित्य का क्रमशः विकास कैसे हुआ, उसने कौन-कौन से रूप पकड़े, किन-किन बाधाओं एवं साधनों का उसे सामना करना पड़ा, वर्त्तमान परिस्थित क्या है, आदि गम्भीर विषयों का पता इस पुस्तक से भली भाँति चलता है। अपने ढङ्ग की यह पहली पुस्तक है। "मिश्रबन्धु-विनोद" रूपी महासागर से मथनकर यह इतिहासामृत निकाला गया है। यह हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा में स्वीकृत है। तृतीय संस्करण पृष्ठ-संख्या १०८, मूल्य ।=)

भारतगीत

[लेखक—पं० श्रीधर पाठक]

पाठकजी की रसमयी रचना से किस सहृदय साहित्य-रसिक का हृदय रसप्लावित न होता होगा? आपकी गणना वर्त्तमान हिन्दी-साहित्य के महारथियों में है। आपकी राष्ट्रीय कविता नवयुवकों में जातीय जीवन सञ्चार करने वाली है। प्रस्तुत पुस्तक पाठकजी के उन गीतों का संग्रह है, जिन्हें उन्होंने समय-समय पर स्वदेश-भक्ति की उमङ्ग में आकर लिखा है। इसकी प्रस्तावना साहित्य-मर्मज्ञ बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन ने लिखी है। यह पुस्तक राष्ट्रीय विद्यालयों के बड़े काम की है। पृष्ठ-संख्या ६४, मूल्य =)

भारतवर्ष का इतिहास [प्रथम खण्ड]

[लेखक—श्री मिश्रबन्धु]

यह इतिहास प्राचीन और अर्वाचीन काल से सम्बन्ध रखता है। इसमें पूर्व वैदिक काल से सूत्र काल तक अथवा ६००० संवत पूर्व से ५०० संवत् पूर्व तक की घटनाओं का उल्लेख है। अबतक

पता—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पोस्टबाक्स नं० ११, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में भारतवर्ष का सच्चा इतिहास एक भी नहीं था। विदेशियों के लिखे हुए अपूर्ण और पक्षपातयुक्त इतिहासों के पढ़ने से यहाँ के नवयुवकों को अपने देश के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। ऐसे समय में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक मिश्रबन्धुओं ने बड़ा काम किया है। मध्यमा परीक्षा के इतिहास विषय में यह पुस्तक निर्दिष्ट है। जिल्दवाली पुस्तक का, जिसकी पृष्ठ-संख्या ४०६ है, मूल्य केवल १।।) है।

राष्ट्रभाषा

[सम्पादक—श्री 'भारतीय हृदय']

कुछ समय हुआ, महात्मा गांधी ने यह प्रश्न उपस्थित किया था कि, क्या हिन्दी राष्ट्रभाषा हो सकती है? इसके उत्तर में भारत के प्रत्येक प्रान्त के बड़े-बड़े विद्वानों और नेताओं ने पक्षपात-रहित सम्मतियाँ दी थीं कि निःसन्देह हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होने योग्य है। उन्हीं सब अमूल्य सम्मतियों का संग्रह इस पुस्तक में किया गया है। इसके विरोधियों का भी यथेष्ट खण्डन हुआ है। इस विषय के व्याख्यानों का भी इनमें संकलन कर दिया गया है। हिन्दीभाषा के प्रेमियों के लिए यह पुस्तक प्राणस्थानीय नहीं तो क्या है? पृष्ठ-संख्या २००, मूल्य ।।)

शिवा-बावनी

महाकवि भूषण के वीररस सम्बन्धी ५२ कवित्तों का उत्तम संग्रह। इन कवित्तों के टक्कर के छन्द शायद ही वीररस के साहित्य में अन्यत्र कहीं मिलें। महाराष्ट्रपति शिवाजी की देशभक्ति और सच्ची वीरता का यदि चित्र देखना हो, तो एक बार इस छोटी सी पोथी का पाठ अवश्य कर जाइये। शब्द एवं भाव-काठिन्य दूर करने के लिये कवित्तों की सुबोधिनी टीका, टिप्पणी और अलंकार आदि साहित्य से सम्बन्ध रखने वाली आवश्यक बातों का इसमें उल्लेख कर दिया गया है। साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा में यह पुस्तक रखी गयी है। पृष्ठ-संख्या ५४, मूल्य ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल पिङ्गल

लें० — { श्री पुत्तन लाल विद्यार्थी विशारद
श्री लक्ष्मीधर शुक्ल विशारद }

इस पुस्तक में पिङ्गलशास्त्र के गूढ़ रहस्यों को सरल और सुन्दर भाषा में समझाने का प्रयत्न किया गया है। छन्दों के उत्तम उदाहरण भी दिये गये हैं। अन्त में संस्कृत छन्दों का भी संक्षेप में दिग्दर्शन करा दिया गया है। यह पुस्तक सम्मेलन की प्रथमा-परीक्षा के साहित्य विषय की पाठ्य पुस्तकों में स्वीकृत है। पृष्ठ-संख्या ५८ मूल्य ।) नवीन संस्करण छपकर तैयार है

सूरपदावली (सटिप्पण)

श्री सूरदासजी के १०० अत्युत्तम पदों का अपूर्व संग्रह है। मूल्य ।) नवीन संस्करण छपकर तैयार है।

भारतवर्ष का इतिहास [द्वितीय खण्ड]

[लेखक—श्री मिश्रबन्धु]

इसमें ५०० संवत् पूर्व से १२५० संवत् तक की घटनाओं का वर्णन किया गया है। भारतवर्ष के उत्थान-पतन के क्रम का पता इस पुस्तक से जैसा कुछ चलता है, यह पढ़ने से ही मालूम होगा। हिन्दू-समाज की उन्नति और अवनति, इस देश में स्वदेशी और विदेशी भावों का आविर्भाव तथा धार्मिक जीवन की महत्ता आदि जानने योग्य आवश्यक विषयों का ज्ञान इससे पूर्णतः प्राप्त हो सकता है। यह पुस्तक सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा की इतिहास-विषयक पाठ्य पुस्तकों में स्वीकृत है। सुन्दर छपाई, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ-संख्या ४४० मूल्य २।)

संक्षिप्त सूरसागर

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

सूरदासजी-रचित सूरसागर से ५०० पद-रत्न चुनकर इसमें एकत्र किये गये हैं। जहां तक हो सका है, कई प्रतियों से पदों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ शुद्ध किया गया है। प्रत्येक पद की पाद-टिप्पणी भी लगा दी गयी है। अब तक सब के अनुशीलन करने योग्य सूरसागर का कोई सुन्दर और सुलभ संस्करण नहीं निकला था। लोग इसके रसास्वादन के लिये लालायित हो रहे थे। सम्मेलन ने इस अभाव को दूर कर हिन्दी-साहित्य-रसिकों की पिपासा शान्त करने की यथाशक्ति चेष्टा की है। पुस्तक के अन्त में लगभग १०० पृष्ठ की सूरदासजीकी जीवनी तथा काव्य-परिचय जोड़ा गया है। उनकी जीवनी की मुख्य-मुख्य घटनाओं का पूरा-पूरा उल्लेख आगया है। पदों में आई हुई अन्तर्कथाएँ भी लिखी गयी हैं। यह पुस्तक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा में स्वीकृत है। एण्टिक कागज़ का जिल्ददार संस्करण, पृष्ठ-संख्या ४२५, मूल्य २)

विहारी-संग्रह

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

कविवर विहारीलाल की सतसई से प्रथमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए यह छोटा सा संग्रह तैयार किया गया है। जहाँ तक सम्भव हुआ है, इसमें शृंगार रस के दोहों का समावेश नहीं किया गया है। किन्तु ऐसे दोहों का संग्रह किया गया है, जो बिना किसी सङ्कोच के बालक-बालिकाओं को पढ़ाये जा सकते हैं। पृष्ठ-संख्या ६४, मूल्य ≡)

ब्रज-माधुरी-सार

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

इस पुस्तक का विषय इसके नाम ही से प्रकट होता है। इसमें ब्रजभाषा की कविता का सार सङ्कलन किया गया है। इस संग्रह में चार विशेषताएँ हैं :—

(१) इसमें सूरदासजी से लेकर आधुनिक काल के स्वर्गीय सत्यनारायणजी तक को भावपूर्ण कविताओं का संग्रह किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) इसमें कुछ ऐसे कवियों की रचनाओं का रसास्वादन भी कराया गया है जो अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुई थीं।

(३) इस ग्रन्थ में यथेष्ट पाद-टिप्पणियाँ लगा दी गयी हैं, जिनकी सहायता से साधारण पाठक भी लाभ उठा सकते हैं।

(४) इसके प्रारम्भ में प्रत्येक कवि का संक्षिप्त जीवनचरित्र और उसकी कविता की संक्षिप्त आलोचना भी की गई है।

पृष्ठ संख्या ६३२, मूल्य जिल्दवाले संस्करण का केवल २)

पद्मावत (पूर्वार्द्ध)

[सम्पादक—श्री लाला भगवानदीन]

यह हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्मावत का पूर्वार्द्ध है। इस भाग में पहले खण्ड से लेकर ३४ वें खण्ड तक का समावेश हुआ है। सम्पादक महोदय ने इस ग्रन्थ में इतनी पादटिप्पणियाँ लगा दी हैं कि अब इस प्राचीन काव्य का रसास्वादन करना प्रत्येक कविता-प्रेमी के लिये सुलभ हो गया है। अन्त में एक संक्षिप्त शब्द-कोष भी जोड़ दिया गया है। पृष्ठ-संख्या लगभग २२०; मूल्य साधारण जिल्द का १) और जिल्दवाली का १।)

सूरदास की विनयपत्रिका

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

यद्यपि 'विनय-पत्रिका' नाम का कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ महात्मा सूरदासजी का नहीं है तथापि सूरसागर में विनय-सम्बन्धी जो पद मिलते हैं, उन्हीं के आधार पर सौ उत्तमोत्तम एवं मनोरम पदों का संकलन करके इसका 'विनय-पत्रिका' नाम दिया गया है। क्रम तुलसीदासजी की विनय-पत्रिका का रक्खा गया है। अन्त में संक्षिप्त शब्दार्थ भी दे दिया है। पृष्ठ-संख्या ७५, मूल्य केवल ≈)

पता—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पोस्टबाक्स नं० ११, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-रत्न-माला

१—अकबर की राज्य-व्यवस्था

[लेखक—साहित्यरत्न पं० शेषमणिजी त्रिपाठी, बी० ए०]

इसमें सम्राट अकबर की राज्य-व्यवस्था का बड़ा ही मनोहर चित्र अंकित किया गया है। अकबर के राज्य-काल में भारतीय समाज, धर्म-नीति तथा जीवन की क्या अवस्था थी, वर्तमान राज्य प्रणाली, तत्कालीन व्यवस्था के मुक़ाबले में कैसी है आदि बातों का पता इस पुस्तक से भली भाँति लगता है। इतिहास, राजनीति तथा अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए यह बहुत लाभदायक है। पृष्ठसंख्या २८०, मूल्य १)

२—हिन्दी-काव्य में नवरस

[लेखक—साहित्यरत्न श्रीयुत बाबूराम बित्थरिया]

पुस्तक का विषय उसके नाम से ही प्रकट है। यह पुस्तक लेखक ने सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा देने के लिए निबन्ध (Thesis) रूप में लिखी थी। पुस्तक कितने महत्त्व की है, यह इसी से प्रकट है कि सम्मेलन की परीक्षा-समिति ने इसे मध्यमा परीक्षा के साहित्य विषय के पाठ्यग्रन्थों में चुना है। मूल्य २) पृष्ठ-संख्या लगभग ५००

सम्मेलन की अन्य पुतस्कें

सूर्य-सिद्धान्त

[सम्पादक—श्री० इन्द्रनारायणजी द्विवेदी]

ज्योतिष-शास्त्र में सूर्य-सिद्धान्त अपने ढँग का एक ही है। इसे देखने से यह पता भली भाँति चल जाता है कि आर्यों ने उन सिद्धान्तों का बहुत पहले साक्षात्कार कर लिया था, जिन्हें जानकर पश्चिमी पंडित आज डींग हाँक रहे हैं। इसमें खगोल विषयक सभी बातें आ गयी हैं। सौर जगत् का पूरा-पूरा विवरण इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्व ग्रन्थ में दरशा दिया गया है। इस पर संसार की प्रायः सभी भाषाओं में टीका-टिप्पणी हो चुकी है। हिन्दी में दो तीन और टीकाएँ मिलती हैं, पर उनसे ठीक-ठीक भाव समझ में नहीं आता। श्री द्विवेदीजी ने इसके गूढ़ से गूढ़ विषय भी सरल और स्पष्ट भाषा में समझाने की पूर्ण चेष्टा की है। मध्यमा के ज्योतिष विषय में यह स्वीकृत है। सजिल्द, पृष्ठ-संख्या २३२, मूल्य १।)

इतिहास

[ले०—स्वर्गीय श्रीविष्णु शास्त्री चिपलूणकर]

यह श्रीचिपलूणकर जी के निबन्ध का अविकल अनुवाद है। इतिहास सम्बन्धी प्रायः सभी ज्ञातव्य बातें इसमें आ गयी हैं। यह पुस्तक सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा के इतिहास विषय की पाठ्य पुस्तकों में स्वीकृत है। मूल्य ≡)

हिन्दी-भाषा-सार

[सम्पादक—श्री लाला भगवानदीन
तथा
अध्यापक बाबू रामदास गौड़, एम्० ए०]

हिन्दी में क्रमशः गद्य का विकास किस-किस प्रकार हुआ, इसका पता इस पुस्तक से चल सकता है। इसमें सुयोग्य सम्पादकों ने हिन्दी के प्राचीन उत्तमोत्तम गद्य लेखकों के चुने हुए लेख दिये हैं। नीचे टिप्पणी भी लगा दी है। गद्यात्मक निबन्धों का यह एक आदर्श संग्रह है। प्रथमा परीक्षा में यह स्वीकृत है। एण्टिक काग़ज़ पर सुन्दर छपाई, पृष्ठ-संख्या २००, मूल्य ॥।)

प्रथमालङ्कार-निरूपण

[ले०—साहित्याचार्य श्री चन्द्रशेखरजी शास्त्री]

प्रथमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए अलंकार विषयक ज्ञान करा देने के लिए यह 'निरूपण' बड़े काम का है। अलंकारों के लक्षण और उनके उदाहरण बड़ी ही सरलता से समझाये गये हैं। प्रथमा परीक्षा में यह स्वीकृत है। मूल्य =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ते के नामी डाक्टर एस्० के० बर्म्मन का

कोला टानिक

(अफ्रिका देश के कोला फल से बनी हुई पुष्टई)

पके शरीर में बल देने का व सूखे शरीर को हरा बनाने का दावा रखता है। बहुपरिश्रम व अर्थ व्यय से अनेक वर्षों तक सैकड़ों रोगियों द्वारा परीक्षित यह—

पुष्टकारकः— "कोला टानिक" फल भारत वर्ष भर में विख्यात है।

कोला टानिक से कलेजे की कमज़ोरी हौलदिल, धड़कन आदि मिटकर दिमाग़ पुष्ट होता है।

कोला टानिक

कड़ी मेहनत के बाद कोला टानिक पीने से थकावट मिटकर दिमाग़ तर हो जाता है। कोला, बालक, जवान, बूढ़े, स्त्री-पुरुष सभी खुशी से पी सकते हैं।

मूल्य ३२ खुराक की पूरी एक शीशी का १।) डा० म० ।=)

केश-राज

अपनी अनुपम सुगन्ध व गुणों से निराला है। इससे बाल घूँघरवाले, चमकीले, लम्बे व भौंरों की तरह काले हो जाते हैं।

केश-राज

सिर के लिए, बालों के लिए, आँखों के लिए मीठे सुगन्ध के लिए, दिमाग़ तरावट के लिए और सब्बे गुणों में सब तेलों का राजा है। मूल्य फ़ी शीशी १) एक रुपया, डा० म० ॥) आठ आने

डा० एस० के० बर्म्मन, पोस्टबाक्स नं० ५५४, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

भाग १४] श्रावण, संवत् १९८३ वि० [अङ्क १२

रवीन्द्र-गीताञ्जलि

केहि बिधि गावत गीत गुणी प्रभु! मैं तो नहिं जानौं,
सदा चकित बस लहरि लीन ह्वै सुनिबे की ठानौं।
अति उज्ज्वल आलोक गीत कौ त्रिभुवन में छायौ,
प्रान-पवन पावन प्रभु-पद कौ गगन-गगन धायौ।
पाथर फोरि बिघन के स्वर की बिकल बेग धारा,
बबलि-बबलि बहि कढ़ै लहै अविगत पारावारा।
चित चाहतु अति अधिक तिहारे संग गीत गाऊँ,
जतनु कितौऊ करौं कण्ठ-स्वर खोज नहीं पाऊँ।
मैं बहुरौ बोलन चाहौं पै गीत न बनि पावैं,
हारि मानि रहि जाउँ प्रान जे रोवैं अकुलावैं।
तूँने चहुँघा बुनि कैं लाँबे गीत जाल डारे,
आः तिनहिं में मों जिय बन्दी कीन्हों पिय प्यारे !!

श्रीमदनलाल चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलंकार और कविता

[प्रतिवाद]

गत ज्येष्ठ की "सम्मेलन-पत्रिका" में श्रीयुत आनन्दिप्रसादजी श्रीवास्तव्य का "अलंकार और कविता" नामक एक लेख प्रकाशित हुआ है। उसमें उन्होंने अलंकार-शास्त्र के ऊपर कुछ ऐसी विप्रतिपत्ति प्रकट की है जिसपर कुछ विचार करना मुझे आवश्यक प्रतीत हुआ है। श्रीवास्तव्यजी ने लेख के प्रारम्भ में "अलंकरोतीत्यलंकारः" यह अलंकार-लक्षण (?) उद्धृत किया है। पर अलंकार क्या वस्तु है इसपर उन्होंने कुछ विचार न कर सिद्ध किया है कि "अलंकार और कविता दोनों भिन्न-भिन्न वस्तुएँ हैं"। वे इस सिद्धान्त के प्रमाण के लिए कहते हैं—"मैंने बड़े-बड़े विद्वानों—लेखकों—को देखा है कि वे उपमा पर, रूपक पर, उत्प्रेक्षा पर और अतिशयोक्ति पर उछल पड़ते हैं। यदि कोई सीधा-सादा मर्मस्पर्शी वाक्य उनके कर्णगोचर हुआ तो उसको कह देते हैं कि इसमें क्या धरा है। यह तो ऐसाही हुआ कि "हम आते हैं, तुम जाते हो"। पुनश्च—"संक्षेप में यह कह देने से काम चल जायगा कि कोई भाव, चाहे उसमें चमत्कार हो, चाहे न हो—चाहे उसमें अलंकार हो चाहे न हो, उपयुक्त स्थान पर उपयुक्त पात्र के मुख से निकलकर कविता हो सकता है।"

श्रीवास्तव्यजी के उद्धृत वाक्यों से प्रतीत होता है कि वे समझते हैं कि अलंकार-शास्त्र में शब्दालंकारों और अर्थालंकारों को ही काव्य बतलाया गया है। पर सब श्रेष्ठ अलंकारिकों का यह सिद्धान्त है कि जिसमें 'व्यङ्ग्यअर्थ' (Suggestion) 'वाक्यअर्थ' (Literal meaning) से अधिक चमत्कार है, वह पहली श्रेणी की 'ध्वनि' कविता है। जिसमें व्यङ्ग्य-अर्थ हैं पर जिसमें वाक्य-अर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अधिक चमत्कार नहीं है, वह दूसरी श्रेणी की "गुणीभूत-व्यङ्ग्य" नामक कविता है। जिसमें व्यङ्ग्य नहीं हैं; केवल उपमा, रूपक आदि में से कुछ न कुछ अर्थालंकार है—वह तीसरी श्रेणी की "अर्थ-चित्र" नामक कविता है। जिसमें केवल अनुप्रास, यमकादि कुछ शब्दालङ्कार है, वह चौथी श्रेणी की "शब्द-चित्र" नामक अधम कविता है। आश्चर्य की बात है कि श्रीवास्तव्यजी ने 'ध्वनि' और 'गुणीभूत व्यङ्ग्य" कविता को छोड़कर उत्तम कविता का ऐसा एक लक्षण बनाया जो साधारण अर्थ-युक्त वाक्यों का ही लक्षण है। कविता का लक्षण तो वह हो ही नहीं सकता। साहित्य-दर्पण के द्वितीय परिच्छेद में विश्वनाथजी ने लिखा है—"वाक्यं स्याद् योग्यता काङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः"। 'उपयुक्त स्थान पर, उपयुक्तपात्र के मुख से, उपयुक्त भाव से, अर्थात् 'योग्यता के साथ' न निकलता तो वह 'वाक्य' अर्थ-युक्त न होकर "उन्मत्त-प्रलाप" होता। उन्मत्त या अज्ञान होने से सब लोग ही अर्थ-युक्त बातें करते हैं। किसी बात में कुछ चमत्कार या बाँकपन न रहने से वह कविता नहीं हो सकती। इसलिये हमारे अलङ्कारिक "रसे सारश्चमत्कारः" सिद्धान्त से चमत्कार को ही कविता का प्राण समझते हैं। आश्चर्य की बात है कि लेखक ने क़लम के ज़ोर से उस चमत्कार को उड़ाकर 'उपयुक्तता' या योग्यता को कविता का प्रधान या एक-मात्र लक्षण बता दिया। लेखक महोदय यदि यह कहें कि 'उपयुक्तता' से वे केवल अर्थ की योग्यता नहीं, भावों की योग्यता (जिसका नाम हमारे आलङ्कारिक "विषयौचित्य" कहते हैं) समझते; तो भी यह कहना आवश्यक है कि यद्यपि वह "विषयौचित्य कविता की उपादेयता के लिए अपेक्षित होता है, पर वह कविता के उत्कर्ष का सहायक हुए बिना उसका प्रधान उपादान (Essential Quality) नहीं हो सकता। कविता का प्राण चमत्कार है।

अब श्रीवास्तव्यजी की कई अर्थालङ्कारों पर विप्रतिपत्ति सुन लीजिये। वे कहते हैं—"बहुत से अलङ्कार तो ऐसे हैं कि उनको अलङ्कार कहना ही हास्यास्पद ज्ञात होता है। उदाहरणार्थ दीपकालङ्कार को ले लीजिये। जहाँ पर बहुत सी क्रियायें हों, पर कारक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या कर्त्ता का नाम एक ही बार लिया जाय, वहाँ दीपकालङ्कार समझिये। अब सोचने की बात यह है कि यह भी कोई अलङ्कार है! यह तो व्याकरण के अन्तर्गत एक प्रकार की वाक्य-रचना-मात्र है। इसको अलङ्कार का पद प्रदान करना हमारी समझ में लड़कों का खेल है। इसका उदाहरण भी देख लीजिये—

"जाति चितै, आवति, हँसति, पूछति बात बिवेक। इसमें चमत्कार क्या है सो पुराने आचार्य ही जानें। × × × यहाँ अलङ्कार कहाँ से आगया?"

मैं पहले ही यह निवेदन कर चुका हूँ कि सब अलङ्कारों में कविता का मूलभूत चमत्कार अपेक्षित है। आलङ्कारिकों ने जो अलङ्कार-लक्षण बतलाया सबमें—"सति चमत्कारे" अर्थात् "वाक्यों में चमत्कार रहे तो"—यह अपरिहार्य अंश ऊह्य रहा है। वे जानते हैं कि धीवान के लिए एक बार बोलना ही काफ़ी है; क्योंकि कोई लड़का अलङ्कार-शास्त्र लेकर खेलने नहीं आवेगा। वे नहीं जानते थे कि अब उनके काव्यलक्षण पर ऐसी अद्भुत बिप्रतिपत्ति आ पड़ेगी। अस्तु, अब दीपक के उदाहरण को ज़रा अच्छी तरह से देख लीजिये। मैं श्रीवास्तव्यजी के सन्तोष के लिए—उनका काव्य-लक्षण ('उपयुक्त स्थान पर' इत्यादि) माने लेता हूँ। यहाँ वक्ता नायक या नायिका नहीं, पर नायिका की अवस्था के वर्णन-कारी कवि है। मैं पूछता हूँ कि कवि ने 'जाति, चितै, आवति, हँसति आदि क्रिया-पदों के एकत्र समावेश से क्या भाव जताया? क्या व्याकरण के एक नियम का उदाहरण देना ही उनका उद्देश्य था? जिनको लोक-चरित्र में कुछ भी गति है, वे समझेंगे कि यह नायिका नायक के ऊपर अनुराग-युक्ता है। इसलिए नायक के सामने उसकी यह दशा हुई कि वह कामके लिए अगर चली जाती, तो दूर से देखती और लाचार होकर प्रिय के सामने फिर आती, कुछ मुसकराकर अपने भाव के इशारों से बताती, फिर बिना कुछ कहे इतनी देर तक वहाँ ठहरना बेशरमी की बात है, इसलिये छल से कुछ बात भी पूछती। क्या इस वाक्यार्थ में कुछ चमत्कार नहीं है? सहृदय समालोचक जानते हैं कि फ़रमा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशा की कविता, चाहे उसको कवि-राज (Poet Laureate) भी करे, उच्चकोटि की नहीं होती। दृष्टान्तके लिए ऐसे दोहार्द्ध में कविता-रचना साधारण काम नहीं है; फिर भी इसमें कविता का प्राण कुछ चमत्कार आगया। इसलिए पुराने आचार्य्यों का उपहास करना तो ठीक नहीं प्रतीत होता। उन्हें तो धन्यवाद ही देना चाहिये। (अपूर्ण)

श्रीसतीशचन्द्रराय एम्० ए०

कविता और कवित्व

[गतांक से आगे]

विश्व भर में, सनातन से, कवियों का सम्मान होता आया है। साम्राज्यों में वह सदैव समादृत होते रहे हैं और जातियों ने सदैव उनका उत्साहवर्द्धन किया है। अरब देश में कवि जाति का गौरव समझा जाता था। जब किसी कुटुम्ब का कोई व्यक्ति कवियों में परगणित किया जाता था तो और कुटुम्बों के लोग उस कुटुम्ब को (जिसमें वह कवि होता था) आकर बधाई देते थे और सब लोग एकत्रित होकर उत्सव मनाते थे। स्त्रियाँ अपने विवाह के समय के वस्त्राभूषण से सुसज्जित होकर और स्वाभिमान से पूरित होकर इस आशय के गीतों का गान करती थीं कि "हम लोगों में ऐसा व्यक्ति हुआ, जो समस्त कुटुम्ब की नाक रखनेवाला, उनकी भाषा और भावों की रक्षा करनेवाला और उनके उन कार्य्यों का, जिससे उनकी कीर्ति का संदेश भविष्य तक पहुँचेगा, उल्लेख करनेवाला है"। कवियों की चापलूसी यहाँ तक की जाती थी कि यदि वह कोई कठिन प्रश्न कर बैठता था तो भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्यक्ष में उसकी उपेक्षा न की जाती थी। किसी समय आशा बहुत सा द्रव्य लिये बनीआमर के नगर में होकर निकला और डाकुओं के भय से, मार्ग में, अलासा के पुत्र अलकुमा के यहाँ ठहर गया और उसका शरणागत बना। उसने बड़े प्रेम और सम्मान से उसे ठहराया। आशा ने कहा—"तूने मुझे नर-नाग से सुरक्षित रक्खा? अलकुमा बोला—"हां"। आशा ने पूछा—"और मौत से"? वह बोला—"यह तो मेरी सामर्थ्य से बाहर है।" आशा यह सुनकर वहाँ से रुष्ट होकर चला गया और आमिर के पुत्र अलतुफ़ैल के यहाँ पहुँचा। उसने उपर्युक्त दोनो बातें स्वीकार कीं। आशा ने पूछा—"मौत से तूने मेरी रक्षा कैसे को?" वह बोला—यदि मेरी रक्षा में तेरी मृत्यु हो जायगी तो मैं तेरे बदले पर्याप्त द्रव्य तेरे कुटुम्बियों के पास भेज दूँगा।" आशा बहुत प्रसन्न हुआ और अपने काव्य में उसकी प्रशंसा और अलकुमा की बुराई लिखी।

अरब के सदृश अन्य देशों में भी कवियों के सम्मान की प्रायः यही दशा रही है। प्रजासत्तात्मक राज्यों में, जहाँ सम्राट् पूर्ण स्वतंत्र नहीं होता, ऐसे सम्मानों से कविता का पूर्णतया प्रसार होता है। कवि जबतक समस्त जाति में प्रख्यात नहीं हो जाता, राज्य से उसको कुछ बल और साहाय्य प्राप्त नहीं हो सकता। किसी जाति में, उसी कवि का सम्मान हो सकता है जो कवि-कर्त्तव्य को बिना किसी आशा और भय के पूर्ण स्वातंत्र्य और निर्द्वंदता के साथ निर्वाह करता है। न उसको राज्य-दंड का कुछ भय है और न सम्राट् द्वारा बन्दी किये जाने की आशंका। किन्तु एकसत्तात्मक राज्य में कवि को हर प्रकार से राज-दरबार की इच्छा, रुचि और प्रसन्नता का ध्यान रखना और स्वतंत्रता से हाथ धोना पड़ता है—यहाँ तक कि उसके हार्दिक भाव और विकार, जिनके बिना काव्य को आत्मा-रहित पंजरमात्र कहना चाहिये, शनैः-शनैः सभी मिट्टी में मिल जाते हैं। न वह अपनी इच्छा से किसी की प्रशंसा करसकता है और न सच्चे हृदय से किसी की बुराई कर सकता है।

इसलाम की प्राचीनकालीन कविता में जब तक दासत्व-भाव और ख़ुशामद ने स्थान नहीं पाया था, तब तक उसमें यथार्थ मनो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारों और वास्तविक हार्दिक उद्गारों का समावेश था। जो लोग प्रशंसा के पात्र थे उनकी प्रशंसा और जो निन्दा के योग्य थे उनकी निन्दा की जाती थी। जब कोई न्याय-प्रिय, राजा या मंत्री अपनी जीवनलीला समाप्तकर, परलोक-गामी हो जाता था, तो उसके लिये सत्य-हृदय से, अत्यंत करुणोत्पादक शब्दों में स्मरणीय पद्य लिखे जाते थे और कपटी, क्रूर, कुचाली तथा आततायियों की निन्दा उनके जीवन-काल में ही की जाती थी। जातीय नेता तथा राजा महाराजाओं के कार्य्य-क्रम में जो-जो संकट अथवा दुर्घट घटनाएँ उपस्थित होतीं; उनका वर्णन उन लोगों की विजयों के साथ बड़ी ओजमयी और भाव-पूर्ण कविता में किया जाता था। कुटिल काल के कौटल्य के प्रभाव से, जब प्रेमियों से वियोग होजाया करता था तो उसपर बड़े-बड़े उत्तम विरह-काव्यों की रचना की जाती थी। पतिव्रता स्त्रियाँ अपने पतियों की वियोगावस्था में तथा दाक्षिण्यादि गुण-सम्पन्न-पति अपनी प्रेयषियों के विरह में बड़े मार्मिक पद्य लिखा करते थे। चारण-भूमि, जल-स्रोतों और घाटियों के सामीप्य और पूर्व प्रवासों के साक्षात् चित्र लोगों के सम्मुख खड़े करदिये जाते थे। अपनी उटनियों की स्वामिभक्ति, प्रेम और चपल घोड़ों की सहानुभूति-प्रियता और आज्ञापालनादि गुणों का वर्णन करते थे। वृद्धावस्था की असहनीय वेदनाएँ—युवावस्था की सुख-समृद्धि और बाल्य-काल की स्वाभाविक निर्द्वन्दतादि भी कविता द्वारा प्रकट किये जाते थे। अपने प्रवासों के समय, अपने बालकों के वियोग तथा उनकी दर्शन-लालसा का वर्णन करते थे। देश-बन्धुओं, सुहृदों और अपने समकालीनों की यथार्थ प्रशंसा और उनकी मृतावस्था में कविता द्वारा शोकोद्गार किया जाता था। अपनी बीती बातें, वास्तविक कष्टों और यथार्थ प्रसन्नताओं के वर्णन करते थे। अपने कुटुम्ब के बल-वीरत्व और दातव्यशीलता दिगुणों पर अभिमान करते थे। यात्राओं के श्रम और कठिनाइयों के वर्णन करते थे। मार्ग-वर्ती स्थान और ग्राम, पुर और नगर तथा सोते सब नामोल्लेख-सहित वर्णित किये जाते थे इसके साथही जो जो बुरे-भले भाव उनको प्रभावान्वित किया करते थे उनका अत्यंत आकर्षक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दों में वर्णन कियाजाता था, स्त्री, बालक, बन्धु-बान्धव तथा प्रेमी-प्रेमिकाओं से बिछुग होने की दशाओं का दिग्दर्शन कराते थे। इसी प्रकार सम्पूर्ण स्वाभाविक विकार जो एक कवि के हृदय में प्रस्फुटित हो सकते हैं, क्रमशः सभी उनके वर्णनों में विद्यमान थे। किन्तु धीरे-धीरे दरबार के दबाव और चापलूसी ने वह सब अमृतमय स्रोत अवरुद्ध कर दिये। कवि-समुदाय के लिये साधारणतया दो रङ्गस्थल अवशेष रहगये, जिनसे वह अपनी लेखनी का कौशल दिखला सकते थे—एक प्रशंसात्मक काव्य, जिससे नायक के प्रसन्न करने का उद्देश्य सिद्धि होता था और द्वितीय श्रृंगार-रस प्रधान काव्य, जिनसे उनके आत्म-विकार प्रबल होते थे। किन्तु कालान्तर में जब उक्त दोनों विषय शुष्क फलकी भाँति निरस ज्ञात होने लगे और राजा-महाराजा तथा लक्ष्मी-पुत्रों की सभाओं को उष्ण करने के लिये काष्ट की आवश्यकता हुई तो मनोरंजन, हास्य, विनोद, दोषान्वेषण और निर्लज्जता का दफ़्तर खुलगया। बहुत से कवि इसी पंथ के पांथ बने और शनैः-शनैः सभी समाज इस रंग से रंजित होगया। यद्यपि, आदि से अन्त तक प्रत्येक देश और काल के कवियों में प्रायः ऐसे बन्दनीय-व्यक्ति भी पाये जाते हैं जिनके काव्य पर मुसलमान गर्व कर सकते हैं; किन्तु समष्टि पर ध्यान देते हुए यही कहना पड़ेगा कि उनमें प्रायः ऐसे ही कवि हुए जो अपने परवर्ती कवियों के लिये काव्य का मार्ग अत्यंत संकुचित करगये अथवा उनके लिये अत्यंत वर्जनीय नमूने छोड़गये हैं।

परवर्तियों ने जब आँखे खोलकर अपने पुरुषाओं द्वारा छोड़े हुए ऐश्वर्य्य में, प्रशंसात्मकपद्य और श्रृंगाररस-प्रधान प्रेम-काव्य, विरह-काव्य, निन्दात्मकपद्य और निर्लज्जता से पूरित काव्यों के अतिरिक्त और सामिग्री बहुत कम देखी तो उन्होंने काव्य को इन्हीं इने-गिने कुछ विषयों पर निर्भर समझा। परन्तु इन विषयों में भी—"जब चिड़ियाँ चुँगगई खेत"—क्या रक्खा था? प्रशंसा की नीव यदि सत्य पर निर्भर हो और प्रेम में यथार्थता और वास्तविकता ने स्थान पाया हो तो कवि के लिये कविता-सामिग्री की कुछ कमी नहीं है। जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार सृष्टि-क्रम में प्रायः दो वस्तुएँ एकसी नहीं पायी जातीं, इसी प्रकार एक मनुष्य का सौन्दर्य्य और गुण दूसरे के सौन्दर्य और गुण से और एक के हार्दिक भाव दूसरे के हार्दिक भावों से नहीं मिल सकते। परन्तु जब प्रशंसा सरासर मिथ्या और प्रेम केवल बनावटी हो तो कवियों को बहुधा वही बातें, जो वे पीछे कह गये हैं, दोहरानी पड़ती हैं।

अब जब परवर्तियों ने अपने पूर्ववर्तियों का अनुकरण करना आरम्भ किया तो केवल विषय में ही नहीं; किन्तु भावों में, शब्दों में, पद-योजना में, वर्णन-शैली में, उपमा और रूपकों में, ध्वनि और तुकान्त में, यहाँ तक कि प्रत्येक बात में उनका पदानुसरण करना स्वीकार किया। पुनः अन्त में एक ही लकीर पीटते-पीटते अजीर्ण हो गया तो भोंड़ी रचनाएँ होने लगीं, जिनको—"निज कवित्त केहि लागत न नीका। सरस होहि अथवा अति फीका" के अनुसार केवल वही अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू बनकर उनकी प्रशंसा कर सकते हैं। यद्यपि कविता को आरम्भ में समाज की कुटेंव भ्रष्ट किया करती है, किन्तु जब कविता बिगड़ जाती है तो उसकी विषैली वायु समाज के लिये भी अत्यंत हानिकर हो जाती है। जब जाति में सर्वथैव अनौचित्य का साम्राज्य स्थापित हो जाता है तो मिथ्यात्व-प्रधान अतिशयोक्तियों के श्रवण करने के लिये सभी के श्रवणों को एक प्रकार की टेंव सी पड़ जाती है। जिस काव्य में असत्य और अत्युक्ति का अधिक प्रयोग होता है, उसके रचयिता को अधिक बड़ाई मिलती है। वह अत्युक्ति के कथन में और भी अधिक उपद्रव मचाता है, जिससे अधिक वाहवाही मिले। उधर उसकी रुचि सत्य से हटती जाती है और इधर असत्य और निराधार बातें ध्वनि और तुकान्त की उत्तमता के साथ पद्य को माधुर्य्य-लालित्य-मिश्रित चित्ता-कर्षक-लहरी में सुनते-सुनते समाज की सहृदयता भी विषैली हो जाती है। सत्य और वास्तविकता की ओर से लोगों की अभिरुचि नित्यप्रति कम होती जाती है। अद्भुत बातों, असत्य कथाओं और अस्वाभाविक वर्णनों से मन विकसित होने लगता है। सत्य ऐति-हासिक घटनाओं के सुनने की आकांक्षा नहीं रहती, ऊँटपटाँग

२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानियाँ और असत्य कथाएँ वास्तविक बातों से कहीं अधिक रुचिकर ज्ञात होने लगती हैं। भूगोल, गणित और विज्ञान से मन अपरिचित से हो जाते हैं और चुपके ही चुपके, अत्यंत दृढ़ता के साथ, दुराचार का साम्राज्य समाज में स्थापित हो जाता है। और जब असत्य के साथ ही साथ असभ्यता और छिछोड़पन भी काव्य की सुमधुर चाशनी में पगजाते हैं तो जातीय सदाचार को बिलकुल घुन लगजाता है।

सब से बड़ी हानि, जो कविता के भ्रष्ट या परिमित होने से देश की होती है, वह उसके साहित्य और भाषा का विनाश है। जब मिथ्यात्व और वक्रोक्ति का प्राधान्य प्रायः सब कवियों की कविताओं में हो जाता है तो उसका प्रभाव ग्रन्थकर्ताओं के लेखों और रचनाओं, वक्ताओं की वक्तृताओं तथा देशके नेताओं के नित्य-प्रति के बोलचाल पर भी पहुँच जाता है। क्योंकि प्रत्येक भाषा का सर्वोत्तम और प्रधान भाग वही पद-योजना, शब्द-समूह और लोकोक्ति-संग्रह समझा जाताहै जो कवियोंके प्रयोगमें आता है। बस, जो व्यक्ति देश-भाषा की लेखन-कला, वक्तृत्व-कला और नित्य-प्रति को व्यावहारिक भाषा में अन्तर जानना चाहता है उसको अवश्यही कवियों की भाषाका पदानुसरण करना पड़ता है। अतः अत्युक्ति का प्रवेश साहित्य की नस-नस में हो जाता है। कवियों की उद्दंडता और अश्लील-प्रियता से भाषा में प्रायः असभ्यतापूर्ण और घोर लज्जाजनक शब्दों का प्रवेश हो जाता है; क्योंकि कोषों में वही शब्द प्रामाणिक और टकसाली समझे जाते हैं जिनकी प्रौढ़ता और सत्यता कवियों के वर्णनों द्वारा सिद्ध हो चुकी हो। बस, जो व्यक्ति देश-भाषा का इतिहास लिखने बैठता है उसको सर्व-प्रथम कवियों की कृतियों की टटोल करनी पड़ती है। पुनः, जब कविता कुछ इने-गिने विषयों में ही परिमित होजाती है और उसका आधार-स्तम्भ केवल समाज का अनुकरण मात्र रह जाता है तो भाषा अपने अधिकार-स्थल को विस्तीर्ण करने के बदले उलटा संकुचित हो जाती है। भाषा की वह स्वल्प मात्रा, जिसके द्वारा कवि अपनी कुछ साधारण कृतियों का उल्लेख करता है, प्रायः बड़ी वर्णमधुर और हृदय-ग्राही समझी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है और अवशेष शब्द-भंडार और लोकोक्तियाँ ग्राम्यदोष से दूषित बर्बरता की श्रेणी में परगणित होने लगती हैं; और इसके अतिरिक्त कि उनमें से कुछ भाषा-भाषियों के नित्य-प्रति के व्यवहार में काम आयें अथवा कोष-ग्रंथों में सुरक्षित रहें और कालान्तर में वर्जित और निष्प्रयोजनीय कहकर टाल दी जायँ और किसी कार्य्य में नहीं आती, न ग्रंथ-रचयिताओं की रचना में और न वक्ताओं के व्याख्यानों में ही उनका प्रयोग होता है। पूर्ववर्ती कवियों के अनुकरण का फल यह होता है कि जहाँ उन्होंने जिस अर्थ में जिस शब्द का प्रयोग किया है, वहाँ उस शब्द का अर्थ उसी प्रकार प्रयोग में आता है, दूसरी प्रकार से प्रयोग करने का किसी को साहस नहीं पड़ता। जो उक्तियाँ जिस रीति पर वह व्यवहृत कर गये हैं, वह दूसरी रीति पर कदापि घटित नहीं हो सकतीं—जो रूपक उन्होंने अपने वर्णनों में बाँध दिये हैं उनमें बालबराबर भी अन्तर पड़ जाना सम्भव नहीं। भावार्थ यह है कि किसी देश के काव्य का उसके साहित्य के साथ वही सम्बन्ध है जो आत्मा का उसके शरीर के साथ।　　　　(अपूर्ण)

बाबूराम बित्थरिया
"साहित्य-रत्न"

हिन्दी भाषा में अराजकता

इस देश में इस समय सभी बातों में अन्धेर मचा हुआ सा दिखाई पड़ता है। जिसके मन में जो आता है वह उसे ही सही मान कर दूसरों की परवा नहीं करता। खेद की बात है कि यह अराजकता हिन्दी भाषा में भी फैली हुई है। इस लेख में मैं इसी विषय पर कुछ निवेदन करूँगा।

इस समय अ, य और व के व्यवहार में कोई निश्चित नियम देखने में नहीं आता है। कोई 'हुआ' लिखता है तो कोई लिखता है 'हुया'। इसी प्रकार कोई 'हुई' लिखता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कोई 'हुयो'। इसी मतभेद-पूर्ण स्वेच्छाचारिता को हम 'हिन्दी भाषा में अराजकता' मानते हैं।

कुछ क्रियायों, अव्ययों और थोड़ी सी संज्ञाओं के बहुवचनान्त रूपों के लिखने में यह गड़बड़ होती है। जिन क्रिया-रूपों का अन्त या, वा और आ से होता है उनके बहुवचन-रूप लिखने में कुछ लेखक ए, ये और वे तक का प्रयोग करते हैं। हम सबसे सहज उदाहरण लेकर इसकी जाँच करेंगे। माना कि आकारान्त क्रिया-रूप है "हुआ"। इसका बहुवचन रूप, इस रूप को देखकर, साधारणतः "हुए" होना चाहिए; क्योंकि व्याकरण-ग्रंथों में बहुवचन बनाने के नियमों में आ को "ए" कर देना बतलाया जाता है। अब यदि हम "हुया" लिख सकते होते तो अवश्य ही "हुये" लिखना भी शुद्ध होता। किन्तु शायद अधिकांश लेखक "हुया" लिखना अशुद्ध ही बतलावेंगे। तब उसी प्रकार "हुयी" लिखना भी अशुद्ध होना चाहिए। फिर "हुवा" लिखनेवाले सज्जन कम मिलेंगे; किन्तु "हुवे" लिखनेवाले ज़रूर मिल सकेंगे। अब इन तीनों मेंसे कौन सा रूप सही माना जाय—"हुआ" "हुया" या "हुवा", "हुए" "हुये" या "हुवे", या "हुई" "हुयी" और "हुवी"। कुछ लेखक ऐसे भी मिलेंगे जो इन सभी रूपों का समर्थन करेंगे!

इसी प्रकार एक दूसरा शब्द लीजिए "गया"। इसके सब रूपों में भी वही गड़बड़ है। कोई "गयो" लिखता है और कोई "गई"। इन दोनों में कौन रूप शुद्ध है?-इसका निर्णय हिन्दी के विद्वान न करेंगे तो और कौन करेगा? यदि इसका निर्णय शीघ्र नहीं किया जाता तो भला अन्य भाषियों को जब हम हिन्दी सिखलाते हैं तो उन्हें कौन सा रूप शुद्ध बतलावें? ऐसी अराजकता देखकर उनके मन में हिन्दी के प्रति श्रद्धा कम न हो जायगी? अव्ययों को ही लीजिये। ऐसे दो शब्द मुझे याद हैं—लिए और चाहिए। अब यदि हम "लिए" को "लिये" के रूप में लिखें तो फिर "लिया" के बहुवचन रूप "लिये" और इसमें भेद ही क्या रह जाता है? इस भेद को रखने के लिए क्या हमारे लिए यह आवश्यक नहीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि हम दोनों को अलग-अलग रूप दें? यदि 'लिए' को हम एकारान्त रूप ही देने का निश्चय कर लें तो आप ही यह इच्छा होगी कि एकारान्त और येकारान्त अव्ययों को हम एक समान रूप दे और तब "चाहिए" को भी एकारान्त ही लिखें। फिर संज्ञाओं के बहुबचनान्त रूपों का झगड़ा है। "लतायें" लिखना शुद्ध है कि "लताएँ"—"स्त्रियों" या "स्त्रिओं"? इस प्रश्न का भी निर्णय हो जाना चाहिए।

इन प्रश्नों का निर्णय करने में पहले इस बात का विचार करना होगा कि इन नियमों का विकास किस प्रकार हुआ था। आकारान्त शब्दों के बाद अविकृत स्वरों का आना कानों को खटकता है इसलिए किसी ने सोचा होगा कि विकृत स्वरों (आधे स्वर, आधे व्यञ्जन) का आना ही ठीक होगा। अतएव "जाना" धातु का भूतकालिक रूप लिखने में कुछ नियमों के अनुसार, जिनसे हमें यहाँ कुछ मतलब नहीं है, 'ज' का 'ग' बनाया गया और उसके बाद 'गआ' लिखने के बदले 'गवा' लिखा गया जिससे 'गया' बना। आकारान्त शब्द के बाद फिर शुद्ध "आ" का आना खटकता है इसलिये "आआ" न लिखकर "आया" ही लिखा गया। फिर "आयी" और "आई" में कोई विशेष अन्तर न रहा; क्योंकि "यी" और "ई" के उच्चारण में अन्तर बहुत ही कम है। धीरे-धीरे भाषा का परिष्कार होते-होते "गवा" का "गया" होगया। उकारान्त शब्दों की बात ही अलग है। वे हर हालत में अविकृत स्वरों को सहन कर सकते हैं बल्कि उन्हें विकृत स्वर ही उतने पसन्द नहीं हैं। इसलिए हुआ का रूप बदला नहीं, हां जब "भवा" लिखते थे तो उसमें "भआ" लिखना अवश्य असम्भव था। अब बचती हैं ई या इकारान्त धातुएँ। ऐसे शब्दों के अन्त में "आ" लिखना कठिन है इसलिए "या" लिखते हैं। जैसे "लिया" न कि "लिआ"। साथ ही साथ हम यह भी देख सकते हैं कि 'आ' और 'ओ' को छोड़कर इ, ई, और ए, में कहीं भी 'य' का मिश्रण होने से उच्चारण में कोई अन्तर नहीं पड़ता। तब हम जो शब्द एकारान्त लिखसकते हैं, अवश्य ही उन्हें येकारान्त भी बना सकते हैं। साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही साथ जहाँ अविकृत स्वरों से काम चल जाय वहाँ विकृत स्वरों को छोड़ भी सकते हैं। अभी तक तो मेरी इस दलील से यही नतीजा निकलता है।

किन्तु एक बात और है जब हम एक बार "गया" "लिया" या "हुआ" लिख चुके तब मेरी समझ में नियम की सुगमता के ख़याल से इनके आगे सभी रूपों में विकृत स्वर ही लिखना चाहिए। उस दशा में सीधा नियम यही होगा कि सभी "अकारान्त और इकारान्त" शब्दों या धातु-रूपों के अन्त में 'आ' के स्थान पर 'या', उकारान्त शब्दों में 'आ' और ए तथा ई का योग कर उनके दूसरे रूप बनाना चाहिए। संज्ञाओं का बहुवचन रूप लिखते समय "आ" और "उकारान्त" शब्दों के अन्त में अविकृत और शेष सभी के अन्त में आवश्यकतानुसार विकृतस्वर यानी 'ये' या 'यो' का प्रयोग होना चाहिए।

अब अव्ययों की बारी आती है उनके विषय में मैं ऊपर जो निवेदन कर आया हूँ, क्या वह हिन्दी के विद्वानों को ग्राह्य होगा?

हाँ, मैं एक बात लिखना भूल गया हूँ। वह बात है आदरार्थक आदेश-वाचक क्रिया-रूपों के सम्बन्ध की। भला आप लीजिये, कीजिये, कहिये इत्यादि को किस प्रकार लिखियेगा? उनके अन्त में ए आवेगा या ये? मेरी समझ में, सुगमता के विचार से, इसके बाद जब हम शुद्ध ए लिख सकते हैं तब इन शब्दों के अन्त में 'ये' के बदले 'ए' लिखना ही अच्छा होगा।

अन्त में मैं एक बात कहकर यह नोट समाप्त करूँगा। मुझे इस समय एक अहिन्दीभाषी प्रान्त में रहकर हिन्दी-माता की थोड़ी-बहुत सेवा करनी पड़ती है। यहाँ मेरे साथ रहनेवाले सैकड़ों भाइयों में मेरे ऐसे तीन ही चार आदमी हैं जिन्हें हिन्दी भाषी कहलाने का गौरव प्राप्त है। तब भला मेरे मन में ऐसी शङ्काएँ उठें तो फिर उनका समाधान कौन करे? इस कारण मैंने सबसे बड़े न्यायालय—विद्वन्मण्डली—में अपने विचार और अपनी फ़रियाद पेश की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि उनके कानों तक इसकी सुनवाई भी हो जाय मैं अपने को तो धन्य मानूँगा। उसके बाद जानें वे और जानें उनका काम। मैं इस प्रश्न के निर्णय करने में योगदान करने का साहस नहीं रखता। मैं तो केवल प्रार्थना भर कर सकता हूँ। हो सकता है कि ऐसी शङ्का आना ही मेरी भूल हो, किन्तु यदि वे यह भी कोई मुझे सुझा दें तो मैं उनका बड़ा आभारी हूँगा। इसलिए मैं समझता हूँ कि केवल सवाल छेड़ देने भर में ही मैंने कोई धृष्टता नहीं की है। यदि की भी हो तो उसकी मार्जना करना भी विद्वानों का ही काम है।

मृत्युञ्जयप्रसाद
['विद्यालङ्कार', 'विशारद']

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-समाचार

संवत् १९८३ वि० की सम्मेलन-परीक्षाओं के कार्य्याधिकारियों की सूची

प्रथमा परीक्षा के परीक्षक

साहित्य १
(१) श्रीयुत पं० गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' बी०ए० दारागञ्ज, प्रयाग
(२) ,, पं० श्रीकृष्ण शुक्ल विशारद, लहँगपुरा, शरकी, काशी
(३) ,, पं० शालग्राम द्विवेदी, माडल हाई स्कूल, जबलपुर

साहित्य २
(१) पं० रामलषणजी शुक्ल बी० ए० जमनामिशन कालेज, इलाहाबाद
(२) पं० बाबूराम बित्थरिया साहित्य-रत्न, सिरसागंज, मैनपुरी
(३) पं० भागीरथप्रसादजी दीक्षित विशारद C/o पं० बदरीनाथ भट्ट बी०ए०, हुसेनगंज, लखनऊ

साहित्य ३
(१) बाबू मदनलाल जैन बी०ए०, एल०टी. गवर्नमेंट हाई स्कूल, मथुरा
(२) गोस्वामी पं० ब्रजनाथजी शर्म्मा शीतलगली आगरा
(३) बाबू रामधारीप्रसादजी विशारद, प्रधानमंत्री वि० प्रा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, मुजफ्फरपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास

(१) प्रो० श्रीनिवासजी चतुर्वेदी एम० ए० पीलिया-खाल शहर, इन्दौर

(२) पं० सद्गुरुशरणजी अवस्थी बी० ए० प्रेम-मन्दिर, कानपुर

(३) पं० ताराचन्दजी अग्निहोत्री बी० ए० बागला हाई स्कूल, हाथरस

भूगोल

(१) बाबू कौशलकिशोरजी बी०ए० एफ़० आर०जी० एस० ट्रेनिङ्ग कालेज, इलाहाबाद

(२) पं० दीनानाथ जी भार्गव एम्० ए० इन्टरमीजियट कालेज, खुरजा

(३) रामनारायण मिश्र बी० ए० "भूगोल" कार्यालय मेरठ

अङ्कगणित

(१) बाबू आनन्दस्वरूप जी सिनहा एम्० ए० एल० टी०, डी० ए० वी०कालेज, देहरादून

(२) मुरलीमनोहरजी दीक्षित बी० ए० एल्-एल्० बी० वकील, परेड, कानपुर

(३) श्रीयुत नन्दरामजी बी० ए० देवनागरी-हाई स्कूल, मेरठ

स्वास्थ्यरक्षा—पं० गंगादत्तजी पांडेय बी० ए०, एल्० टी० देव-नागरी-हाई स्कूल, मेरठ

ड्राइङ्ग—श्रीयुत विनायकक्रष्णजी महादाने दारागंज, इलाहाबाद

संस्कृत—श्रीयुत पं० सूर्यनारायणजी शास्त्रीजी संस्कृत-कालेज, जयपुर

धर्मशास्त्र—श्रीयुत साहित्याचार्य पं० गयाप्रसादजी शास्त्री "श्रीहरि" हिन्दी-विद्यापीठ प्रयाग,

शासन-पद्धति—नरेन्द्रदेवजी एम्० ए० काशी विद्यापीठ, काशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यमा

साहित्य १
(१) श्रीयुत पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल, काशी
(२) चतुर्वेदी पं० रामनारायणजी मिश्र बी० ए० बादशाही मंडी इलाहाबाद
(३) बाबू रामचन्द्रजी वाग्मी-शास्त्री प्रधानाध्यापक पालीवाल ब्रह्मचर्य्याश्रम, देहरादून

साहित्य २
(१) श्रीयुत कृष्णबिहारी जी मिश्र बी०ए० एल्-एल्० बी० "समालोचक" सम्पादक, मॉडल हाउस, लखनऊ
(२) पं० ठाकुरप्रसादजी शर्मा एम्. ए. सुपरिंटेंडेंट म्यूनिसिपल बोर्ड, काशी
(३) सेठ कन्हैया लालजी पोद्दार बेलनगंज, आगरा

साहित्य ३
(१) श्रीयुत पं० गुरुप्रसादजी पांडेय साहित्य-रत्न एम० ए०, एल्-एल्० बी०, दीवानी मिसिल, फ़ैज़ाबाद
(२) चम्पालाल जी मिश्र बी० ए० डिप्टी डाइरेक्टर आफ़ इन्डस्ट्रीज़, कानपुर
(३) बाबू रामचन्द्रजी वर्म्मा नागरी प्रचारिणीसभा, काशी

साहित्य ४
(१) श्रीयुत प्रो० धीरेन्द्र जी वर्मा एम्० ए० प्रयाग-विश्वविद्यालय, प्रयाग
(२) पं० शुकदेवविहारी जी मिश्र बी० ए० दीवान छतरपुर
(३) प्रो० धर्मेन्द्रनाथजी तर्क-शिरोमणि एम्०ए०, मेरठ

इतिहास
(१) बाबू साँवलिया-विहारीलालजी वर्मा एम्० ए० बी० एल०, छपरा
(२) श्रीयुत जयचन्द्र विद्यालङ्कार मन्त्री पंजाब-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, लाहौर
(३) श्रीयुत् बनारसीदासजी सक्सेना एम् ए०, प्रयाग-विश्वविद्यालय, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास
(१) बाबू कालिदास कपूर एम्० ए०, एल्-टी० कालीचरण हाईस्कूल, लखनऊ
(२) प्रो० एम्० डी० त्रिपाठी शास्त्री एम्० ए० चन्दौसी

गणित
(१) गणिताचार्य्य पं० अवधजी उपाध्याय हिन्दी-विद्यापीठ, प्रयाग
(२) श्रीयुत् पं० कमलाकरजी द्विवेदी एम्० ए० डिप्टी-कलेक्टर, बलिया

दर्शन—महामहोपाध्याय पं० गिरिधरजी शर्मा चतुर्वेदी, पानदरीबा जयपुर

विज्ञान
(१) बाबू महावीरप्रसादजी श्रीवास्तव्य बी० एस्-सी०, एल० टी० विशारद बेलीगंज, रायबरेली
(२) बाबू राधारमणजी बी० एस्-सी० एल्० टी० गवर्नमेंट हाई स्कूल, बहराइच

ज्योतिष—श्रीयुत पं० इन्द्रनारायणजी द्विवेदी, सरायआक़िल, इलाहाबाद

अर्थशास्त्र
(१) प्रो० बाबू राधाकृष्णजी झा एम्० ए० एक्ज़िबिशन रोड, पटना
(२) प्रो० पं० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० दारागंज, इलाहाबाद

संस्कृत—प्रो० पं० रघुबर-मिट्ठूलालजी शास्त्री एम्० ए० कर्नलगंज, इलाहाबाद

अङ्गरेज़ी—प्रो० पं० रामाज्ञा द्विवेदी एम्० ए० सिविल लाइन्स, कानपुर

कृषिशास्त्र—प्रिंसिपल तेजशंकरजी कोचक बी० एस्-सी- एग्रीकल्चर कालेज, बुलन्दशहर

शरीर-विज्ञान—डॉ० कृष्णरामजी झा एम्० बी० बी० एस० इलाहाबाद

वैद्यक—आयुर्वेदाचार्य्य पं० चतुरसेनजी शास्त्री, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजराती—श्रीयुत कान्तिलाल-छगनलालजी पांड्या प्रो० सेन्टजोन्स कालेज, आगरा

मराठी—श्रीयुत पं० बाबूराव-विष्णुरावजी पराड़कर "आज" सम्पादक ज्ञान-मंडल, काशी

बंगाली—श्री हरिप्रसादजी बाग्ची बी० ए०, एल्-एल्० बी० छिली-ईंट, आगरा

राजनीति—प्रो० गुर्तीवेङ्कटराव एम्० ए० १४४ दारागंज, प्रयाग

समालोचना—श्रीयुत पं० रामचन्द्रजी शुक्ल गुरुधाम, दुर्गाकुण्ड, काशी

स्वरालेखन—पं० निष्कामेश्वरजी मिश्र बी० ए०, काशी

धर्मशास्त्र—साहित्याचार्य्य पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री ओझा-बन्धु कार्यालय, पटना

व्यवस्थापकों की केन्द्र-सहित नामावली

केन्द्र		नाम व पूरा पता
१ अजमेर	श्रीयुत	चाँदकरण शारदा बी० ए०, एल्-एल्० बी० मदार-दरवाज़ा, अजमेर
२ अनूपशहर	,,	होतीलालजी ब्रती ए० बी० हाईस्कूल अनूपशहर
६ अजमतगढ़	,,	हेडमास्टर स्मिथ हाईस्कूल, अजमतगढ़ स्टेट
४ अलीगढ़	,,	हेडमास्टर धर्मसमाज हाई स्कूल, अलीगढ़
५ आगरा	,,	महेन्द्रजी मंत्री नागरी-प्रचारणी सभा, आगरा
६ आज़मगढ़	,,	त्रिवेणीसाहु मंत्री नागरी-प्रचारिणी सभा, आज़मगढ़
७ आरा	,,	सिद्धिनाथसिंहजी मंत्री नागरी-प्रचारिणी-सभा, आरा
८ आलमपुर(झाँसी)		रामचरनलाल त्रिपाठी विशारद, आलमपुर, झाँसी
९ औरैया	,,	लक्ष्मीनारायणजी दीक्षित विशारद औरैया, इटावा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र		नाम व पूरा पता
१० इटावा	श्रीयुत	सूर्यनारायणजी अग्रवाल बी० ए० पुराना शहर, इटावा
११ इन्दौर	,,	बी० एन० देश पाँडेय बंगला नं० १० नया तुको-गंज, इन्दौर
१५ इनानजाँव(ब्रह्मा)		ठाकुर बैजनाथसिंहजी मु० पो० इनानजाँव (ब्रह्मा)
१३ उज्जैन	श्रीयुत्	गोविंदराव-सदाशिव आपटे प्रिंसिपल माधव कालेज, उज्जैन
१४ उन्नाव	,,	रघुबरदयालजी मंत्री डिष्ट्रिकृबोर्ड, उन्नाव
१५ करौली	,,	यच० सी० शर्मन साहित्यपरिषद आफ़िस करौली, राजपूताना
१६ कलकत्ता	,,	लक्ष्मणनारायणजी गर्दे, कलकत्ता
१७ कानपुर	,,	कृष्णरावविनायक फड़के एम० ए० हेडमास्टर मारवाड़ी विद्यालय, कानपुर
१८ काशी	,,	प्रो० लाला भगवानदीनजी हिन्दी-साहित्य विद्यालय, काशी
१९ कानपुर (नबाबगंज)	,,	शंकरप्रसादजी भार्गव एम्० ए० प्रिंसिपल सनातन-धर्म कालेज नबावगंज, कानपुर
२० कोटा	,,	राघवेन्द्रलालजी हेडमास्टर नार्मल स्कूल, कोटा
२१ खुर्जा	,,	लक्ष्मीनारायणजी माथुर बी०ए०एल्०,टी० खुर्जा
२२ खंडवा	,,	सिद्धनाथ-माधव आगरकर कर्मबीर-कार्यालय खँडवा
२३ खाचरौद	,,	सज्जनसिंहजी खन्ना मंत्री सज्जन-मित्र-मंडल खाचरौद
२४ खैर	,,	लाला आपप्रकाश जी सेक्रेटरी वैश्य स्कूल, खैर, अलीगढ़
२५ गाडरवारा	,,	जगतनारायणाचार्य हिन्दी-मिडिल स्कूल गाडरवारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र		नाम व पूरा पता
२६ गया	श्रीयुत्	कविरत्न मोहनलाल महतो गयावाल, साहित्यालंकार ऊपरडीह, गया
२७ गंगधार	,,	मुन्शी भवानीलालजी साहब वकील, गंगधार, झालावाड़
२८ गोरखपुर	,,	प्रसिद्धनारायणजी मिश्र एम० ए० हेडमास्टर सी० ए० वी० स्कूल शीशमहल, गोरखपुर
२९ गोगरी	,,	गदाधरप्रसादजी अधिष्ठाता हिन्दी-साहित्य-परिषद, गोगरी
३० चूरु	,,	धनपतिसिंहजी कोठारी मंत्री सरदार-विद्यालय चूरु
३१ छपरा	,,	रायसाहब बाबू महेन्द्रयसादजी बी० ए० बिहार बैंक, छपरा
३२ जबलपुर	,,	रायसाहब पं० रघुबरप्रसादजी द्विवेदी बी० ए० प्रिंसिपिल हितकारिणी हाईस्कूल, जबलपुर
३३ जयपुर	,,	भट्ट मथुरानाथजी शास्त्री कविमंडल, नागरपाड़ा, जयपुर
३४ जीरापुर	,,	ठाकुर सावलसिँहजी सबइन्सपेक्टर आफ़ पुलीस जीरापुर होल्कर स्टेट
३५ जोधपुर	,,	पं० गोविन्दनारायणजी शर्म्मा असोपा बी०ए० दधिमती-दीवान, जोधपुर
३६ जहानाबाद	,,	रामसुभग पाठक मंत्री हिन्दी-साहित्य-समिति जहानाबाद (गया)
३७ झांसी	,,	विपिनविहारीजी बेनर्जी हेडमास्टर मेकडानल हाई स्कूल, झाँसी
३८ टेहरी	,,	श्रीराम शर्मा बी० ए० टेहरी, गढ़वाल
३९ डग	,,	डाक्टर रामकुमार साहब डग, झालावाड़
४० रिहाबाड़ी (डिब्रगढ़)	,,	अवधविहारीसिंहजी शर्म्मा रिहाबाड़ी, आसाम
४१ दानापुर	,,	दशरथ पांडेय राष्ट्रीय विद्यालय, दानापुर
४२ देवरिया	,,	पं० नरेशप्रसादजी मिश्र अध्यापक गवर्नमेंट हाई स्कूल, देवरिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र		नाम व पूरा पता
४३ देहरादून	श्रीयुत्	लक्ष्मणप्रसादजी एम० ए० प्रिंसिपिल डी० ए० वी० कालेज, देहरादून
४४ देहुनी(गया)	,,	नृसिंहनारायणजी मंत्री नवयुवक-साहित्य-परिषद् देहुनी, गया
४५ नवद्वीप-	,,	कालिका शर्म्मा वेदविद्यालय नवद्वीप, नदिया
४६ नवलगढ़	,,	शिवप्रसादजी शुक्ल मुख्याधिष्ठाता शेखावटी ब्रह्मचर्य्याश्रम, नवलगढ़
४७ नागपुर	,,	गोमतीप्रसादजी अग्निहोत्री प्रो०हिस्लाप कालेज नागपुर
४८ नेमावर	,,	शिवनारायणपुरी महन्त सिद्धेश्वर मठ नेमावर
४९ नारायणगढ़	,,	रणछोड़दास साधु हेडमास्टर वर्नाक्यूलर फ़ाइनल स्कूल नारायणगढ़ (होल्कर स्टेट)
५० प्रयाग	,,	प्रधानाध्यापक हिन्दी-विद्यापीठ हि० सा० सम्मेलन, प्रयाग
५१ पथरिया	,,	विश्वनाथनारायण आपटे पथरिया दमोह
५२ फरुख़ाबाद	,,	लक्ष्मीनारायणजी शास्त्री विद्यारत्न-प्रधानाध्यापक सना० धर्म वि० फ़रुख़ाबाद
५३ फैज़ाबाद	,,	रघुनाथ भट्टाचार्य्य हेडमास्टर मनोहरलाल हाई स्कूल, फैजाबाद
५४ फिरोज़ाबाद	,,	हेडमास्टर एस० आर० सी० वी० हाई स्कूल, फ़ीरोज़ाबाद
५५ फुलवरिया	,,	लक्ष्मीनारायणजी झा, फुलवरिया सुगौली-चम्पारन
५६ वक्सर	,,	कपिलदेवजी शास्त्री काव्यतीर्थ, वैद्यविनोद, वक्सर
५७ बलिया	,,	महादेवप्रसादजी गवर्नमेंट ट्रेज़रर, बलिया
५८ बड़ौदा	,,	शान्तिधरजी देसाई, मोदीखाना, बड़ौदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र		नाम व पूरा पता
५९ बम्बई	श्रीयुत	श्रीनिवासजी मंत्री-मारवाड़ी विद्यालय, बम्बई
६० बहेड़ा	,,	राजाप्रसादजी वर्म्मा राष्ट्रीय विद्यालय, बहेड़ा जनकपुररोड, तिरहुत
६१ बाँकीपुर	,,	प्रो० बद्रीनाथजी वर्म्मा पो० आ० दीघाघाट पटना
६२ बाराबंकी	,,	श्रीरामजी तिवारी हेडमास्टर ट्रेनिङ्ग-स्कूल बाराबंकी
६३ बाँदा	,,	मथुराप्रसादजी खरे मैनेजर साहित्य-भवन लिमिटेड, बाँदा
६४ बीकानेर	,,	चुन्नीलालजी शर्म्मा प्रिंसिपल डूंगर कालेज, बीकानेर
६५ बुरहानपुर	,,	रामचरणलालजी दीक्षित बी० ए० एल० टी० विशारद बुरहानपुर।
६६ बैरिया	,,	हरिकृष्णरायजी विशारद मिडिल स्कूल बैरिया (बलिया)
६७ बिहारशरीफ़	,,	महेशलालजी रस्तोगी मु० पो० बिहारशरीफ़ पटना
६८ वैद्यनाथधाम	,,	मुख्याधिष्ठाताजी गुरुकुल वैद्यनाथधाम देवघर, संथालपरगना
६९ बस्ती	,,	साहित्यरत्न पं० शेषमणिजी त्रिपाठी साहित्य-प्रेस, बस्ती
७० बिहटा (पटना)	,,	गंगाशरणसिंहजी खड़गपुर पो० आ० बिहटा, पटना
७१ बड़नगर	,,	हेडमास्टर वर्नाक्यूलर एंग्लो-मिडिल स्कूल बड़नगर (मालवा)
७२ बरुराज	,,	राघवप्रसादसिंहजी संयुक्तमंत्री बिहार प्रादेशिक हि० सा० स० मुजफ्फ़रपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र		नाम व पूरा पता
७३ बांसडीह	श्रीयुत्	हेडमास्टर मिडिल-स्कूल बांसडीह· बलिया
७४ बुलंदशहर	,,	बाबूरामजी शर्म्मा मंत्री नागरी-प्रचारिणी सभा, बुलंदशहर
७५ बैजवाड़ा	,,	मोटूर सत्यनारायणजी आन्ध्रप्रान्तीयहिन्दी-प्रचार कार्यालय-बेजवाडा (आन्ध्र)
७६ बरेली	,,	केकयीनन्दनसहायजी बी० ए० एल्० एल्० बी० वकील, बरेली
७८ भरसर	,,	लक्ष्मणजी तिवारी C/o जगन्नाथ मिश्र बी० ए० मु० पो० भरसर, बलिया
७९ भवानीपुर	,,	गेंदालालजी चौधरी पो० जोतरामराय (पुर्णियां)
७९ भीमपुरा	,,	सीतारामजी पांडेय हेडमास्टर मिडिल स्कूल भीमपुरा
८० भरतपुर	,,	पं० जगन्नाथदासजी अधिकारी विशाद विरक्त-मन्दिर, भरतपुर
८१ मथुरा	,,	लक्ष्मणप्रसादजी बी० ए० एल०-एल बी० वकील हाई कोर्ट, मथुरा
८२ मुजफ़्फ़रपुर	,,	रामधारीप्रसादजी प्रधानमंत्री विहार प्रान्तीय हि० सा० स० मुजफ़्फ़रपुर
८३ मैनपुरी	,,	उमरावसिंहजी मंत्री माथुर चतुर्वेदी पुस्तकालय, मैनपुरी
८४ मुरादाबाद	,,	आनन्दिप्रसादजी मिश्र, किसरौल,मुरादाबाद
८५ मेरठ	,,	गंगादत्तजी पाण्डेय बी० ए० देवनागरी हाईस्कूल मेरठ
८६ मझगवाँ	,,	फुन्दीलालजी त्रिपाठी हेडमास्टर पो० मझगवाँ, सिहोरारोड, जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र		नाम व पूरा पता
८७ मँगरौनी	श्रीयुत	कामताप्रसादजी मंत्री युवक-हिन्दी-वाचनालय मधुवनी, दरभंगा
८८ मद्रास	,,	व्यवस्थापक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रचार कार्यालय, ट्रिप्लीकेन मद्रास
८९ राजनाँदगाँव	,,	जगन्नाथप्रसादजी मिश्र बी० ए० एल्०-एल्० वकील राजनाँदगाँव सी० पी०
९० रामगढ़ (जयपुर)		हेडमास्टर यच० पी० मिडिल स्कूल, रामगढ़ जयपुर
९१ रायपुर	,,	वैरामजी आनन्दसमाजभवन, रायपुर
९२ रायबरेली	श्रीयुत	महावीरप्रसादजी श्रीवास्तव बी० एस्० सी० एल० टी० विशारद बेलीगंज, रायबरेली
९३ रीवाँ	,,	श्री सूरजदीनजी इन्सपेक्टर आफ़ स्कूल्स रीवाँ स्टेट
९४ रंगून	,,	हरिवदन शर्म्मा मंत्री ब्राह्मण सभा, रंगून
९५ रतनगढ़	,,	प्रिंसिपल राजस्थान-ऋषिकुल, रतनगढ़
९६ रानीपुर	,,	लाला लल्लीलालजी रईस रानीपुर, झाँसी
९७ रेवती	,,	हेडमास्टर मिडिल स्कूल, रेवती, बलिया
९८ रोसड़ा	,,	सीतारामजी झा, हिन्दी-मिडिल स्कूल पो० रोसड़ा जि० दरभंगा
९९ लहरियासराय	,,	रामलोचन शरणविहारी मालिक हिन्दी पुस्तक भंडार, लहरियासराय
१०० लाहौर	,,	जयचन्द विद्यालंकार पंजाब प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन लाहौर
१०१ लखनऊ	,,	श्रीरामजी तिवारी वायस प्रिंसिपल कान्य-कुब्ज इन्टर मिजियट कालेज, लखनऊ
१०२ लश्कर	,,	हेडमास्टर इंजिनियरिंग हाईस्कूल, लश्कर
१०३ सिलाव	,,	छेदीलालजीझा विशारद, सिलाव, विहार
१०४ सीतापुर	,,	पं० कालिकाप्रसादजी त्रिवेदी वकील, सीतापुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र		नाम व पूरा पता
१०५ सुजानगढ़	श्रीयुत	शिवचन्दरायजी मंत्री विद्या-प्रचारिणी, सभा सुजानगढ़
१०६ सुरसंड	,,	एस० सी० चौधरी हेडमास्टर हाईस्कूल सुरसंड
१०७ सीतामऊ	,,	प्रधानाध्यापक सर रामसिंह हाईस्कूल, सीतामऊ
१०८ सीतामढ़ी	,,	रायबहादुर नारायणप्रसादबी०ए०कोट बाज़ार सीतामढ़ी
१०९ साईन	,,	सरयूशरणसिंहजी शर्म्मा पो० साईन, मुजफ्फरनगर
११० शाहजहांपुर	,,	एम० सी० एफ़ स् हेडमास्टर मिशन हाईस्कूल शाहजहाँपुर
१११ शकलडीहा	,,	हरनन्दनजी पांडेय हेडमास्टर मिडिलस्कूल शकलडीहा, बनारस स्टेट
११२ होशंगाबाद	,,	नारायणप्रसादजी वकील, होशंगाबाद
११३ हरदा	,,	डी० ए० मगावरन मैनेजर क्रिश्चियन मिशन-हाईस्कूल, हरदा
११४ हरदोई	,,	महेशप्रसाद सिंहजी मंत्री सरस्वती सदन, हरदोई
११५ हाथरस	,,	ब्रजमोहनलाल बी० ए० एल० टी० हेडमास्टर बागला हाईस्कूल, हाथरस
११६ हल्दौर	,,	लाला ठाकुरदासजी चेयरमैन डिस्ट्रिक्टबोर्ड, बिजनौर
११७ हवेली खड़ग-पुर (मुंगेर)	,,	नन्दकुमारसिंहजी हवेली-खड़गपुर मुंगेर
११८ हरिद्वार	,,	केदारनाथजी शर्म्मा ऋषिकुल ब्रह्मचार्याश्रम-हरिद्वार

— परीक्षामंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के उपदेशकजी का भ्रमण-वृत्तान्त

पं० प्रभुदयाल शर्मा तथा पं० राजाराम शर्मा सम्मेलन के उद्देश्यों के प्रचारार्थ भ्रमरण करते हैं। यहाँ उनका ज्येष्ठ तथा आषाढ़ मास का कार्य-विवरण दिया जाता है—

ता० १२।६।२६ से १६।६।२६ तक लखनऊ रहे। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सदस्यों से मिलकर हिन्दी-विद्यापीठ के लिए छात्रवृत्ति दिलाने का उद्योग किया। स्कूल, कालेज बन्द थे। धनीमानी लोग बाहर तथा पहाड़ों पर थे। साधारण सदस्य बनाने का उद्योग किया। माधुरी-सम्पादक श्रीयुत दुलारेलालजी साधारण सदस्य हुए।

ता०।१७।६।२६ को लखीमपुर गये। महेवा के राजासाहब श्रीयुत जयेन्द्रबहादुरसिंहजी से मिले। सम्मेलन के कार्य के सम्बन्ध में आप से २-३ घंटे तक वार्तालाप हुआ। सम्मेलन का कार्य तथा उसकी व्यवस्था का संबाद पाकर आपने बड़ा संतोष प्रकट किया। आपने अपने राज्य में हिन्दी को स्थान दिया है। अपने समस्त कारबार को भी हिन्दी में ही कराने का आपने विश्वास दिलाया है। आपने सहर्ष सम्मेलन का साधारण सदस्य होना स्वीकार किया। डिस्ट्रिक-बोर्ड के मंत्री, चेयरमैन तथा सदस्यों मिले। हिन्दी-विद्यापीठ के लिए छात्र-वृत्ति दिलाने का उद्योग किया। १५) की एक छात्रवृति मिल जाने की आशा की जाती है।

फर्रुख़ाबाद

७-७-२६

लखीमपुर के ज़िले का कार्य समाप्त कर इटावा आये। इटावा में डिस्ट्रिकबोर्ड के सदस्यों तथा श्री पं० श्यामबिहारीलालजी भटेले (चेयरमैन) से मिले। हिन्दी-विद्यापीठ के लिए एक छात्रवृत्ति मिल जाने की आशा है। ४ दिन रह कर रईस, बकील आदि सज्जनों के पास सम्मेलन का सन्देश पहुँचाया। निम्नलिखित महानुभाव साधारणसदस्य बने :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. बाबू सूर्यनारायणजी अग्रवाल बी० ए० इटावा
२. पं० कृष्णगोपालजी एम्० ए०, चौधरी वकील, इटावा
३. पं० बैजनाथ चतुर्वेदी रईस, इटावा

इटावा से मैनपुरी आये । यहाँ ३ दिन हिन्दी-प्रचार किया। श्रीमान राजा साहिब मैनपुरी से मिले २॥ घंटे तक सम्मेलन विषयक बार्तालाप हुआ। आपने उससे सहानुभूति प्रकट की। आपने सहर्ष साधारण सदस्य होना स्वीकार किया । मैनपुरी में ये सज्जन साधारण सदस्य बने—

१. श्री राजाबहादुर श्री शिवमंगलसिंहबहादुरजी राज्य मैनपुरी
२. पं० चिरौंजीलालजी रईस म्युनिसिपल कमिश्नर मैनपुरी
३. पं० राजबहादुरजी पांडेय बी० ए० वकील मैनपुरी
४. श्री पं० अमरनाथजी मिश्र रईस, मैनपुरी

डिस्ट्रिक्टबोर्ड के सदस्यों से भी मिले। राजासाहब मैनपुरी चेयरमैन हैं। आपने हिन्दी-विद्यापीठ के लिए एक छात्र-वृत्ति दिलाने का बचन दिया है।

मैनपुरी से फ़रुख़ाबाद आये। यहाँ कुछ सफलता नहीं हुई।

लखीमपुर
२०।७।२६

यहाँ डिस्ट्रिक बोर्ड के सदस्यों से मिले।

यहाँ से निपटकर १८।७।२६ को लखनऊ होकर हर्दोई गये। वहाँ ज्ञात हुआ कि डिस्ट्रिक्टबोर्ड के लिए जाना आवश्यक है, अतः यहाँ आये। कुछ सदस्यों से पूर्व ही मिल चुके थे। बाबू बलभद्रप्रसादसिंह आदि से मिलना आवश्यक समझ उनके ग्रामों को गये। वहाँ से लौटकर श्री ठाकुर विश्वनाथसिंहजो बी० ए० वकील से मिले। ज्ञात हुआ कि छात्र-वृति देने के लिए प्रस्ताव अभी तक नहीं भेजा गया। देर तक बात चीत करने के बाद आप एतदर्थ राज़ी हुए और प्रस्ताव लिखा दिया। इसके अनन्तर बायस चेयरमैन से मिले। उनसे भी इस विषय में बार्तालाप की। तदनन्तर डिस्ट्रिक बोर्ड के मंत्री बाबू भगवतीप्रसादजी से मिले। पं० मुरलीधरजी भी साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। डिस्ट्रिक बोर्ड के मंत्री महोदय श्री बाबू भगवतीप्रसादजी बड़े हिन्दी-प्रेमी हैं। इन्होंने २५।७।२६ की डिस्ट्रिक बोर्ड की बैठक में इस विषय को रख दिया है। आशा है कि यहाँ से १५) की छात्र-वृति हिन्दी-विद्यापीठ के विद्यार्थी के लिए मिल जायगी।

वकील लोगों को कचहरी में हिन्दी में कार्य करनेके लिए प्रोत्साहित किया। श्रीयुत पं० मुरलीधरजी, पं०शिवनारायणजी, पं० सूर्य्यनारायणजी, ठाकुर विश्वनाथसिंहजी तथा कुँवर खुशबख़्शरायजी ने कहा है कि हम लोग हिन्दी में कार्य्य कुछ न कुछ अवश्य करेंगे। नागरी-प्रचारिणी सभा को भी पुनः जीवित किया। उपर्युक्त सज्जन कार्य्य करेंगे।

राजासाहब महेवा (जिला ख़ीरी) ने अपने यहाँ सब कार्य्य हिन्दी में कर दिया है और सम्मेलन के साधारण सदस्य बने हैं। आगे स्थायी सदस्य हो जायँगे।

आषाढ़ शुक्ल ३ को फ़र्रुख़ाबादसे चलकर चतुर्थी को हर्दोई पहुँचे। वहाँ एक दिन हिन्दी-प्रचार किया। २) सहायक निधि में प्राप्त हुए। श्रीराजा साहब बहादुर श्री दिग्विजयसिंहजी राज्य भंडी के यहाँ गये और उन्हें हिन्दी-साहित्य-सम्मेल का कार्य बतलाया। राजा साहबने सम्मेलन का कार्य जानकर उसके प्रति सहानुभूति प्रकट की। उपदेशक जी ने आपसे यह प्रार्थना की कि राजासाहब महेवा ने हमारी प्रार्थना पर अपने राज्य के सब विभागों में हिन्दी कर दी है, आप भी कृपाकर अपने राज्य में हिन्दी कर दीजिये। राजासाहब ने इस प्रार्थना को स्वीकार किया और राज्यके सब विभागों में हिन्दी कर देने की आज्ञा जारी कर दी। तदनन्तर उन्होंने सम्मेलन का स्थायी सदस्य बनने के लिए आप से प्रार्थना की। राजा साहबने कहा कि इस वर्ष मैं साधारण सदस्य बनता हूँ अगले वर्ष स्थायी सदस्य हो जाऊँगा।

आषाढ़ शुक्ल १४ को लखीमपुर के प्रतिष्ठित रईस श्री कुँवर खुशबख़्श रायजी एम्. ए. एल्.-एल्.-बी. के यहाँ गये। उन्हें सम्मेलन का कार्य बतलाया। कार्य जानकर आपने बड़ी सहानुभूति प्रकट की। आपने सम्मेलन का साधारण सदस्य होना स्वीकार किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयाग कचहरी में हिन्दी-प्रचार

[सम्मेलन के स्थानीय हिन्दी-अर्ज़ीनवीस द्वारा]

१-८-२६ से ता० ३१-८-२६ तक के कार्य का विवरण निम्नलिखित है—

वकालतनामा	वापसीदस्तावेज़	नालिश-इज़ाफ़ा-लगान	दरख्वास्त-नकल
३	३	२५	३

नोटिस	रुक्का (प्रामेसरी नोट)	डिस्ट्रिक्टबोर्ड	मुतफ़र्रिक दरख़ास्तें
२	१	२	३

४२ कुल योग

इज़ाफ़ा लगान के हर नालिश में मुसन्ना व सम्मन भी लिखने पड़े हैं।

सृष्टिनारायण द्विवेदी
हिन्दी-अर्ज़ीनवीस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-जगत्

सोलन में तुलसी-महोत्सव

आज आर्य-समाज मंदिर में बड़ी धूम-धाम के साथ तुलसी-महोत्सव मनाया गया। राय रोशनलालजी जी बार० एट० ला० ने सभापति का आसन ग्रहण किया। आर्य-समाज के नवीन मंदिर के ऊपर के हाल में पहले पहिल गोस्वामीजी की यह अर्चना बड़ी श्रद्धा और प्रेम के साथ हुई। लोगों का विचार है कि सब सम्प्रदाय के लोगों का यह प्रेम-पूर्ण सम्मिलन अभूत-पूर्व ही हुआ है। सोलन-निवासी तथा प्रवासी प्रायः सभी प्रतिष्ठित सज्जन उपस्थित थे।

आम्भभ में कविराज श्रीविद्याधरजी विद्यालंकार ने मंगलाचरण किया। श्री बारिस्टर साहब की पौत्री श्रीअक्षयकुमारी देवी ने स्वागत-गान किया। सभापतिजी ने राष्ट्रीय कल्याण के लिये राष्ट्रीय महाकवि—विशेषकर तुलसीदास—जी के लिये प्रतिवर्ष श्रद्धाञ्जलि समर्पित करने की आवश्यकता बतलाई। फिर सभापतिजी की भतीजी श्रीलक्ष्मी देवी ने तुलसीदासजी द्वारा हिन्दुओं का—विशेष कर नारी जाति का—जो उपकार हुआ है उसे बड़े ही भाव-पूर्ण शब्दों में वर्णन किया। श्रीकेदारनाथ गोयनका (दिल्ली) ने तुलसीदासजी के जीवन पर एक महत्वपूर्ण वक्तृता दी।

एक मुसलमान महोदय ने भक्ति के कई पद गाये। पीछे विद्यालंकार श्रीविद्याधरजी ने रामायण से अनुसूया-सीता-सम्वाद की कथा हरिमोनियम पर गाकर सुनाई और उसकी अति प्रेम-पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोहर शब्दों में व्याख्या की। पश्चात् अध्यापक रामरत्नजी ने बड़े ओजस्वी शब्दों में गोस्वामी तुलसीदासजी के आदर्श, उनके सिद्धान्त उनकी कवित्व-शक्ति, उनका व्यावहारिक ज्ञान तथा उनके अध्यात्म-विद्या-सम्बन्धी चुने-चुने पद सुनाकर उनकी मनोहर व्याख्या की । अनन्तर ब्रह्मचारी हरदत्तजी ने बड़े प्रेम-भरे शब्दों से गोस्वामी जी की महत्वपूर्ण दो बातों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया—एक तो ईश्वर में अनन्य भक्ति दूसरा सर्वसाधारण भी अध्यात्म-तत्वों का प्रचार। गोस्वामीजी की महिमा वर्णन करते-करते स्नातकजी का हृदय प्रेम से गद्गद हो रहा था। सब से पीछे सभापति ने गोस्वामीजी के प्रति भक्त्यांजलि समर्पित की। बैरिस्टर साहब तुलसी और रामचरित-मानस के विशेष भक्त हैं। उन्होंने बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से रामायण का अध्ययन किया है।

उन्होंने बालकाण्ड के प्रारम्भसे सुजन-बन्दना और खलबन्दना का विषय पढ़कर सुनाया और अपनी प्रेम-पूर्ण टिप्पणियों द्वारा गोस्वामीजी के काव्य का महत्व समझाया। आपने कहा—'वेदके आर्य और दस्यु ही तुलसीदासजी के "सुजन और खल" हैं। उन्हीं की बन्दना से ग्रंथ का प्रारंभ होता है और साधु-शिरोमणि भगवान राम तथा खल-मण्ड-लाधीश प्रतापी रावण के चरित्रों द्वारा दोनों ही के चरित्रों की परा-काष्ठा दिखाई है। आपकी गाम्भीर्य भाव-सम्पन्न व्याख्या ने लोगों के हृदय पर बड़ा असर डाला और विद्यालंकार श्री विद्याधरजी ने उसी समय नीचे लिखी तुलसी-आरती को हारमोनियम पर गाकर सभा का कार्य समाप्त किया—

आरती

आरती श्रीतुलसी स्वामी की

जाकी मंजुल मंगल बानी, है सर्वस्व साधु-जन ही की ॥
सुन्दर रामचरितमानस-सर, रचेउ विचार चारु सुचि रुचिकर ॥
भरेउ ज्ञान-विज्ञान नीरवर, शुभ्रछटा छिटकाई 'श्री' की ॥
भक्ति-मार्ग के परम उपासक, आत्म-ज्ञान के मार्ग विकासक ॥
राम नाम के भक्त, गुसाईं, "जय जय" गहो आज सबहो की ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रास में तुलसी-महोत्सव

मद्रास शहर में श्रावण शुक्ल ७ को कविसम्राट् महात्मा श्री तुलसीदास की पुण्यतिथि का पवित्र उत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया। रामायण तथा तुलसीदास का चित्र सजी हुई पालकी में धरा कर दिन के ४ बजे साहूकार पेठ के बालाजी के मंदिर से नगर-कीर्तन प्रारंभ हुआ। जुलूस में गुजराती, मारवाड़ी, सिंधी, हिन्दुस्तानी, मद्रासी सभी श्रेणी के भद्र धनीमानी प्रतिष्ठित पुरुष सम्मिलित थे। सैकड़ों बाल-युवा वृद्धों के कंठ से "रघुपतिराघव राजाराम, पतितपावन सीताराम" का मधुर घोष गूंजरहा था। कई स्थानों पर आरती हुई। ठीक ६ बजे सायंकाल जुलूस सभास्थान श्री कन्यका परमेश्वरी देवस्थान के विशाल हालमें (जिसमें बिजली-जगमगा रही थी) पहुँचा। एक मंचपर श्रीतुलसीचित्र और रामायण विराजमान थी। सभा का अध्यक्षस्थान हरिद्वार के परिव्राजक श्री० स्वामी जगदीश्वरानन्दजी महाराज ने अलङ्कृत किया। कवितावली और रामायण के पद्योंसे मंगलाचरण किया गया। सभापति ने अपने भाषण में बड़ी ओजस्विता से श्रीगुसाईंजी की जीवनी तथा रामायण की महिमा बखानी। फिर कई नागरिकों के अच्छे भाषण रामचरित-मानस तथा तुलसीचरित्र पर हुए। अन्त में हृषीकेश शर्मा ने सभ्यों को उनके श्री रामायण और तुलसीदास के प्रति श्रद्धा भक्ति पर हर्ष प्रकट करते हुए कहा—तुलसीकृत-रामायण की शिक्षा के अनुसार ही चलने से हिन्दू-जाति का कल्याण होगा। आपने वालमीकिरामायण से रामचरित-मानस की विशेषता तथा रामचरित-मानस का आदर्श इत्यादि विषय पर एक व्याख्यान दिया।

फिर भजनमंडली ने "आरती श्रीरामायणजी की, कीरति कलित ललित सियपीकी" इत्यादि से श्रीरामायण की कर्पूरारती की। अन्त में "रघुपति राघव राजाराम" की कुछ मिनटों भजनध्वनिहोकर प्रसाद और तुलसीदल का सभागत नागरिकों को वितरण हुआ। बड़ा आनंद आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगलोर और तूतीकोरिन आदि स्थानों में भी हिन्दी-प्रचारकों ने धूमधाम से तुलसी-जयंती मनाई।

मेरी धारणा है कि प्रति वर्ष यह उत्सव मद्रासशहर में तथा अन्य केन्द्रों में अच्छी तरह मनाया जाय तो हिन्दी-प्रचार में बड़ी सहायता मिले। लोगों के मुँह से सुनने में आया कि गत ८,९ वर्षों में हिन्दी-प्रचार कार्यालय की ओर से इतनी धूमधाम से ऐसा उत्सव नहीं मनाया गया। साहूकार गुजराती पेठके धर्मानुरागियों में उस दिन हिन्दी-प्रेम ख़ूब उमड़ पड़ा था।

अब प्रति वर्ष प्रातः स्मरणीय गोस्वामी तुलसीदासजी की यह पुण्य स्मृति मनाई जायगी।

हृषीकेश शर्मा

संयोजक 'तुलसी-जयंती'-उत्सव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकावलोकन

कविरत्न मीर—लेखक—श्रीयुत रामनाथलालजी 'सुमन'। प्रकाशक हिन्दी-पुस्तक-भंडार लहेरियासराय । आकार १७×२७ सोलह पेजी, पृष्ठ-संख्या ३१२, क़ागज़, छपाई-सफ़ाई सुन्दर, मूल्य ॥।)

मीर साहब उर्दू-साहित्य के एक बड़े अच्छे कवि थे। उन्होंने उर्दू-कविता की वह मर्यादा स्थापित कर दी है जो अब तक, दो सौ वर्ष से अधिक काल व्यतीत हो जाने पर भी, स्थिर है; और उर्दू-साहित्य के जीवन के साथ-साथ स्थिर रहेगी। उनकी सर्वांग-सुन्दर रचनाओं का उर्दू-संसार अब तक क़ायल है और आगे भी रहेगा। इस पुस्तक में इन्हीं महाकवि मीर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए लेखक ने उनकी उर्दू-कविता का परिचय दिया है। अन्त में उनकी कुछ चुनी हुई ग़ज़लें, उर्दू छन्दों का परिचय तथा उर्दू कविता के विशेष शब्दों का अर्थ देने से पुस्तक की उपयोगिता और बढ़ गयी है। लेखक की भाषा सजीव, चित्ताकर्षक और उत्कृष्ट है। उनकी लेखन शैली साहित्य- रसिकों के लिए सचमुच मोददायिनी है। प्रारम्भ में ही 'नैवेद्य' तथा 'बेहोश लहरों में' के पृष्ठ देखकर लेखक की प्रतिभा का पर्य्याप्त परिचय मिल गया। इस प्रकार 'सुमन' जी जैसे एक योग्य लेखक और कवि ने महाकवि 'मीर' के जीवन और उनकी उर्दू कृतियोंका सुन्दर परिचय, हिन्दी-पुस्तक-भंडार (लहेरिया सराय) की सुन्दर साहित्य-माला के पंचम पुष्प के रूप में, देकर हिन्दी-साहित्य-रसिकों के मनोविनोद के लिए एक अच्छी चीज़ तैयार कर दी है। पुस्तक संग्राह्य है।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंगटसिंह—लेखक—'बालक' सम्पादक श्रीयुत पं० रामवृक्षजी शर्म्मा बेनीपुरी। प्रकाशक हिन्दी-पुस्तक-भंडार लहेरियासराय। आकार १७ × २७ सोलहपेजी, पृष्ठ-संख्या ६०, काग़ज़ छपाई-सफ़ाई सुन्दर मूल्य ।) ।

स्व० श्रीलंगटसिंह विहार के उन पुरुष-रत्नों में थे जिन्होंने अपने ही पुरुषार्थ के बल पर अत्यन्त साधारण स्थिति से उठकर असाधारण उन्नति की और अपने सत्कार्य्यों और आदर्श चरित्र द्वारा सुषुप्त विहारी जनता में जीवन और जाग्रतिका संचार किया। इस पुस्तक में विहार के इन्हीं महापुरुष के जीवन का परिचय लेखक ने बड़ी ही प्राञ्जल और हृदयग्राही भाषा में दिया है। बालकों तथा नवयुवकों के चरित्र-निर्माण में सहायता देने के लिए ऐसी पुस्तकों के प्रकाशन की अतीव आवश्यकता है। प्रसन्नता की बात है कि लेखक तथा प्रकाशक ने अपनी चारु-चरित माला में ऐसी ही पुस्तकों के प्रकाशन का बीड़ा उठाकर अपनी सद्प्रवृत्ति का परिचय दिया है। × × ×

वासदेव श्रीकृष्ण—लेखक—चतुर्वेदी पं० द्वारकाप्रसाद जी शर्म्मा, प्रकाशक नवलकिशोर प्रेस (बुकडिपो) लखनऊ। आकार २० × ३० सोलहपेजी, पृष्ठ-संख्या १५६, कागज़ छपाई-सफ़ाई साधारण। मूल्य ।।।)

जिन नन्दनन्दन, लीलानिकेतन भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण कर हम अपने जीवन को कृत्यकृत्य करते हैं, उन्हीँ की जीवन-लीलाओं का विशद, प्रामाणिक और हृदयग्राही वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। ज्ञानवृद्ध, वयोवृद्ध श्रीचतुर्वेदीजी की सुन्दर कृतियों से हिन्दी-संसार भली भाँति परिचित है। यह पुस्तक आप की मौलिक रचना है। आपने, इस पुस्तक के विषय में, अपने वक्तव्य में लिखा है—"यहाँ पर यह भी बतला देना आवश्यक है कि लेखक को भगवदवतार में तिल भर भी सन्देह नहीं है; तथापि यह पुस्तक श्रीकृष्ण को अवतार मानकर नहीं, किन्तु एक आदर्श महापुरुष मानकर, लिखी गई है।" अतः प्रत्येक हिन्दी भाषा भाषी भारतीय को इस पुस्तक का अवलोकन कर, भगवान कृष्ण का चरितामृत पान कर, अपने जीवन का सुधार करना, उनके उपदेशों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अपने जीवन में परिणत कर उसे कृतार्थ करना चाहिये। पुस्तक सर्वथा संग्राह्य है।

× × ×

हमारी विलायत यात्रा—लेखक और प्रकाशक—श्रीयुत केदाररूप राम तथा शिवजीराम अँगोलिया। आकार २० × ३० सोलहपेजी पृष्ठ-संख्या २६२, कागज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी। मूल्य १।)

लेखक महाशयों ने श्रीमरुधराधीश महोदय के साथ विलायत की यात्रा की थी। अवकाश मिलने पर आप लोग वहाँ का वर्णन भी संक्षेप रूप में लिखते रहे। अन्त में पुस्तक रूप देने के लिये, लेखकों के आग्रह से, श्रीप्रतापचन्द्रजी माथुर ने उन वर्णनों को क्रमबद्ध कर के उनका सम्पादन किया। इस तरह से इसकी रचना में तीन लेखकों ने काम किया है। लंदन-नगर का वर्णन इसमें अच्छी तरह से किया गया है। चित्रों की संख्या कुछ और अधिक होती तो अच्छा होता, तथापि पुस्तक रोचक ढंग से लिखी गई है। भाषा अच्छी है, यद्यपि कहीं-कहीं कुछ त्रुटियाँ रह गयी हैं जो प्रूफ़-रीडिंग की ज्ञात होती हैं। पुस्तक संग्राह्य है।

× × ×

महिला-हितैषिणी – संग्रह-कर्ता चतुर्वेदी पं० द्वारकाप्रसाद जी शर्मा प्रकाशक—नवलकिशोर (बुकडिपो) लखनऊ। आकार २० × ३० सोलहपेजी, पृष्ठ-संख्या २२६, कागज़-छपाई-सफ़ाई अच्छी। मूल्य १)

पुस्तक का विषय उसके नाम से ही प्रकट है। गार्हस्थ्य-नीति-पूर्ण तथा स्त्रियोपयोगी विषयों पर इसमें बड़े सुन्दर, शिक्षाप्रद तथा उपयोगी छोटे-छोटे निबन्ध हैं। पुस्तक गृह-जीवन में प्रवेश करने वाली बालाओं के लिये बड़ी शिक्षाप्रद है। प्रत्येक शिक्षित परिवार को इसका अवलोकन कर लाभ उठाना चाहिये। इसकी रचना ऐसे रोचक ढंग से हुई है कि पढ़ते हुए जी भी खूब लगता है।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य हरिश्चन्द्र (नाटक)—लेखक—स्व० भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र । प्रकाशक हिन्दी-भवन, हास्पिटल रोड, लाहौर। आकार २०×३० सोलहपेजी, पृष्ठ-संख्या १३६ क़ाग़ज, छपाई-सफ़ाई साधारण और मूल्य नदारद !

पुस्तक से समस्त हिन्दी-संसार परिचित है। उसकी प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं ; क्योंकि यह हिन्दी के महारथी भारतेन्दु बाबू की रचना है। इसमें यत्र-तत्र कुछ उपयोगी टिप्पणियाँ तथा आरम्भ में कविका संक्षिप्त परिचय भी दिया हुआ है। हिन्दी-भवन से प्रकाशित होनेपर हम इसे और भी अधिक उपयोगी, सुन्दर और सुसम्पादित होने की आशा रखते थे । आशा है, प्रकाशक अगले संस्करण में इस बात का ध्यान रक्खेंगे।

× × ×

निर्वाचन नियम—लेखक—श्रीयुत पं० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल् बी० तथा श्रीभगवानदासजी केला। प्रकाशक भारतीय ग्रंथ-माला वृन्दावन। आकार २०×३० सोलहपेजी, काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी। मूल्य ॥-)

प्रो०पं० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० हिन्दी-संसार में अर्थशास्त्र विषयक ज्ञान और तदनुसार उसके उपयोग—हिन्दी में अर्थशास्त्र विषय के साहित्य की भी श्रीबृद्धि – के लिये प्रसिद्ध हैं। केलाजी भी अर्थशास्त्र विषय के प्रेमी और लेखक हैं। अतः लेखकद्वय ने इस पुस्तक की रचना समयानुसार कर कौंसिलों के निर्वाचन कार्य सम्बन्धी विषयों; को हिन्दी-भाषा-भाषी जनता के लिये सुगम कर दिया है। निर्वाचित होने का अधिकारी कौन है, निर्वाचन कैसे होता है, किस प्रकार मत दिये हैं, मत-दाताओं को किन-किन बातों का ध्यान रखना और आचरण करना चाहिए, इत्यादि बातों का ज्ञान सम्पादन करने के लिये प्रत्येक वोटर तथा उम्मेदवार को इसका अवलोकन करना चाहिए।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर मराठे—लेखक और प्रकाशक—श्रीयुत भीमसेनजी विद्यालंकार नवयुग-ग्रन्थ-माला कार्यालय, नयाबाज़ार देहली। आकार १८×२२ अठपेजी। पृष्ठ-संख्या २२० । कागज़, छपाई-सफ़ाई साधारण। मूल्य १)

पुस्तक का विषय उसके नाम से ही प्रकट है। इसमें महाराष्ट्र जाति का स्वातंत्र्य-प्रेम, उसकी वीरता, उसका देश-प्रेम और उसका युद्ध-कौशल इतिहास के प्रामाणिक आधारों पर, बड़ी रोचक भाषा में, ऐसे रोचक ढँग से, लिखा गया है कि पढ़ते हुए ज़रा भी जी नहीं ऊबता। लेखक अपने इस परिश्रम में पूर्ण सफल हुए हैं। अगले संस्करण में इसे और भी अच्छे और सुन्दर ढँग से प्रकाशित करने की आवश्यकता है। प्रत्येक इतिहास-प्रेमी को इस पुस्तक का अवलोकन कर लेखक के परिश्रम से लाभ उठाना चाहिए।

निबन्ध-निचय—लेखक—श्रीयुत पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी। प्रकाशक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय २९-३० अमीनाबाद पार्क, लखनऊ। आकार २०×३० सोलहपेजी। कागज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी पृष्ठ-संख्या २१६, मूल्य १।)

यह निबन्ध-निचय चतुर्वेदीजी के उन भाषणों का संग्रह-ग्रंथ है, जो उन्होंने द्वादश हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन (लाहौर) तक सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशनों में दिये हैं। चतुर्वेदीजी के इन भाषणों में हिन्दी भाषा तथा साहित्य के अंगप्रत्यंगों की समालोचना ऐसी मर्मस्पर्शिनी तथा हस्यरस-पूर्ण भाषा में की गई है कि पढ़ते ही बनती है और सहज ही पाठक के हृदय को अपना लेती है। इसमें विचारणीय विषय, हिन्दी की वर्तमान अवस्था, अनुप्रास का अन्वेषण, हमारी शिक्षा किस भाषा में हो? सिंहावलोकन, हिन्दी-लिङ्ग-विचार, भाषण तथा अभिभाषण नामक ८ भाषण एवं निबन्ध हैं। दूसरे, तीसरे, चौथे तथा छठे निबन्धों का विषय तो उनके नाम से ही प्रकट है। विचारणीय विषय (आषाढ़ शुक्ल ३. सं १९६८ वि. के 'अभ्युदय' में प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में "एक हिन्दी-प्रेमी" जी के उस लेख का समुचित उत्तर दिया गया है जिसमें उन्होंने 'हिन्दी-भाषा के विभक्ति-प्रयोग और लिङ्ग भेद' की चर्चा करके हिन्दी-भाषा के इस बड़े भारी काठिन्य का दिग्दर्शन कराया है। सिंहावलोकन में गत आठ वर्षों (संवत् १९६७ वि० से लेकर संवत् १९७४ वि० तक) के हिन्दी-साहित्य-संसार की समालोचना, सुन्दर सरल और चुटीली भाषा में, की गयी है। सातवाँ तथा आठवाँ भाषण क्रमशः विहार-प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन एवं अखिल-भारतवर्षीय द्वादश हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर सभापति की हैसियत से दिया गया है। ये दोनों भाषण भी सम्मेलन के सभापति की पद-मर्य्यादा के अनुसार गम्भीर तथा विचार-पूर्ण हैं। द्वादश हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर दिये गये अभिभाषणमें खड़ी बोली पर व्यङ्ग-पूर्ण तथा कटु समालोचना की गई है। इन सब निबन्धों में इन दो बातों पर खूब प्रकाश पड़ा है—हिन्दी-व्याकरण का स्वरूप तथा व्रज-भाषा का सौन्दर्य्य। 'अनुप्रास का अन्वेषण' निबन्ध में हास्यरस की अपूर्व सामग्री है। इस प्रकार यह ग्रंथ सर्वथा संग्राह्य है।

× × ×

रहीम कवितावली—सम्पादक—श्रीयुत पं० सुरेन्द्रनाथजी तिवारी। प्रकाशक नवलकिशोर प्रेस (बुकडिपो) लखनऊ, काग़ज़, छपाई-सफ़ाई साधारण, आकार२०×३० सोलहपेजी, पृष्ठ-संख्या ९८ और मूल्य ।=) है।

सम्पादक के शब्दों में, इसमें अब्दुलरहीम ख़ानख़ाना (रहीम) कृत अद्यावधि उपलब्ध सभी पुस्तकों और कविताओं का संग्रह किया गया है। परन्तु इसके अतिरिक्त इसमें और भी कुछ है। और वह है कविका ऐतिहासिक तथा साहित्यिक जीवन, उनकी कविता तथा उसमें सूर, तुलसी, वृन्द एवं मतिराम का भाव-सादृश्य, आदि विषयों पर प्रकाश। अन्त में उनके कुछ स्फुट संस्कृत-छन्द भी दिये गये हैं। पुस्तक में रहीम का एक चित्र भी है। कवितावली में कवि के दोहे, सोरठे तथा बरवें (नायिका-भेद) संग्रहीत हैं। संग्रह अच्छा है।

+ + +

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदज्ञ मैक्समूलर—लेखक—श्रीयुत पं. सुरेन्द्रनाथजी तिवारी। प्रकाशक नवलकिशोर प्रेस लखनऊ। आकार २०×३० सोलहपेजी, कागज़, छपाई-सफ़ाई साधारण, पृष्ठ-संख्या १०० मूल्य ।=) है

पुस्तक जर्मन-निवासी उन्हीं महापुरुष मैक्समूलर का जीवन चरित है, जिनकी भारत-भक्ति प्रमाणित होचुकी है। इसमें 'जन्मभूमि और बाल्यकाल, जीवनोद्देश्य, आक्सफ़र्ड-निवास, साहित्य-सेवा, गार्हस्थजीवन, राजकीय वंश-परिचय, अनिश्चित अवस्था, स्वदेशगमन, बाल्य-ब्याह, शोक और प्रतिष्ठा, संसारिक जीवन, जीवन के अंतिम दिवस, एवं 'मैक्समूलर तथा भारत' आदि लेखों में चरितनायक के जीवन पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक हिन्दी-भाषाभाषी नवयुवकों को इसका अवलोकनकर लाभ उठाना चाहिए।

भाषा-ज्ञान—लेखक—श्रीयुत पं० जंगबहादुर मिश्र 'रंजन'। प्रकाशक पं० रामकृपालचौबे बुकसेलर, नयाबाज़ार बलिया। आकार २०×३० सोलहपेजी कागज़, छपाई-सफ़ाई साधारण, पृष्ठ-संख्या १४, मूल्य =) बहुत अधिक है।

लेखक ने यह पुस्तक प्राथमिक पाठशालाओं की तृतीय श्रेणी को व्याकरण का साधारण ज्ञान प्राप्त कराने के विचार से लिखी है। पुस्तक इतनी शुद्ध छापी गई है कि पृष्ठ २ की पहली पंक्ति है—

"परि० भाषा—सिजके द्वारा अपना विचार दूसरों पर प्रगट किया जाय।"

रेखाङ्कित शब्दों को देखिए। 'परिभाषा' शब्द के बीच में एक शून्य आधमका है और 'जिसके' शब्द उलट कर सिजके हो गया है! इस पुस्तक के पाठ से बच्चों को व्याकरण का कितना ज्ञान हो सकेगा, यह जानने के लिए भूमिका का दूसरा पैराग्राफ़ देखिए। उसका प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—"व्याकरण-सूत्रों में मेरे पंडित न होने के कारण अनेक त्रुटियों का हो जाना सम्भवनीय है।" ज़रा इस 'सम्भवनीय' शब्द पर ग़ौर कीजिए, कितना उपयुक्त है?

और देखिए—

सातवें पृष्ठ पर, संज्ञा-प्रकरण में, आप लिखते हैं—

"सरयू प्रयाग से आवेगा, बैजनाथ के बैल लाओ, गंगा काशी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहती है, सुन्दर हिमालय को सजावट अनोखी है।" सजावट शब्द का यह पुल्लिङ्ग-उपयोग भी ख़ूब है! सारांश यह कि लेखक महोदय ने इस पुस्तक की रचना कर और प्रकाशक महोदय ने इसे ऐसा शुद्ध छपाकर प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ जो उपकार किया है, हिन्दी-शिक्षा को सुलभ करने के लिए उसकी कितनी आवश्यकता है, यह प्रत्यक्ष रूप से प्रकट है।

—'साहित्यानन्द'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय

राज्यों में हिन्दी-प्रचार] हिन्दी भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा है। हम भारत के कोने-कोने में हिन्दी भाषा के प्रचार और प्रसार की कामना रखते हैं। जिन प्रान्तों की बोलचाल की भाषा हिन्दी नहीं है वहाँ पर हिन्दी के प्रचार का भरसक उद्योग सम्मेलन कर रहा है। परन्तु जहाँ की बोलचाल की भाषा तथा जन-समुदाय के साधारण पत्र-व्यवहार की लिपि हिन्दी तथा देवनागरी हो वहाँ भी हिन्दी भाषा को अपना उचित स्थान प्राप्त न हो, यह कितने खेद की बात है! संयुक्त-प्रान्त में दर्जनों छोटे-बड़े राज्य ऐसे हैं जहाँ राज-काज की भाषा हिन्दी नहीं है। अदालतों में उर्दू की तूती बोलती है। वहाँ तो हिन्दी को उचित स्थान मिलने में अभी कुछ समय लगेगा। यद्यपि यह कार्य भी उतना कष्टसाध्य नहीं है जितना समझा जाता है। यदि संयुक्त-प्रान्त में अदालतों के वकील-मुख़ार इस बात की दृढ़ प्रतिज्ञा करलें कि हम अपना सब कार-बार हिन्दी ही में करेंगे, अदालतों में सारे क़ाग़ज़ात हिन्दी ही में पेश करेंगे तो अदालतों में हिन्दी को उचित स्थान प्राप्त होने के इस कार्य्य में भी यथेष्ट सफलता मिल सकती है। आगरा, बुलन्दशहर, कानपुर, रायबरेली तथा प्रयाग में इस सम्बन्ध में कुछ कार्य्य हो भी रहा है। आशा की जाती है शीघ्र ही अन्य ज़िलों में भी अदालतों में हिन्दी-प्रचार का कार्य्य एक ढर्रे से चल पड़ेगा। परन्तु जिन राज्यों और ताल्लुक़ों के अधिकारी हिन्दुत्व का दावा करें, वहाँ भी हिन्दी को उचित स्थान न मिले, वास्तव में यह बड़े खेद की बात है। प्रसन्नता की बात है कि सम्मेलन के उपदेशक पं० प्रभुदयाल जी शर्म्मा तथा पं० राजारामजी शर्म्मा के कथोपकथन से राजा महेवा तथा राजा भंडी ने अपने राज्यों में हिन्दी में काम करने की आज्ञा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकाल दी है। एतदर्थ श्रीराजासाहब बहादुर श्रीदिग्विजयसिंहजी राज्य झंडी तथा श्रीमान् जयेन्द्रबहादुरसिंहजी राजा महेवा का हम सादर अभिनन्दन करते हैं। आपका हिन्दी-प्रेम आपकी यह कर्तव्य-परायणता वास्तव में सराहनीय तथा अनुकरणीय है। हमें आशा है कि संयुक्त-प्रान्त के अन्य राजा तथा ताल्लुकेदार महानुभाव भी ऐसा ही आदर्श उपस्थित कर मातृभाषा, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार के इस पवित्र कार्य्य में योग देकर हमें अनुगृहीत करेंगे।

स्टैम्पों में हिन्दी] प्रत्येक राष्ट्र-भाषा-भक्त और मातृभाषा-प्रेमी को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब तक राष्ट्र-भाषा हिन्दी को स्टैम्पों पर स्थान न देकर सरकार जो भूल करती आ रही थी अब उसने उसमें संशोधन करके स्टैम्पों पर हिन्दी को स्थान देने का निश्चय कर लिया है। इसके लिये श्रीनगर (पूर्णिया) के रईस श्रीयुत कुमार गङ्गानन्दसिंह जी एम० ए०, एम्० एल्० ए० वास्तव में बधाई के पात्र हैं। आपने ही बड़ी व्यवस्थापिका सभा में इसके लिये विशेष उद्योग किया। यद्यपि आपके इस सदुद्योग में कितने ही मुस्लिम सदस्यों ने अड़ंगे डाले, व्यवस्थापिका सभा में भी खुल्लम-खुल्ला आपत्ति की तथापि आपने अपनी वक्तृत्व-शक्ति से उन सब को निरुत्तर कर दिया। राष्ट्र-भाषा हिन्दी के प्रति इस कर्त्तव्य-पालन के लिए हम कुमार साहब को सादर धन्यवाद देते हैं।

भरतपुर-सम्मेलन] भरतपुर-सम्मेलन को पहले नवम्बर मास में करने का स्वागतकारिणी समिति का विचार था; परन्तु इस सम्मेलन को भरतपुर राज्य की जनता तथा महाराजासाहब भरतपुर जितनी तैयारी तथा सफलता के साथ करने की आशा रखते हैं, नवम्बर में उसकी सम्भावना कम देखकर उन्होंने उसे फ़रवरी सन् १९२७ में करने का विचार किया है। स्वागत-कारिणी-समिति ख़ूब तत्परता के साथ कार्य कर रही है। उसकी संलग्नता, उसकी संगठित कार्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीलता को देखकर हम आशा करते हैं कि अबकी बार का यह भा पुर का हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन अभूतपूर्व सफल प्राप्त करने में समर्थ होगा।

✿ ✿ ✿

हिन्दी और ब्रजभाषा] हिन्दी के एक वयोवृद्ध विद्वान ने हमारे पास एक नोट प्रकाशनार्थ भेजा है। उसे हम यहाँ पर ज्यों का त्यों प्रकाशित करते हैं।

"विहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का एक अधिवेशन अभी हाल में लहेरियासराय में हुआ था। इस सम्मेलन की स्वागत-कारिणी-समिति के सभापति की हैसियत से पण्डित भुवनेश्वर मिश्र ने अपने भाषण में कहा है—"जैसे बँगला, मराठी, संस्कृत, फ़ारसी, अँगरेज़ी प्रभृति के पद्यों को मैं हिन्दी नहीं कह सकता वैसे ही ब्रज-भाषा के पद्यों को हिन्दी-पद्य नहीं कह सकता। ब्रज-भाषा हिन्दी भाषा नहीं है। × × × बहुत से महाशय यह भी कहेंगे कि अगर ब्रजभाषा के काव्य हिन्दी की श्रेणी से अलग हो जायँ × × सूरदास तुलसीदास, हरिश्चन्द्र प्रभृति हिन्दी के कवि न रहें तो हिन्दी-काव्य किस काम का रह जायगा? भाइयो! जिसको (!) अपनी सन्तान नहीं होती वह भी इसी तरह अपने पड़ोसियों की सन्तान को अपनाता, लाड़ प्यार करता और आनन्दित होता है। तो इससे क्या? वे पड़ोसी की सन्तानें उसकी सन्तान नहीं कहला सकतीं।"

इसी सिलसिले में वक्ताने और भी ऐसी अनेक बातें कही हैं, जिनके लिखनेका यहाँ कोई प्रयोजन नहीं है। अब प्रश्न यह है कि यदि महात्मा सूरदास, तुलसीदास और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी माता के सुत नहीं हैं तो वह हिन्दी क्या है? इन सपूतोंको अपनी सन्तान न मानकर खड़ी होनेवाली वह कौन सी हिन्दी है? हम उसे जानना चाहते हैं। जिन महाकवियों को अपने अंक धारण करने से ही हिन्दी माता का भाल इतना उन्नत हुआ है, जिन सुपुत्रों की सुकृतियों से उसका आगन—उसका साहित्य-भण्डार—इतना विशाल हुआ है कि भारत के किसी प्रान्त की कोई भी भाषा उसके आगे सिर उठाने का दुस्साहस नहीं कर सकती, उन्हीं सुपुत्रों—उन्हीं सूर, तुलसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रृङ्क हरिश्चन्द्र—को खोकर, उन्हें पड़ोसियों की सन्तान बता-
ही क्या वह राष्ट्रभाषा होने का दम भरने जा रही है! और
नि ्दी-साहित्य-सम्मेलन के एक अंग (विहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य
पेलन के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर, उसी के प्लेट फ़ार्म
) से यह कैसा राग अलापा जा रहा है? पं० सत्यनारायण कविरत्न
ज इस संसार में नहीं हैं। 'प्रेम-घन' भी विदा ले चुके! ऐं!
क्या श्री अयोध्यासिंहजी उपाध्याय, अवधवासी लाला सीताराम, बाबू
जगन्नाथदास रत्नाकर, श्रीयुत पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी तथा
श्री वियोगीहरि जी आदि हिन्दी-भक्त चुप हैं! हा! यह कैसा
समय है! सूर, तुलसी और हरिश्चन्द्र हिन्दी के पुत्र नहीं, ब्रजभाषा
हिन्दीभाषा नहीं, एक आध ज़िले की भाषा भले ही हो, क्या इन
शब्दों को सुनकर हिन्दी माता का हृदय विदीर्ण न होता होगा!
हम कुछ और अधिक न लिखकर इतना ही लिख देना चाहते हैं
कि मिश्र महोदय को अभी कुछ दिन और हिन्दी भाषा और उसके
साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। यकायक ऐसी वक्तृता दे डालने
से उनका अभीष्ट सिद्ध न होगा।"

प्रतिभाशाली लेखकों की लचर कृतियाँ] जब कभी हम प्रतिभाशाली
लेखकों की लेखनी से निकली हुई ऐसी रचनाएँ पढ़ते हैं जो
नितान्त निम्न कोटि की, लचर और साधारण होती हैं तो हमें प्रायः
उन लेखकों पर क्षोभ हो आता है। एक दिन एक लेखक ने आकर
हमसे कहा कि अमुक महाशय कहानी तथा उपन्यास-लेखन के लिए
प्रसिद्ध हैं; पर अमुक पत्रिका में इस मास उनकी जो कहानी प्रकाशित
हुई है, वह अत्यन्त लचर है। उसको पढ़कर पाठक पर कोई अच्छा
प्रभाव नहीं पड़ता। हाँ, इसके विपरीत लेखक के प्रति, उसके
हृदय में जो श्रद्धा संचित होती है, उसे ठेस अवश्य लग जाती है।
"मैंने भी उन लेखक महाशय की वह कहानी पढ़ी थी, जिसके प्रति
उपर्युक्त उद्गार प्रकट किये गये थे। अतः मैं भी उसके प्रति यही
भाव रखता था। उस समय तो यह विषय योंही रह गया; परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113069

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar